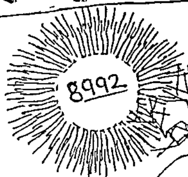


लोकभारती प्रकाशन

१५-ए, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद-१

मरुभूमि

शंकर



लोकभारती प्रकाशन
१५-ए, महात्मा गांधी मार्ग,
इलाहाबाद-१ द्वारा प्रकाशित

•

शंकर

•

अनुवादक योगेन्द्र चौधरी

•

प्रथम संस्करण १९८१

•

आवरण
पुष्पकण मुखर्जी

•

लोकभारती प्रेस
१८, महात्मा गांधी मार्ग,
इलाहाबाद-१ द्वारा मुद्रित

मूल्य २७.५०

सुख-दुख के दैनन्दिन साथी
डॉक्टर शिशिर घोष
श्रीमती नन्दरानी घोष
के
कर-कमलों मे !

"इसीलिए सब कुछ लगता है मिथ्या
मैं अकेला व्यर्थ पगु सगीहीन हताश्वास नि स्व मरुभूमि'

—अचिंत्य कुमार सेनगुप्त

मरुभूमि

उपन्यास का पूर्ववर्ती अध्याय
'जनारण्य'

आज बहुत दिनो के बाद धूप से झुलसे कलकत्ते के आसमान मे काले-काले बादल उमड-घुमड रहे हैं । सूय डूबने के निश्चित समय के पहले से ही आकाश-पथ मे अनगिन गतिमान बादलो की छोटी-छोटी जमाता की शाभा-यात्रा निर्धारित गन्तव्य की आर बढती जा रही है । इस उदास आसमान को शहीद मीनार पर की एक ऐतिहासिक जमात के आह्वान के कारण जो सफलता हासिल हुई है इसका अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है । गगन के मुक्त आँगन मे अभी वही तिल रखन की भी जगह नही है ।

गडियाहाट (साउथ) रोड क पश्चिम, पोस्ट आफिस और तालाब पार करने के बाद, पाक के दक्खिन-पच्छिम कान म, पानी की टकी के पास बनर्जी भवन के दोमजिले पर साध्य प्रदीप जलान के लिए आने पर कमला भाभी एक क्षण के लिए ठिठककर खडी हो गयी । बहुत दिना के अभ्यास के अनुसार कमला भाभी ने साध्य स्नान के बाद माथे पर घूघट डाल लिया है । अब वह गगाजल से हाथ धो, गले मे आँचल लपेटकर पूजाघर क शख को पुजारिन की तरह विनम्रता के साथ हाथ मे उठा लेगी ।

लेकिन सीढियाँ तय कर बालकनी मे कदम रखते ही चिर विनम्र कमला भाभी की आखे आसमान की ओर चली गयी । मेघलोक के धूसर नागरिका की ओर दृष्टि जात ही कमला भाभी क स्निग्ध शा त मन म चचलता की एक लहर खेल गयी । मध्यवयस्क मन की गहराई मे बहुत दिना म माय दो-चार वर्षागीतो के बाल उनके सगीहीन वक्षस्थल मे वसममान लगे ।

कमला भाभी ठिठककर खडी हो गयी, उसके बाद ढँकी हुई [illegible] के ग्रिलो को दोना हाथा से पकड उत्तर दिशा के आकाश की ओर तनिक झुककर खडी हो गयी । कमला भाभी की कोमल दृष्टि न कुछ ही क्षणा म धीर पूरे आकाश की परिक्रमा पूरी कर ली—पूरब-पश्चिम, उत्तर-दक्षिण कही तिल-भर भी स्थान खाली नही है ।

कमला भाभी कुछ क्षण तक आकाश की ओर [illegible] रही, उसके बाद दूर दिगन्त की चपला की चकित कौंध ने [illegible] थाह था [illegible] दी । कमला भाभी को लगा, आकाश मे [illegible] आषाढ का [illegible] रहा है । हालाकि आषाढ तो [illegible] बीत भी चुका है ।

ढीठ हवा की शरारत से परेशान हो धैर्यशाल कमला भाभी ने शरमीले आंचल को अपने काबू मे किया। आषाढ मास की स्मृति ने उनके संसारी मन को फिर से चचल बना दिया।

आषाढ का मतलब ही है बहुत सारा काम—ऐसे-ऐसे काम जिनकी कमला भाभी कभी उपेक्षा नही कर सकती। आषाढ़ का मतलब ही है इस तरह की जिम्मदारियाँ जिन्हे कमला भाभी ने घर की बडी बहू के नाते बहुत दिन पहले ही सहर्ष स्वीकार लिया है।

आषाढ की स्मृति ने कमला भाभी को चिन्ता म डाल दिया। अभी तुरत सोमनाथ के कमरे म जाकर उससे मिलना जरूरी है।

•

कमला भाभी के अलावा और किसी दूसरे व्यक्ति को आजकल सोमनाथ के कमरे मे जाने मे बेचैनी का अहसास होता है।

मझले भाई अभिजित की पत्नी बुलबुल ने तो उस बार कमला भाभी से कह ही दिया था, 'प्लीज मुझे कोई दूसरा काम करने का आदेश दें, पाँच सेकेण्ड मे ही कर दूँगी, लेकिन दीदी, मुझे सोम के पास जाने के लिए न कहे।''

कमला ने कोई उत्तर देने के बजाय चेहरे पर मीठी मुसकराहट लाकर बुलबुल की ओर देखा था।

उस मुसकराहट को देखकर बुलबुल ने विस्मय के साथ कहा था, ''आपको समझना मुश्किल है दीदी। अबकी दुर्गापुर अस्पताल के डाक्टर सेन से आपका थारा इन्वेस्टिगेशन कराना होगा।''

''मुझे क्या हुआ है ?' रसीली कमला भाभी शान्त भाव से यह जानना चाहती हैं। ''मझले बाबू ने तो बताया कि तुम्हारा वह बहुत कुछ इन्वेस्टिगेशन करा चुके हैं।'' वह जाँच जननी-जठर से ही सम्बन्धित थी और कमला इस बात से अपरिचित नही हैं।

बुलबुल ने तत्क्षण जवाब दिया था, ''मेरे अन्दर तो हजारो तरह की बीमारियो का पता चला है। आपका दूसरा ही इन्वेस्टिगेशन किया जायेगा—हम जानना चाहते हैं कि आपके शरीर म क्रोध का वास कहाँ है। और यह भी कि क्रोध के बिना किसी मनुष्य की सृष्टि सम्भव कैसे हुई।''

कमला भाभी के गोरे मुखड़े पर हल्की-सी लाली दौड़ गयी थी। मगर फिर भी स्थिर स्वर मे उन्होंने कहा था, "वह सब बातें जाने दो। हर मर्द अपनी-अपनी औरत के जिस्म की खोज-खबर लेगा ही, जरूरत पड़ने पर डॉक्टर को भी बुलवा भेजेगा। तुम अभी जरा सोम के पास चली जाओ, वह बेचारा बहुत ही एकाकीपन का अनुभव कर रहा है।"

बुलबुल ने कहा था, "प्लीज! मैं कुछ ही क्षणो पूर्व यहाँ आयी हूँ, फिर से अपना मूड बिगाड़ने वहाँ क्यो जाऊँ?"

"अहा हा! वह तो तुम्हारा क्लास-मेट रहा है," कमला भाभी ने याद दिला दिया। "एक ही साथ तुम दोनो कॉलेज म पढ़ते थे, एक ही साथ पिक-निक पर गये थे, एक ही थियेटर मे मच पर भी उतरे थे। भाभी के पद के लिए तुम्हारा चुनाव करने में सोम ने ही तो सबसे अधिक उत्साह दिखाया था।"

बुलबुल की आँखें फैल गयी थी। उत्तर दिया था, 'मेरे पेट मे कोई सेफ डिपॉजिट वाल्ट नही है दीदी, कि बात को दबाकर रख लू। सारी बात जबान पर चली आती है। सोम के बारे म भी लाचार होकर सही बात बता रही हूँ। भूतपूर्व मित्र संयोगवश देवर हो जाएगा ऐसा किसने सोचा था, भूतपूर्व सहेली बाद मे चलकर ननद हो गयी हो, इसकी तो ढेरा मिसालें हैं—लेकिन सहपाठी का देवर बनना एक नयी ही किस्म का तजुर्बा है।"

"ठीक ऐसा ही तो हुआ भी। सोम तो हमेशा तुमसे हँसी-ठिठोली कर वातावरण को जीवन्त बनाये रखता था।"

कमला के मुह पर ही बुलबुल ने कह दिया था, "वह बस अपॉन ए टाइम की बात है दीदी। उस समय सोमनाथ बैनर्जी अनएम्प्लॉएड यगमैन था। नौकरी न मिलने पर भी तबीयत खुश थी। कालेज की छोटी-मोटी स्मृति ले इस बुलबल के साथ शिशु सुलभ कलह करने का भी सोमनाथ के पास वक्त था—कब किस युवक ने मेरी ओर तिरछी निगाहो से देखा था, कब किसने मुझे एक दर्द-भरी चिट्ठी लिखी थी और उसका ड्राफ्ट दो-चार मित्रो से सशोधित कराया था, कब कॉलेज स्ट्रीट के कॉफी-हाउस के हाउस ऑफ लार्ड्स मे किसके साथ मुझे काफी पीते देखा था।" यही सब दोहरा कर वह अपनी तबीअत बहलाता था।

कमला भाभी ने सीधी लड़की की तरह कहा, "अरे काफी-हाउस वाली वो बात! सो तो सुन चुकी हूँ। मगर तुमने तो बताया था कि वह तुम्हारे मौसेरे भाई थे।"

बुलबुल बोली, "बातूनी सोमनाथ के मुह मे तब लगाम न थी। मुझ पर

दोषापरोपण करते हुए कहा था वह सब बात मुझे मालूम है। पकड़े जाने पर सभी मौसेरे भाई का ही बहाना बनाती हैं।"

"मैंने कहा था इस तरह ऊल-जलूल मत बका करो सोम। यह बहुत ही गम्भीर बात है। मेरे मौसेरे भाई नेवी मे काम करते हैं। अबकी कलकत्ता आने पर निमन्त्रण देकर बुलाऊँगी और तभी सुनी और आँखो देखी बात का फैसला कराऊँगी।"

"सोम उस समय भी ऐसा ही फक्कड था कि उसने कहा था बहुत पहले जा हो चुका सो रहने दो—अब निमन्त्रण की नहर खोदकर मौसेरे भाई रूपी घडियाल को घर पर लाने की कोई जरूरत नही।"

बुलबुल जरा रुकी, उसकी आँखे छलछला आयी हैं। व्यतीत की बाता का स्मरण करते हुए उसने कहा, "वे दिन कहाँ चले गये! सोम भले ही मेरे पीछे पडा रहता था, झगडा-टण्टा भी करता था मगर वह सब बुरा भी तो नही लगता था।"

बुलबुल को सब तरह की बातें याद आ रही हैं। बुलबुल ने तर्क करने की झोक म इट का जवाब पत्थर से दिया था, "तुम्हारे भैया भी दूध के धुले हुए नही थे। मेरी ममेरी बहन की सहेली के सेफ कस्टडी मे अब भी उनके द्वारा लिखे गये प्रेम-पत्र ढेरा मौजूद हैं। जरूरत पडे तो एक दिन के लिए माँगकर ला सकती हूँ और दिखा दे सकती हूँ।"

"यह तो एकबारगी ही दूसरा ही पॉएन्ट हो गया बुलबुल," सोमनाथ ने मुसकराकर अनुभवी विधिवेत्ता की तरह सवाल किया था। "सीता के तथाकथित मौसरे भैया के बारे म विशेष रूप से खोज-पडताल चल रही है, ठीक उसी समय राम क अतीत के बारे म गवाह पेश करने से क्या होगा? क्रेडिबिलिटी शेक करने का इरादा है क्या?"

बहस म हार जाने पर बुलबुल न गुस्से म जवाब दिया था, "ठीक है भैया, बिलकुल ठीक। सारी बाता का पता था ही तो फिर ऐसी हालत मे आगे बढने की ही जरूरत क्या था? रिश्ता तोड सकते थे, खबर भेज दे सकते थ कि लडकी पसन्द नही आयी।"

सोमनाथ हँस दिया था। 'पॉएन्ट बिलकुल सिम्पल है। हम लोगा की निगाह म 'नान डे विल इज बेटर दैन अननान ऐंजिल' वाली बात थी। दूसरे मुहल्ले की अनजानी मैना स अपने मुहल्ले की गौरैया कही निरापद लगी और हमने चारा डाल दिया।'

"वही सोमनाथ धीरे-धीरे वैसा तो हो गया," बुलबुल ने शिकायत की थी। "शुरू मे फ्रेण्ड बाद म देवर—उसके बाद फिर क्या कहूँगी ?"

"जेठ !" कमला भाभी न मजाक किया था।

"आपने सौ मे एक सौ दस प्रतिशत सही उत्तर दिया है दीदी। दरअसल जेठ के सामने भी मुझे उतनी बेचैनी का अहसास नही होता है।" बुलबुल ने अपने मनाभाव को दबाकर नही रखा था।

उसके बाद बुलबुल कई दिना के लिए अपने पति के पास दुर्गापुर चली गयी थी। आजकल वह पति के साथ दुर्गापुर म रहना ही ज्यादा पसन्द करती है।

दुर्गापुर मे किसी तरह की असुविधा का सामना नही करना पडता है। चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट अभिजित बैनर्जी को किसी खास समस्या के निदान के लिए अचानक मुख्यालय से दुर्गापुर कारखान मे भेज दिया गया है। लगता है, समस्या का सही रास्ते पर लाने मे कुछक महीने लग जायेंगे। सप्ताहान्त मे अभिजित बैनर्जी कलकत्ता चला आता था मगर आजकल बुलबुल ही दुर्गापुर जाकर हाजिर हो जाती है।

इसम ज्यादा झमेला भी नही है। बुलबुल ने कहा था, "गेस्ट-हाउस मे डब्ल बेड है। ब्याॅय, बावर्ची हर वक्त हाजिर रहते हैं—किसी चीज का ऑर्डर दा ता पाच मिनट मे मिल जायेगा। फिर बिल का भी कोई सवाल पैदा ही नही होता। बस, गेस्ट-हाउस के खाते मे हस्ताक्षर करके लिख दो—ऑफिसियल।"

कमला भाभी को इतनी पेचीदा बात समझ मे नही आती। उन्हे आश्चय हुआ था, "बाप रे ! फिर पर्सनल नामक कौन सी चीज रह जाती है। पत्नी का खाना खिलाना भी ऑफिसियल काम समझा जाता है ?"

बुलबुल आयात किये गये सिगरेट लाइटर की तरह झट से लहक उठी थी। "जरूर ! एक नहीं, सौ बार। अग्नि को साक्षी बनाकर ब्याही हुई पत्नी कही अन-ऑफिशियल हो सकती है ?"

पत्नी के मामले मे ऑफिशियल नॉन-ऑफिशियल जैसी चलन वाली बात न भाभी को बेचैनी मे डाल दिया। "बाप रे, दफ्तर के मामले मे पत्नी को खीचने की जरूरत ही क्या है ?"

बुलबुल ने मीठी झिडकिया सुनायी थी। 'उफ दीदी, आपको समझा सकना मुश्किल है। भैया भी तो इतने बडे अफसर है, एक नामी कम्पनी के ईस्टर्न रीजिनल मैनेजर। मगर सीनियर एक्जीक्यूटिव के साथ इतन दिनो तक गृहस्थी

चलाने के बावजूद आप आफिस की कोई बात समझने की कोशिश नही करतीं। आप तो बिलकुल क्लब की पत्नी जैसी ही रह गयी। एकदम घरेलू।

सीधी-सादी कमला ने अब प्रतिवाद करने की कोशिश की। "नहीं बहिन, पत्नी कभी आफिशियल नहीं हो सकती। नौकरी न रहेगी तो भी पत्नी तो पत्नी ही रहेगी। आफिशियल होने से तो नौकरी के साथ पत्नी भी छोडनी पडेगी।

बुलबुल को बडा मजा आ रहा था।" मैं कहना कुछ चाहती थी और कह बैठी कुछ और ही। सुनिये दीदी। बीच-बीच मे दुर्गापुर जाकर देख आयी हू। कितने ही *अधिकारियो की ऑफिशियल बीवियाँ लापता हैं—वे बच्चो के स्कूल,* लडकी के नाच और अपने सगीत के कारण कलकत्ते मे किराये के मकान मे व्यस्त रहती है, और विरही साहबो ने अन-ऑफिशियल बीवी का इन्तजाम कर लिया है। मिक्स्ड एकोनामी एण्ड ज्वाइन्ट सेक्टर।"

सरला कमला भाभी पुन अचकचा उठी। "छि छि। प्रभो! यह सब कैसी बुरी बात है। सुनने से भी पाप लगेगा।"

चटुल वार्तालाप से जेठानी को शर्मिन्दगी मे डालने के बाद बुलबुल ने बातचीत के क्रम को नया मोड दे दिया। "हा, तो मैं कह रही थी दीदी, कि अफसर हुए तो इसका मानी यह नही कि अपने को बेच दिया है। कम्पनी काम की सुविधा के लिए पति को उसकी घर-गृहस्थी से दूर हटाकर बन्दी बनाकर रखेगी, वैसी हालत म यदि उसकी बीबी दो दिन के लिए बनवास म मिलने के लिए आये तो क्या उसे दाल-भात का खर्च भी जेब से करना पडेगा, यह चल नहीं सकता।'

कमला भाभी के पिता जी बिहार मे इन्सपेक्टर ऑफ स्कूल्स थे, दौरे पर निकलना ही उनका काम था लेकिन पत्नी को सरकारी खर्च पर दौरे पर ले *जाने का सवाल पैदा नही होता था। उस समय कोई इस तरह की बात सोचता* भी नही था।

इस बात से बुलबुल अनजान नही है। उसने कहा, "वह सब बात भूल जाइये दीदी। अब जमाना कुछ और ही है। बीबी को पूरी सुविधा नहीं दी *जायगी* तो आज के काम-काजी आदमी नौकरी छोडकर कनाडा, अबूधाबी, दुबाई या इराक चले जायेंगे। वैसे हालात मे इन देशी कम्पनियो के कोल्हू मे कौन जुतने आयेगा?"

बुलबुल के दफ्तर-सम्बन्धी ज्ञान की गहराई देख कमला भाभी अवाक् हो जाती हैं। बुलबुल के अलावा इन बातो की सूचना उन्हें कोई और नही दे सकता है। उनके पति दफ्तर की किसी बात की चर्चा घर पर नही करते हैं।

बुलबुल बोली, "आप के दवर के दफ्तर मे भी तरह्-तरह की बेइ्साफी है। विलायती और देशी चाटर्ड एकाउटेटा के बीच जो फसला है, वह सब अगर आप देखें तो लगेगा हिन्दुस्तान अब भी आजाद नही हुआ है। ऐसा लगेगा जैसे आपके देवर एक अनटचेब्ल हरिजन हैं, क्योकि वे अपने मुल्क के सी० ए० हैं।"

सरला कमला भाभी फिर बेचैन हो उठी। "बाप रे ! साहबो को क्या यह मालूम नही कि बैनर्जी हरिजन नही हुआ करते ?"

बुलबुल बोली, "हम बहुत गुस्से मे आ गयी हैं—हम यानी इडियन चाटड एकाउन्टेन्ट की बीवियाँ। उन लोगो के यहाँ चीब नामक एक विलायती चार्टर है—वह दूर पर निकलता है तो हर रोज अपनी बीवी को ट्रकॉल करता है। बाद मे पता चला, कपनी के खर्चे पर वह हर रोज दस मिनट अपनी बीवी को ट्रककॉल कर सकता है। कितनी बेइन्साफी है। विलायती चार्टर्ड एकाउटेन्ट की बीवी ट्रककॉल पर खसम से हँसी मजाक करेगी और हमने चूकि देशी एका-उटेट से शादी की है इसलिए देवता जैसे पति की मङ्गल-कामना करते हुए बिस्तर पर करवटें बदलने से सिवा हमारे लिए और कोई चारा नही है ?"

कमला भाभी ने बुलबुल को सयत करने के खयाल से कहा था, "इतनी बातो की जरूरत ही क्या है ? तुम हर रोज अपने पति को दुर्गापुर फोन किया करो, पैसा मैं दूँगी।"

बुलबुल ने सूचित किया था, "फोन की जरूरत नही पडेगी। वह कल सुबह ही खुद दुर्गापुर चली जायेगी।"

जाने की बात सुनकर कमला भाभी चिंतित हो उठी। "क्यो ? सोमनाथ के व्यवहार से क्या तुम चिढ गयी हो बुलबुल ?"

बुलबुल ने सूचना दी, "मैं चिढकर नही जा रही हूँ दीदी। सोमनाथ से चिढने का मतलब है छत के कौवे से चिढना। मैं दूसरी ही वजह से जा रही हूँ।"

बुलबुल ने सूचना दी, उन लोगा के दुर्गापुर मे अशान्ति का वातावरण फैल रहा है। मजदूर लोग वेतन मे दस रुपये की बढोत्तरी के लिए हगामा मचा रहे हैं।"

बुलबुल ने होठ बिदकाकर अपनी राय जाहिर की, "इस देश के वकर कितने नासमझ हैं। इतना अधिक पैसा कहाँ से आयेगा ? इसके फलस्वरूप कपनी की फाइनैशल हालत कितनी खराब हो जायेगी, यह बात वे लोग नही समझ रहे हैं।"

बुलबुल बडी ही साहसी औरत है। उसने कहा, "दस रुपये की खातिर ये बनैले जीव अगर हड़ताल करने पर उतर आयें तो ऐसी हालत में मैं उनके साथ रहना चाहती हूँ। वर्कर लोग साहबो की परवाह करें चाहे न करें मगर साहबो की बीवियो से वे अब भी डरते हैं।" कई दिनो तक दुर्गापुर में रहने के बाद बुलबुल ने इस मूल्यवान् सत्य को खोज ही निकाला है।

हड़ताल का भय दिखाकर बुलबुल दुर्गापुर जा गयी तो फिर उसकी कोई खोज-खबर ही नही मिली। यहाँ तक कि उसने एक खत भी नही भेजा।

हालाँकि खत वगैरह आने पर कुछ दिन पहले तक घर में कितनी अशांति छा जाती थी। द्वैपायन बैनर्जी अब तक पिंजरे मे कैद शेर की तरह अविराम चहल-कदमी करते हुए कमला को पुकार पर पुकार लगा चुके होते। पूछते, "बहू, सोम घर पर है? उसे पोस्ट ऑफिस जाकर यह टेलीग्राम दुर्गापुर भेज देने को कहो।"

अपनी ऊब दबाकर द्वैपायन बोले, "काम के दबाव की वजह से कोई आदमी अपने घर चिट्ठी तक नही भेज सके, इसकी मिसाल दुनिया मे कही नही मिलेगी। लोग-बाग लडाई के मैदान से भी अपने सगे-सबधियो को निरन्तर पत्र लिखते रहते हैं। तुम खुद विख्यात ब्रिटिश, जर्मन, अमरीकी जनरलो के बाद मेमोरियल्स पढकर देख लो।"

कमला ससुर का लिखा हुआ तार का ड्राफ्ट और पाच रुपये का एक नोट लिए सोमनाथ के कमरे में आयी।

लाडले बेकार छोटे देवर ने सब कुछ सुनने के बाद पलग पर उठकर बैठते हुए कहा, "इस टेलीग्राम का कोई मतलब नही निकलेगा भाभी जी। सरकार को सलामी देने के बजाय इस रुपये से सिनेमा देख आना कहीं ज्यादा बेहतर है।"

"सिनेमा देखने की इच्छा हो तो उसके टिकट के लिए मैं अलग से पैसा दूगी, लेकिन उसके साथ-साथ तार भी कर आओ भैया। बाबूजी बेहद चिंतित हैं।"

"दिन रात लडको के बारे मे फिक्र करने के अलावा बाबूजी को क्या कोई दूसरा काम नही है भाभी जी? फिक्र करने से इस दुनिया मे कही कुछ होता है?" अविश्वासी सोमनाथ ने स्नेहमयी भाभी के सामने अपना मनोभाव छिपाकर नही रखा था।

"बाप रे ! तुम यह सब क्या कह रहे हो सोम ? मा-बाप का आशीवाद जल-स्थल-अन्तरिक्ष सब जगह हमारी रक्षा करता है । मेरे बाबूजी की ही बात लो । भागलपुर मे बैठे-बैठे मेरे बारे मे सोचते रहते है तो उससे क्या मेरी कोई भलाई नही होती ?"

"उफ् भाभी जी, ईश्वर ने आपका निर्माण किस धातु से किया है ? इस बीसवी सदी मे भी आप अचल हैं । सबको प्यार देकर, सब पर विश्वास रखे, बैठी हुई हैं । भाभी, आप ही एकमात्र ऐसी औरत है जिसे समझ सकना मेरे लिए मुश्किल है ।"

कमला भाभी ने कहा था, "तुम लौटोगे तो एक प्याली स्पेशल चाय तुम्हारा इंतजार करती रहेगी । उसके बाद तुम किसी सिनेमा का टिकट कटा सकते हो ।"

"बाबूजी से कहिये, कुछ खबर न आने का मतलब ही है कि समाचार बिल्कुल ठीक है—नो न्यूज इज गुड न्यूज । अभिजित बैनर्जी अपनी आधुनिक वाइफ बुलबुल बनर्जी के साथ दुर्गापुर मे बिलकुल ठीक हैं । यह जानने के लिए यह अर्जेन्ट टेलीग्राम दुर्गापुर भेजने की कोई जरूरत नही है ।"

दवर को बिस्तर से उठाते हुए कमला भाभी ने कहा था, "जरूरत है सोम, बडे होओगे तब यह बात तुम्हारी समझ मे आयेगी ।"

सोमनाथ ने जरा आश्चय मे आ कौतुक के साथ कमला भाभी की ओर देखते हुए कहा था, "क्या बोली ?"

कमला भाभी ने गभीरता के साथ उत्तर दिया था, "जोधपुर पाक का यह बैनर्जी भवन, दोमंजिले की यह बालकनी, वह ईजी चेयर, वह छोटी टेबल—यह सब चीज तो रह जायेगी । वे ही गवाह रहेगी कि एक दिन तुम भी वहाँ बैठे-बैठे बाल-बच्चो के लिए इसी तरह चिन्ता से व्याकुल होगे या नही ।"

निरुपाय सोमनाथ ने सिर हिलाकर उस समय कहा था, "राम के जन्मने के पहले ही आप रामायण की बात लेकर बैठ गयी ? गृहस्थी के कामो मे इस तरह अपने को बर्बाद करने के बजाय आप कविता लिखती तो कही अच्छा रहता । आप मे इमोशन है भाभी जी । फिलहाल मैं बेकार हूँ—अनएम्प्लाएड ग्रेजुएट । लेकिन आपने मेरे पोता-पोती तक की तसवीर बना डाली है । वाह !"

सोमनाथ ने कमला भाभी के चेहरे की ओर ताका था । "भाभी जी, आपको एक बात की गारण्टी दे रहा हूँ । बाबू जी की तरह मैं दुनिया के किसी आदमी के लिए इतना चिन्तित नही रहूँगा । बबाद करने के लिए इतना सर-प्लस वक्त मेरे पास कभी नही रहेगा ।"

भाभी की आँखे छलछला आयी थी। दाँत से जीभ काटते हुए कहा था, "छि, ऐसी बात नही कहते। ईश्वर ने समय दिया है किसलिए ? अपने लोगो को प्यार करने के लिए ही न ? माँ नही हैं, इसलिए बाबूजी को अकेले ही दो व्यक्तियो की चिन्ता करनी पडती है। सोम, हम लोग कितने भाग्यवान् हैं ! हम लोगो के लिए चिन्ता करने के लिए अब भी दुनिया मे एक व्यक्ति मौजूद हैं। हम उनके लिए चिन्तित रहते हैं या नही, इसकी खोज-खबर वह एक बार भी नही लेते। मा की तसवीर की ओर ताकते हुए इतना ही कहते हैं प्रतिमा, इन लोगो को सुख-शान्ति से रखकर मैं यहाँ से चला जाना चाहता हूँ, इसके अलावा मेरी कोई दूसरी प्रार्थना नही है।"

बहुत दिनो के बाद आज इस मेघाच्छादित शाम मे कमला भाभी को सोम को उस दिन की बात याद दिला देने की इच्छा हो रही है। मगर सोम कहाँ है ?

कमला भाभी ने पूजाघर जाने के रास्ते मे सोमनाथ के कमरे मे झाँक कर देख लिया। सोमनाथ पहले नीचे के कमरे मे रहता था। एक महीने पहले कमला भाभी ने उसकी प्रोन्नति कर दी है।

सोम शुरू मे उपरले कमरे मे आने को इच्छुक नही था। उसने कहा था, "भाभी जी, आप ही बल्कि दोमंजिले के कमरे मे चली जायें।"

'क्यो, इतने बडे कमरे मे तुम्हारा रहना शोभा नही देगा ?" कमला भाभी ने कारण जानने के लिए अनुमान लगाने की कोशिश की थी।

बुलबुल हमेशा बातूनी और मुहफट रही है। वह भी उस समय घटना-स्थल पर मौजूद थी। मुह बनाकर बुलबुल ने मुसकराते हुए कहा, "जानती हैं दीदी, हम लोगो के कालेज की श्रीमयी जो-सो कहानी इधर-उधर से बटोरकर ले आती थी। बडे कमरे की बात से मुझे बडी खाटवाली कहानी की याद आ रही है।"

कमला भाभी को बात समझ मे नही आयी थी। वह बेवकूफ की तरह बुलबुल की ओर ताकने लगी थी।

बुलबुल बोली, "एक वयस्क युवक को शादी करने की बेहद ख्वाहिश थी हालाँकि घर पर कोई इस बात की चर्चा तक नही करता था। आखिरकार युवक ने एक दिन सबेरे-सबेरे आरी लेकर अपनी खाट काटना शुरू कर दिया। उसकी भाभी घबराकर दौडती हुई आयी और कहा अरे यह क्या कर रहे

कमला भाभा को उम्मीद थी कि इसर बाद उन्हें एक सुयोग मिलेगा। सोचा था, कहेगी, वेतनभोगी पसाल असिस्टेंट के अतिरिक्त सोमनाथ चाहे तो एक दूसरी तरह की असिस्टेंट लाकर दे सकता है।

लेकिन सामनाथ न उस ओर कदम ही नही बढ़ाया बल्कि यह अजीब ही तरह के अनमनपन म डूब गया। उसर चेहरे की कठिन उदासीनता देख कमला भाभी को उस दिन आगे बढ़न की हिम्मत नही हुई।

अभी सोमनाथ के दोमंजिले के कमरे म रोशनी जल रही है। लेकिन परदे की फाँक से कमला भाभी को वह दिखायी नही पड़ा। सोमनाथ जरूर ही गुसलखाने क अन्दर है। इस घर क मात्र एक कमरे ही म सलग्न गुसलखाना है।

कमला भाभी अब सीधे पूजाघर क भातर चली गयी। सास क द्वारा खरीदे गये कमण्डल स गगाजल ढाल हाथ शुद्ध कर लिया। उसके बाद शान्त जोधपुर पाक का बैनर्जी भवन शखध्वनि स मुखरित हो उठा था।

कमला भाभी न परम श्रद्धा के साथ गृह-देवता को प्रणाम किया "प्रभो, इन लोगा पर दया दृष्टि रखो।"

गृह-देवता ही कमला भाभा को बंदिनी बनाये हुए हैं। कही जाने पर वे अधिक देर तक रुक नही पाती हैं। घर म सध्या-प्रदीप न जले, यह कैसे हो सकता है भला।"

बुलबुल कलकत्ते के बाहर रहती है तो कमला को इसी असुविधा का सामना करना पड़ता है। बहुत दिन पहले सास ने कहा था, "दाई-नौकर से शाम का यह काम कभी नही कराना बहू। कभी अगर अपन हाथ से नही कर सको तो घर के मालिक या बाल-बच्चा को बुला लना।" सास की समझ मे शायद यह बात आ गयी थी कि इस घर म साध्य-प्रदीप जलान के लिए वह दुनिया मे ज्यादा दिनो तक नही रहगी।

पूजाघर स बाहर आ कमला भाभी सीधे सोमनाथ के कमरे के अन्दर चली गयी। टेबल-लैंप जलाकर सोमनाथ टेबल पर झुककर कुछ काम कर रहा था।

"लो, प्रसाद ले लो।" कमला भाभी ने दो अदद बताशे सोमनाथ की ओर बढा दिय।

'वन मिनट, भाभी जी। बड़े ही क्रिटिकल पाएन्ट पर पहुँच गया हूँ। जरा इधर-उधर हो जाये तो बहुत बडा नुकसान उठाना पड़ेगा,' सामनाथ टेबल पर

झुक पडा और कमला भाभी ने समय बचाने के खयाल से ही देवर के मुह मे एक बताशा ठूस दिया ।

अब कमला भाभी स्वय मेज की ओर झुककर खडी हो गयी । "बाप रे, यह तो हिसाब का खाता है । मैंने सोचा था, इस मेघिल दिन मे तुम शायद "

"आपने सोचा, अस्ताचलगामी सूर्य के प्रकाश मे आपका देवर खिडकी के किनारे कोई कविता या कहानी पढ रहा है ।" सामनाथ ने चपल होने की कोशिश की ।

इस प्रकार की मेघिल सध्या मे सोमनाथ जमा-खर्च के खाते मे कैदी बनकर पडा है, यह बात कमला भाभी को सचमुच ही अच्छी नही लगी ।

इस घर की सन्तानो के बीच सोमनाथ ही अलहदा किस्म का था । उसका मधुर कवि-मन साहित्यानुरागिनी कमला को अपनी ओर खीचता था । कमला की तीव्र अभिलाषा थी कि उसका देवर नामी कवि बने । तभी न इस दुनिया के तमाम लोगो से गर्व के साथ यह कहा जा सकेगा कि कवि सोमनाथ वद्योपाध्याय मेरा देवर है । मेरे द्वारा बनायी गयी चाय के घूट लेते हुए ही उसने यह अविस्मरणीय कविता लिखी है 'मानव की वाणी—नही मानता हूँ वाधा मैं ।' रवीन्द्रनाथ की एक पक्ति से सहायता लेकर उस बार सोमनाथ ने कितनी अच्छी कविता लिखी थी । उस समय सोमनाथ कॉलेज का ही छात्र था । उसके बाद पासकोस से किसी तरह बी० ए० की परीक्षा मे कामयाबी हासिलकर, बेकारी की आग मे दिन-ब-दिन झुलसकर सोमनाथ ने स्वय को, पिताजी और पूरे घर बार को क्षत-विक्षत कर दिया । ऐसे भी दिन गुजरे हैं जब कमला को लगा है, सामनाथ सचमुच ही कुछ नही कर पायेगा । दूसरे के माथे का बोझ बनकर ही उसे सारी जिन्दगी बितानी होगी ।

लेकिन अन्तत ईश्वर ने उसकी ओर भी दया की दृष्टि से निहारा था । पिताजी को मालूम है, उनका छोटा बेटा सोमनाथ अब बेकार नही है । यह सच है कि नौकरी उसे नही मिली है मगर उसे नौकरी की जरूरत भी नही है । द्वैपायन बैनर्जी का कनिष्ठ पुत्र सोमनाथ बैनर्जी अन्तत बिजिनेसमैन बन गया । जेयूइन बिजनेसमैन कहने से जो बात समझ मे आती है —बेकारी का बखेडा अब उसके साथ नही है, वह वास्तविक व्यवसायी हा गया है ।

कमला भाभी की आखो की ओर देखकर सोमनाथ यह बात भलीभाँति समझ रहा है कि उन ममतालु आखो की प्रत्याशा के सम्मुख वह सभवत बौना होता जा रहा है ।

कमला भाभी ने कहा, "अब घर पर भी तुमने दफ्तर का काम काज लाना शुरू कर दिया ?"

सोमनाथ को पता है, उसके बड़े भैया या छोटे भैया दोनो म से कोई दफ्तर की फाइल घर पर नही लाते हैं। मगर सोमनाथ के सामन कोई दूसरा उपाय नही है। खाते स आंख हटाये बगैर उसने कहा, "आपका छोटा देवर अब जेंटलमैन नही, बिजनेसमैन है।"

कमला भाभी देवर के मजाक से खुश नही हुइ। अब वह सोमनाथ से बहुत कुछ प्रत्याशा करती हैं। "बाप रे, व्यवसायी भले आदमी नही होते, इस तरह की बात कहाँ लिखी हुई है ?"

सोमनाथ बोला, "व्यवसाय मे दूसरे की गुलामी से छुटकारा पाने की एक क्षीण सभावना अवश्य दीख पडती है, लेकिन अपने आपकी गुलामी से भागने का कोई रास्ता इसमे भी नजर नही आता, भाभी जी। बिजनेसमैन की जात रेशम के कीडे की तरह होती है—अपनी ही लार से वे लोग स्वय को जीवन-भर के लिए कैदी बना लेत हैं।'

"बहुत बडे व्यवसायी होकर जब आत्म-कथा लिखोगे तो यह बात उसमे जरूर लिखना" कमला भाभी सोम की बुद्धि की दमक से सतोष का अनुभव करती हैं। उसके मन की बैटरी अब भी जलकर खत्म नही हुई है।

सोम दुबारा हिसाब के खाते पर झुक पडा। "यह सब बहुत ही सीक्रेट काम है भाभी जी-धर्मशालानुमा दफ्तर मे बैठकर काम किया नही जा सकता।'

क्यो ? सोमनाथ का दफ्तर तो अब धर्मशालानुमा नही है। वैसी बात तब थी जब वह विशु बाबू के कनारिया कोर्ट के बहत्तर नम्बर कमरे की एक मेज पर वह बैठा करता था। हर मेज पर दो-तीन दफ्तर रहा करते है। किसी-किसी दफ्तर मे तीन-चार नाम के लेटरहेड लगे हुए हैं। सामयिक आश्रयदाता विशु बाबू ने सोमनाथ से कुछ भी नही कहा था। मगर सोमनाथ का ध्यान इस बात पर गया था कि एक पुराने किरायेदार के लौट आने के कारण विशु बाबू थोडी-बहुत झिझक महसूस कर रह थे, क्योकि सोमनाथ उसी की जगह पर दखल जमाकर बैठा हुआ था। विशु बाबू के प्रति बार-बार आभार प्रकट करते हुए सोमनाथ न ज्यादा किराये पर कनोरिया कोट के ८१ नम्बर कमरे मे एक बडी जगह ले ली है। वहाँ प्राइवेसी के लिए सोमनाथ ने स्वय लकडी का एक क्यूबिकल बनवा लिया है। मर्जी हो तो वह दफ्तर से बाहर जाने के समय ताला बन्द करके भी निकल सकता है।

खाते पर अपनी निगाह पूववत् रखकर सोमनाथ ने भाभी से कहा, "ला

ऑफ द जगल है, भाभीजी। कलकत्ते के व्यावसायिक मुहल्ले मे जगल का कानून लागू है। दीक्षित जी के हिसाब के खाते की चोरी हो गयी है। ओरिजिनल हिसाब के खाते का मतलब है—बिजनेसमैन के प्राणा का भँवरा। खाता किन लोगो ने गायब किया है, अब तक पता नही चला। अगर उस तरह के किसी आदमी के हाथ म खाता चला जाये तो क्या हो सकता है, इसकी आप कल्पना तक नही कर सकती हैं ?"

कमला की समझ मे कुछ भी नही आ रहा है। व्यवसाय की अन्दरूनी गदगी को न समझना ही भाभी जी के लिए अच्छा है, सोमनाथ ने सोचा। कमला भाभी ने सोमनाथ का दफ्तर एक बार अपनी आखो से देखने की इच्छा जाहिर की थी। मगर सोमनाथ ने उन्हे प्रोत्साहित नही किया था। सोमनाथ को भय होता है कि वह सब जगह कमला भाभी के लायक नही है।

"थोडा-सा और वक्त चाहिए भाभी जी। आपको दिखाने लायक दफ्तर बन जाये उसके बाद मैं खुद आपको सब कुछ दिखलाऊँगा।" सोमनाथ ने समय विशेष के लिए भाभी को रोक दिया था।

भाभी नही जानती कि सोमनाथ के मन म क्या योजना है। अगर किसी दिन सोमनाथ का व्यवसाय फल-फूल उठे, अपनी कपनी की बिल्डिंग वह बनवा सके तो ऐसी हालत मे वह भवन के प्रवेश द्वार पर ही श्वेत पत्थर से पद्मासना कमला की ऊर्ध्वाङ्कित मूर्ति किसी शिल्पी से गढवा लेगा। शिल्पी से सोमनाथ एक ही अनुरोध करेगा—कमलदलवासिनी कमला का मुख मडल वास्तव मे कमला भाभी की ही तरह हो।

कमला भाभी अब भी सोमनाथ के हिसाब के खाते की ओर ताक रही हैं। उनके स्वर मे अभियोग का पुट है। "उफ्, कविता लिखने के समय भी तुम्हें इतनी माथा पच्ची करनी पडती है, सोम ?"

सोमनाथ ने हँसते हुए कहा, "पहले आदक बाबू से सुना करता था और अब अपनी आँखो से भी देख रहा हूँ, महाकाव्य मे भी हिसाब के खाते जैसा कल्पना का स्कोप नही है। उस दिन आदक बाबू ने एक अच्छी बात बताई थी। वह यह कि आजकल अच्छे कहानी-उपन्यास इसलिए नही लिखे जा रहे हैं क्योकि तमाम फिक्शन राइटस एकाउन्टेन्ट होते जा रहे हैं।"

कमला भाभी को जरा-जरा भय लगने लगा। "नही भाई, जिसका जो काम है उसको वही शोभा देता है। उन झमेला मे न पडना ही ठीक है।" "इस युग मे कोई भी काम क्या सच्चाई के रास्ते पर चलने से होता है, भाभीजी ?"

सोमनाथ ने सर झुकाये हुए ही पूछा। दुनिया मे कमला भाभी के अलावा किसी और से वह इस तरह जी खोलकर बातचीत नही कर सकता है।

कमला भाभी देवर के लिए चाय लाने जा रही थी। सोमनाथ की बात कान म जाते ही मुडकर खडी हो गयी।

सोमनाथ के चेहरे की ओर ताकती हुई मीठी मुसकान के साथ कमला भाभी बोली, "जो लोग अयाय करते हैं, वे ही अपने बुरे कामा पर परदा डालने के लिए चुपचाप इन बातो का प्रचार करते रहते हैं, सोम। बाबूजी अक्सर कहा करते थे महान् व्यक्तियो की जीवनी पढ़कर देखो—दुनिया का बहुत सारा काम सच्चाई के रास्ते पर चलने से ही होता है। तुम अपनी ही बात लो। बेकार होकर रास्ते म मारे-मारे फिरते थे, भाई या पिता किसी ने नौकरी के मामले म कोई मदद न की। लेकिन तुममे चिनगारी थी इसीलिए तुम अपनी कोशिश और गुण के बल पर व्यवसाय मे पाँव रोपकर खडे हो गये। तुम्हें कोई अन्याय नही करना पडा।"

इतना कहकर ही कमला भाभी चाय लाने चली गयी थी। किस्मत अच्छी थी कि उन्होने मुडकर नही देखा।

भाभी जैसे ही आँखो से ओझल हुईं, सोमनाथ का शरीर झनझना उठा। कुछ ही क्षणो के भीतर जैसे सब कुछ एकाएक अँधेरे मे डूबता जा रहा हो।

"सोमनाथ, सोमनाथ"—कोई जैसे पातालपुरी के गहरे अँधेरे से सोमनाथ बैनर्जी को सम्मोहन भरे स्वर मे पुकार रहा है।

सोमनाथ बैनर्जी महसूस कर रहा है, उसके पूरे जिस्म मे हठात् पसीने की बाढ आ गयी है। बिजली के लिफ्ट के पिंजरे मे कैद सोमनाथ जैसे कोयले की खान के सुरग-पथ से आहिस्ता-आहिस्ता नीचे उतरता जा रहा हो।

सोमनाथ का नीचे उतरने का जैसे कोई अन्त न हो—पूरा पिंजरा अतलात अँधेरे के पातालगर्भ मे समाता जा रहा है। कोई एक रहस्यमय, लेकिन परिचित स्वर, बन्दी सोमनाथ को कापालिक की तरह पुकार रहा हो और यह जानते हुए भी कि उसका सर्वनाश निश्चित है, सोमनाथ उस पुकार को ठुकरा नही पा रहा हो।

इस क्षण सोमनाथ 'आषाढस्य प्रथम दिवस' का वही दृश्य देख रहा था—ग्रेट इडियन होटल के सामने वह एक टैक्सी से उतरा। साथ मे थी उसी के मित्र सुकुमार की बहिन कणा।

कोई अब सोमनाथ से जिरह कर रहा था, "तो फिर तुम्ही वह भद्र, सुसभ्य और सुशिक्षित सोमनाथ बैनर्जी हो जो ऑर्डर पाने के लोभ मे ग्रेट इडियन

होटल के एकान्त कक्ष म सुदर्शन गोयनका को तोहफा देने के लिए पैसे के विनिमय मे कणा को ले गये थे ?''

सोमनाथ ने दयनीय स्वर मे आत्म-रक्षा के लिए दलील दी। ''मुझे गलत न समझें। प्लीज आपके पैरा पर गिरता हूँ। मेरी बात सुनिये। पाक स्ट्रीट से दलाल नटवर मित्तिर की जानी पहचानी पार्टी के द्वारा अभिस्तावित लडकी को गाडी पर बिठाकर मैंने उसका नाम पूछा था। उसन अपना नाम शिउली बताया था, कणा नाम को उसन उच्चारण तक नही किया था।''

अँधेरे का काला गाउन पहने कोई कुत्सित कापालिक आट मे खडा होकर अट्टहास करने लगा। उस क्षण सामनाथ पर कोई भी विश्वास नही कर रहा था।

उस आदमी की हसी की प्रतिध्वनि तब उस अन्धपुरी की दिशा-दिशा म टकराने लगी थी।

''सोमनाथ सन ऑफ द्वैपायन बैनर्जी, तुम हमे क्या समझाना चाहते हो ? यही न कि तुम्हारी कोई गलती नही थी। तुम्हारा कोई अपराध नही था, निरे बालक की तरह तुम अपनी दिली दोस्त सुकुमार की बहिन को टेलीफोन आपरेटिंग स्कूल से गोयनका के होटल के कमरे मे पहुँचाने के लिए ले आये थे ? यानी तुम निर्दोष हो, अगर गलती किसी की है ता वह कणा की ही है—सुकुमार की बहिन कणा थी। वह क्या उस समय उस तरह घर से छिपकर बाहर आयी था और चरणदास के अड्डे पर गयी थी ?''

अब वह अट्टहास सभवत सैकडा टुकडा म चूर-चूर होकर पातालपुरी के रास्ते पर प्रलय का सृजन करेगा। अँधेरे का कापालिक अब तीखे व्यग्य से मुजरिम सोमनाथ का चिन्दी-चिन्दी कर डालेगा।

'सोमनाथ तुम वकील क्या नही बने ? द्वैपायन बैनर्जी का एक लडका आइ० आइ० टी० का इन्जीनियर, दूसरा लडका एफ० सी० ए० और यह तीसरा लडका वकील। बहुत ही फबता। कितनी सहजता से तुम अपनी सारी जिम्मेदारी दूसरे के मत्थे मढकर, कणा का बेचकर, अपने भविष्य की निरापद नींव डालकर चले आये। मिस्टर सुदर्शन गोयनका, परचेज ऑफिसर किस सहजता के साथ कणा को अपने साथ ले ग्रेट इंडियन होटल के डब्ल बेडरूम के अन्दर चले गय थे। दरवाजे के सामने रोशनी जल उठी थी, जिसमे साफ-साफ पढा जा सकता था—प्लीज डोंट डिस्टर्ब। कणा का एक जानवर के हाथा म सौंपकर, तुम खडे-खडे उस लाल राशनी का जलना देखत रहे, पालतू बकरे की तरह लाउंज म आकर कुछ देर तक छटपटाते रहे, उसके बाद निश्चित

समय पर मिस्टर गोयनका को तुमने रिसेप्शन से फोन किया। मिस्टर गोयनका ने कितनी सहजता के साथ कहा था यू हैव फिनिश्ड। तुम मन ही मन कुछ बुदबुदाते रहे, उसके बाद लालची कुत्ते की तरह पूछ हिलाते-हिलाते ऊपर चले गये थे ''

सोमनाथ से अब बरदाश्त नहीं हो पा रहा है। कोई जैसे उसके हाथ पैर बाँध, आग से लहकती सलाख जैसे शब्दों की उसके सीने में दाग रहा हो। यातना से छटपटाते सोमनाथ से अब बरदाश्त नहीं हो पा रहा है।

''प्लीज योर आनर प्लीज मेरी उस समय की हालत की आप कल्पना कर सकते हैं।'' उसके यह कहते ही काले गाउन के काले कापालिक ने सिर उठाकर देखा था।

कातर सोमनाथ कहने लगा था, ''लाख प्रयत्न करके भी मुझे नौकरी नहीं मिली, घर पर मेरी कोई इज्जत नहीं थी। मैं जिसे प्यार करता था उसी तपती ने मुझे नोटिस दिया था। अपनी भाभी के द्वारा इकट्ठे किये गये पैसों को मैंने व्यवसाय में बर्बाद कर डाला था। उस समय मिस्टर गोयनका ही मेरी एकमात्र उम्मीद थे। वे ही उस बार मुझे केमिकल्स का एक बड़ा-सा ऑर्डर देकर जिन्दा रख सकते थे। मगर उसके पहले उन्हें 'माल' चाहिए था—जन-संपर्क विशेषज्ञ नटवर मित्तिर ने अपने लम्बे अनुभव के बल पर कहा था लड़की के तोहफे के बिना गोयनका किसी भी हालत में ऑर्डर नहीं देगा और मुझे कुछ करना भी नहीं है। ऐज ए स्पेशल केस मिस्टर नटवर मित्तिर ने खुद ही मेरे लिए सारा इन्तजाम कर दिया था।''

''रहने दो, बहुत हो चुका। लेक्चर तुम अच्छा दे लेते हो, सोमनाथ। उनके पहले मेरे जिस वाक्य को तुमने बीच में ही काट दिया है, उसे पूरा कर लेने दो।''

''बहुत खूब! सुपर्ब!! तुम्हारी कोई मिसाल नहीं, मिस्टर सोमनाथ बैनर्जी! तुम उस भूली सभ्य गुडी-गुडी भाभी के देवर सोमनाथ ही हो। तुम तो मात्र निमित्त हो—तुम्हें कुछ भी मालूम नहीं—यहाँ तक कि तुम्हारे तोहफे को भी मिस्टर नटवर मित्तिर ने सजा दिया था। अन्तिम क्षण में ही कुछ गड़बड़ हो गयी। उस समय लाचार हो तुमने ही पार्क स्ट्रीट में चरणदास के हाथ से कणा का ''

''कणा को नहीं '' सोमनाथ कराह रहा था।

''आई बेग योर पारडन। शिउलु। जानने के बावजूद तुम 'कणा' नाम को बरदाश्त नहीं कर पाते। खैर, उसे सजाकर, एडवांस पेमेन्ट कर, ग्रेट इंडियन

होटल में गहराती शाम में तुम जाकर हाजिर हुए थे। शिउली का सर्वनाश करने के बाद गोयनका ने जब तुम्हें बुलाया था तो उस वक्त भूखे कुत्ते की तरह तुम दामजिले पर चले गये थ। तुम्हारी आँखों के सामने ही लुटी-पिटी शिउली सिर झुकाये होटल से बाहर चली गयी थीं। तुमने उससे कोई बातचीत तक नहीं की थी। क्यों ? इसलिए कि तुम भले मानस हो, सन आफ द्वैपायन बनर्जी डब्ल्यू० बी० सी० एस०। तुम्हारे प्राण तब सुदर्शन गोयनका के बुक-पाकेट में उखड़ी उखड़ी सांसे ले रहे थे। तुम कणा को देखकर भी अनदेखा कर गये थे क्योंकि तुम्हारा काम बन गया था। तुम सीधे मिस्टर गोयनका के श्री चरण कमलों में स्वय को निवेदित करने चले गये। गोयनका ने सन्तुष्ट होकर कहा था मैं सैटिसफाइड हूँ—लीजिए यह रहा आपका परचेज आर्डर। महात्मा कॉटन मिल्स को अब आप ही हर महीने केमिकल्स सप्लाई कीजिएगा।"

"उफ् !" सोमनाथ अव्यक्त यातना से कराह रहा था।

मगर उसे छुटकारा नहीं मिल रहा था। काले गाउन का कापालिक जैसे अब भी कहे जा रहा हो, "परचेज ऑर्डर को पाकेट के हवाले कर, बिजनेस में पाँव जमाकर, बाहर निकलने के बाद ही तुम्हें पता चला कि अपनी उन्नति के पागलपन में तुमने मित्र की बहिन को बेच दिया था। कणा, कणा कहते हुए तुम नटवर मित्तिर को पीछे छोड़ते हुए पोर्टिको तक भागे-भागे चले आये थ। लेकिन तब कणा वहाँ कहा थी ? तब तक तो कणा कलकत्ते के जनारण्य में शामिल हो चुकी थी, और खुद मरकर तुम्हें जिला गयी थी, क्यों मिस्टर सोमनाथ बैनर्जी।"

सोमनाथ ने सोचा था, वह आदमी शायद अब खामोश हो जायेगा। लेकिन अब भी उसे मुक्ति नहीं मिल रही थी।

उसके कानों में दुबारा आवाज आयी, "फाइन परफार्मेंस मिस्टर बैनर्जी। सुपर एक्सेलेन्ट आपरेशन ! तुम एकदम पाक-साफ रहे ! तुम्हारे गालों पर एक भी खरोंच नहीं आयी। किस पवित्रता के साथ तुम एक बिजनसमैन हो गये। तुम्हारे पिताजी और भाभीजी तक को पता न चला।"

"मुझे जिन्दा रहने दें प्लीज मेरी बात सुनिये। मेरे लिए कोई दूसरा उपाय नहीं रह गया था।" सोमनाथ ने दयनीय आवेदन किया था।

"जरूर-जरूर, सब कुछ सुनूँगा। लेकिन हाँ, इसके पहले, दुनिया में जिसे तुम सबसे अधिक श्रद्धा की दृष्टि से देखते हो, तुम्हारा उसी कमला भाभी को पूरी घटना बता दी जाये। उनकी राय "

कमला भाभी के नाम ने सोमनाथ के जिस्म पर बिजली के चाबुक जैसा

काम किया था। "नहीं प्लीज आपके पैरो पर गिरता हूँ मुझ पर रहम कीजिये।" वह परिणाम-भय से कातर था।

अँधेरे से घिरे सोमनाथ की आँखो के सामने अततः प्रकाश का सकेत आ ही गया।

कमला भाभी की आवाज सुनायी पड रही थी। "ए सोम, क्या बात है? कमरे का टेबल-लैंप बुझाकर इस तरह भुतहे अँधेरे मे क्यो बैठे हो?"

लाल साडी पहने कमला भाभी चाय की प्याली हाथ मे लेकर खडी थीं। भाभी ने खुद ही दीवार की बत्ती जला दी थी।

कमला भाभी ने देखा, सोमनाथ उनकी ओर फटी फटी आँखो से ताक रहा था।

"क्या हुआ तुम्हे? इस तरह क्या ताक रहे हो सोम?"

सोमनाथ ने हँसने की कोशिश की थी। "आप कुछ समझ रही हैं भाभी जी?"

"उफ्! समझूगी क्या? तुम्हें समझना क्या इतना आसान है?" कमला भाभी ने शिकायत की थी।

सोमनाथ बेवकूफ की तरह हँस रहा था।

तभी भाभी ने पूछा था। "हिसाब मिला?"

"बडा ही गडबड हिसाब है भाभी जी। बगैर हेर-फेर किये इस युग मे व्यवसायियो का हिसाब कभी नही मिलता।"

"तो रोशनी बुझा दू? अँधेरे मे ही शायद तुम्हारा हिसाबी दिमाग तेज काम करेगा?"

कमला भाभी स्विच की ओर बढ गयी थीं। लेकिन अँधेरे की खाई मे दुबारा प्रवेश करने में सोमनाथ को बेहद भय महसूस हो रहा था। उसने दयनीय स्वर मे अनुरोध किया, "प्लीज भाभीजी, बत्ती मत बुझाइए।"

●

बाहर अब बादलो की गडगडाहट और पागल दरख्तो मे आपस मे होड लग गयी थी। सोमनाथ के कमरे से बाहर आकर कमला भाभी चुपचाप बालकनी मे आकर खडी हो गयीं। उनके पतिदेव आज बम्बई गये हुए हैं। लौटने मे दो दिन लगेंगे।

कमला भाभी ने सोचा, आज ही वह सोमनाथ से विचार-विमर्श करेगी। सोम से कहने लायक बहुत सारी बातें जमा हो गयी हैं।

अस्वस्थ हालत में बाबूजी ने भी कमला से कहा था, "बहू, तुम्हीं कोशिश करो न? एकमात्र तुम्हीं से वह बातचीत करता है। मुझसे तो लड़कों का जैसे सपर्क ही स्थापित नहीं हो सका, वे मेरे सामने हमेशा स्टैच्यू-से बने रहते हैं। जैसे मैं कोई गैर होऊँ।"

"नहीं बाबूजी, आप यह सब सोचकर मन उदास न करें। लड़के आपका सम्मान करते हैं।" कमला ने ससुर को सांत्वना दी थी।

"लड़कों से मैंने सम्मान की चाह नहीं की थी, बहू। मैंने उनका मित्र बनना चाहा था। इसके अलावा जो चाहा था, मुझे वह मिल गया है। मुझे कोई क्षोभ नहीं है। मैंने चाहा था, मेरे लड़के वंश की मर्यादा कायम रखते हुए नामी-गिरामी आदमी बनें। सोम के कारण ही मैं जिन्दगी के आखिरी दौर में चिंतित था। लेकिन वह भी इस तरह अपने पैरों पर खड़ा हो जायेगा, इसकी भी मैंने कल्पना नहीं की थी। मृत्यु-पथ के पथिक द्वैपायन जरा रुक गये थे।

थोड़ा-सा पानी पीकर बोले थे, अब तुम्हारी सास के सामने खड़े होने में मुझे तनिक भी भय नहीं लगेगा, बहू। प्रतिभा लाख कोशिश करेगी तो भी मेरी कोई गलती नहीं निकाल पायेगी। सिर्फ एक ही काम बाकी बच गया है, ससुर की ओर से तुम्हीं इस जिम्मेदारी को अपने सर पर ले लो न।"

कमला की आँखों में आँसू भर आये थे। द्वैपायन ने कहा था, "कब क्या हो जाये, कहा नहीं जा सकता, बहू। सोम की शादी करा दो। बहुत देर हो गयी है, मुझे कहीं दोषी न बनना पड़े।"

"आप यह सब क्या कह रहे हैं, बाबूजी?" कमला ने बाबूजी को संयत करने की कोशिश की थी।

लेकिन द्वैपायन ने बाधा पर कान नहीं दिया था। बोले थे, "कब क्या हो जाये, कुछ ठीक नहीं। तुम्हें आदेश दिये जा रहा हूँ, अशौच के कारण सोमनाथ की शादी में कोई रुकावट नहीं आनी चाहिए। तुम कहना, पिता की यही आज्ञा है, शादी में एक दिन की भी देर नहीं होनी चाहिए। तभी प्रतिभा और मैं, चाहे जहाँ भी रहें, सुखी हो पायेंगे।"

बरामदे पर खड़ी हो पिछले कई महीनों की स्मृतियाँ कमला भाभी दुहरा गयीं। बहुत उद्विग्नता के बाद सोमनाथ खड़ा हो सका था। दिन अब भी याद

है—पहला आषाढ । माँ का मृत्यु दिन और सोमनाथ का जन्म दिन । सोमनाथ कामयाबी के साथ लौट आया, उसके नौकरी की तलाश के अध्याय का अन्त हुआ । अब वह नौकरी के लिए उम्मीदवार नही बनेगा । व्यवसाय मे उसे एक सलीके का आदेश प्राप्त हो चुका था ।

द्वैपायन स्वय भी बहुत खुश हुए थे । उसी दिन उन्होंने बहू को अपने पास बुला भेजा था । आराम कुरसी पर लेटे-लेटे द्वैपायन न कहा था, "आज बहुत ही हल्केपन का अहसास हो रहा है, बहू । छाती पर से जैसे डेढ मन वजन का पत्थर हट गया ।"

बहू समझती हैं कि बाबू जी बेहद खुश हैं । इस मामले मे कमला नीरव श्रोता की भूमिका अदा करती हैं । बाबू जी की किसी बात का विरोध करें, यह वे सोच भी नही सकती ।

द्वैपायन बोले, "जानती हो, मेरे लिए सबसे ज्यादा खुशी की बात कौन-सी है ? सोमनाथ ने अपनी चेष्टा ही से अपनी समस्या का निदान खोज निकाला है । तुम सोम से कहो मुझे खूऽब खुशी हुई है । बहू ईश्वर की लीला भी कैसी है, देखो न—इतनी बडी समस्या का समाधान इतने सलीके से हो जायेगा, यह बात कल तक मेरे ध्यान मे भी नही आई थी । नारायण नारायण," द्वैपायन ने हाथ उठाकर गृह-देवता को प्रणाम किया था ।

"सोम कहा है ? नीचे शारगुन कर रहा है ?" द्वैपायन आज से ही सोमनाथ को पूरी आजादी देना चाहते थ । उसे जो मर्जी हो, करने दो । घर लौट कर बाबूजी को किसी तरह व्यवसाय जमने की सूचना देकर सोमनाथ जो लापता हुआ तो उसके बाद फिर उससे मुलाकात ही नही हुई ।

बाबूजी की बातचीत का तरीका देखकर कमला न समझ लिया था कि बाबूजी की इच्छा है, लडका उनके पास आकर बैठे । उनसे व्यवसाय के बारे मे दो-चार बात करे । सरकारी दफ्तरो, विलायती मर्चेन्ट आफिसो, कल-कारखाने वगैरह के सबध मे द्वैपायन की कुछ निजी धारणाएँ हैं पर व्यवसाय के संबध म उन्हें तनिक भी जानकारी नही है ।

सोमनाथ की तलाश मे निकलने पर बुलबुल के द्वारा पुकारे जाने पर कमला खुद जाकर यह अजीब-सा दृश्य देख आई थी । सोमनाथ के कमरे की बडी बत्ती बुझी हुई थी । छोटा-सा एक नाइट लैम्प जल रहा था । और आज की इस स्मरण-योग्य सफलता मे बावजूद, अपनी सालगिरह के दिन भी उनके स्नेह का पात्र दबर तकिये म मुह छिपाये सोमनाथ रो रहा है ।

रोने की बात का पता पहले बुलबुल को ही चला था और खुद को समझ

जानती हो बहू, इस दुनिया म सब कुछ होता है। सबसे बड दु ख की घडी म भी आदमी हँसता है और खुशियो की घडी म उस रुलाई आने लगती है।"

यह बात झूठी नही थी, कमला को इसकी सबूत भी कुछ दिन बाद ही मिल गया था। बहुत सारी तकलीफो के बाद जब इस घर मे सुख का वास होने जा रहा था तभी बाबूजी अचानक विदा हो गये।

आसन्न मृत्यु की पदध्वनि बाबूजी की सतक दृष्टि को धोखा नही दे सकी थी। उस दिन दोपहर के समय घर मे कमला के अलावा कोई दूसरा व्यक्ति नही था। बडा लडका दफ्तर गया था, अभिजित दुर्गापुर मे था और सोम व्यवसाय के सिलसिले मे कनोरिया कोट गया हुआ था। एकमजिले से दोमजिले पर दौडती हुई आकर कमला ने ही ससुर को सँभाला था और मोक्षदा की माँ को डॉक्टर बुला लाने भेज दिया था।

द्वैपायन एकाएक प्रफुल्लित हो उठे थे। कहा था, "बहू अब शायद मैं विदा हो रहा हूँ। बहू, मौत से मैं बहुत डरता था। लगता था, मौत अँधेरा, लोड शेडिंग जैसी ही कोई चीज है। लेकिन अभी, इस क्षण मुझे डर नही लग रहा है, बहू। मैं प्रतिभा को भी देख पा रहा हूँ। लाल किनारी की टसर की साडी पहने वह आकर खडी हो गई है। मुझे ले जायेगी—शायद अब मुझे छुट्टी मिल गई है।

"प्रतिभा, जरा-सा रुक जाओ। सोम के बारे मे बहू से एक बार फिर तो कह लू मैं।"

"बहू, जितनी जल्दी हो सक तुम उसे गृहस्थ बना देना। इसके कारण मेरे अशौच की भी बाधा मत मानना।"

इसके बाद ही बाबूजी होश खो बैठे थे। डॉक्टर साहब आ गये थे पर उसके बाद फिर होश लौटकर नहीं आया। तीसरे पहर बडे और छोटे लडके की उपस्थिति म द्वैपायन सोये हुए शिशु की तरह अमृतलोक के रास्ते म अनन्त यात्रा पर निकल पडे थे।

द्वैपायन की अन्तिम इच्छा और अनुरोध अब भी काँटे की तरह कमला के सीने से बिंधा हुआ था।

मृत्यु मे वैराग्य और विवाह म बधन है, पारलौकिक कर्म मे त्याग और

विवाह म भोग की गंध है—इसीलिए शोक के प्रथम अध्याय मे कमला ने ससुर की अन्तिम इच्छा की चर्चा न तो सोमनाथ से की, न ही किसी दूसरे आदमी से। लेकिन वक्त तेजी से गुजरता जा रहा था। अब और देर नही की जा सकती।

कमला भाभी का भय होता है, बाबूजी और माँ दोनो ही किसी दिन हो सकता है, एक ही साथ सपने म आकर उपस्थित हो जाये।

"मा पूछेगी बहू वो क्या तुमसे कुछ कह गये थे ? या फिर जाने के वक्त भी माल-असबाब सहेजने की व्यस्तता मे असली बात भूल गए थे ?"

आज बरसात से मुखर इस रात म कमला भाभी को खासी बेचैनी महसूस हो रही थी। सोम के पास वह क्या अभी ही जाय ? सोम क्या फिर मोटे-मोटे हिसाब के खातो मे डूब गया।

उस समय सोम के कमरे के अन्दर न जाकर कमला भाभी ने अच्छा ही किया था। वह कुत्सित कापालिक तभी जरा देर पहले खाते की ओट म ओझल हुआ था।

लेकिन सोमनाथ काम मे अपने मन को तल्लीन नही कर पा रहा था। तरह-तरह की असलग्न चिन्ताओ के बादल उसे घेरते जा रहे थे। बाहर इतनी जोरो की बारिश हो रही थी मगर सोमनाथ का अन्तर्मन शुष्क मरुभूमि मे परिणत होता जा रहा था। व्यथ, पंगु, सगीहीन, हताश्वास, नि स्व सोमनाथ का गला सूखकर रूखे काठ जैसा हो रहा था, आसपास कही बूद-भर भी तो पानी नही था।

बारजे मे खडी कमला भाभी को इन बातो का पता नही चला। उन्हें सिर्फ इतना ही पता चला कि सोम के कमरे से ट्राजिस्टर की आवाज आ रही थी।

आकाशवाणी के लोगो म रुचिबोध है। कमला भाभी ने सुना, कोई ईथर वाहित स्वर म अपने आपको नि स्व करके गा रहा था—'ऐसे दिन मे कहाँ उसे खोजा जा सकता है, ऐसी घनघोर वृष्टिधारा म।"

जोधपुर पाक के बैनर्जी भवन के बारजे पर खडी कमला भाभी चुपचाप सोचती रही। कमरे के अन्दर बिजली बत्ती की मद्धिम रोशनी म सोमनाथ बैनर्जी एकान्त मे अपने आपस विचार-विमर्श करता रहा।

"सुकुमार मित्र, बी० ए० (सी० यू०), हाउस ईटर, एफ० बी० सी०, सन आफ दशरथ मित्र, ब्रदर ऑफ कणा मित्र एण्ड अदस, फ्रेण्ड ऑफ सोमनाथ बनर्जी, रजिस्टड एट इम्प्लॉएमेंट एक्सचेंज विथ अनलिमिटेड लाइबिलिटी।" बहुत दिना पहले अपन मित्र सोमनाथ को लिखे गये एक पत्र के शीर्षक मे सुकुमार ने इसी तरह का अपना परिचय दिया था।

परिचय देखकर सोमनाथ ने सुकुमार को कसकर लथेडा था। 'अबे, यह किस किस्म का पागलपन है ?"

सुकुमार के दिमाग मे गडबडी आने के लक्षण तब भी ठीक-ठीक पकड मे नही आये थे, इसीलिए दिमाग खराब होन का मजाक किया था।

सुकुमार छोडनेवाला जीव नही। उत्तर दिया था, मुझसे जीत सकना मुश्किल है। बडे-बडे डाक्टर और नामी-गरामी प्रोफेसरो का लेटरहेड तूने नही देखा है ? उसम कितना कुछ लिखा रहता है। तो फिर मैं ही क्यो पीछे रहूँ ? डॉक्टर लोग कैलकटा युनिवर्सिटी के ग्रेजुएट हैं, मेरे साथ भी यही बात है। उन लोगा के पास रजिस्टड नबर रहता है, मेरे पास भो इम्प्लॉएमेंट एक्सचेंज का नबर है। सोच रहा हूँ, अब पूरा रजिस्टड नबर ही लेटरहेड म छपवा लू।"

"उफ्फोह सुकुमार, तुझसे पार पा सकना मुश्किल है! सब तो समझ गया लेकिन यह 'हाउस-ईटर' कौन सी बला है ?"

"तेरे दिमाग मे कम से-कम ६७% गोबर ही है!" सुकुमार ने जवाब दिया था। डाक्टरो का पैड तूने नही देखा कि उसमे लिखा रहता है, एक्स-हाउस-सजन अमुक मेडिकल हास्पिटल। मैं हाउस सजन नही, 'हाउस-ईटर' हूँ। सच्ची बात ही लिख दी है। कैलकटा युनिवर्सिटी का रबर स्टैम्प रहने के बावजूद घर का आटा गीला कर जगल की भैंस भगाता रहता हूँ—'हाउस-ईटर' एण्ड फॉरेस्ट बफलो चेजर, एम० आर० सी० एस० की तरह सक्षेप मे एफ० बी० सी०।"

सुकुमार ने कहा था, 'कुछ कैश मिल जाता तो एकाध हजार विजिटिंग कार्ड छपवा लेता। नौकरी के धधे के लिए सभी जगह जाकर अपनी क्रूसिकल पारिवारिक स्थिति का डिस्क्रिप्सन देकर कहना नही पडता कि सर मेरे पिताजी रिटायर हो गये हैं, मेरी तीन बहिने अविवाहित और दो भाई नाबालिग हैं।"

"तेरी बात सुनकर सचमुच ही हँसने का मन करता है, सुकुमार। क्रूसिबल नही, क्रूशल। अपने लेटरहेड मे कोई अपनी बहिनो का विवरण छपवाता

हो, ऐसा तो सुनन मे नही आया। तेरे नाम को तो गिनेस बुक ऑफ रकार्ड मे छपाया जा सकता है, "सोमनाथ ने कहा था।

"दिमाग खपाना पडता है, समझे !" सुकुमार ने आत्म-सतोष प्रकट किया था। एटलीस्ट तीन दिना तक सावधानी से इसके बारे मे साचना पडा है। अगर लिखू तीन वयस्क कुमारी बहिन और दो नाबालिग भाइयो का बडा भाई हूँ तो फिर वहुत सारे नौकरी देने वाले घबरा जायेंगे। सोचेंगे, इस साले को नौकरी देने से ता यह दो महीनो मे ही तनख्वाह बढाने के लिए दबाव डालने लगेगा। इसीलिए छपा रहेगा—ब्रदर ऑफ कणा एण्ड कपनी—'अश्वत्थामा हतो नरा व कुजरो'। सच्ची बात भी कहना हो गया, साथ ही साथ पार्टी को घबरान का मौका नही दिया।

"इस तरह के मुल्क मे रहने की वजह से ही अभी तक इस ब्रेन की कद्र नही की गयी। किसी फारेन कण्ट्री मे होता तो जमाना सुकुमार मित्तिर को सिर आखो पर रखता।" सुकुमार हँस पडा था।

मानसिक चिकित्सालय मे आने पर भी सुकुमार को यह सब बातें अच्छी तरह याद थी। नौकरी के लिए पागल हो वह कलकत्ते के आफिस मुहल्ले मे मारा-मारा फिरता था, सुकुमार यह सब बात भी भूला नही था। सिफ बीच की कुछ स्मृतिया ही विस्मरण की मलिन धूप-छाह मे धुधली पड गयी हैं। जैस सिनेमाघर के परदे पर गतिमान तसवीरें एकाएक धुधली हो जाती हैं। प्रोजे-क्शन रूम के आक्लैंप की परमायु किसी कारणवश समाप्त हो जाती है और अचानक हॉल मे उत्कठित दर्शको की चिल्लाहट गूज उठती—फोकस प्लीज।

फोक्स। हा, फोकस शब्द ही ठीक रहेगा। सुकुमार मित्तिर अपनी स्मृतियो पर जैसे ठीक से फोकस नही डाल पा रहा था।

उसे इतना ही याद आ रहा है कि एक दिन तीसरे पहर मानसिक चिकि-त्सालय के सामने कणा रिक्शे से नीचे उतरी थी।

आफिस रूम के पास कणा को देखकर सुकुमार आश्चय मे आकर उसकी ओर देखन लगा था।

"तुम्हे क्या हुआ ? भैया, इस तरह ताक क्यो रहे हो ?" कणा को जरा बेचैनी महसूस हुई थी। हो सकता है, उसे मालूम हो चुका हो कि फटी-फटी निगाहो से ताकना ही उसके भैया के मानसिक रोग का लक्षण हो।"

"तुझे ही देख रहा हूँ।" सुकुमार ने कहा था। "देखने मे तू कितनी खूब-सूरत लग रही है।"

भैया की प्रशंसा का कणा ने कोई विरोध नहीं किया था। वह शान्तिपूर्वक अपने भैया की ओर ताक रही थी।

भैया ने कहा था, "मितिर घर का ला-केनरा अड्डा तुझे रोककर नहीं रख सका कणा। वेरी गुड।"

इस बार भी कणा ने कुछ नहीं कहा था।

सुकुमार ने कहा था, "आज तू बड़े सलीके से सजकर आयी है, कणा तेरी चोटी, माथे की बिंदी, आँखों का काजल, गले का हार, ब्लाउज, साड़ी की किनारी—सब कुछ बहुत ही मैच कर रहा है। सब कुछ जैसे 'मेड फार ईच अदर' हो।"

सुकुमार नहीं जानता कि क्या कणा इस तरह सज-सँवरकर भैया को देखने मानसिक चिकित्सालय आयी है। उसके पास जरा भी वक्त नहीं है। भैया को देखकर कणा यहाँ से सीधे पार्क स्ट्रीट के चरणदास के टेलीफोन स्कूल में चली जायेगी। वहाँ कलकत्ता, शिवपुर, लिलुआ, श्रीरामपुर, दत्तपुकुर और हावड़ा से बहुत सारी लड़कियाँ आती हैं। आपस में बेहद प्रतिस्पर्धा की भावना है, जिन्दा रहने के प्रबल तकाजे के कारण ही वहाँ सजने-सँवरने की पुरजोर प्रतियोगिता चलती रहती है।

यह सब बात अन्तर में जमा करके रखने के अलावा कणा के लिए दूसरा उपाय ही क्या था? इसलिए बेवकूफ की तरह भैया की बातें सुनने के सिवा उसके पास और कोई चारा नहीं था।

कणा भैया के चेहरे की ओर ताकती रही। भैया को मानसिक चिकित्सालय का मरीज कौन कह सकता था?

कणा की आँखों में पानी भर आया था। लेकिन यहाँ रोना वर्जित है। डाक्टर मजूमदार ने कहा था, डिप्रेशन का मरीज है, अतः आप लोग डिप्रेस्ड भाव नहीं दिखायें। ऐसा होने से मरीज के स्वस्थ होने में देर लगेगी।" इसीलिए कणा ने चेहरे पर चलमलाती हँसी लाने का अभिनय किया था।

"तुम अच्छा महसूस कर रहे हो?" कणा ने कहा था। "तुम लोग घर पर इस तरह 'डल' माटी की मूरत जैसी क्यों रहती हो? तुम लोग चाहो तो कितनी खूबसूरत हो सकती हो। घर से बाहर निकलती हो तभी तुम लोगों का यह भाव समझ में आता है।"

रुलाई के वेग को किसी तरह दबाकर कणा मुसकरा दी थी।

सुकुमार ने कहा था, "तू इस साड़ी में बड़ी फब रही है कणा। नौकरी मिलने पर पहले महीने की तनख्वाह से तुझे जो कपड़ा खरीद देने की बात मैंने

सोची थी, उस कपड़े से यह कपड़ा हू-बहू मेल खा रहा है। हरलाल के शो-केस मे मैं उस कपडे को देख भी आया था, कणा। सोचा था, उन लोगो से 'रिक्वेस्ट' करूँगा कि उस कपडे का शीशे के केस से हटाकर अन्दर रख दे, मैं बहुत ही जल्द इसे ले जाऊँगा।"

"भैया, मैं उसी कपडे को तो पहने हूँ फिर तुम्हारे लिए दुख की कौन-सी बात है?"

"मुझे दुख हो सकता है क्योकि उसी कपडे को तू पहने है हालाकि मैं लाकर दे नही सका। लेकिन मुझे यहाँ एक बहुत बडी सुविधा हासिल हुई है।"

"कौन-सी सुविधा?"

"यहाँ पता नही क्या-क्या दवा देता है कि मुझे किसी तरह का दुख ही नही होता। दिमाग हमेशा फ्रिज मे रखे दही की मानिन्द ठडा रहता है। लगता ही नही कि वहाँ चाय के पानी की तरह गरम लोहू भी कभी खौल रहा था।"

कणा अपने साथ कुछ फल और मिठाइयाँ ले आयी थी। सुकुमार का भी वह सब खान मे कोई बुरा नही लग रहा था।

कुछ दिन पहले सब कुछ आहिस्ता-आहिस्ता कैसा-कैसा तो होता जा रहा था। बाबूजी का दिमाग यो भी गरम रहता था मगर तब उसकी गर्मी बढ गयी थी, माँ के मुखडे पर घनी अमावस का अँधेरा छा गया था, छोटी बहिन तक सुकुमार की बात नही मानती थी, बाहर से लौटकर चिल्लाने पर भी दस मिनट तक दरवाजा खोलने की नौबत नहीं आती थी। उसके बाद न जाने क्या हुआ कि लोग सुकुमार को ले आये। कौन-कौन उसे यहाँ ले आये, किस तरह ले आये—रिक्शा, बस या टैक्सी से ले आये, सुकुमार को कुछ भी तो याद नही।

इतना ही याद आ रहा है कि उसने बाबूजी के चेहरे को दो-चार बार देखा था। बाबूजी का मिजाज पहले जैसा नही। बिजली की गरम इस्तिरी अचानक ठडी हो गयी थी। बाबूजी मीठे स्वर मे पूछ रहे थे, "कैसे हो मुन्ना?"

यह बात याद आते ही सुकुमार हँसने लगा था। कणा को समझ मे नही आया था कि एकाएक इस हँसी का कौन-सा कारण हो सकता था। पूछा था, उसने "भैया तुम हँस क्यो रहे हो?"

"हँसने का कारण न रहने पर भला सुकुमार मित्तिर हँसेगा ही क्या? हँसी आजकल इतनी सस्ती चीज नही रही, कणा।"

कणा का चेहरा अज्ञात आशका से दयनीय जैसा हो गया। सुकुमार ने कहा, "ऐसा सोचा भी नही जा सकता। बाबूजी ने मुझसे कहा कैसे हो? ऐसा लगा जैसे कान से खजूर के गुड का सन्देश खा रहा होऊँ।"

सुकुमार जरा रुका। "हो सकता है हम लोग खजूर गुड़ के सन्देश का टेस्ट भूल चुकी हो। लेकिन झूठी बात क्यो कहने जाऊँ कणा, मैं अपने फ्रेण्ड सोमनाथ के घर पर कई बार उस तरह का सन्देश खा चुका हूँ। तेरी कसम, बडी ही अच्छी फैमिली है। तुझे साथ ले चलू तो उसकी भाभी बहुत ही आदर-खातिर करे।"

क्या हुआ ? कणा इस तरह चिहुँक क्यो उठी ? उसका चेहरा आग से जली लकडी की हाँडी की तरह काला क्यो पड गया ?

सुकुमार बीमारी की इस हालत में ज्यादा दिमाग नही खपा पाता है। लेकिन उसने अन्दाज लगाया, कणा के सम्मान को चोट लगी है। इस यादवपुर कॉलोनी में जो जितना ही गरीब है उसमे सम्मान की भावना उतनी ही अधिक है। गरीब की लडकी कणा को बहुत दिना से सन्देश खाने को नही मिला है, मगर वह सन्देश खाने सोमनाथ के घर क्यो जायेगी ?

कोई दूसरा वक्त होता तो सुकुमार कणा के सम्मान के लिए इतनी परवाह नही करता। लेकिन अभी वह कणा के चेहरे पर तनिक भी दुख देखना नहीं चाहता। सुकुमार को दुख से भय लगने लगा है। सुकुमार चाहता है, उसके भाई-बहिन, पिता-माता, दोस्त-मित्र, अपने-पराये, दुनिया के जो लोग जहाँ भी हैं—जीवा, खगा, नगा, सभी खूब सुख से रहें, अच्छी तरह रहें।

सुकुमार ने तत्क्षण कहा, तू अन्यथा मत लेना, कणा। सोमनाथ के घर पर सिर्फ सदेश खिलाने के लिए तुझे ले जाने की बात ही पैदा नही होती। उन-लोगो ने तुझे इनवाइट ही कहाँ किया है ?

फिर भी कणा के गुस्से मे कोई कमी नही आयी। उसके चेहरे पर जरा भी मुसकान की छाया नही झलकी। सुकुमार ने ही फिर कहा, "समझ गया, तेरे सम्मान को बेहद ठेस पहुँची है। इनवाइटेड हाने पर भी तू सोमनाथ के यहाँ सन्दश खाने नही जायेगी। क्यो ?

कणा ने अब बैग से रूमाल निकाल मुह पोछ लिया।

उफ ! इत्ती-सी लडकी, मगर साज-सज्जा के कितने उपकरण हैं इसके पास ? सुकुमार की जेब म तो अकसर ही रूमाल नही रहता। और कणा की कमर से साडी की कमर से साडी की किनारी तक मैच करता हुआ एक नीला जनाना रूमाल झाँक रहा है। इसके अलावा वैनिटी बैग से भी एक रूमाल निकालकर कणा ने अपना मुह पाछा है।

"अरे, इतने-इतने रूमालो को लेकर क्या करती है ?" सुकुमार पूछता है।

"छोटा मेक-अप वगैरह करने के लिए है और बडा मुह पोछने के लिए।"

"ऐसी हालत म कम-से-कम और दो रूमाला की जरूरत है ।" सुकुमार हिसाब करने लगा । बस-ट्राम की सीट झाडकर साडी के बचाव के लिए एक और भी रूमाल चाहिए, इसके अलावा सुँघनी लेने की आदत हो ता चौथा रूमाल चाहिए नाक पोछन को ।

लेकिन कणा का मूड स्वाभाविक नही हो रहा था । उसने कितने सुदर ढग से हँसते हुए कहा था, "भैया, तुम कैसे हो ?" उसके बाद फिर न जाने, क्या हो गया ।

सुकुमार अभी अपनी बहिन के चेहरे पर दुख या क्रोध नही देखना चाहता । यही बहिन, यही कणा तो हर राज उसे देखने आती है ।

"कणा आज तू खूऽऽब सुन्दर दीख रही है",सुकुमार ने दुबारा सस्नेह कहा ।

कणा अनमनेपन के साथ बात को पचा गयी ।

सुकुमार को थोडा दुख हुआ । "मैं मेटल हॉस्पिटल का पागल हूँ, मेरी बात की कीमत ही क्या ? मगर कणा तू आहिस्ता-आहिस्ता बेहद एट्रैक्टिव हाती जा रही है । तुझे देखकर कौन उल्लू का पट्ठा कहेगा कि तू टीन की चाल के हाफ-पक्के मकान म रहती है ?

कणा ने जरा भी क्रोध का प्रदर्शन नही किया । पहले तो यह सब बातें कहने से कणा लहक सी उठती थी, लेकिन आजकल उसमे एक नया आत्म-विश्वास पैदा हो गया था । सिलवर टॉनिक ऐसी ही वस्तु हुआ करती है, सुकुमार मन ही मन सोचता है । सुकुमार न सुना है, कणा ने अपने लिए एक नौकरी ढूढ ली है । कणा नौकरी कर रही है ता फिर उसके आत्म-विश्वास मे वृद्धि क्या नही होगी ?

कणा कलाई म बँधी घडी की ओर ताक रही थी । सुकुमार इस कलाई-घडी को पहले-पहल देख रहा था—उन लागो के घर पर तो घडी की कोई गुजाइश ही नही थी । सवेरे वक्त का पता लगाने के लिए बाबूजी सुकुमार के छोटे भाई को पडोस के घर मे ताक झाक करने के लिए भेज देते थे ।

कणा की उपस्थिति सुकुमार को बहुत ही अच्छी लग रही थी । लेकिन कणा इस तरह घडी की ओर क्या ताक रही है ?

"इतनी व्यस्त क्यो दीख रही हो ?" सुकुमार ने जानना चाहा था ।

वाह, ड्यूटी नही करनी है ? न जाऊँगी तो कैसे चलेगा ?" सच्ची बात कहने म भी कणा मे इस तरह का असमजस क्यो दीख रहा है ? सुकुमार मन ही मन सोचने लगा, पर उसने प्रकट मे कुछ भी कहा नहीं । क्या मालूम, कणा फिर गुस्सा हो जाये ।

कणा के चले जाने के बाद भी सोचने पर सुकुमार को कोई कूल-किनारा नजर नही आता।

हो सकता है, भाई की असमर्थता की बात उसे याद आ गयी हो। सोचा होगा, चलने की बात भैया को तकलीफ पहुँचायेगी।

जाने के पहले सुकुमार ने कहा था, "कणा, तुम लोग मुझे यहा से ले चलो। मुझे कुछ भी तो नही हुआ है।"

कणा बिना कुछ उत्तर दिये चुपचाप बैठी रही। जिस कणा को सुकुमार इतना डाँटता-फटकारता है वही अब उसकी अभिभाविका बन बैठी थी। नौकरी आदमी को कितना आगे बढा देती है! रोजगार के बल पर जूनियर कणा का प्रमोशन अनायास ही सीनियर कणा मे हो गया था।

बहिन के चेहरे की ओर ताकते हुए सुकुमार ने कहा था, "मैं जबान देता हूँ, अब मैं जेनरल नालेज का कोश्चन पूछ-पूछ कर मुहल्ले के किसी आदमी को परेशान नही करूँगा।"

कणा ने जवाब दिया, "डाक्टर से पूछे लेती हूँ।"

"वास्तव मे मुझे कोई बीमारी नही है, कणा। नौकरी न मिलने पर हमारी क्या हालत हो सकती है, इसी के बारे मे मैं अकसर बेहद चिन्ता करता था।"

"अब वह सब मत सोचो, भैया। कणा पैसा कमाकर ला रही है।"

"सचमुच कितने आश्चय की बात है। मैंने सोचा था, बाबूजी की नौकरी की मियाद पूरी हो गयी, लेकिन मुझे नौकरी नही मिली। ऐसी स्थिति म गृहस्थी रसातल म चली जायेगी। तरे बारे मे तो एकबार भी मन मे विचार तक नही आया था। तू एकाएक इस तरह आगे बढकर गृहस्थी का जूआ अपने कधे पर उठा लेगी, यह बात इस दिमाग म कभी नही आयी थी।'

सुकुमार ने देखा, इन बातो से कणा को बेचैनी का अहसास हो रहा था, यद्यपि सुकुमार को लगा था, कि अपनी प्रशसा सुनकर शायद कणा खुश होगी। पता नही, लडकियाँ शायद इसी तरह की होती हैं। शायद लडको से उनका इसी बिन्दु पर अलगाव है। पिता की गृहस्थी म लाचारी की हालत मे अन्न-दायिनी की आपातकालीन भूमिका अदा करती है लेकिन किसी भी लडकी को इसमे सुख नही मिलता।

कणा अब अस्पताल से जाने लगी थी। लेकिन सुकुमार ने उसे फिर बुलाया।

सुकुमार अपना कौतूहल दबाकर रख नही सका। "कणा, तुझे कैसे नौकरी मिल गयी? इम्तिहान म तुझसे कौन-कौन-सा कोश्चन पूछा गया था? इस

बाजार म आसानी स नौकरी का इन्तजाम कर लिया सचमुच, इसमे तेरा क्रेडिट है।"

"भैया !" कणा अस्फुट आर्त्तनाद कर उठती है। शब्द उसके कलेजे मे तीर की तरह घुस रहे थे। लेकिन सुकुमार के लिए यह समझना सम्भव नही था।

कणा के इस तरह अत्यधिक विचलित होने का कारण सुकुमार की समझ मे नहीं आ रहा था।

सुकुमार न कहा, "तुमसे मुझे कोई ईर्ष्या नही हो रही है, कणा। नौकरी के मालिक जो चाहते होंगे उन्हे तून वह जरूर ही दिया हागा। इसीलिए तुझे नौकरी मिल गयी। जो लोग दे नही पात है, उन्हे नही मिलती।"

कणा यह सब सुनना ही नही चाहती थी। इसलिए वह झटके से मुह घुमाकर अस्पताल से बाहर निकल गयी। भैया की इन्हीं दो चार बातो से उसका ब्लाउज पसीने से तर हो गया था। माँ-बाप, भाई-बहिन की गृहस्थी के बचाव के लिए, मानसिक चिकित्सालय मे भैया का इलाज करान लिए, रुपय का इन्तजाम करने की कोशिश म कणा को अचानक कहाँ कितन नीचे तक उतर जाना पडा है, यह बात अब भी किसी को नही मालूम थी। दिन-दिन मिथ्या अभिनय करते-करते कणा के स्नायु दुर्बल होते जा रहे थे। कही उन्हें मालूम हो जाये कि माहवार तनख्वाह लान वाली कणा की कोई नौकरी नही है तो फिर ?

तीसरे पहर और शाम का यह वक्त कणा के लिए बडा ही कीमती है। पाक स्ट्रीट के टेलीफान ऑपरेटिंग स्कूल के चरणदास न उस दिन भी शिकायत की थी, "दीदीजी, आप निश्चित समय पर क्यो नही आती हैं ? एपॉइंटमेंट फेल करने पर यहाँ की पार्टियाँ ऊबने लगती हैं। यह साहबी मुहल्ला है। यहा वक्त बडा ही कीमती होता है दीदीजी, किसी भी मामले मे कोई आदमी देरी बरदाश्त नही कर पाता है।"

कणा ने शुरू मे चरणदास की बात पर ध्यान नही दिया था। लेकिन कल चरणदास न उसे सावधान कर दिया था, 'कॉम्पिटिशन का मार्केट है, रोजी-रोटी छुडाने पर कलकत्ता शहर मे लडकियो की कोई कमी नही होगी। इस ऑपरेटिंग स्कूल मे नाम लिखाने के लिए ही कितनी न जाने लडकियाँ करमचन्दानी साहब के पास गिडगिडाती रहती हैं।"

चरणदास को मालूम है, गृहस्थ बगाली लडकियो के लिए यह सुनहला मौका है। घर के लोगो को मालूम रहता है कि लडकी नौकरी कर रही है। मुह मे कालिख भी नही लगी साथ ही साथ रोजगार का इन्तजाम भी हो गया। यही सोचकर वे खुश रहते हैं।

चरणदास कहता है, "गृहस्थ घर की लडकियो की सहूलियत के खयाल से ही हम रात के नौ बजे के बाद स्कूल बन्द कर देते हैं। इससे हो सकता है, हमे पैसे का नुकसान हो, मगर हमारी लडकियो की आबरू बची रहती है, यही हमारे लिए बहुत है।"

मानसिक चिकित्सालय से निकलकर यह सब बाते सोचने पर कणा का शरीर एक अजानी आशका के कारण पसीने से भीग गया है। आज भैया के साथ उसे और कुछ देर तक रहने की इच्छा थी। लेकिन उपाय नही था। पार्क स्ट्रीट का कीमती वक्त जो बीता जा रहा था।

स्टेट बस के इतजार मे सडक पर खडी होने के कारण कणा और भी ज्यादा नर्वस हो गयी। अचानक जैसे उस भैया की आवाज सुनायी पड रही थी। भैया जानना चाहता था, "तू क्या काम करती है?"

कणा को लगा, भैया के सामने झूठ बोलते हुए उसके मुह मे ताला लग गया था—वह किसी भी हालत मे जबान नही खोल पा रही थी।

फिर भी कोई उपाय नही था। जबान चाहे न खुले मगर समय के सर्वनाशक बधन से कणा जैसी लडकियाँ किसी भी हालत मे छुटकारा नहीं पा सकती। कलकत्ते के जनारण्य मे शाम उतर आयी थी, मासखोर जानवरो के क्षुधार्त्त गजन से पार्कस्ट्रीट अब पूर्णत मुखरित हो उठी थी।

दूर एक बस दिखायी पडी। वही बस कणा को इस शाम जहा बहाकर ले जायेगी वहा सबका जाना कोई जरूरी नही है। सामनाथ और नटवर मित्तिर के साथ हम एकबार उस नरक के दर्शन कर ही आये हैं। उसी अँधेरे टेलीफोन ऑपरेटिंग स्कूल के गह्वर मे हर रोज की नाईं आज भी कलकत्ता और मुफस्सिल की कितनी असहाय लडकियाँ अपनी बर्बादी का बुलावा भेजेंगी, सुप्रतिष्ठित धनाढ्य नागरिको के अलिखित कलक के कक्काल-स्तूपो के अतिरिक्त और कही उसका हिसाब-किताब नही रहेगा।

चरणदास के ऑपरेटिंग स्कूल मे भले ही कुछ भी हो रहा हो, एक बार और जोधपुर पार्क के बैनर्जी भवन मे घूम-फिर आना बुरा नही रहेगा।

•

दुर्गापुर मे कई रातें गुजारने के बाद बुलबुल आज तीसरे पहर फिर से जोधपुर पार्क लौट आयी है। कमला भाभी ने सस्नेह बुलबुल से कहा था, "इतनी

जल्दी क्यो लौट आयी ? और कुछ दिन वहाँ नही गुजार सकती थी। औरतो के लिए यही तो आजादी का वक्त होता है। शादी हो चुकी है और बाल बच्चो को पढाने-लिखाने की जिम्मेदारी भी नही है।"

बुलबुल ने जवाब दिया था, "सिर्फ आपसे ही सच्ची बात बता रही हूँ, दीदी। आयी नही, आना पडा। कपनी के गेस्ट-हाउस मे लगातार सात दिनो से अधिक रहने से पूरा खच उन्हे अपनी जेब से भरना होता न ?"

"कितना पैसा लगता भला ? देना पडता तो दे देते। उसके चलते स्वच्छा से विरह की यातना भोगना यह कहाँ की अकलमन्दी है ?' कमला भाभी देवर और देवरानी की हिसाबी अक्ल की तारीफ नही कर सकी।

बुलबुल बोली, "कपनी के खच से दोनो जनो को दुर्गापुर से कलकत्ता बाई रोड से आने का एक सुयोग भी मिल गया। उन्हे दमदम एयरपोर्ट पर उतार आयी। दिल्ली ऑफिस मे रिपोर्ट पेश करने जा रहे थे। और मैं यहाँ चली आयी। वक्त रहता तो वह आपसे मिलकर जाते, लेकिन रास्ते मे ही इतना वक्त बर्बाद हो गया कि क्या कहूँ।"

"जिसके लिए वक्त है, वही साथ रहे तो वक्त कट ही जाता है।' देवरानी से मजाक करने मे कमला भाभी को कोई झिझक नही हुई।

बुलबुल ने बडे भैया के बारे मे पूछताछ की। भैया फिर दौरे पर निकले हैं, यह सुनकर बुलबुल बोली, "आप सुनहले अवसरो की अवहेलना कर जाती हैं, दीदी। आप भैया के साथ क्यो नही जाती ? देखिएगा, बहुत ही अच्छा लगेगा और धीरे-धीरे पूरे मुल्क का देखना भी हो जायेगा।"

कमला भाभी फिर भी उत्साह या उत्सुकता नही दिखा पाती। बुलबुल बोली, "आप शायद खच की चिन्ता कर रही हैं। लेकिन देखिएगा, कोई खच नही लगेगा। रिजिनल मैनजर की बीवी साथ निकलेगी तो एक ही खच से दोनो का काम निकल जायेगा।"

'मैं पैसे की बात नही सोच रही हूँ बहिन," कमला भाभी ने उत्तर दिया। कमला पैसे की बात नही सोचती, यह बात इस घर के सभी को जान लेनी चाहिए। बुलबुल भी जानती हैं, सिफ मजाक करने के खयाल से इस प्रसंग की चर्चा की थी।

"कभी-कभी पति के साथ बाहर निकलने की इच्छा न होती हो, ऐसी बात नही। लेकिन निकलना चाहने से भी निकल नही पाती हूँ। सोम बेचारे को अकेले छोडकर कहाँ जाऊँ ?"

सोम की चर्चा छिडते ही बुलबुल सतर्क हो गयी। "अब उसका क्या हाल-चाल है ?" बुलबुल पूछती है।

"लगता है, मन लगाकर व्यवसाय कर रहा है। किसी-किसी दिन सवेरे ही निकल जाता है और आधी रात मे वापस आता है।"

"और आपका चुपचाप दरवाजा खोलने के लिए बैठे रहना पडता है।" यह बात बुलबुल के मनोनुकूल नही है।

"मैं होती तो सदर दरवाजे पर गोदरेज नाइट लैच लगाकर रखती। जेब मे चाबी रखो, जब जिसकी मर्जी हो, पॉकेट की चाबी से दरवाजा खोलकर अन्दर आओ। कुण्डी खटखटाकर छिटकनी खुलवाने का झमेला ही न रहेगा।"

बुलबुल को पता नही कि कुछ दिन पहले सोम ने स्वय ही दरवाजे पर इस तरह की व्यवस्था कर ली थी। लेकिन इसका नतीजा कुछ भी नही निकला। कमला भाभी अन्दर से लैच लाक करके रखती हैं, नतीजा यह हुआ है कि बाहर से चाबी काम ही नहीं करती। घण्टी बजानी ही पडती है और तब कमला भाभी स्वय आकर दरवाजा खोल देती हैं।

यह व्यवस्था कमला भाभी के मनोनुकूल नही थी। बुलबुल से उन्होंने कहा, "मा जिन्दा रहती तो क्या चाबी वाली इस व्यवस्था से कभी सहमत होती ? दिन-भर काम-काज करने के बाद आदमी घर वापस आयेगा और औरतें दरवाजा तक नही खोल देंगी ? फिर घर और होटल मे फर्क ही क्या रहेगा ?"

बुलबुल ने पूछा, "सोम की शादी के बारे मे क्या हुआ ? व्यवसाय कैसा चल रहा है ?"

कमला भाभी ने कहा, "व्यवसाय कुल मिलाकर बुरा नही है। शुरू मे एक सेकेंडहैण्ड स्कूटर खरीदा था। कल एक नया यातायात-वाहन आया है। मैं रुपया देना चाहती थी लेकिन सोम ने हँसकर कहा, "मुझे अपने पैरो पर खडा होने दो भाभीजी।"

बुलबुल ने राय जाहिर की, "इसीलिए व्यवसाय का इतना नाम है। किसी और चीज म इतनी जल्दी भाग्य नही पलटता। आप देखिएगा, सोम जल्दी ही अपने दोनो भाइयो से अधिक उन्नति कर जायेगा।"

यह सुनकर कमला भाभी बहुत खुश हुईं। "हे देवता, ऐसा ही हो! सोम के लिए बाबूजी सबसे अधिक चिन्ता मे रहते थे। जब वह बेकारी की हालत मे महीनो तक घर म चुपचाप पडा रहता था तो बाबूजी तमाम आत्म विश्वास खो बैठते थे कहते थे बहू, लगता है, सोम का कुछ भी नही हो पायेगा। इसी तरह घर पर बैठे-बैठे जिन्दगी बीत जायेगी।"

कमला को याद आया, इसके बाद बाबूजी चुप हो जाते थे। माँ की तस्वीर की ओर ताकते हुए कहते थे, "वह जरूर ही सोच रही होगी कि गलती मेरी ही है। बाप के आलस के कारण ही लडके का नौकरी नही मिल रही है। लेकिन उसे कैसे समझाऊँ कि जमाना बदल गया है। इस जमाने मे शिक्षित मध्य वित्त वर्ग जैसे उजड जायेगा—उसका अस्तित्व भी नही रहेगा।"

कमला कोई राय जाहिर नही करती थी। मुह पर ताला लगाकर ससुर की बात सुन लेती थी।

बहू के चेहरे की ओर ताकते हुए असहाय द्वैपायन बैनर्जी ने कहा था, "शायद ऐसा भी हा सकता कि सोमनाथ को कभी नौकरी न मिले। मैं हमेशा तो रहूँगा नही। बहू, तुम्हारे सिवा और किससे कहने जाऊँ? सोम बडा ही अभिमानी लडका है। देखना उसे दो रोटी खाने को मिल जाये। चाहे वह कुछ भी करे, तुम उसे त्याग मत देना।"

कमला ने देखा था, ससुर की आखे आर्द्र हो गयी है। बाबूजी की वह हालत देख कमला को भी रोने का मन करने लगता था। ससुर को सात्वना देने की बात उसे याद नही रहती थी।

दीये की रोशनी बुझने के पहले जैसे भभक उठती है, द्वैपायन पूरी तरह निराश होने के पहले अधीर हो उठे थे। दयनीय स्वर म कहा था, "बहू, अब भी समय है। सोम को जी-जान से कोशिश करने को कहो। उसे मन लगाकर परीक्षा देने को कहो। परीक्षा देने के बाद लोगा को नौकरी मिल ही जाती है।"

द्वैपायन को थोडा-बहुत पसीना आ गया था। उसके बाद बोले थे, "तुम्हारे अलावा और कोई उस पर दबाव नही डाल सकता है, बहू।'

ऐसी बात नही कि दबाव डालने की बात कमला के मन मे न आयी हो। तय किया था, देवर से कहेगी, "सोम, तुम और मन लगाकर पढो। नौकरी की परीक्षाओ के लिए [इस तरह तैयारी करो कि दुनिया का कोई आदमी तुम्हारे सामने टिक ही न सके। पढाई-लिखाई मे तल्लीन हो जाओ, सोम।" लेकिन उसी समय कमला का सुकुमार के बारे मे पता चला। पढते-पढते, सामान्य ज्ञान के प्रश्नो को रटते-रटते, बेचारा एकदम पागल हो गया था।

कमला ने अपने मन की आखा के सामने क्षण-भर के लिए अपने देवर का वही रूप देखा था। न सोने की वजह से आँखे अडहुल फूल के समान लाल हा गयी हैं, उद्विग्नता के कारण चेहरा उतर गया है और सोम बेढब जैसा दीख रहा है। सोम इसी हालत मे कमला के कमरे के अन्दर जाकर कह रहा है

सर्वनाश हो गया, भाभी। मुझे किसी चीज का स्मरण नही रहा। मैंने बी० ए० पास किया है या नही, याद नही आ रहा। तुम बताओ मैं क्या करूँ ?"

कमला भाभी का लगा था, सोमनाथ के पीछे खडे होकर सुकुमार उसकी बाते सुन रहा हो और हँस रहा हा। वह चिहुँक उठी थी। कमरे से निकलकर सीधे सोम के कमरे म आकर देखा था। साम गहरी नीद म डूबा हुआ था। कमरे की रोशनी जल रही थी और कुछ किताबें बिखरी हुई थी। कमला भाभी ने उस समय सोम को तग नही किया था। बिस्तर से किताबो को हटाकर कमरे की राशनी बुझा दी थी और चुपचाप देवर के कमरे से बाहर निकल आयी थी।

यह सब मात्र उस दिन की ही स्मृति है। लेकिन इसी बीच लग रहा है जैसे बहुत दिन पहले की बात हो। बुलबुल की बात से कमला भाभी की चेतना वापस आयी। "आप ऐसा क्या सोच रही हैं ? '

कमला भाभी ने मीठी हँसी हँसकर लज्जा ढँकने की कोशिश की। बोली, सोचा था, "आर्थिक झमेला मिटते ही सोम के बारे मे काई चिन्ता नही रह जायेगी। लेकिन ऐसा कहा हो पाया ?"

तभी बाहर स्कूटर की आवाज हुई। स्कूटर ठेलता हुआ सोमनाथ घर के अन्दर आया।

कमला भाभी के निर्देशानुसार बुलबुल थोडी देर बाद ही हाथ मे गरम चाय लिए सोमनाथ के कमरे मे गयी।

"कब आयी ?" भूतपूर्व कालज-बाधवी से सोम न सहज ढग से ही बातचीत की।

बुलबुल बाली, "बिजनस मे पैसा कमान से ही लोग शायद मक्खीचूस हो जाते हैं ?"

"क्यो ?" सोम पूछता है।

"कॉलेज म तुम कितने भडकदार कपडे पहनते थे। अब देख रही हूँ, अपने कपडे-लत्तो की ओर तुम्हारा ध्यान ही नही है।"

सोम मुसकरा दिया।

बुलबुल बोली, "सोम, तुम्हे क्या हा गया है ? हर वक्त बिजनेस की चिन्ता मे ही डूबे रहत हा। न तो सिनेमा जाते हो, न गपशप करते हो और न ही अड्डेबाजी करते हो।

बुलबुल ने झूठ नही कहा था । किन्तु इन प्रश्नो का सामना करे, सोमनाथ की ऐसी हालत नही थी । बुलबुल को बहस की लडाई मे पछाड दे, सोमनाथ मे अब वह ताकत भी नही थी । वह उसे नजर-अन्दाज करना चाहता था ।

बुलबुल बोली, "तुम्हारा हाल-चाल एकदम ठीक नही लग रहा है । सोचती हूँ कि दीदी से कहूँ तुम पर नजर रखा करे ।"

नजर रखने का सन्दर्भ आते ही सोमनाथ जरा सतर्क हो गया था । बुल-बुल बोली, "बात क्या है ? तुम तो कभी इस तरह उदास नही रहा करते थे ।"

बुलबुल ने तय किया था, इसके बाद ही वह तपती की चर्चा करेगी । तपती अभी कहाँ है, उसका मौजूदा हाल-चाल क्या है, यह सब पूछकर रहेगी । कहेगी तपती बडी ही भाग्यशालिनी है । जिस लडकी ने हिम्मत बाँधकर सोमनाथ पर भरोसा किया था, वह छली नही गयी है ।

लेकिन बुलबुल को कुछ कहने का अवसर ही नही मिला । सोमनाथ ने कहा, "अन्यथा नही लेना बुलबुल । मेरे सर मे बेहद दर्द है । एक अदद टैबलेट खाकर मैं अभी एक घण्टे तक लेटा रहना चाहता हूँ । प्लीज ।"

इस 'प्लीज' शब्द ने ही जैसे बुलबुल को आघात पहुँचाया । बुलबुल को लगा, सोमनाथ उसे सीधे कमरे से बाहर जाने को कह रहा है ।

बुलबुल जरा अभिमान के साथ ही कमला के पास लौट आयी । बोली, "दिमाग अभी ठिकाने नही है । प्यार वगैरह की चर्चा छेडते ही सारिडान माँग बैठा । बात क्या है ? आपको कुछ मालूम है ?"

"मुझे तो बहिन, कुछ भी नही मालूम । आजकल सोम इसी तरह आते ही अपने कमरे मे चुपचाप पडा रहता है । रसोई हो जाती है तो बुलाकर खिला देती हूँ । खाने के वक्त भी कोई खास बातचीत नही करता । दोस्त-मित्र भी नही आते हैं ।"

बुलबुल बोली, "तपती के बारे मे क्या हुआ ? उसी को लेकर तो कोई बखेडा खडा नही हो गया है ?"

बुलबुल ने खुद ही उत्तर दिया, 'बखेडा खडा होने की कोई बात तो है नही । हम लोगो की कॉमन फ्रेण्ड सुदीप्ता से तपती की काफी घनिष्ठता है । कुछ महीने पहले सुनने को मिला था, तपती ने उससे कहा है कि वह सोम से शादी करना चाहती है । जो भी थोडी-बहुत असुविधा थी वह भी अब खत्म हो गयी । एकदम बेकार के गले मे वरमाला डालकर लोगो को हँसने का मौका देने की बात भी अब नही रही ।"

"तपती यहा कहाँ है ?" कमला भाभी ने जवाब दिया । "वह शायद फारेन

गयी हुई है।" तपती ने अमरीका से दो-तीन पत्र भेजे थे—उन्हें कमला भाभी ही लेटर-बॉक्स से निकालकर सोम की मेज पर रख आयी थी।

उसके बाद वाली बात बुलबुल से कहने की कमला भाभी की हिम्मत नही हुई। कुछ दिन पहले सीधे कमला भाभी को ही तपती ने पत्र भेजा था। वह जानना चाहती थी कि सोम का क्या हुआ ? लगातार कई चिट्ठियाँ भेजने के बावजूद उसे उत्तर क्यो नहीं मिला ?

अब भी कमला भाभी उसके बाद वाले दृश्य को अपनी आँखो के सामने देख रही थी। बुलबुल तब मुहल्ले मे घूमने-फिरने के लिए निकल गयी थी। इसी मुहल्ले मे उसकी बहुत सी सहेलियाँ भी थी।

कमला भाभी को याद आया, तपती के पत्र को उन्होने बार-बार पढा था। उसके बाद सीधे सोम के कमरे के भीतर चली गयी थी "तपती" इस नाम का उच्चारण करके ही कमला भाभी ठिठककर खडी हो गयी थी।

नाम सुनते ही सोमनाथ की आँखे सीधे भाभी की ओर चली गयी थी। "तपती शायद बाहर गयी हुई है ? ' कमला भाभी ने सवाल किया था।

"यह तो कई महीने पहले की बात है, भाभी।"

सोमनाथ का उत्तर कमला भाभी को पसन्द नही आया था, सोमनाथ को भी इसका अनुमान था।

"बात-बात मे दूर चले जाने का रिवाज चल पडा है।" कमला भाभी तपती के इस तरह चले जाने से खुश नही थी।

कमला भाभी को सारी बाते मालूम नही। अगर उन्हें सुनने को मिले कि स्कालरशिप लेकर तपती के विदेश चले जाने के पीछे सोमनाथ के ही समर्थन और उत्साह का हाथ था तो कमला भाभी शायद बहुत ही चिढ जाती। सोमनाथ ने एक तरह से दबाव डालकर ही तपती को विदेश भेज दिया था।

उसके बाद नियमित तौर पर पत्र आता रहा। इस बात से कमला भाभी अनजान नही।

"तपती को तुम पत्र नही लिखते ?" कमला भाभी ने गभीरता के साथ पूछा था। वह सोमनाथ की भत्सना नही करना चाहती। लेकिन उनके स्वर से तपती के लिए दुख और सवेदना टपक पडी।

"विदेश मे जाने से आदमी का मन बहुत बेचैन हो उठता है। विदेश मे रहने वाले पत्र के उत्तर की प्रत्याशा करते हैं।

"लगता है, आपसे किसी ने कुछ कहा है।" सोमनाथ तनिक घबरा उठता है।

"तुम्हारा उत्तर न पाकर बेचारी ने आखिरकार मुझे ही खत लिखा है।" कमला भाभी ने कोई बात छिपाकर नही रखी।

सोम ने एक क्षण कुछ सोचा, उसके बाद कहा, "मैंने उसे उत्तर भेज दिया है, भाभी। अब वह आपको परेशान नही करेगी।"

कमला भाभी ने इत्मीनान की साँस लेते हुए जाने के पहले कहा, "मैं होती तो उसे लिख देती कि अब वक्त बर्बाद न कर और वापस चली आ।"

सोमनाथ कुछ उत्तर देने का साहस नही कर सका। बहुत सोचने-विचारने के बाद उसने तपती को जो कुछ लिखा है वह अगर कमला भाभी को मालूम हो जाये तो अभी तुरन्त उनका चेहरा बुझ जायेगा। हो सकता है चिंता के कारण उन्हें रात मे नीद ही न आये।

सोमनाथ को एक बार तपती के चेहरे की याद आयी। "अब तक तुम्हें मेरा खत अवश्य ही मिल चुका होगा, तपती। इस खत को पाने के बाद तुम अवश्य ही मेरी सूचना प्राप्त करने के लिए जोधपुर पार्क के किसी व्यक्ति को कभी खत नही लिखोगी।"

मुहल्ले मे घूमने-फिरने का कार्यक्रम अधूरा रखकर ही बुलबुल घर लौट आयी। कमला उदास हो खुली खिड़की की ओर ताक रही थी।

"सोम आपको बहुत तंग करता है न, दीदी?" बुलबुल कमला भाभी का दुख समझने की कोशिश कर रही थी।

कमला भाभी ने कोई जवाब नही दिया। बुलबुल ही फिर बोली, "आप उसे उतना लाड-प्यार क्यो करती हैं? अब वह उम्रदार हो चुका है, यह बात भी भूल मत जाइये।

कमला भाभी बोली, "उसे क्या यो ही लाड-प्यार करती हूँ। जिसकी माँ की मौत कम उम्र मे हो गयी हो, जिसके पिताजी जीवित नही हैं, उसके बारे मे किसी न किसी को तो सोचना ही होगा।"

बुलबुल स्तब्ध रह गयी। कमला भाभी ने मन के दुख के कारण कहा, "क्या हो गया! प्रथम आषाढ को सोम बिजनेस की बडी खबर लेकर घर आया, उसके बाद से ही सिलसिला जैसे बिखर-सा गया। कभी-कभी मुझे डर लगता है, जो युवक उस दिन व्यवसाय करने निकला था वही फिर घर लौट-कर ही नही आया। ऊपर जो युवक अभी चुपचाप बैठा है वह जैसे कोई दूसरा ही आदमी है।"

बुलबुल ने देखा, दुश्चिन्ता और उद्विग्नता से कमला का चेहरा काला पड गया था।

कणा ने अपने वचन की रक्षा की थी। डॉक्टर से कहकर सुकुमार को मानसिक चिकित्सालय से बाहर निकाल लायी थी।

कणा जैसी लडकी वास्तव मे मिलना मुश्किल है। आज बिस्तर पर लेटे-लेटे सुकुमार अपनी स्वतन्त्रता के अध्याय के कुछेक दिनों का लेखा-जोखा कर रहा था। अभी हाथ म काम-काज नही है, इसलिए बिस्तर पर लेटे-लेटे आकाश पाताल की परिक्रमा करने म कोई बुरा नही लगता।

अस्पताल से निकल रिक्शे पर बैठते ही कणा के प्रति सुकुमार के मन मे गहरा प्यार उमड आया था। उसी समय मे उसे बडा ही अच्छा लग रहा था। बहुत दिनो तक बन्दी की हालत मे पडे रहने के बाद मुक्ति की साँस लेने का मौका जो मिला था। सुकुमार की देह और मन एक अनास्वादित आनन्द से भर उठे थे।

मानसिक चिकित्सालय का हिसाब-किताब चुकाने के बाद रिक्शे पर बैठन के समय ही भैया का यह प्रसन्न-भाव कणा के ध्यान म आया था।

"तुम्हें क्या हुआ ?" कणा ने पूछा था।

"तुमसे सही बात बताऊँ ? कणा इस क्षण मैं मन की कोई बात दबाकर नही रख पा रहा हूँ।"

"जो मर्जी हो, कहो।' कणा ने भैया को उत्साहित किया था। बहुत दिनो के बाद भैया का इस मन स्थिति मे देखकर कणा का हृदय भी आनन्द से परिपूर्ण हो उठा था।

"कणा, अब तू कणिका नही है—तू सचमुच ही सोने की एक तलैया है। वजह-बेवजह तुझे छुटपन म डाँटा-फटकारा है, इसके लिए मुझे बहुत कष्ट हो रहा है। तूने वह सब याद तो नही रखा है न, कणा ?" सुकुमार आज बहिन के समक्ष अपने को समर्पित करना चाहता है।

"यह सब बात रहने दो। भैया, अभी तुम घर चलो। मा सबेरे से ही तुम्हारा इन्तजार कर रही हैं।'

इस बात पर उसे पूरे तौर पर विश्वास नही हो रहा था। सुकुमार का उत्साह जरा ढीला पडा।

"मेरे लिए भी कोई कही इन्तजार करता है ? बेकारी की हालत म कब घर के अन्दर जाता था, कब बाहर निकल जाता था, इस पर माँ तो कभी माथा पच्ची नही करती थी। कभी-कभी मैं सोचता था, अगर मुझे कभी बहुत

देर हो जाय, यहाँ तक कि अगर मैं घर वापस ही न आऊँ तो भी कोई इस बात का ख्याल नहीं करेगा।"

"उफ् भैया," कणा ने सुकुमार को संयत करने की कोशिश की थी। "तुम सिर्फ अपनी ही बात सोचते हो, एक बार माँ-बाबूजी के बारे में भी तो सोचकर देखो। इतनी बड़ी गृहस्थी, इतनी-इतनी जिम्मेदारियाँ, इतना कम पैसा—ऐसी हालत में आदमी का दिमाग ठीक रह सकता है भला ?"

"कणा, तू तो बिलकुल बदल गयी है।" सुकुमार अपने मनोभाव को दबाकर नहीं रख सकता। वह बहिन के चेहरे की ओर ध्यान से देखते हुए कहता है। "कणा, तू भी इतना सोचती है ? पहले तो सिर्फ अपना रूज, फेस पाउडर लिपस्टिक और नेल पालिश लेकर ही व्यस्तता में डूबी रहती थी। मैं सोचता था, दुनिया के किसी भी व्यक्ति के लिए कणा को कोई फिक्र नहीं है। हालाँकि "

कणा सचमुच ही अब पहले की कणा नहीं थी। किसी और वक्त भैया की जबान से यह सब बात सुनती तो अपना मुँह घुमा लेती। उसके बाद फन काढ़कर चोट करती, रोजगार तो कुछ करते नहीं, उस पर भी यह शेखी ! नौकरी का इन्तजाम करने की सामर्थ्य तो है नहीं लेकिन बात-बात में बहिन की आलोचना जरूर करेंगे।"

रिक्शे पर बैठ घर लौटने के रास्ते में कणा को आज जरा भी गुस्सा नहीं आया। उसने हँसकर भैया से कहा, "तुम्हें जो कुछ कहना है, कह डालो।'

सुकुमार ने शान्त स्वर में कहा, "नौका जब डूबने-डूबने पर थी तो तुमने लिपस्टिक फेंक गृहस्थी की पतवार सँभाल ली। और जिसे जिम्मेदारी उठानी चाहिए थी वही मैं अब भी बेकार हाउस-ईटर, एफ० बी० सी० बनकर पड़ा हुआ हूँ।"

"वह सब बात मत सोचो, भैया। तुम्हारे लिए भी किसी-न-किसी काम का इन्तजाम हो जायेगा। देखूँ, कहाँ तक क्या कर पाती हूँ।" कणा अपने भैया को भी उम्मीद की रोशनी दिखा रही है।"

सुकुमार को इन बातों पर यकीन नहीं हो रहा था। "तू इन्तजाम कर देगी ? सचमुच, दिन-दिन कैसी हालत होती जा रही है। हमारे मुल्क की लड़कियाँ सचमुच ही अब मर्दों से आगे बढ़ती जा रही हैं।"

रिक्शा गली-कूचों से होता हुआ भागा आ रहा था। कणा के मुँह में अब

कोई शब्द नहीं था।

बहिन की ओर गरदन घुमाकर सुकुमार ने पूछा, "दफ्तर मे तेरा क्या बहुत बोल-बाला है ? सब कोई क्या तेरी ही बात मानते हैं ?"

कणा सिर्फ मुसकरा दी। कणा आज भी इस तीसरे पहर झलमलाते वस्त्रों मे है। भैया को घर पर उतारने के बाद सजने-सँवरने के लिए एक क्षण का भी समय नहीं मिलेगा। हालांकि पाक स्ट्रीट के दलाल चरणदास ने स्पष्ट तौर पर कह दिया है, जरा भड़कदार ड्रेस पहन पाँच के पहले ही आ जाइएगा, दीदीजी। आज बहुत ही अच्छी पार्टी दूगा। मिस्टर बागड़िया पाँच बजे दफ्तर से निकलकर पाँच बजकर आठ मिनट के दरमियान ही स्कूल आ धमकेंगे।"

"अरी कणा, ऑफिस मे जब तेरा इतना बोलबाला है तो फिर अपनी ड्यूटी का टाइम क्या नहीं बदलवा लेती ? रोज-रोज बेवक्त आफिस जाना !"

भैया की बात सुन कणा के जिस्म का अन्दरूनी हिस्सा तक जैसे ठण्डा पड़ता जा रहा था।

सुकुमार ने पूछा, "तुझे क्या हुआ ? इतना क्या सोच रही है ? आफिस का वक्त बीता जा रहा है, इसीलिए चिन्ता कर रही है क्या ?

"नहीं। इस वक्त का आफिस रहने से बहुत कुछ सुविधा भी है। लौटने के समय बसो मे कोई खास भीड़ भी नहीं रहती।" कणा खुद महसूस कर रही है, उसकी बातें विश्वास के योग्य नहीं थीं।

सुकुमार अभी कणा से कुछ भी नहीं कह रहा था। लेकिन मन ही मन सोच रहा था, कणा बड़ी ही शरमीली है। ऑफिस मे सभवत अपनी असुविधा की बात वह नहीं पाती। कभी सुकुमार स्वय वहाँ जायेगा और साहब से मुलाकात कर ड्यूटी का वक्त बदलवा देगा।

सुकुमार की तबीयत मे शायद अब भी पूरी तरह सुधार नहीं आया था। क्योंकि कोई जैसे अचानक उसके अदर स धक्का मारता है—"शर्म नहीं लगती ? बहिन रोजगार कर रही है और तुम सुकुमार मित्तिर पागल बनकर अस्पताल म बैठे-बैठे रोटी तोड़ रहे थे।"

"कणा," सुकुमार गभीर स्वर म पुकारता है।

"भैया, तुम्हें क्या हुआ ? इस तरह गभीर क्या हो गये ?' कणा उद्विग्न हो उठी थी।

सुकुमार के कठस्वर म लज्जा का पुट था। वह जैसे माफी माँग रहा था।

"कणा, मैं जरा सयत हो जाऊँ। किसी काम-काज मे लग जाऊँ फिर उसके बाद तुम्हे दफ्तर जाने का कष्ट नही करना होगा।

भैया की बात सुनकर कणा की आखें छलछला आयी थी। मगर वह कोई जवाब नही दे पा रही थी।

"चुप क्यो हो गयी ?सोच रही है,मुझसे शायद यह सब नही हो सकेगा ?" सुकुमार की आवाज धीमी हो गयी थी।,"नौकरी मिलने के कुछेक महीने बाद ही ऑफिस से 'लोन' का इन्तजाम कर तेरी शादी करा दूँगा। अच्छा आफिस आसानी से लोन दे देता है।"

"भैया !" कणा अब काम की बातें कर लेना चाहती थी। "हम लोगो के मकान के किरायेदार और मुहल्ले के लोग तुम्हारे बारे मे हो सकता है जरा ज्यादा उत्सुकता दिखायें क्योकि उन लोगो को मैंने दूसरी ही बात बतायी है।"

मकान के दूसरे-दूसरे किरायदार और मुहल्ले की तसवीर सुकुमार को बहुत दिनो के बाद याद आ रही थी। वह सब जैसे हजारो वर्ष पहले की बात हो।

"बाबूजी नही चाहते कि यह बात सबको मालूम हो जाये, "कणा ने कहा था।

सुकुमार के मन मे हुआ, एक बार वह झल्ला उठे। कहे, "क्या ? मैंने कोई कुकर्म तो नही किया है। मैं छिपाने क्या जाऊँ ?"

लेकिन सुकुमार ने स्वय को सयत कर लिया। उसे याद आया, बहिना की शादी करनी है। लोग सुनेंगे कि भाई पागल है तो बहिना की शादी ही नही होगी। पागलो के खानदान मे कोई शादी नही करना चाहता।

सुकुमार अब आत्म-विश्वास खो चुका था। पुरानी स्मृति किसी भी तरह स्पष्ट नही हो रही थी।

"कणा," सुकुमार ने बहुत आहिस्ता से पुकारा।

ठीक उसी समय रिक्शे को एक झटका लगा। भाई को सभालते हुए कणा ने जवाब दिया, "कुछ कहना है भैया ?"

"मुझे क्या हुआ था ?"

"क्यों तुम्हें याद नही है ?" कणा अब नर्वस होकर पसीने से तर-बतर होने लगी थी।

"मुझे सिर्फ इतना ही याद है कि नौकरी के इटरव्यू के लिए मैं ढेर सारे क्वेश्चन रट गया था, लेकिन वक्त आने पर एक का भी उत्तर नहीं दे पाया था।"

कणा को भी याद आ रहा था, उसके बाद ही भैया कैसा बेतरतीब हो गया था। दाढी नही बनाता था, नहाता भी नही था, किसी से बातचीत नही करता था, हर वक्त किरानीगीरी की परीक्षा के ही प्रश्नोत्तर तोते की तरह रटता रहता था।

एक दिन एक रिक्शेवाले को बुलाकर भैया ने उससे प्रश्न पूछा था तो उस बेचारे का रिक्शा हा थोडी देर बाद उसक हाथ से निकल गया था।

कणा उसी समय घर से बाहर निकल आयी थी। देखा, सुकुमार रिक्शा छीनकर स्वय उसे चलाकर ले जा रहा था।

"ऐ भैया, क्या हो रहा है ?" कणा ने झिडकी दी थी।

सुकुमार की आँखे तब अडहुल-फूल की तरह लाल हो गयी थी। सुकुमार ने कहा था, "बिलकुल मामूली-सा एक सवाल किया कि रिक्शे का आविष्कारक कौन है ? पट्ठा जवाब ही नही दे सका। अब तो इसका रिक्शा मैं छीनूंगा ही। रिक्शा चला रहे हैं मगर यह मालूम नहीं कि रिक्शे का आविष्कार किसने किया था ? तुम्हें किसने एपॉएंटमेन्ट लेटर दिया है ? कलकत्ते की सडका पर रिक्शा चलाने का तुम्हे कोई राइट नही है। रिक्शा जब्त, अण्डर गवनमेन्ट आफ वेस्ट बेंगाल आडर, सेक्शन हण्ड्रेड फॉर्टीफोर।"

उसी दिन पागल सुकुमार को सडक पर मार पडी थी। कणा समझ गयी थी, भैया का अब घर पर रखना सम्भव नही था।

बाबूजी ने कहा था, "अब मुझसे बरदाश्त नही हो रहा। उसे छोड दा। जहाँ मर्जी हो जाये। सडक पर कितने ही पागल मारे-मारे फिरत हैं। उन लोगा का भी जरूर ही किसी दिन घर-द्वार था।"

बाबूजी के विचारो म परिवतन लाने के लिए कणा बहुत रोयी थी।

बाबूजी ने तग आकर कहा था, "तुम लोग सभा मिलकर दबाव डालोगे तो मैं संन्यासी होकर निकल जाऊँगा। पागल का इलाज कराने के लिए भी पैस की जरूरत पडती है। मैं क्या खुद पैसा बन जाऊँ ?"

उसी दिन पैसा कमाने का कणा ने दृढ़ निश्चय किया था। बाबूजी से कहा था, "भैया का इलाज कराइए। पैसे का इन्तजाम हा जायेगा, बाबूजी।'

बाबूजा न भी उस दिन नही पूछा था कि कैसे और कहाँ से पैसे का इन्तजाम हा जायेगा।

कणा ने पैसा लाकर दिया और पिताजी ने उसे तत्क्षण खच भी कर डाला। पैसे के इतिहास की जानकारी प्राप्त करन जैसी आर्थिक स्थिति परिवार की नहीं था।

"मैं क्या वाकई घनघोर पागल हो गया था ? मुझे तो याद नहीं आ रहा।" सुकुमार का अब भी मामला पूरे तौर पर समझ मे नही आ रहा था।

कणा ने सुना है, आजकल लोग पागल को पागल नही कहते। कितनी ही तरह के अंग्रेजी नाम चल गये हैं। कणा ने खासे जोरदार शब्दो मे कहा, "नही भैया, तुम पागल नहीं हुए न—तुम मैंटल डिप्रेशन से पीडित थे।"

सुकुमार बेहद खुश हुआ। "बडा ही अच्छा 'टर्म' है। कणा, मैं पागल नही हुआ था, सिर्फ मानसिक मन्दी से पीडित था। ठीक वैसे ही जैसे व्यापार मे मन्दी आती है, नदी मे भाटा आता है, बंगोपसागर मे वायु का डिप्रेशन होता है। तूने बहुत ही अच्छा कहा है, थैंक्यू कणा।" थके सुकुमार को जैसे अन्तत कोई अवलंब मिल गया हो।

"मुहल्ले मे अगर तुमसे कोई पूछे तो बताना, सिर मे दर्द हो रहा था, इसीलिए अस्पताल गया था," कणा रिक्शे पर बैठते ही भैया को उपदेश देने लगी थी। इस मुल्क मे मानसिक चिकित्सालय से मरीज को घर वापस ले जाने के बाद कितनी ही तरह की समस्याएँ खडी हो सकती हैं। इस पर सोचने पर भैया दुबारा मानसिक संतुलन खो दे सकता है, कणा को इस संबध मे कोई सन्देह नही।

सुकुमार ने गभीरता के साथ कणा से पूछा, "मैं कितने दिनो तक अस्पताल मे था ?" सुकुमार वक्त का हिसाब किसी भी हालत मे नही लगा पा रहा था।

कणा को अब भय महसूस होने लगा। भैया को जब याद नही है तो ऐसी हालत मे खामख्वाह याद दिलाने से लाभ ही क्या कि कई महीने बीत चुके थे।

कणा का मकान अब ज्यादा दूर नही था। इसीलिए कणा भैया के सवाल का जवाब देने के बजाय कह बैठी, "भैया, हम लोग अब करीब-करीब पहुँच चुके हैं। तुम अपने मन को प्रस्तुत कर लो। मा ने आज तुम्हारे लिए पूजा की व्यवस्था की है। आज तुम किसी पर गुस्सा न करना। कोई कुछ भी अटसट कहे तो चेहरे पर हँसी लाकर क्षमा कर देना।"

सुकुमार ने सोचा था, कम-से-कम आज की शाम कणा भैया के ही साथ रहेगी। लेकिन रिक्शे से भैया को उतारते ही वह जाने के लिए छटपटाने लगी।

सुकुमार ने पूछा, "कणा, मेरी मनौती की पूजा के समय भी तू नही रहेगी ?"

"मेरे लिए रुकने का उपाय नही है भैया।" कणा के शब्द सुकुमार को बडे ही दयनीय जैसे लगे थे।

सुकुमार नही जानता कि कणा को इस बीच काफी देर हो गयी थी। चरणदास की ऊब भरी आँखो की दृष्टि कणा के मानस-चक्षु के सामने तैर रही थी।

भैया की ओर एकबार और स्नेहपूर्ण दृष्टि से देखकर कणा कुछ समय के लिए कलकत्ते के जनारण्य मे खो गयी।

●

उसके बाद कई सप्ताह मजे मे गुजर गये।

"सुकुमार मित्तिर, जिन्दगी मे इतने सुन्दर ढग से कभी तुमने समय बिताया है ? जवाब दो," बिस्तर पर लेटे-लेटे सुकुमार मित्तिर स्वय सवाल करता है।

"क्या हुआ ? नो रिप्लाई क्यो ?" जवाब के लिए सुकुमार ने स्वय ही तकाजा किया।

"नमकहरामी मत करो, साले सुकुमार मित्तिर। इससे बढकर सुख इस जन्म मे तुम्हें कब मिला है, बताओ ?"

सुकुमार मित्तिर के अन्दर का आदमी थोडा-बहुत मिमियाने लगा।

सुकुमार मित्तिर ने जैसे अपने गले मे बिजली का साइलेन्सर लगा लिया था। फलस्वरूप इस मकान मे बिस्तरे पर लेटकर, आँखें बन्द किये, मन के साथ खुल आम बहस-मुबाहसा कर रहा था, हालाँकि बाहर के किसी को सुनायी नहीं पड रहा था।

"सुनो, ओल्ड सुकुमार मित्तिर। नौकरी की परीक्षा म बार बार असफल रहे, प्रश्नोत्तर रटने के दबाव से मानसिक सन्तुलन खोने के बाद मानसिक चिकित्सालय मे बाध्य होकर तुम्हे आश्रय लेना पडा। लेकिन कितने अचरज की बात है कि तुम्हारी सामयिक अनुपस्थिति मे जैसे किसी मैजिक ने मित्तिर परिवार का सब कुछ बदल दिया। अपनी आँखो से देखने पर भी इस पर विश्वास नही होता।"

अन्दर का सुकुमार मित्तिर अब जरा कुनमुनाने लगा। लेकिन नये सुकुमार की एक ही फटकार से वह खामोश हो गया।

"ओल्ड सुकुमार, सुनो। मैं जैसे नया जन्म ले नयी दुनिया मे लौट आया हूँ। पुराने जीवन का मेरी यादें भी ताजी हैं—माँ बाप, भाई-बहिन सभी पुराने

नामधारी ही हैं मगर उनके हाव-भाव और सलीके से ओल्ड लाइफ का कुछ भी मेल नही खा रहा है ।"

मैं तो शुरू मे ही माँ को देखकर अवाक् हो गया था । लडका अस्वस्थ हो पागलखाने मे है, गृहस्थी का यह हाल-चाल है । लेकिन मा-जननी के शरीर और सेहत मे सुधार आ गया है । कौन कहेगा कि कुछ दिन पहले इसी माँ के हाथ-पैर निश्चल हो गये थे ? माँ के शरीर का रग जरा चमकीला हो गया है। साडी भी खासी अच्छी साफ है । देखने से ही लगता है, अच्छे डाक्टर ने चिकित्सा की है, पेट के अन्दर कीमती दवा गयी है ।

मुझ पर आँखें जाते ही मेरा हाथ कसकर दबाकर लाड करते हुए माँ ने कहा था, 'आओ बेटा, सुकुमार ।"

माँ ने मेरे माथे पर दही का तिलक लगा दिया—मानो लडका विश्व विजय करके वापस आया हो । ईश्वर कसम, मेरा सिर चकरा रहा था । बेकार सुकुमार मित्तिर को माँ का यह लाड पहले तो कभी नसीब नहीं हुआ था ।

रिक्शे से उतार, हाथ थामकर माँ मुझे घर के अन्दर ले जा रही थी समझे बेटे ओल्ड सुकुमार !

मगर, यह कहाँ चला आया मैं ? मानता हूँ, दिमाग खराब हो जाने से मेरी बहुत सारी यादे उलट-पुलट हो गयी हैं, लेकिन अपना टीन का मकान भी न पहचान सकू, यह कैसी बात है ?

माँ को शायद मेरी हालत समझ मे आ गयी । इसीलिए उनके मुह से शब्द बाहर निकले, "कणा ने तुझे बताया नही ? हमने डेरा बदल लिया है । यहा भी टीन की छत है, लेकिन छत मे सूराख नही हैं । पानी नही चूता है । दूसरी बात यह है कि दोनो कमरे भी पहले के मकान से कुछ बडे-बडे हैं ।"

मेरे दिमाग मे जैसे पुन बिजली का शॉक दिया जा रहा है । इस घर म बैठने पर अब पुरानी सडी हुई बदबू भी नाक मे नही आ रही है । आसपास शायद कही कच्ची कीचड से भरी नाली नही है । मेरे नथुना को काफी असुविधा का सामना करना होगा ।

माँ बोली, "यहा का किराया पन्द्रह रुपया ज्यादा है । लेकिन सबसे अधिक सहूलियत बाथरूम की है—छ किरायेदारो के लिए एक ही पाखाना यहाँ नही है ।"

ओ माई लार्ड ! इसका मतलब तो यही है कि प्रकृति के आह्वान का प्रत्युत्तर देने के लिए सूर्य उगने के पहले से ही लाइन नही लगानी है । टू गुड टु बी

ट्र्० । इस तरह के सुख का सवाद कभी सही नही हो सकता, माँ-जननी । क्या यह सब सच है ?

मा बोली, "यह सब कणा के बूते से हुआ । लडकी ने ही बाप से कहा, जो भी अधिक पैसा लगेगा, उसका इन्तजाम हो जायेगा, बाबूजी । आप घर बदल लें ।"

इसके बाद मेरी आखे बाबूजी की ओर गयी । पितृदेव ने भी मेरी अनुपस्थिति मे जैसे नव कलेवर धारण कर लिया है, यकीन करो ओल्ड सुकुमार । ही इज नॉट द सेम ओल्ड मैन !

बाबूजी का इस तरह का चमकता हुआ चेहरा पहले कभी नही देखा था । ब्रिटिश पेन्ट के एक नम्बर एनामल-फिनिश रग से बाबूजी पर नयी कोटिंग की गयी है । बाबूजी यू स्टाइल मे सीढी पर बैठे हुक्के के कश ले रहे हैं । चेहरे पर कही दुश्चिन्ता की छाया नही । बैंक मे एक लाख रुपया न रहे तो रिटायर्ड आदमी के मुखमडल पर इस तरह की रामकृष्ण मार्का प्रशान्ति उभर ही नही सकती ।

मुझसे क्या फिर हिसाब मे गलती हो गयी ? बाबूजी की अब तक तो नौकरी की टायर बदल, रिटायर हो घर पर बैठन की बात थी । माँ ने चेहरे पर हँसी लाकर कहा, "तुम्हारे बाबूजी की भी खुश किस्मती है । रिटायर होने-होने पर थ लेकिन फिर चौदह महीने का एक्सटेन्शन मिल गया ।"

बाबूजी खुशमिजाजी मे हस दिये । मीठे स्वर मे बोले, "मुन्ना, अन्दर आ जा । कैसा है ? '

यही कहो न ! यह कोई बेकारी का तम्बाकू पीना नही है । नौकरी मे प्रतिष्ठित रहे बगैर इस तरह की हँसी कही निकल सकती है भला ?

"यह भी कणा की वजह से ही हुआ," माँ ने फुसफुसाते हुए सूचना दी । तुझे तो मालूम ही है कि नौकरी की मीयाद पूरी हो गयी थी । आखिर मे कणा ही साहब के पास जाकर रो पडी । वह स्वय जो नही कर सकते थे, कणा ने कर दिखाया । लडकी की रुलाई से पिघलकर साहब ने दूसरा ही हुक्म दिया था ।

"इस पर भी नौकरी का एक्सटेन्सन रुक रहा था," माँ की आवाज और अधिक धीमा हो गयी । "उन लोगो ने मीयाद बढाने के पहले डॉक्टरी जाँच के लिए भेजा । वह दमे के मरीज हैं न । डॉक्टर ने एकसठ रुपया घूस लिया तब सर्टिफिकेट दिया । उस पैसे का इन्तजाम भी कणा ने ही किया था । उनके हाथ

मे तब एक पैसा भी न था। तेरे पिताजी तनिक असमजस मे थे। लेकिन कणा ने उन्हे झिडकी दी पैसा बहाये बिना भी पैसा कही आता है, बाबूजी।"

अहा हा ! खुशखबरी सुनकर बहुत अच्छा लग रहा है। मेरे गरम माथे को कोई जैसे ठण्डे आइस बैग से सहला रहा है, समझे ओल्ड सुकुमार। मैं व्यर्थ ही इतनी चिन्ता मे डूबकर अपने हेडऑफिस को बेकल बना रहा था। बाबूजी की नौकरी जबकि और कुछ दिना के लिए बरकरार है तो फिर चिन्ता किस बात की ?

बाबूजी और माँ का तो देख चुका। लेकिन रेणु कहाँ है ? मझली बहिन रेणु ही माँ से छिपाकर बीच-बीच मे चाय तैयार कर मुझे दे देती थी।

रेणु अब भी क्यो नही आ रही है ? पागलखाने से लौटे भाई के निकट आने म उसे शर्म महसूस हो रही है क्या ?

न , पागलखाना शब्द मैं दिमाग मे आने ही नही दूँगा। कणा ने मुझे इतनी तालीम दी कि तुम अस्पताल मे थे, पागलखाने मे नही। तुम पागल नही हुए थे, तुम्हारा मानसिक डिप्रेशन हुआ था, मानसिक मन्दी।

"रेणु कहाँ है ?"

'रेणु' शब्द से माँ के चेहरे पर एक सौ से अधिक पावर की बत्ती जल उठी।

"रेणु ? नारायण, नारायण, देवता की कृपा-दृष्टि हुई। एक सुपात्र का पता चला। कणा ने तत्क्षण कहा अब जरा भी देर न करो माँ।"

फिर वही कणा ! माँ कितनी सहजता के साथ कह गयी, "रुपये के कारण तुम्हार पिताजी पीछे पाँव रखने जा रहे थे। लेकिन कणा किसी भी हालत मे राजी नही हुई। अपने दफ्तर से रुपया कर्ज लाकर दिया तब तुम्हारे पिताजी को कन्यादान की जिम्मेदारी से मुक्ति मिली।'

कणा मैजिक दिखा रही है ! अपनी शादी की चर्चा किये बगैर छोटी बहिन के लिए प्रसन्न मुख उपाय खोज निकाला ! मैं तो सोच रहा था कि पैसे के अभाव मे सुकुमार मित्तिर की किसी भी बहिन की शादी नहीं होगी। सारी बहिन वयस्क कुमारिया रह जायेगी और मुझे सतायेगी।

वाणी, मेरी छोटी बहिन, भी खासी बडी हो गयी है। मैं कितने दिना से घर के बाहर था, समझ मे ही नही आ रहा है। वाणी की सेहत भी अच्छी हो गयी है—डोरिया धानी साडी मे खासी खूबसूरत दीख रही है। किसी भी अच्छे लडके के हाथो म सौंपी जा सकती है यह।

"दीदी का दूल्हा बिलकुल गोरा है," वाणी ने ही सूचना दी। "बहुत ही

खूबसूरत घुघराले बाल हैं। अच्छी फैमिली है। इतना खूबसूरत चेहरा है, कुछ अधिक तिलक की माँग तो करगा ही। आखिरी घडी म एक साइकिल के लिए शादी का रिश्ता टूट रहा था।" वाणी ने भैया को अन्दरूनी खबर की सूचना दी।

"उस समय कणा न ही बाबूजी से कहा, शादी का रिश्ता टूटन नही दीजिए। साइकिल का इ तजाम करना ही होगा।" बाद वाला समाचार भी वाणी की ही जबान से सुनने को मिला।

"ईश्वर की दया से आखिरकार सारी चीजा का इ तजाम हो गया। देह मे हल्दी चढने के एक दिन पहले रात के समय कणा साइकिल खरीदकर घर ले आयी।" माँ ने गृहस्थी की सारी सूचनाएँ पुत्र को शीघ्र स शीघ्र दे दीं।

जानते हो ओल्ड सुकुमार मित्तिर, पहले का जमाना होता तो यह सब बात सुनने पर मुझे शर्म महसूस होती। एक मामूली लडकी की तुलना मे अपने जैसे ग्रेजुएट मद के निकम्मेपन की बात सोचकर दिमाग गरम हो जाता। लेकिन अब तो मुझे गुस्सा आता ही नही। मुझे सिफ नीद नही आती। जागते रहने के अलावा मुझे कोई और मज नही है।

मसलन, इतनी रात म भी मैं जगा हुआ हूँ। अभी बिस्तर पर लटे-लेटे सोच रहा हूँ, बाबूजी और माँ बात-बात पर क्यो नारायण का नाम लेते हैं।

"मिस्टर नारायण, आपने तो इस असहाय मित्तिर फैमिली के लिए कुछ नही किया, बल्कि गरीब के पैसे से हर रोज आप बतासा, केला और खीरे खाते रहे। आप, सच कहा जाये तो, बस दैन द ठूठा जगन्नाथ है।"

इस घर की जितनी कुछ तरक्की हुई है उसका पूरा श्रेय तो कणा का ही है। यदि किसी का नाम अभी माँ-बाप, भाई-बहिन के मुँह म शाभा पा सकता है ता वह कणा ही है। घर लौटकर जिस ओर भी आँखें दौडा रहा हूँ, मैं सिफ देख रहा हूँ—कणा, कणा, कणा। हालाँकि माँ हर वक्त पुकारती है—नारायण, नारायण।

•

इस घर की मालकिन कणा एकाध घण्टा पहले ही घर लौटकर आयी है। और-और दिना के बनिस्वत कणा को आज थोडी देर हो गयी थी।

माँ ने सोचा था कि वह कणा से पूछेगी, तुझे देर क्यो हुई। लेकिन आज

कणा की मनस्थिति ठीक नही थी। गम्भीर लटका हुआ चेहरा देख, रोजगार करने वाली लडकी मे देर का कारण पूछने का उमे साहस नही हुआ।

घर लौटकर, बाहर के कपडो को उतार, कणा नाममात्र के लिए खाना खाने बैठी थी। पता नही, मुह के अन्दर रोटी गयी थी या नही।

बिस्तर पर लेटे-लेटे सुकुमार सुन रहा था। मा पूछ रही थी, "तुझे क्या हुआ ? इतना कम खाओगी तो सेहत ठीक कैसे रहेगी ?"

कणा ने कोई जवाब नही दिया। वह जैसे अपन आप मे डूबी हुई थी।

सुकुमार की इच्छा हुई कि वह भी कणा के साथ बैठकर खाना खाये। लेकिन कणा ने ही मना कर दिया है। "भैया को घडी म नौ बजते न बजते खाना मिल जाना चाहिए। डाक्टर न कहा है, उसके लिए दर तक सोना जरूरी है। नीद ही भैया के लिए दवा है।"

यह नीद ही आज आने का नाम नही ले रही है, घर के किसी आदमी को इस बात का पता नही है। इसकी सूचना इन लोगो को देने से भी कोई फायदा नही। ऐसा करने से सुकुमार को नींद तो नही आयेगी, बल्कि इन्ही लोगो की चिन्ता बढ जायेगी।

बिस्तर पर पीठ के बल पडा बहुत देर से सुकुमार भेडो की गिनती कर रहा है।

यह तरीका बहुत दिन पहले सुकुमार न सोमनाथ से सुना था।

नौकरी की दुश्चिन्ता के कारण सुकुमार को नीद नही आ रही थी यह सुनकर सोमनाथ ने सलाह दी थी, "नीद न आये तो आँख बन्द करके शुरू म एक झुण्ड भेडो की कल्पना करना। उसके बाद धीरे-धीरे भेडो की गिनती करना शुरू कर देना। गिनते-गिनते तुझे अपने आप नीद आ जायेगी। सवेरे नीद टूटने पर पता चलेगा कि कुल मिलाकर कितनी भेडे थी, इसकी तुझे कोई याद नही है।"

आज शाम आँखे बन्दकर सुकुमार न कल्पना की भेडो का आह्वान किया। लेकिन यह क्या ! भेडो के बदले आँखो के परदे पर एक जन-सभा का दृश्य उभर आया।

सभा के लोगो को भेडो मे बदल देन के लिए सुकुमार बहुत दर तक कोशिश करता रहा। उनके चेहरे भेडो म बदल जान के बावजूद सुकुमार उनकी देहा

को नही बदल पा रहा था । यह एक ऊटपटांग दृश्य है ! हँसने लायक बात है, इनकी गिनती करने से नींद क्या आ जायेगी ?

मगर दूसरा उपाय ही नही है । सुकुमार मित्तिर की आँखो के सामने से ये भेड़े मर्द किसी भी तरह दूर नही हो रहे हैं ।

अन्तत उसने उनकी ही गिनती शुरू कर दी । सुकुमार एक से पाँच सौ तक की गिनती कर बैठा, लेकिन नींद नही आ रही थी ।

नींद न आने का कारण क्या हो सकता है ? सुकुमार आँख बन्द कर माथा-पच्ची करने लगा । उसने आधी भेड़ो और आधे मर्दों की गिनती की है इसी-लिए शायद यह मुसीबत खड़ी हो गयी है । तमाम भेड़ो की गिनती किये बगैर मन के लायक नतीजा नही निकल सकता ।

आँखो की पलको को दो उँगलियों से रगड़कर सुकुमार ने दृश्य को पलटने की भरपूर चेष्टा की ।

अब सुकुमार को आदमी से लदी फँदी गैलरी का दृश्य नजर आ रहा था । आधे भेड़े और आधे मर्द के बजाय सम्भवत पूरे मर्द ही थे । लेकिन यहाँ गिनती का काम असभव था ।

सुकुमार जितनी ही कोशिश करता उससे उतनी ही गलती हो जाती । एक आदमी को वह एक से ज्यादा बार गिन चुका है । न, यदि इतने सारे आदमी गैलरी मे खड़े हो शोर मचायें तो किसी के लिए भी इनका ठीक ठीक हिसाब रखना संभव नही ।

सुकुमार करवट बदलकर लेटा हुआ था । दुनिया म हजारो-लाखो भेड़ें हैं लेकिन इस बुरे समय में वह कुछ मौ भेड़ो को भी अपनी आँखो के सामने नही ला पा रहा था ।

अब शायद ईश्वर दया करेंगे । सुकुमार किले के मैदान का एक दृश्य देख रहा है । कुछ आदमी लुगी पहने, हाथ म छड़ी थामे किसी चीज को 'हट-हट' कह-कर भगाये ले जा रहे हैं । सुकुमार की आँखो के सामने अब कालापन तिर आया । आदमी ! आदमी नही, ये सब बकरे हैं । सभी जोड़ा मे बधे हैं ।

सुकुमार को लगा, वह उन लोगो के सरदार से पूछ रहा है, "इन्हें जोड़ा म क्या बाधे हुए हो ?"

"जोड़ा चीज बहुत ही सुविधाजनक होता है बाबू । जोड़े म रहने से कोई भाग नही सकता ।"

वह आदमी दांत बाहर निकालकर हंस रहा है। सुकुमार ने अब उससे पूछा, "बकरे और भेडे मे क्या अन्तर होता है?"

"कुछ भी नही। एक काला होता है दूसरा गोरा, लेकिन जाना दोना को ही कसाईखाने मे पडता है। लेकिन हाँ, कीमतें सब की अलग-अलग हैं। कलकत्ते म भेडे की कीमत कोई खास नही है। बगाली वस्तुओ को भेडा के मास की गध सडाध जैसी लगती है।"

फिर कोई उपाय नही है। सुकुमार न अब जोडा मे बँधे बकरो को ही गिनना शुरू कर दिया।

बकरा का झुण्ड खत्म हो गया, लुगी पहन आदमियो की जमात भी बकरा के साथ सुकुमार की आँखो के सामने ही खिदिरपुर बाजार की ओर जाकर ओझल हो गई। लेकिन फिर भी नीद आई। नीद के लिए बकरो और भेड एक जैसे नही होते, यह बात सुकुमार भली-भाति समझ गया था।

अब सुकुमार आँखें बन्द किये कणा के बारे मे ही सोच रहा था। कणा अभी रोजगार शुरू कर गृहस्थी के लिए सब कुछ होम कर रही है, यहा तक कि कर्ज करके पैसा ला रही है। हालाकि जब उसकी उम्र कम थी, वह बडी ही स्वार्थी थी। अपने साबुन, पाउडर और कघी किसी का हाथ से तक छून नही देती थी। सुकुमार के बीमार होते ही उसमें बदलाव आ गया। ईश्वर कब किसको क्या मति देत हैं, समझ म नही आता। सुकुमार ने क्या कभी सोचा था कि गृहस्थी के लिए सोचते-सोचते उसका दिमाग खराब हो जायेगा, और कणा इस तरह अप्रत्याशित तौर म डूबती हुई गृहस्थी को बचा लेगी?

कल बाबूजी और मा फुसफुसाकर बातचीत कर रहे थ। सुकुमार ने सुन लिया था।

मा कह रही थी, "मुझे यह अच्छा नही लगता, कणा के लिए कही कुछ ठीक करा न।"

बाबूजी बोले, "वही ता सारी गृहस्थी का भार अपने माथे पर सँभाले हुए है।"

बाबूजी क्या कहना चाहते हैं, माँ समझ गई है। अभी कणा की शादी करने का सवाल पैदा ही नही हाता। एसा करने स ता यह मित्तिर परिवार ही खत्म हा जायेगा।

माँ मन के दुख के कारण भभक उठी, "कभी नहीं सोचा था कि एसा

होगा। लडके लडकियाँ बन गये और लडकियाँ लडके हो गयी। यह कौन-सा युग आ गया, भगवन् ?"

सुकुमार ने फिर करवट बदली। सिर से पैर तक के देह के हिस्से को उसने पतली चादर से ढँक लिया, जिससे कि रोशनी आकर कहीं नींद की चिड़चिड़ी बुढ़िया को दूर न भगा दे।

सुकुमार सिर्फ कणा के बारे में सोच रहा था। कणा ने गृहस्थी के सभी सदस्यों को हैरत में डाल दिया था। डाँवाडोल की इस हालत में एकाएक नौकरी का इंतजाम कर लेना एक आश्चर्यजनक बात थी। जरा-सा मौका मिलते ही सुकुमार कणा से सब कुछ खोद-खोद कर पूछेगा। दफ्तर कहाँ है, किसने नौकरी की सूचना दी, किस तरह इंटरव्यू हुआ, तनख्वाह कितनी है, स्केल क्या है—सुकुमार बहुत-कुछ जानना चाहता है, पर पूछे किससे ?

पहले का जमाना होता तो सुकुमार शुरू दिन ही कणा से यह सब सवाल कर चुका होता। लेकिन नौकरी ने कणा को एक नये ही व्यक्तित्व की गरिमा दे दी थी। कणा अब थोड़ी गंभीर हो गई थी। और इस नई गृहस्थी में खुद सुकुमार एक मेहमान की तरह था, अब उसके अन्दर लज्जा का भाव आकर जम गया है और वह पुराने दिनों की तरह स्वाभाविक नहीं हो पा रहा था।

सुकुमार अपनी स्थिति अच्छी तरह समझ रहा था। सुकुमार संभवतः कणा के सामने पूरे तौर पर स्वाभाविक नहीं हो पाता। कणा तो अब ऐसी लगती है जैसे वही सुकुमार की दीदी हो—वह छोटी बहिन है, यह बात सुकुमार कई दिन पहले ही भूल चुका था।

सुकुमार चादर के नीचे सिकुड़-सिमटकर बनिये की गठरी की तरह लेटा हुआ था। अब उसने रोशनी की तरफ से अपना चेहरा दूसरी ओर घुमा लिया था।

बिस्तर के इस निरापद आश्रय में सुकुमार को एक अजीब ही आराम का अहसास हो रहा था।

सुकुमार सोच रहा था, अब सचमुच ही अच्छे दिन आ गये। कभी कभी ऐसा भी समय आता है जब सारा कुछ अपने विरुद्ध चलने लगता है, अच्छा करने में भी उसका नतीजा बुरा ही होता है।

बुरे वक्त में कभी जल्दी नहीं मचानी चाहिए, कुचक्र करने वाले ग्रहों को झल्लाने का मौका दिए बगैर एक कोने में सिमट जाना चाहिए और उनके रास्ते को छोड़कर सब कुछ ज्यों का त्यों स्वीकार कर लेना चाहिए। सुकुमार के लिए

भी अब वही वक्त आ गया था—ग्रहा न उसे पागल बना घर से बाहर निकाल दिया था।

सुकुमार न इत्मीनान की साँस ली, अब चक्र घूम रहे हैं। त्रिजनसमैन विशुदा, ईस्ट बेंगाल की गैलरी म बैठे सोमनाथ और सुकुमार से कहते थे, "चक्रवत् परिवर्तन्त सुख और दुख। कोई भी हमशा दुख की ताबेदारी नही कर सकता, सरकारी अफसरा की तरह कभी न कभी उन लोगा का भी ट्रासफर होगा ही।"

उन दिनो विशुदा की बाता पर सुकुमार का विश्वास नही होता था। सुकुमार का सन्देह हाता, विशुदा सिर्फ उन लोगा को उत्साहित करन के खयाल से ही झूठी बातें कहत रहते हैं।

विशुदा उपदेश देते, "देखा, उम्मीद फुटबाल की हवा जैसी चीज हुआ करती है—भरपूर पम्प रहे बगैर फुटबाल उछलेगा कैसे ? मन की हवा निकालकर कभी पिचको मत, वरना खेल वही खत्म हा जायेगा।'

सुकुमार न फिर करवट ली। वह महसूस कर रहा है, विशुदा की चेतावनी के बावजूद सुकुमार मित्तिर के फुटबॉल स पूरी हवा वाहर निकल गई थी। इसी के परिणामस्वरूप उस मानसिक चिकित्सालय जाकर बिजली का शॉक लेना पड़ा था। अब ईश्वर की दया से चक्कर घूम गया है।

अब सुकुमार स्वय ही आश्चर्यचकित हो जाता है। बाबूजी की नौकरी का कार्यकाल अप्रत्याशित तौर पर बढ गया है, बहिन की शादी हो गई है, सभी एक अच्छे मकान मे चले आये हैं, कणा गृहस्थी के सारे अभावा का दूर कर रही है और सुकुमार स्वय भी स्वस्थ हाता जा रहा है।

८

सुकुमार सिर्फ वापस ही नही आया, दा दिन पूर्व सडक पर चहलकदमी करत समय एक अजीब काण्ड भी हो गया था जिसकी सूचना उसने धरवालो को भी नही दी थी। हो सकता है उसी उत्तेजना के कारण आज उसकी आँखा मे नीद नही उतर रही हो।

घर पर इसलिए नही कहा था कि सुकुमार को इस बात पर ठीक-ठीक विश्वास नही हो रहा था। अन्तत' फुटबॉल की हवा अगर फिर बाहर निकल जाये तो माँ-बाप बडे ही हताश हो जायेगे। कणा बेचारी भी मरियल जैसी हो

जायेगी। लेकिन बात अगर सही है तो मित्तिर परिवार के सभी लोग हैरत मे आ जायेंगे। बाप, मा और कणा समझेंगे सुकुमार मित्तिर जो सो चीज नही है, एक बार उसके फुटबाल की हवा निकल गयी थी तो इसका अर्थ यह नही कि वह हमेशा के लिए खर्च के खाते मे चला गया था।

अस्पताल से घर लौटन के कुछ दिना बाद ही यह बात हुई।

शुरू मे कुछ दिन बगैर किसी गडबडी के गुजर गये थे। उसके बाद ही सुकुमार के मन के अन्दर एक अदृश्य काँटा हर वक्त चुभने लगा था। दोपहर मे भात खाने के लिए बैठने पर जैसे ही महसूस होता कि एक छोटी-सी लडकी रोजगार कर यह भात ले आयी है, उसकी जीभ को जडता जकड लेती। कणा ने पूछा था, "क्या हुआ तुम्हे ? जी मे अरुचि पैदा हो गयी है क्या ?"

पट म भूख थी लेकिन सहसा बहिन के बार मे साचते ही जीभ का स्वाद बिगड गया था, सुकुमार जबान खोलकर यह बात कह नही सका।

कणा ने घर से बाहर निकलन का मना किया था। "कुल मिलाकर दस दिन पहले ही तुम बीमारी से उठे हो। बहुत ही कडी-कडी दवाएँ खानी पडी हैं। कुछ दिनो तक चुपचाप घर मे ही बैठे रहो।" कणा न मीठे किंतु कठोर स्वर मे भैया का सावधान कर दिया था।

लकिन जीभ जब जड हो गयी तो उसके बाद सुकुमार घर पर चुपचाप बैठकर नही रह सका। पैण्ट पर कुरता डाल सुकुमार घर से बाहर निकल गया था।

कहाँ जा रहा है, क्या जा रहा है, कब वापस आयेगा, कोई बात बताकर नही गया। सुकुमार कुछ देर तक सडका पर निरुद्देश्य चहल-कदमी करता रहा।

बहुत दिना के बाद सडक पर आजादी क साथ चहल-कदमी करन म भी इस तरह की अनास्वादित मादकता हो सकती है, सुकुमार न इसकी कभी कल्पना तक नही की थी। यह सुबोध मल्लिक रोड, यह यादवपुर थाना, यह अनवर शाह रोड, यह गडियाहाट (साउथ)—सुकुमार इन सबो को कितनी ही बार देख चुका है। लेकिन अब तो ये सब उसकी आँखो के सामने जैसे नये नये रूप धारण करके आ रहे हैं।

जोधपुर पार्क के मोड पर सुकुमार ठिठककर खडा हो गया था। जिसके लिए उसका मन एकाएक बेचैन हो उठा वह सोमनाथ था। उसी क्षण सोमनाथ के पास जाने की इच्छा प्रबल हो उठी। सुकुमार को सोमनाथ की कमला भाभी

के स्नेहमय मुखडे की याद आ रही थी। सुकुमार भाभी के हाथो से कितनी ही बार चाय पी चुका है। ऐसा एक दिन भी नही बीता जब कमला भाभी ने सुकुमार को बिना खिलाये जाने दिया हो। सुकुमार ने एक दिन कहा भी था, "भाभीजी, आप गलती कर रही हैं। आनिक बेरोजगारो का कोई इस तरह स्वागत-सत्कार नहीं करता।" चाय की प्याली हाथ मे थामे भाभीजी ने मीठी झिडकी दी थी, "उफ् सुकुमार, मुझे इस तरह हँसाओ मत—हाथ से चाय छलक कर नीचे गिर पडेगी।"

इतने दिनो के बाद सुकुमार को देखकर भाभी जरूर ही हैरत मे आ जायेगी। साथ-साथ चाय और नाश्ता भी आ जायेगा। मगर सोमनाथ जोधपुर पार्क की सरहद पर पैर नही रखेगा। कणा का गम्भीर चेहरा उसे एकाएक याद आ रहा था।

सुकुमार ने अस्पताल से घर लौटते ही सोमनाथ की चर्चा की थी। लेकिन सोमनाथ का नाम सुनते ही जैसे कणा का चेहरा गम्भीर हो गया था। कणा ने सुकुमार को मना किया था। "अभी किसी के घर पर नही जाना भैया।"

सुकुमार समझ रहा था कि कणा नही चाहती कि उसका भैया सोमनाथ से मुलाकात करे।

दूसरा वक्त होता तो सुकुमार किसी भी हालत मे सहमत नही होता—जिससे भी मिलने की मर्जी होती, जाकर मिल आता। लेकिन अभी वह कणा की राय के खिलाफ काम नही करना चाहता था। कणा ने जब भैया को नही जाने को कहा है तो अवश्य ही उसका कोई न कोई कारण होगा। सारी बातो के पीछे कौन कौन से और क्या कारण हैं, जानने लायक अभी सुकुमार की मानसिक स्थिति नही थी।

कणा का उपदेश दुबारा याद आते ही सुकुमार ने जोधपुर पार्क की सरहद पर पैर नही रखा। सुकुमार एक दिन सुविधानुसार कणा से पूछेगा कि क्या वह उसका सोमनाथ से मिलना इतना नापसन्द करती है?

इसके बाद सुकुमार चहल-कदमी करता हुआ गडियाहाट के मोड पर चला आया था। कितने आदमी साफ-सुथरे कुरता-कमीज पहन अपने-अपने काम पर जा रहे थे, इसकी कोई गिनती नही। इस भीड-भाड को देख कर भला कौन कहेगा कि इस मुल्क मे बेरोजगारी की समस्या इतनी भयावह है सारी दुनिया मे कही भी इतने पढ़े-लिखे बेकारो की जमात नौकरी की उम्मीद म तीर्थ के कौवो की तरह नही बैठी होगी।

दफ्तर के वक्त की इस रेल पेल की ओर सुकुमार कुछ देर तक यो ही

ताकता रहा। सुकुमार से भी कम उम्र का एक युवक गले में टाई बाँधे बस के इंतजार में खड़ा था। नहीं, अब सुकुमार उन लोगों की तरफ नहीं ताकेगा। कहीं नजर न लग जाये। माँ-बाप का लड़का कमाकर खा रहा है, नजर लगने से उसकी हानि हो सुकुमार कभी यह नहीं चाहेगा।

उसके बाद सुकुमार ट्राम के एक सेकण्ड क्लास के डिब्बे में चढ़ गया था। कणा ने उसे फर्स्ट क्लास की ट्राम में घूमने-फिरने लायक पैसा दिया था। लेकिन छोटी बहिन के पैसे से नरम गद्दीदार ट्राम पर चढ़ने में सुकुमार को संकोच का अनुभव हुआ था।

बी० बी० डी० बाग में उतर लाल दीघी की एक सलामी ठोक सुकुमार पैदल चलने लगा। ब्रेबान स्ट्रीट और लाल बाजार के मोड़ पर गिरजे के पास एकाएक विशुदा से मुलाकात हो गयी—उसी विशुदा से जो फुटबाल में ईस्ट बंगाल के अंध समर्थक हैं। खेल के मैदान में गये बिना जैसा उनका खाना ही हजम नहीं होता। सोमनाथ और सुकुमार के साथ वह खेल के मैदान में कितनी ही बार अड्डेबाजी कर चुके हैं। प्रतिपक्ष के समर्थक जानकर भी उन्होंने दोनों मित्रों से मूंगफली और पान के विनिमय में कभी आपत्ति नहीं की।

विशुदा और-और दिनों की तरह रास्ते के किनारे की विधवा बंगाली महिला से पान खरीद रहे थे। बचा हुआ चूना और 'गुण्डी मोहिनी' अपने डब्बे में रखते हुए विशुदा ने सुकुमार को पुकारा "हैलो यंगमैन। लगता है, तुम सुकुमार मित्तिर हो। मोहन बागान को सपोर्ट करना छोड़ दिया क्या?"

सुकुमार बहुत ही खुश हुआ। अजनबियों की इस दमघोंटू भीड़ में कम-से-कम से एक पुराना दोस्त तो ऐसा निकला जिसने सुकुमार को पहचान लिया।

मोहन बागान को छोड़ने का सवाल ही पैदा नहीं होता। जब तक जिन्दगी है तब तक मोहन बागान है। मानसिक चिकित्सालय के मरीजों के बीच भी खासा अच्छा मतभेद था। पूरे तौर पर पागल हो जाने के बावजूद किसी ने दल नहीं बदला था—वहाँ भी एक दल ईस्ट बेंगाल और दूसरा मोहन बागान समर्थक था। सिर्फ एक ही ऐसा युवक था जो किसी भी दल का समर्थन नहीं करता था। उसका बाप रेलवे में नौकरी करता था—इसलिए वह ईस्टर्न रेलवे की ही तारीफ करता था।

विशुदा ने उसकी पीठ पर हाथ रखकर पूछा था, 'क्यों यंगमैन इतने दिनों से मुलाकात क्या नहीं हुई? कहीं बाहर गये थे?'

कणा के परामर्श के अनुसार सुकुमार ने सभी लोगों से झूठी बात कही है। मगर विशुदा के सामने झूठ बोलना नामुमकिन है। खेल के मैदान के दोस्त हैं,

उनके सामने झूठ बोलने से मोहन बागान की हानि हो सकती है। एक तो माहन बागान का सर्वनाश करने के लिए दुनिया-भर के लोग मिल गये।

सुकुमार के मेटल डिप्रेशन की खबर से विशुदा कतई निराश नहीं बोले, "डोण्ट घबडाओ। इसी फुटबाल के ब्लैडर की बात लो, एक बार कर बैठे ता क्या कोई उसे फेंक देता है? जहाँ छेद हो गया है वहाँ पैबद —रिपेयर के बाद ब्लैडर कभी-कभी ओरिजिनल से भी ज्यादा टिक हो जाता है। विशुदा ने कहा था, "एक मामूली-सी बात समझ मे नही है? पैबद से रेजल्ट न निकलता तो दुकान-दुकान मे इतना रबर मालुशन क्या बिकता?"

विशुदा की बातें सुकुमार को बहुत अच्छी लगी थीं। विशुदा ने कह "फिर तथ्य क्या निकलता है?"

सुकुमार का माथा खुजलाने के बावजूद जवाब नही मिल रहा था। न ही जीभ के अगले हिस्से से जरा-सा चूना छुलाते हुए कहा था, "समस्या का समाधान फस्ट-हाफ मे निकले तो ठीक है, वरना डोन्ट केयर, सेकेण्ड-हाफ रबर-सॉलूशन तो है ही।"

विशुदा की सारी खबरें भी सुकुमार ने सुनी थीं। व्यवसाय म उन्हे बहुत बडी मार खानी पडी है। कर्ज भी बहुत ज्यादा हो गया है।

लेकिन विशुदा ने कहा, "इससे क्या आता-जाता है? जब तक फा ह्विसिल न बज जाये हम फुल-फोर्स से खेलने रहना है।"

विशुदा से विदा लेकर सुकुमार ने निरुद्देश्य चहल-कदमी करना शुरू कर दिया था।

सुकुमार अच्छी तरह समझ रहा था, डलहौजी स्क्वायर मे घूमने-फिरने से कोई लाभ नही।

बी० बी० डी० बाग अब 'पास्ट टेन्स' हो गया है। किस्मत के खोजियों को वैसी जगह जाना होगा जहाँ 'प्रेजेन्ट' या 'फ्यूचर' है। टेन्स ही यदि ठीक समय मे न आये तो जीवन का पूरा वाक्य ही गलत हो जाता है।

फुटपाथ पर एक से एक व्यस्तता मे डूबे अनजान लोगो का धक्का खाकर सुकुमार अच्छी तरह समझ गया था कि इन बोस, घोष, मित्तिर, चाटुर्ज्या, बांडुज्या, दास, दत्त, मण्डल उपाधिधारी लोगो का 'टेन्स' बडा ही कमजोर

'पास्ट टेन्स' के पीछे-पीछे दौड लगाने मे इनकी कोई मिसाल नही। मगर 'प्रेजेंट' 'फ्यूचर' के बारे मे ये लोग जरा भी सतर्क नही रहते।

'प्रेजेन्ट परफेक्ट' के उस्ताद हैं ये सोवाइका, गोयनका, कारनानी, भावनिया। ये लोग कभी ग्रामर की गलती नही करते, इसीलिए सफलता के मार्केट मे इन्हे इतने अधिक नम्बर मिलते हैं।

मिशन रो, गणेश एवेन्यू होकर पैदल चलता हुआ सुकुमार सीधे वेलिंगटन स्क्वायर की ओर चला गया था। वही डॉक्टर मजुमदार से मुलाकात हो गयी। डाक्टर मजुमदार को भूला नही जा सकता। मानसिक चिकित्सालय मे उन्होंने ही जतन के साथ सुकुमार का इलाज किया था।

"क्या सुकुमार बाबू, सडक पर खडे होकर आप इतना क्या सोच रहे हैं? गाडी के नीचे दब नही जाइएगा।" डॉक्टर मजुमदार गम्भीर होने के बावजूद बडे ही दयालु व्यक्ति हैं।

डॉक्टर मजुमदार मेडिकल एसोसियेशन की मीटिंग मे जा रहे थे।

सुकुमार बोला, "मैंने पता लगाया है सर। प्राइवेट कार मे दब जाने से सबसे बडा लाभ है। परिवार को अच्छा खासा पैसा मिल जाता है। दूसरा नम्बर टैक्सी का आता है, उसके बाद बस का जिसके नीचे दबने के बदले मिलने वाले रुपये की तादाद बहुत कम होती है। सबसे खराब अगर कोई है तो वह ट्राम है—एक भी पैसा नही मिलेगा। बाप चाहे वकील ही क्या न हो, कानी कौडी भी नही निकाल सकता, क्योकि वह मोटर वेहिकल कानून के दायरे मे ही नही आती।"

सुकुमार की बातचीत से मजुमदार साहब उद्विग्न हो उठे। बोले, "मेरे साथ आइये। इतने-इतने विषयो के रहते आप गाडी से दबने के बारे मे अनुसंधान क्यो कर रहे हैं?"

सुकुमार ने कोई बात छिपाकर नही रखी। बोला, "अपने को बहुत ही अपमानित महसूस करता हूँ सर। स्वस्थ आदमी की हैसियत से नौकरी नही मिली तो अब पागल को भला कौन स्वीकार करेगा?"

सुकुमार की पारिवारिक स्थिति से डाक्टर मजुमदार अपरिचित नही थे। उन्होंने कहा, "आपसे बहुत अच्छे दिन मुलाकात हो गयी। आप इस चायघर मे बैठकर चाय पीजिये, मैं झट से आई० एम० की मीटिंग खत्म करके आता हूँ। तब आपसे बात करूँगा।"

डाक्टर मजुमदार पन्द्रह मिनट मे ही लौट आये। बोले, "मेरे साथ चलिये।"

जाते-जाते डॉक्टर मजुमदार ने उसे असली तथ्य से परिचित कराया। "मेरा एक मरीज है, मतिशील स्ट्रीट के पास उसकी कोयले या ऐसी ही किसी चीज की दुकान है। उसकी बीवी रो रही थी। डॉक्टर साहब, मेरे पति को जल्दी से जल्दी ठीक कर दें, वरना व्यवसाय का दीवाला बोल जायेगा।"

शायद इसी का अच्छा समय कहते हैं। डॉक्टर मजुमदार ने मिसज बेला घोष से इसी बात की चर्चा की। बोले, "सुकुमार बाबू बड़े ही विश्वस्त व्यक्ति हैं। जितने दिना के लिए जरूरत हो, इन्हें रख ले।"

मिसेज बेला घोष के हाथ मे तो जैसे चाँद ही आ गया हो। डाक्टर मजुमदार के जाने-पहचाने आदमी को एक ही बात मे नौकरी मिल गयी।

डॉक्टर मजुमदार बोले, "देखिएगा, सुकुमार बाबू, मेरे मान-सम्मान की रक्षा कीजिएगा।"

बात सही थी। पागल की बीबी की हालत विधवा से भी बदतर होती है। सुकुमार मित्तिर बेशक उसकी कोई हानि नही होने देगा।

फिर भी डॉक्टर मजुमदार की दुश्चिन्ता दूर नही हुई थी, उसी समय सुकुमार ने कहा था, "दुकान का मालिक और मैं एक ही लाइन के आदमी हैं सर। जान-सुनकर भी क्या एक पागल दूसरे पागल की कभी कोई हानि कर सकता है?"

"डाक्टर मजुमदार, आप युग-युग जिये। आपके पास इलाज कराने के लिए आने पर सुकुमार मित्तिर का सिर्फ मर्ज ही दूर नही हुआ, उसकी रोजी-रोटी का भी इन्तजाम हो गया।'

"इस तरह के डाक्टरो की कलकत्ता शहर मे जितनी ही वृद्धि हो उतनी ही अच्छी बात है। आपका सुकुमार मित्तिर वचन देता है कि यह बात बिलकुल छिपी हुई रहेगी। अगर एक बार प्रचार हो जाये कि पागल होने से नौकरी मिल जाती है तो इस शहर म लाखो बेरोजगार रातो-रात पागल होकर आपके इस अस्पताल के सामने कतार मे खडे हो जायेंगे और आप भारी मुसीबत म फँस जाइएगा।"

कोयले की दुकान मे काम शुरू करने के बावजूद सुकुमार ने अब भी घर घर इस खुशखबरी की घोषणा नही की थी। शुरू मे वह कुछ दिनो तक इस चीज को अच्छी तरह समझ लेना चाहता था। सुकुमार मित्तिर की तकदीर मे

'पास्ट टेन्स' के पीछे-पीछे दौड लगाने मे इनकी कोई मिसाल नही। मगर 'प्रेजेंट' 'फ्यूचर' के बारे मे ये लोग जरा भी सतर्क नही रहते।

'प्रेजेट परफेक्ट' के उस्ताद हैं ये सोवाइका, गोयनका, कारनानी, भावनिया। ये लोग कभी ग्रामर की गलती नही करते, इसीलिए सफलता के मार्केट म इन्हें इतने अधिक नम्बर मिलते हैं।

मिशन रो, गणेश एवेन्यू होकर पैदल चलता हुआ सुकुमार सीधे वेलिगटन स्क्वायर की ओर चला गया था। वही डॉक्टर मजुमदार से मुलाकात हो गयी। डाक्टर मजुमदार को भूला नहीं जा सकता। मानसिक चिकित्सालय मे उन्होंने ही जतन के साथ सुकुमार का इलाज किया था।

"क्यो सुकुमार बाबू, सडक पर खडे होकर आप इतना क्या सोच रहे हैं? गाडी के नीचे दब नही जाइएगा।" डॉक्टर मजुमदार गम्भीर ज्ञान के बावजूद बडे ही दयालु व्यक्ति हैं।

डॉक्टर मजुमदार मेडिक्ल एसोसियेशन की मीटिंग मे जा रहे थे।

सुकुमार बोला, "मैंने पता लगाया है सर। प्राइवेट कार मे दब जाने से सबसे बडा लाभ है। परिवार को अच्छा खासा पैसा मिल जाता है। दूसरा नम्बर टैक्सी का आता है, उसके बाद बस का जिसके नीचे दबने के बदले मिलने वाले रुपये की तादाद बहुत कम होती है। सबसे खराब अगर कोई है तो वह ट्राम है—एक भी पैसा नही मिलेगा। बाप चाहे वकील ही क्यो न हो, कानी कौडी भी नही निकाल सकता, क्योकि वह मोटर वेहिकल कानून के दायरे मे ही नही आती।"

सुकुमार की बातचीत से मजुमदार साहब उद्विग्न हो उठे। बोले, "मेरे साथ आइये। इतने-रतन विषयो के रहते आप गाडी से दबने के बारे मे अनुसंधान क्यो कर रहे हैं?"

सुकुमार ने कोई बात छिपाकर नही रखी। बोला, "अपने को बहुत ही अपमानित महसूस करता हूँ सर। स्वस्थ आदमी की हैसियत से नौकरी नही मिली तो अब पागल को भला कौन स्वीकार करेगा?"

सुकुमार की पारिवारिक स्थिति से डाक्टर मजुमदार अपरिचित नही थे। उन्होंने कहा, "आपसे बहुत अच्छे दिन मुलाकात हो गयी। आप इस चायघर मे बैठकर चाय पीजिये, मैं झट से आई० एम० की मीटिंग खत्म करके आता हूँ। तब आपसे बात करूँगा।"

डॉक्टर मजुमदार पद्रह मिनट मे ही लौट आये। बोले, "मेरे साथ चलिये।"

जाते-जाते डॉक्टर मजुमदार ने उसे असली तथ्य से परिचित कराया। "मेरा एक मरीज है, मतिशील स्ट्रीट के पास उसको कोयले या ऐसी ही किसी चीज की दुकान है। उसकी बीवी रो रही थी। डॉक्टर साहब, मेरे पति को जल्दी से जल्दी ठीक कर दें, वरना व्यवसाय का दीवाला बाल जायेगा।"

शायद इसी को अच्छा समय कहते हैं। डॉक्टर मजुमदार ने मिसज बेला घोष से इसी बात की चर्चा की। बोले, "सुकुमार बाबू बड़े ही विश्वस्त व्यक्ति हैं। जितने दिनो के लिए जरूरत हो, इन्हे रख ले।"

मिसेज वेला घोष के हाथ मे तो जैसे चाँद ही आ गया हो। डाक्टर मजुमदार के जाने-पहचाने आदमी को एक ही बात मे नौकरी मिल गयी।

डाक्टर मजुमदार बोले, "देखिएगा, सुकुमार बाबू, मेरे मान-सम्मान की रक्षा कीजिएगा।"

बात सही थी। पागल की बीवी की हालत विधवा से भी बदतर होती है। सुकुमार मित्तिर बेशक उसकी कोई हानि नही होने देगा।

फिर भी डाक्टर मजुमदार की दुश्चिन्ता दूर नही हुई थी, उसी समय सुकुमार ने कहा था, "दुकान का मालिक और मैं एक ही लाइन के आदमी हैं सर। जान-सुनकर भी क्या एक पागल दूसरे पागल की कभी कोई हानि कर सकता है?"

"डाक्टर मजुमदार, आप युग-युग जिये। आपके पास इलाज कराने के लिए आने पर सुकुमार मित्तिर का सिर्फ मर्ज ही दूर नही हुआ, उसकी रोजी-रोटी का भी इन्तजाम हो गया।'

"इस तरह के डॉक्टरो की कलकत्ता शहर मे जितनी ही वृद्धि हो उतनी ही अच्छी बात है। आपको सुकुमार मित्तिर वचन देता है कि यह बात बिलकुल छिपी हुई रहेगी। अगर एक बार प्रचार हो जाये कि पागल होने से नौकरी मिल जाती है तो इस शहर म लाखा बेरोजगार राता-रात पागल होकर आपके इस अस्पताल के सामने कतार मे खड़े हो जायेंगे और आप भारी मुसीबत म फँस जाइएगा।"

कोयले की दुकान मे काम शुरू करने के बावजूद सुकुमार ने अब भी घर घर इस खुशखबरी की घोषणा नही की थी। शुरू म वह कुछ दिनो तक इस चीज को अच्छी तरह समझ लेना चाहता था। सुकुमार मित्तिर की तकदीर मे

नौकरी रहती या नहीं, यह जरा देख लेना चाहिए। इसके अलावा वह घर पर भी एक छोटा-मोटा नाटक मचित नही करना चाहता।

पहले महीने की कमाई का पैसा सीधे घर पर लाकर बेकार सुकुमार मित्तिर सबका हैरत मे डाल देगा। एक बार कॉलेज के ड्राम मे उधार खाते म लिखे हुए स्वेच्छाचारी की भूमिका मे सुकुमार ने अभिनय किया था। लडका लखपति होकर घर लौटा, उसके बाद कितना बडा काण्ड हुआ था।

सोमनाथ उसके पिता की भूमिका मे उतरा था। नाटकीय क्षण मे उत्तेजना के कारण सामनाथ पार्ट भूल गया था। वह जो-सो बोलने लगा—सुकुमार ने ही बडी मुश्किल से उस सीन का बचाव किया था।

इस बीच सुकुमार कई दिनो तक काम कर चुका है। शुरू मे उसे बडा डर लगता था। लगता, कोयले के व्यवसाय का मालिक नानू घोष यदि एकाएक स्वस्थ होकर मानसिक चिकित्मालय से लौट आये तो ?

लेकिन अब सुकुमार का मनोबल वढ गया था। मिसेज बेला घोष ने डाक्टर मजुमदार से मुलाकात की थी। उन्होने कहा था, "लगता है, वक्त लगेगा। यह मज आसानी से दूर नही होता।"

सुकुमार डाक्टर मजुमदार पर और भी अधिक खुश हुआ था। मिसेज बेला घोष से उन्होने कहा था, "सुकुमार पागल नही हुआ था, नौकरी की चिन्ता के कारण उसको जरा नर्वस ब्रेक डाउन हो गया था।"

कोयले की दुकान का काम सुकुमार को कोई बुरा नही लग रहा था। अच्छा खासा दिमाग लगाने की बात थी। कपनी के बहुत सारे ग्राहक हैं। सुकुमार को अब उन दुकानो और दफ्तरो मे भी जाना पडता था।

नानू घोष की सामयिक अस्वस्थता के समय जिन लोगो ने लेन-देन बन्द कर दिया था उन्हे लौटा लाने के लिए सुकुमार कमर कसकर लग गया था। कुछेक ग्राहक तो इसी बीच लौट भी आये थे।

मिसेज घोष सुकुमार की लगन से बेहद खुश हुई थी।

उनकी लडकी शकुन्तला उस दिन कॉलेज से सीधे दुकान पर ही चली आयी थी।

शकुन्तला ने अपनी बडी-बडी आँखो से सुकुमार की ओर कितनी खूबसूरती के साथ ताका था! "माँ आपके काम से बहुत ही खुश हैं, मिस्टर मित्र।"

"यह 'मिस्टर' शब्द क्यों ? हम मामूली आदमी हैं, मुझे सुकुमार कहकर ही पुकारिए न।" सुकुमार ने अनुरोध किया।

"माँ ने कहा था कि आप न मिलते तो इस व्यवसाय की न जाने क्या हालत होती।" शकुन्तला की चटख काले रंग की भौंहों और काजल ने अब सुकुमार का ध्यान अपनी ओर खींचा।

"कुछ भी नहीं बिगड़ता," शकुंतला के चेहरे की ओर सीधे ताकते हुए सुकुमार ने आश्वासन दिया था। "आपको ही जिम्मेदारी उठानी पड़ती।"

"लड़कियाँ व्यवसाय करेंगी ! आप यह क्या कह रहे हैं, सुकुमार बाबू ?" कॉलेज छात्रा शकुंतला के समझ में यह बात नहीं आ रही थी।

"क्यों ? बंगाल के अलावा तो सभी प्रांतों की औरतें आजकल व्यवसाय करती हैं, मिस घोष।"

"मिस घोष ! सुनने में कितना बुरा लगता है। कोई लय नहीं। आप नाम लेकर ही मुझे पुकारा करें सुकुमार बाबू।" इतनी मीठी बात सुकुमार ने सिनेमा या उपन्यास के बाहर कहीं नहीं सुनी थी।

सुकुमार सिर खुजला रहा था। लड़कियों की मानसिकता और साहचर्य के सम्बंध में उसे जरा भी अनुभव नहीं। उसके जान पहचान लोगों में से एकमात्र सोमनाथ ही जरा साहसकर सहपाठिनी तपती के साथ घूमा-फिरा करता था। लेकिन सोमनाथ बड़ा ही नर्वस है—घूमने निकलने पर भी तपती से वह कोई खास बातचीत नहीं करता था। सुकुमार यह बात सुन चुका था। उन लोगों के क्लास में और भी लड़कियाँ न हों, ऐसी बात नहीं। यह भी नहीं कि सुकुमार उन लोगों से लिखने-पढ़ने के बारे में बातचीत न करता हो। लेकिन बस यहीं तक। उससे एक कदम भी आगे बढ़ने का सुकुमार ने उत्साह प्रकट नहीं किया था। जिसके घर में इतनी-इतनी वयस्का कुमारी बहिनें हों, जिसकी माँ की सेहत अच्छी नहीं रहती, जिसके पिता की नौकरी की हालत डावाडोल हो, दो दिन बाद जिसे दो कौर खाना भी नसीब होगा या नहीं, उसे प्रेम करना क्या शोभा देता है ?

फिर भी मन हमेशा मानने को तैयार नहीं होता। कॉलेज में जब भी मन में थोड़ी-सी कमजोरी पैदा होती थी, सुकुमार स्वयं को संयत कर लेता था, "सुकुमार, तुम्हारे जैसे नौजवान के लिए लड़कियों से हिलना-मिलना अक्षम्य अपराध है।"

लेकिन ये सब तो किसी दूसरे युग की बातें हैं। अब तो परिस्थिति बिल्कुल बदल चुकी है। "सुकुमार मित्तिर, उस दिन तुम शकुन्तला से इस तरह चेहरा

लटकाकर बातचीत करते रहे, जैसे मालिक ने विधवा बुआ के हुक्म की तालीम कर रहे हो। तुम इस तरह उदासीन और उत्तापहीन हो, फिर भी शकुंतला ने तुमसे पूछा था आप किस कॉलेज मे पढ़ते थे ? उसका और तुम्हारा कॉलेज एक ही है, यह सुनकर शकुंतला कितनी खुश हुई थी !" बिस्तर पर लेट, चादर की ओट म मुँह छिपाकर सुकुमार सारी बातें याद करना चाहता था।

दोनो मे फिर मुलाकात हुई। शकुंतला ने कहा था, "कल माँ से मेरी बातचीत हुई थी। आपने जो-जो कहा था, सब कुछ बताया। लेकिन ! उफ ! आप न रहते तो मुझे ही यह कायले का कारोबार करना पडता। इस बात की मैं कल्पना भी नही कर पाती हूँ।'

"हो सकता है आप इस व्यवसाय को और अच्छी तरह चला लेती। कहीं कोई बर्बादी नही होने देती।"

"आप यह क्या कह रहे हैं !" शकुंतला के स्वर से सुकुमार के प्रति अपार श्रद्धा टपक रही थी।

शायद और भी ढेर सारी बातचीत चलती। लेकिन सुकुमार ने उसका वक्त बर्बाद नही किया था।

उसने कहा था, "आज वैगन से कोयला आने की बात है। अभी तुरन्त उसकी डिलीवरी न ली जायेगी तो बहुत सारे ग्राहक लौट जायेंगे।

सुकुमार को अन्दर से इच्छा हो रही थी कि वह शकुंतला से और कुछ देर तक बातचीत करे मगर उसे कर्तव्य को पहला स्थान देना था। बहुत मुश्किल से यह एक काम मिला है, किसी तरह की अवहेलना करेगा तो ईश्वर से यह बात बर्दाश्त नही होगी।

सुकुमार ने ड्यूटी मे कभी कदम पीछे नही रखे हैं। वैगन से लॉरी म कोयले की लदाई कराकर चितपुर रेल साइडिंग से दुकान तक लॉरी पर ही बैठकर चला आया है।

सुकुमार ने इस कर्म-जीवन के बारे म घर पर भी किसी को कोई पता नही चला है। सिर्फ छोटी बहिन ने एक बार भैया का कुरता बाल्टी मे भिगोते वक्त पूछा था, "दिन-भर कहाँ का चक्कर लगाते रहते हो ? कुरते म इतनी कालिख क्यो है ?"

बीमारी के बाद से सुकुमार को घर पर विशेष सम्मान मिल रहा था। छोटी बहिन ही उसका कुरता और बनियाइन नियमित तौर पर धो दिया करती थी। कोई और दूसरा वक्त होता तो सुकुमार बहिन के सवाल से गुस्से मे आ जाता, मुह खोलकर कह देता, "मैं कहीं का चक्कर लगाऊँ, तुझसे मतलब ? तू क्या मेरी

जेठ है ?" लेकिन उस दिन सुकुमार ने कहा था, "मेरी भली बहिना, अच्छी तरह धो दे। अब और कितने दिनो तक मेरा कुरता धोती रहेगी ? किसी दिन भी चट से ससुराल चालान हो जायेगी।"

बहिन ने पैण्ट इतनी अच्छी तरह धोया है कि धोबी को भी हार माननी पडे।

"कहाँ सीखा यह तूने ?" सुकुमार ने पूछा था।

"दीदी से।" दीदी के कपडे मे कोई खोट रहने से काम नही चल सकता। रोज कपडे मे इस्तिरी होनी चाहिए।

इस मौके पर कोयला-दुकान मे अस्थायी नौकरी पाने की घोषणा करने से कोई बुरा नही होता। सुकुमार का मन छटपट कर रहा था। लेकिन सुकुमार ने पहले जो योजना बनायी है, वही बेहतर है। तनख्वाह मिलने पर वह साढ़े सात सौ ग्राम मास और ढाई सौ ग्राम मिहिदाना खरीदकर, जेब मे हाथ डाले, विजय के दर्प के साथ घर के अन्दर कदम रखेगा। सुकुमार किसी को कुछ माँगने का भी सुयोग नही देगा। सारे पैसे माँ के हाथो मे धर देगा।

•

एक प्रसन्नता का भाव मन के अन्दर भौंरे की तरह गुंजार कर रहा था। फिर भी आज सुकुमार को नींद क्यों नही आ रही ?

रात का खाना-पीना समाप्त कर कणा अब कमरे के अन्दर आ गयी थी। कणा की चौकी कमरे के उस कोने मे है। बीच की चौकी पर छोटी बहिन गहरी नींद मे खोयी हुई है। और इस ओर सुकुमार हाथ-पैरो को यथासंभव निढाल छोड शवासन की चेष्टा कर रहा था।

"भैया, सो गये क्या ?" कणा अपना चेहरा शान्ति के साथ भैया के चेहरे के पास ले आयी थी।

"कौन, कणा ? सुकुमार सो नही पा रहा, यह खबर बेचारी कणा को देकर अब आधी रात मे उसकी दुश्चिन्ता बढ़ाने से लाभ ही क्या था ?"

सुकुमार का चादर से ढका शरीर हल्के से हिल उठा। जैसे वह हल्की नींद मे डूबा हुआ था।

"कैसे हो भैया ?" कणा आज अजीब स्वर मे पूछ बैठी।

कणा हर रोज भैया की खोज-खबर लेती है लेकिन आज कणा का स्वर बड़ा ही कोमल जैसा लगा।

"मैं बिलकुल ठीक हूँ कणा। हम इतनी बेहतर हालत मे कभी नहीं थे, कणा।" उत्तर देते वक्त सुकुमार स्वय थोडी उत्तेजना म आ गया।

तब तक कणा अपनी चौकी के पास जा चुकी थी। दूसरे दिन घर लौटने पर अब तक कणा शरीर और सौन्दर्य के प्रसाधन म व्यस्त हो जाती थी। कणा जाने किस-किस क्रीम का इस्तेमाल कर माथे-गरदन का तैल और मैल दूर कर लेती है। उसके बाद एक और शीशी स कुछ निकालकर मुख पर रगड़ती है। बहुत दिन पहले सुकुमार ने कणा की इस प्रसाधन-प्रीति के सम्बन्ध में दो-चार बार कटुता युक्त राय जाहिर की थी। उन दिनो कणा को बाबूजी से स्नो-पाउडर के लिए पैसे की माँग करनी पडती थी। अब कणा किसी पर निर्भर नही है। अपनी कमाई से वह दूध की मलाई भी लगाये तो कणा को कोई कुछ नही कह सकता।

किसी-किसी दिन कणा बालो मे न जाने कैसे-कैसे क्लिप लगाती है। एक-एक क्लिप लगाने मे काफी वक्त लग जाता है। एक तो कणा देखने मे यो भी बेहद खूबसूरत है, क्लिप लगाकर सामने के कुछ बालो को और घुघराले बनाने से क्या लाभ होता है, कौन जाने! यह सब करने मे खासा अच्छा वक्त निकल जाता है। रोशनी जली रहने के कारण सुकुमार को असुविधा होती है मगर वह बरदाश्त कर लेता है।

लेकिन आज कणा ने अपने जिस्म का कोई सेवा-जतन नहीं किया। कल शायद दफ्तर बन्द है, सुकुमार ने अन्दाज लगाया।

सुकुमार न देखा, एक कीमती कपडा पहने ही आज कणा सोने जा रही है। लगता है, घर लौटने के बाद उसने कपडा नही बदला है। मगर कणा तो कपडा के मामले म बडी सतर्क रहती है।

कुछेक क्षणों तक कमरे मे चुप्पी रेंगती रहती है। सुकुमार ने सोचा था, जवाब मे कणा कुछ कहेगी। लेकिन कणा की ओर से कोई आवाज नहीं आ रही थी। फिर कणा क्या आज बहुत थकी हुई थी?

"कणा, आज तुझे आफिस म क्या बहुत ज्यादा खटना पडा है?" भैया ने जानना चाहा।

कणा लेकिन तब भी खामोश थी।

"आफिस मे किसी ने आज तुझे डाँटा-फटकारा है?" भैया पुन स्नेह के साथ पूछता है। सुकुमार को पता चला है, दफ्तर में साहब लोग अकसर कर्म-

घारिया को डाटने-फटकारने लगते हैं और वैसी हालत मे सब बरदाश्त करना पड़ता है, प्रतिवाद करने का भी कोई उपाय नही रहता।

"भैया तुम सोओगे नही ?" अब कणा ने चुप्पी तोड़ी।

"मुझे अभी तुरन्त नीद आ जायेगी, कणा। मगर सोचता हूँ, मुझे इतना सुख मिला है—सो जाऊँगा तो याद ही नही रहेगा।"

कणा ने दीवार की ओर मुह घुमा लिया है। 'भैया, सो रहो। नीद ही तुम्हारी दवा है।"

"आनन्द भी मेरी दवा है।" सुकुमार सरल मन से कह बैठा। यह जो बाबूजी की नौकरी का कार्य-काल बढ़ गया है, एक बहिन की अच्छी शादी हो गयी है, मकान के किराये की बाबत एक पैसा भी बकाया नही है, उधार न रहने के कारण पसारी की दुकान के सामने से सीना तानकर चल सकता हूँ, हम लोगो के घर मे आम की लकडी की यह जो दो अदद चौकिया आ गयी है, फर्श पर लेटने की वजह से छछूदर के काटने का डर नही रहता है "

"भैया।"

"कणा, याद है, बचपन मे तुझे छछूदर ने काट लिया था ? मुझे बडा गुस्सा आ गया था। छछूदर को मैंने भागने का मौका नही दिया था। नाली का मुह ईट से बन्द कर छछूदर को पीट पीटकर मार डाला था। उससे बेशक कोई सहूलियत नही हुई थी। तुझे इमर्जेन्सी मे अस्पताल ले जाना पडा था। बहुत सारे इजेक्शनो का दर्द भी तुझे बरदाश्त करना पडा था।

"भैया, उस समय तुम मुझे बेहद प्यार करते थे ?"

कणा ने इस रात कितना अजीब सवाल किया है! "इसका मतलब ? तब तुझे मैं प्यार करता था और अब नही करता हूँ ? कणा, तुझे इस घर मे कौन प्यार नही करता ? तू घर की क्या है, इस बात की मुझे क्या जानकारी नही है ?"

कणा फिर खामोश हो जाती है।

सुकुमार ने कहा, "सब कुछ अगर इसी तरह बढ़िया ढग से चलता है तो तेरे बारे मे भी एक डिसीजन ले लूगा, कणा।"

दीवार की ओर मुह किये ही कणा जैसे हँस रही थी। "मेरे बारे मे तुम लोग क्या करोगे भैया ?"

"भैया का जो कर्त्तव्य है, वही करूगा। मैं जरा खुद को सहेज लू तो फिर तुझे काम पर नही जाने दूँगा, कणा। जल्दी से जल्दी तेरी शादी कर देने से ही मेरी जिम्मेदारी कम हो जायेगी।'

"कणा, तू बोल क्यों नहीं रही है ? तेरी तबीयत खराब है क्या ?"

"भैया, तुम सो रहो। तुम्हारे लिए सोना जरूरी है। इस तरह जगकर मेरे बारे में सोचते मत रहो।"

"मैं नहीं सोचूंगा तो कौन सोचेगा ? जब तक तुझे नौकरी से आजाद नहीं करा लूंगा तब तक मुझे चैन नहीं मिलेगा।"

कणा ने शायद करवट ली। "मेरे बारे में तुम्हें फिक्र नहीं करना है, भैया। मैं कभी तुम लोगों का बोझा नहीं बनूंगी।"

"कणा, तू अब भी अभिमान किये बैठी है ? कब किस जमाने में तुझे डाँट फटकारा था, वही बात, लगता है तुझे याद आ रही है।"

"उफ् भैया, मैं क्या अब भी नन्ही-मुन्नी कणा ही हूं ? तुम सो जाओ, चिन्ता न करो।' कणा की आवाज आज सुकुमार को स्वाभाविक जैसी लग ही नहीं रही थी।

"चिन्तित होना स्वाभाविक है। जानती है कणा, भले घर की लड़की का घर से निकलना ही चिन्ता की बात है। आज ही एक आदमी से झगड़ा हो गया। बहुत ही बड-बड कर रहा था। दो-चार तमाचे लगा दिये। बेटा बहुत दिनों तक याद रखेगा।"

"किसको तुमने तमाचे लगा दिये, भैया ? कणा के स्वर में उद्विग्नता की छाप थी। गुस्से में आने से तुम्हें मना किया गया है न ?"

"मैं गुस्से में नहीं आया था। लेकिन आज गुस्से में न आता तो यही समझा जाता कि सुकुमार मित्तिर जिन्दा नहीं है—उसकी सिर्फ लाश ही घूम-फिर रही है। या फिर सुकुमार मित्तिर भेड़ा हो गया है।'

"भैया!" कणा और अधिक उद्विग्न हो गयी। "तुम्हारे शरीर में कुछ भी नहीं है, भैया।"

"पहले मेरी बात सुन ले, कणा। तू अगर मेरी हालत में होती तू उस आदमी की नाक ही कुचल देती।"

कणा अब शांतिपूर्वक सुन रही थी।

सुकुमार ने कहा, "जानती है कणा, मैं गली के नुक्कड़ पर चुपचाप बैठा था, तभी तल से चुपड़ी गरदन लिए एक खल्वाट आदमी टैक्सी से उतरा। अजीब ही तरह का आदमी था। खल्वाट मगर गलमुच्छा। कोट-पैण्ट-टाई पहने था मगर मुंह में पान। दाँत पके हुए सेम के बीज की तरह रंगीन थे।

"वह आदमी मुझे देखकर खुलकर हँसा और खड़ा हो गया। हाथ में एक

विजिटिंग कार्ड थमाते हुए बोला, मेरा नाम नटवर मित्तिर है, पब्लिक रिलेशन कन्सलटेन्ट।"

"तभी मुझे सन्देह हो रहा था, कोई न कोई गड़बड़ी होगी। इस आदमी की किस्मत में दु:ख ही लिखा है।

"जानती है कणा, उस आदमी में कितनी हिम्मत थी ?"

"मुझसे कहा शिउली दास नामक लड़की की सख्त जरूरत है। यहां किस नये मकान में आकर टिकी है, आपको मालूम है ?"

"शिउली दास कौन है ?" मैंने तीखी आवाज में पूछा।

उस समय उस रास्कल ने कहा हमारे साथ उसका बिजिनेस रिलेशन है। एकाध घण्टे के लिए उसे होटल ले जाऊँगा। बड़ा ही अर्जेन्ट काम है—साथ में टैक्सी है।"

तत्क्षण खड़े हो मैंने थुथने पर एक घूसा रसीद कर दिया "बेटे, भले लोगों के मुहल्ले में शिउली दास की तलाश करने आये हो ? अगर तुम्हें यहां दुबारा देखा तो कमर ही तोड़ दूँगा। जिन्दगी में फिर कभी टैक्सी पर नहीं बैठ सकोगे।"

कणा की छाती प्रबल उत्तेजना से धड़कने लगी थी। भाग्य अच्छा था कि सुकुमार कुछ देख नहीं पा रहा था।

"भैया ! तब उस आदमी ने क्या कहा ?" सुकुमार को कणा की आवाज काँपती-सी सुनायी पड़ रही थी।

"तुझे डर लग रहा है ?" सुकुमार स्नेह के साथ पूछता है।

"डरने की बात ही है। तुझे हर रोज अकेले काम पर जाना पड़ता है शिउली दास कौन है, समझ में नहीं आ रहा है। हरामजादा नटवर मित्तिर उसकी बर्बादी करके ही दम लेगा। पता लगाकर शिउली के माँ-बाप से कह देना ही अच्छा रहेगा।'

कणा तब भी नटवर मित्तिर वाली बात जानने को उत्सुक थी।

सुकुमार बोला, "पट्ठा पी० आर० सी० तब जबड़ा थामे मुझे धमकी देने लगा यह काम आपने अच्छा नहीं किया। अब शिउली को ही इस नटवर मित्तिर के पास आकर बिजनेस के लिए पाँव पकड़ना होगा।"

जानती है कणा, उस समय वह आदमी अपना गंजा सिर खुजलाते हुए बोला था, शिउली का एक दूसरा नाम भी है मगर याद नहीं आ रहा है।

कणा को महसूस हो रहा था जैसे उसका पूरा जिस्म बिजली के झटके से

अवश पड़ता जा रहा हो। कणा ने जी-जान से अपनी निस्पन्द देह से करवट लेने की कोशिश की।

टेलीफोन ऑपरेटिंग रूम में चरणदास से ही उस बार शिउली को नटवर मित्तिर का नाम सुनने को मिला था। टैक्सी पर बिठाकर चरणदास ने शिउली से कहा था नटवर बाबू का आदमी है, मेरी बहुत दिना का पुरानी पार्टी है—उन लोगों को किसी तरह की असुविधा नहीं होना चाहिए।

केवल कुछ ही महीने पहले के ग्रेट इण्डियन होटल के रास्ते का वह दृश्य कणा की आँखों के सामने दुबारा अभिनीत हो रहा था। सोमनाथ कह रहा था, "मेरा नाम बैनर्जी है। आपका शुभ नाम ?" कणा मुँह घुमाकर कह रही है, "शिउली दास।" ग्रेट इण्डियन होटल म मिस्टर गोयनका के कमरे से निकलने पर एक गंजे आदमी से कणा की मुलाकात हुई थी। लगा, इस आदमी को सब कुछ मालूम है। वह अजीब ही तरह से उसकी ओर घूर रहा था। निश्चय ही वही आदमी नटवर मित्तिर था।

सर्वनाश करने वाले विष की क्रिया से कणा का शरीर जैसे आहिस्ता-आहिस्ता अवश होता जा रहा था।

सुकुमार बोला, "जानती है कणा, शिउली का असली नाम बताने की कोशिश करता तो मैं उस हरामजादे को ऐसा तमाचा लगाता कि वह अपना ही नाम भूल बैठता। मगर नटवर मित्तिर कोई सुविधा न देख भेड़े की तरह पीछे की ओर सरकने लगा। इस बीच मैंने पट्ठे के थुथने पर एक 'माइल्ड' घूसा रसीद कर दिया। लेकिन वह बगैर 'फाइट' किये वेटिंग टैक्सी के अन्दर कूद पड़ा और आंधी की तरह चलता बना।"

कणा का कोई शब्द सुकुमार के कानों तक नहीं पहुँच रहा था। लगता है, बेचारी सो गयी। सुकुमार मित्तिर की आंखों में यदि नींद नहीं है तो दुनिया का और कोई आदमी भी न सोये, यह कैसे हो सकता है ?

०

थोड़ी देर बाद ही गलतफहमी दूर हुई। सुकुमार की आँखों में भी कुछ क्षणों के लिए झपकी आ गयी थी। उसके बाद आँख खो[illegible] , कणा सोयी नहीं थी। वह बिस्तर से उठ[illegible] ी थी

दीवार से लगी मेज पर [illegible] लकड़ी

की इस मेज को कणा ही कुछ दिन पहले खरीदकर ले आयी थी। उसी पर कणा की प्रसाधन की सामग्रियाँ और एक बडा-सा आईना पडा रहता था।

इतनी रात मे कणा क्या लिख रही थी ? कणा क्या आजकल छिपकर कविता लिखा करती है ?

सुकुमार ने अपने आपको फटकारा। सुकुमार मित्तिर, अपना दिमाग थोडा और साफ करो। इस समय एकमात्र जो चीज लिखी जा सकती है वह है डायरी। गहरी रात मे बहुतेरे आदमी डायरी के माध्यम से स्वय से वार्त्तालाप करते हैं।

लेकिन ! सुकुमार को एकाएक याद आया, कणा ने कमरे की बिजली बत्ती नही जलायी थी। टॉर्च को मेज पर इस सावधानी के साथ जलाकर रखा था जिससे कि सुकुमार की नीद मे खलल न पहुँचे।

टॉच की रोशनी मे भी कोई कभी डायरी लिखता हो, सुकुमार ने ऐसा नही सुना था। फिर एक ही विकल्प हो सकता है।

कणा कितनी उत्सुकता के साथ झुककर लिखे जा रही है। कणा जरूर ही पत्र लिख रही है।

इतनी रात में बिस्तर से उठकर इस तरह छिपकर चिट्ठी लिखने योग्य कोई व्यक्ति उसे निश्चय ही मिल गया है। कणा, तू अन्तत भैया की पकड मे आ गयी। कॉट विहाइन्ड द स्टम्प्स—पीछे से भैया तुझ पर निगरानी रख रहा है। लेकिन डरना नही। भैया तुझे डिस्टर्ब नही करेगा, तुझे शर्मिन्दा भी नही करेगा।

तू मन के आनन्द और प्राणो के सुख मे चिट्ठी लिखती जा, कणा। तेरे लिए कोई प्राइवेसी नही है। अपना घर तो दूर की बात, अपनी एक मेज की दराज भी नही है। तेरा वैनिटी बेग भी प्राइवेट नही है। भाई चाहे उसमे हाथ न डाले लेकिन बहिनें तो जरूरत पडने पर उसमे हाथ डालती हैं।

धाणी उस दिन दीदी का वैनिटी बैग लिए कही से घूम फिर आयी। बाथ-रूम के नाम से भी अलग कोई स्थान नही है, इज्जत बचाने के लिए टाट का एक परदा टाँग दिया गया है। कही सुकुमार ने पढा था, ज्यादातर बगालियो की प्राइवेसी एक मात्र पाखाना होता है। लेकिन वहाँ भी वक्त की राशनिंग है।

सुकुमार ने मन ही मन कहा कणा, तेरे लिए चिन्ता की कोई बात नही। जब तक, जिसको भी मर्जी हो, खत लिखती जा। सुकुमार मित्तिर तुझे क्षण भर के लिए भी शर्मिन्दगी मे नही डालेगा।

सुकुमार ने एकाएक देखा, कणा चिट्ठी लिखना बन्दकर भैया की ओर सतर्क आँखों से ताक रही है।

"भय की कोई बात नहीं है कणा" सुकुमार ने मन ही मन कहा। "तू अपनी पसन्द के अनुसार किसी को चिट्ठी लिखेगी तो मैं उसमें बाधक क्यों बनने जाऊँगा।"

अब सुकुमार के मन में कौतूहल जग रहा था, चिट्ठी का नायक कौन है? वह कौन युवक है? उसका स्वभाव कैसा है? सुकुमार क्या उसे पहचानता है?

सुकुमार मन ही मन कणा को आश्वासन दे रहा था। जान-पहचान कर किसी से शादी करना सुकुमार की निगाह में अन्याय नहीं है। सुकुमार कहना चाहता था, "कणा, कभी कोई जरूरत पड़े तो बताना, मैं यथासाध्य सहायता करूँगा। तेरा नायक अगर विजातीय भी होगा और मनुष्य की दृष्टि से सज्जन होगा तो भी मेरी ओर से कोई आपत्ति न होगी बल्कि माँ-बाप कहीं अड़ंगा न लगायें, इसके लिए भी मैं कोशिश करूँगा।

"कणा, अभी तुरन्त उठकर तुझसे सब कुछ जानने का लोभ हो रहा है। लेकिन यह उचित नहीं होगा। चाहे जो कुछ हो, मैं तेरा भैया हूँ, इस संबंध में मेरी ओर से अधिक कुतूहल दिखाना ठीक नहीं है। इसके अलावा मामला किस हालत में है, इससे भी मैं परिचित नहीं हूँ।"

कणा ने आहिस्ता से एक पृष्ठ फाड़ डाला। सुकुमार सोच रहा था, कणा को मजमून पसन्द नहीं आ रहा था। वह मन से जो कुछ कहना चाहती है, संकोच के कारण, हो सकता है, वह इस गहरी रात में कलम की नोक पर आना न चाहता हो।

कणा, तू सचमुच ही बड़ी बुजदिल है। चिट्ठी लिखना बन्द कर कुरसी से उठकर तू दबे पाँवों आयी और भैया को देखकर चली गयी। छोटी बहिन को देखना तेरे लिए आवश्यक नहीं है। घर में आग लग जाये तो भी उसकी नींद खुलने वाली नहीं है।

वह चिट्ठी लिखना भी खत्म हो गया। मगर कितन आश्चय की बात थी! कणा सुकुमार की चौकी की तरफ ही चली आ रही थी।

सुकुमार साँस रोककर लाश की तरह बिस्तरे पर पडा रहा। कणा समझ नही सकी कि उसके भैया की आखो मे तब भी नीद नही है। कणा अब क्या करती है, यही जान लेने का कुतूहल था।

कणा ने उस पत्र का सावधानी के साथ भैया के तकिये के नीचे घुसेर दिया। कणा का शायद डर नही लग रहा था। भैया के सिरहान वह खडी थी ता खडी ही थी।

इस तरह तो भैया के चेहरे की ओर कणा कभी नही निहारती थी। कणा ने मिट्टी की सुराही से एक गिलास पानी ढाला। कणा अब शायद विश्राम करेगी। सुकुमार ने देखा कणा अपनी चौकी के पास जाकर उस पर बैठ गयी थी, उसके हाथ म एक गिलास पानी है। अब जलता हुआ टाच बुझ गया।

सुकुमार का पूरा शरार एकाएक सिहर उठा। एक अज्ञात भय ने उसे चाबुक मारकर अकस्मात सचेत बना दिया। एक ही लहमे म बिस्तर से उछल कर सुकुमार खडा हा गया। उसके बाद दौडता हुआ कणा की तरफ गया और मेज पर रखे टाच का जला लिया है।

जिस चीज का डर था वही हुआ। कणा के हाथ म एक शीशी थी—उसम सफेद रग की नीद की टिकिया सुकुमार के लिए रहती है। नयी शीशी की तमाम टिकियाओ को कणा ने पानी के गिलास मे डाल दिया था।

"कणा!" सुकुमार की दबी हुई चीख निकल पडी।

उसके पहले चील की तरह झपट्टा मार कर कणा के हाथ से सुकुमार न पानी का गिलास छीन लिया था। सुकुमार ने कमरे के अन्दर ही गिलास का सारा पानी गिरा दिया।

ऐसा भी हो सकता है, कणा ने शायद इसकी तो कल्पना हो नही की थी। उसकी कामल देह स एक अस्फुट असहाय कराह बाहर निकल पडी, "भैया!"

इस बीच सुकुमार के जिस्म मे मलेरिया की जैसी कँपकँपी शुरू हो गयी थी। उसने लपक कर मेज पर रखी चिट्ठी उठा ली।

कणा ने पुलिस का खत लिखा था

"महाशय, मैं स्वेच्छा से मरने जा रही हूँ। मेरे अलावा कोई दूसरा मेरी मौत के लिए जिम्मेदार नही है। कृपया मेरे माँ-बाप, आत्मीय-स्वजना को तग न करे। और अगर संभव हा तो कृपया मेरा नाम भी अखबार म न भेजें।—कणा मित्र।"

सुकुमार एक ही छलाग म अपने बिस्तर के पास चला आया। तकिये के नीचे से कणा की रखी हुई चिट्ठी को सुकुमार ने टॉर्च की रोशनी मे झटपट प' लिया।

"भैया, एक मात्र तुम्हें लिख रही हूँ। इसके अलावा खोजने पर भी मुझे कोई दूसरा उपाय नही मिला, भैया। मैं तुम लोगा के मुह मे कालिख लगाना नही चाहती। सारा दोष मेरा ही है। अब देर होगी तो समाज के सामने माँ और बाबू जी मुह दिखाने लायक नही रह जायेंगे। छोटी बहिन की भी शादी नही हागी। तुम इस पत्र को पढने के बाद ही फाड डालना। पुलिस को नही देना। अगर सभव हो तो इस बात की कोशिश करना कि पुलिस मेरी देह की चीर-फाड न करे। तुम्हे बहुत तक्लीफ पहुँचाकर जा रही हूँ। गुडबाई भैया। इति।—कणा।"

सुकुमार ने जलता हुआ टाच कणा के बिस्तर पर फेंक दिया और दोनो हाथो से उसने कणा के हाथ कसकर पकड लिये।

"कणा!" यह शब्द एक चीख की तरह ही सुकुमार के मुह से निकला।

"भैया! रोशनी बुझा दो।" कणा के मुह से कातर चीख निकल पडी। इस क्षण वह अपना कलकित चेहरा भैया को भी दिखाने को तैयार नही थी।

पहले तो सुकुमार की इच्छा हुई कि कणा के गाल पर कसकर एक तमाचा लगाये। मगर सुकुमार की देह अवश होती जा रही थी। उसने टॉर्च की रोशनी बुझा दी।

और एक क्षण की भी देर हो जाती तो सत्तर नीद की टिकियो से भरा पानी कणा की देह के अन्दर चला गया होता यह बात सोचते ही सुकुमार को जोरो से पसीना छूटने लगा। पूरे जिस्म से गिलास पर गिलास पानी दौडता हुआ बाहर निकल रहा था।

सुकुमार न महसूस किया, कणा न अब अपना मुह अपने भैया के सीने मे छिपा लिया था। गरम-गरम आँसू की बूदे सुकुमार के सीने के बीच पसीने से एकाकार होती जा रही थी।

आकाश से भी बारिश शुरू हो गयी थी, साथ ही साथ धरती की छाती को विदीर्ण करके पानी के बुलबुले उठ रहे थे।

सुकुमार न बोलन की कोशिश की पर वह सफल नही हो सका। कणा को क्या हुआ है ? इस गहरायी रात मे उसे इस तरह मरने की इच्छा क्यो हुई ?

ये सब सवाल अब अवश्य ही सुकुमार के सीने म उठ रहे थे। लेकिन सुकुमार क अन्दर से जैसे कोई कह रहा था, भैया के सीने म मुह छिपाकर तुम्हारी

बहिन रो रही है। अभी बात करने का वक्त नहीं है। उसे रोने ही दो, सुकुमार। रोने से जी हलका हो जाता है न।

•

"क्या मेरी परीक्षा ले रहे हो, भगवान् ?' किसी को न पाकर सुकुमार ने अन्तत ईश्वर के समक्ष ही यह प्रश्न उछाल दिया।

सुकुमार मित्तिर अभी चौराहे के मोड पर खडा है। सुकुमार ने महसूस किया, दुनिया मे कही कोई दु ख नही है। सभी चेहरे पर हँसी ले ऑफिस-स्कूल-कारखाने की ओर चले जा रहे हैं।

कुछ कमसिन लडकियाँ कबूतरो के एक प्रगल्भ झुण्ड की तरह आपस म निरर्थक बातचीत करती हुई कॉलेज की ओर जा रही हैं। गोल पार्क के गांगुराम की दुकान मे भी बेहद भीड है—कितने ही लोग हँसते हुए चेहरे ले मिठाई के पैकेट और दही की हाँडियाँ हाथ मे थामे बाहर निकल रहे हैं। दूर बिजली की दुकान से स्टीरियो रकाड का हाई-फाई आनन्द-सगीत सडक पर तैरता हुआ आ रहा है। कल्लोलिनी कलकत्ता नगरी के किसी भी हिस्से मे निरानन्द की छाप नही है।

राजपथ के इस उत्फुल्ल जनस्रोत को देखकर कौन कहेगा कि थोडी ही दूर के एक मकान मे भारी मुसीबत का दौर गुजर गया है ? एक जीवित युवती जहर खाकर मरने जा रही थी। आखिर मे उसके भैया ने उसे पकड लिया—तकदीर अच्छी थी कि भैया को 'इनसामनिआ' था।

सुकुमार, अभी तुम्हारे लिए उत्तेजित होने का वक्त नही है। अभी तुम्हें ठण्डे दिमाग से काम करना होगा। तुम पर ही तुम्हारी प्यारी बहिन का भविष्य निभर करता है। कोई सुकुमार के भीतर से यह सब कह रहा था।

सुकुमार का मूड खराब होता जा रहा है। आखा के सामने सुकुमार देख रहा है, वह दवा घुला हुआ खाली गिलास बाहर फेंक रहा है। उसके साथ ही नीद की दवा की शीशी भी।

लगातार कई दिनो तक सुकुमार का प्रेसक्रिप्शन बार-बार दिखाकर कणा ने अलग-अलग दुकानो से नीद की टिकियाँ इकट्ठी की थी। और कुछ क्षणा की देरी हो जाती तो शायद सुकुमार मित्तिर को लाश के लिए चीरघर के सामने कमर पर अँगोछा लपेटे बैठा रहना पडता। उसकी मन स्थिति इस क्षण बिलकुल

खराब थी। फिर भी अभी सडक पर खडे होकर सुकुमार का अभिनय करना पड रहा था।

"अरे सुकुमार दा, घर पर कुशल है न ?" पुरान मुहल्ले के एक नौजवान से सडक पर मुलाकात हो गयी।

सुकुमार ने निश्छल हँसी हँसकर उत्तर दिया, "ठीक है।" झूठे आचार-विचार के बॉलबेयरिंग पर यह दुनिया किस तरह दनादन चक्कर काट रही है!

"कणा दी कैसी हैं ?"

"बहुत अच्छी।" सुकुमार की जेब मे आईना होता तो वह एक बार अपना मुखडा देख लेता कि निश्छल हसी ठीक से उभर पायी थी या नही।

कुछेक घण्टे पहले जो मरने जा रही थी, अपने लिए जिसने बहुत बडी मुसीबत खडी कर ली है, जिस मुसीबत के बारे म सुकुमार मित्तिर के अलावा किसी को कुछ मालूम नही है, उसके बारे मे 'बहुत अच्छी' कहन के लिए रग-रग मे सशक्त अभिनय की क्षमता होनी चाहिए।

सुकुमार किस तरह की दतुरित मुसकान से अपन चेहरे को भरकर घर से बाहर निकल आया है—जैसे और-और रातो की तरह ही पिछली रात भी बीत गयी है और कही कोई उल्लेखनीय घटना घटित नही हुई हो।

माँ-बाबूजी, यहाँ तक कि छोटी बहिन भी, आज सवेरे कुछ समझ नही सके—मानो बेकार सुकुमार मित्तिर हर रोज जिस तरह अपनी मर्जी से घूमने-फिरने निकल जाता है, आज भी उसी तरह निकल गया है।

अभी तक सुकुमार को कणा के बारे म दुश्चिन्ता है और नही भी है। पिछली रात टाच की रोशनी बुझा, कणा को बिस्तर पर लिटाते हुए सुकुमार ने कहा था, "तू मेरी देह छूकर कसम खा कि फिर कभी मरने की कोशिश नही करेगी।"

कणा तब भी रोये जा रही थी। "तेरा भैया अब भी क्या जिन्दा है, कणा ? हाफ-पागल होने के बावजूद तेरा भैया अब भी जिन्दा है। मेरी देह छू।"

कणा को अब जैसे थोडा साहस हुआ। भैया की देह छूकर वह फिर रोने लगी थी। "मरन के अलावा मेरे लिए कोई विकल्प नही है भैया।"

"मरना ईश्वर ने सब के लिए तय कर दिया है, मरने के लिए किसी को काशिश नही करनी पडती, कणा" सुकुमार ने दबी आवाज मे कणा से कहा था।

कणा को फिर भी पूरे तौर पर यकीन नही हो रहा था। "अगर कोई और दवा है तो मुझे दे दे," सुकुमार ने कणा से कहा था।

अब सुकुमार के लिए भयभीत होने की बारी थी। कणा ने वैनिटी बैग से एक और शीशा निकालकर दी थी। वह शीशी अभी भी भले मानस की तरह सुकुमार की पैण्ट की जेब मे लेटी हुई है।

सुकुमार ने चहल-कदमी करना शुरू किया। सामने ही एक कूडादान दीख रहा था। सुकुमार ने जेब से शीशी बाहर निकाली। खटमल मारने की दवा की एक पूरी शीशी कितनी खतरनाक होती है! कितने खटमलो की मौत हुई है, पता नही, लेकिन घर-घर मे मौत को बुला लाने मे इस दवा का कोई मुकाबला नही कर सकता।

उफ् वह मौत कैसी होती है! सुकुमार इस मौत से परिचित है।

उस बार उन लोगो के पुराने मकान के सामने वाले घर मे रमला भाभी ने इसी दवा को पी लिया था। भाभी के अ तर्मन मे कौन-सा दु ख था जिसे जाहिर न कर पाने की वजह से वह मानसिक स तुलन खो बैठी थी! लेकिन लुक-छिपकर नीद के आगोश मे लिपटकर, घर वालो को धोखा देकर चले जाने की यह दवा नहीं है। खटमल की दवा मे कितनी यातना होती है—देह का मालिक मरना चा ता है मगर देह इस बात के लिए कतई सहमत नहीं होता। अपनी आँखो के सामने जिसने जिन्दगी और मौत की यह रस्साकशी नही देखी वही भाग्यवान् है। मौत लाज-शरम खोकर शाइलॉक द ज्यू की तरह अपना पाई-पाई बकाया वसूलने के लिए भोथरे चाकू का कसाई की तरह बार-बार उपयोग म लाती है।

सुकुमार न खटमल मारने वाली दवा को फेक दिया। किसी ने नही देखा। रमला भाभी की उस मौत को कणा ने भी अपनी आँखा से देखा था। फिर कणा न अपने लिए यह दवा क्यो खरीदी?

सुकुमार को याद आ रहा है, कही उसने पढा था, आत्महत्या के मामले मे भी गरीब और अमीर मे आकाश-पाताल का अन्तर रहता है। जो लोग बेहद गरीब होते हैं वे बहुत कम खर्च मे ही अपना काम निकाल लेते हैं—पेड की डाल पर धोती या साडी बाँधकर लटक जाते हैं, क्योकि गरीबो के घर पर लटकने के लायक पखा या लोहा-लक्कड नही होता। जिसके लिए और कोई विकल्प नहीं उनका मददगार मिट्टी का तेल है। किसी जमाने मे औरतें इसी को पस न्द करती थी, अब फॉलीडॉल या खटमल की दवा का युग है। अमीर

लोग पोटैशियम सायनाइड पसन्द करते हैं—लेकिन हर कोई इसका इन्तजाम नही कर पाता। इसलिए सामान्य लोगो के लिए नींद की टिकिया है।

उस समय सुकुमार इस बात को कितनी सहजता से पढ़ गया था, मगर आज सोचकर ही उसका शरीर सिहर उठता है। सुकुमार मित्तिर क्या करे उसकी समझ मे नही आ रहा है।

कणा की गति क्या होगी, यह बात जब तक तय नही हो जाती तब तक उसके मस्तिष्क के अन्दर की यह बेचैनी दूर नही होगी।

अब कणा की बात भूलकर बस पर चढ़ना जरूरी है। मिसेज घोष का कोयले का व्यवसाय अवहेलना का चीज नही है।

सुकुमार छलांग लगाकर एक चलती हुई बस के फुटबोर्ड पर चढ गया। सरदार कण्डक्टर जीने के पास ही था—सर्कस के रिंग मास्टर की तरह उसने सुकुमार को लोककर अभयदान किया।

सुकुमार को बडा ही अच्छा लगा। मात्र कुछेक पैसो के बदले दुनिया के और किसी भी स्थान मे इस तरह की सेवा और उपकार प्राप्त नहीं होता।

•

"क्या हाल-चाल है, सुकुमार बाबू?" कोयला दुकान की अस्थायी मालकिन मिसेज घोष आज सुबह ही दुकान की देख-रेख करने चली आयी थीं।

सुकुमार क्या जवाब दे? "मुझे देखकर कैसा लग रहा है, मिसेज घोष?" सुकुमार अभी कोई चान्स नही लेना चाहता।

"देखने पर तो अच्छे ही लग रहे हैं," मिसेज घोष ने हँसकर जवाब दिया।

सुकुमार इस तरह हँसा कि मिसेज घोष ने अन्दाज लगा लिया, सुकुमार सुख-शान्ति के साथ ही है।

"फिर मेरी अभिनय-क्षमता अभी तक नष्ट नही हुई है। कॉलेज म अभिनय का जो रिहर्सल करता था, वह व्यर्थ साबित नही हुआ।" नीरव सुकुमार ने स्वय को सराहा।

मिसेज घोष स्नेह भरी दृष्टि से सुकुमार की ओर देख रही थी। इस स्नेहपूर्ण दृष्टि से धोखाधडी करने मे बहुत ही बुरा लगता था लेकिन, दूसरा उपाय भी क्या था।

सुकुमार मन ही मन बुदबुदाया, "मिसेज घाप, मेरा अपराध क्षमा करे। मेरी बहिन खुदकुशी करने जा रही थी, भाग्यवश मैंने उस बचा लिया। लेकिन वह बहुत बडी मुसीबत मे फँस गयी है—ऐसी मुसीबत मे जिसके बार मे मरे अतिरिक्त मा-बाप, भाई-बहिन किसी का कुछ मालूम नही। मैंने कणा से वायदा किया है कि किसी से कुछ नही बताऊँगा और अकेले ही उसे इस मुसीबत से छुटकारा दिलाऊँगा। यह सब अच्छा रहने का लक्षण नहीं है। आपने मुझे काम दिया है, आप मेरी अन्नदायिनी हैं। आपसे झूठ नही कहना चाहिए था। लेकिन मेरे लिए आज कोई दूसरा रास्ता नही है। कणा की हया का मतलब है पूरे मित्तिर वश की हया। उसी हया की रक्षा करने के लिए ही तो कणा आज आत्महत्या करने जा रही थी।

"देख रही हूँ, कोयले की बिक्री दिन-दिन बढती जा रही है। आपने क्या किया है!" मिसेज घाप ने अब व्यावसायिक वार्त्तालाप करना शुरू कर दिया।

"बडा ही सीधा-सा प्रोसेस है। दुकान मे कुछ विश्वसनीय कर्मचारी हैं ही। उन लोगो के साथ दुकान मे ग्राहको की उम्मीद म खामोश बैठे रहने के बजाय मैं बाहर निकल जाता हूँ। मजीद खा की मास पराठे की दुकान म ही रोज दो मन कोयले की खपत होती है। अपना कोयला खरीदने के लिए मैंने उसके मालिक को राजी कर लिया है।"

मिलने-जुलन से काम निकलता है, यह बात मिसेज घोष नही जानती थी।

सुकुमार ने कहा, "आदमी के सामने जाकर खडे होने से बहुत बार मन्त्र जैसा काम होता है, मासी जी। मैं कीमत ज्यादा लेता नही, वजन मे भी धोखा नही देता या फिर आधा पत्थर और चार आना जले कायले की राख भी नही मिलाता। मैं ता बस इतना ही चाहता हूँ कि एक बार अच्छा कोयला सप्लाई करने का अवसर मिले।"

मासी जी सन्तुष्ट थी। लेकिन इस सुनहले मौके को हाथ से जाते नहीं दिया जायेगा। "मासी जी, आज मुझे एक जरूरी काम है। मैं आज थोडी देर बाद ही घर चला जाऊँगा।"

सुकुमार जरूर ही चला जायेगा। लेकिन नयी नौकरी म इस तरह कहे बगैर जाना अच्छा नही लगता।

"जरूरत है ता जरूर जाओ, बटा।" मिसेज घोष एक ही बार कहन पर राजी हो गयी।

सुकुमार कई बार सडको पर निरुद्देश्य चक्कर लगाने के बाद एसप्लेनेड के सामने आकर खडा हो गया है । उसके सिर का अन्दरूनी हिस्सा टन-टन कर रहा था ।

सुकुमार मित्तिर, इस तरह अवसन्न मत हो जाओ । सुकुमार ने स्वय को फटकारा, तुम्हे कोई बहुत बडा काम नही दिया गया है, मगर तुम इस तरह दीख रहे हो जैसे दुनिया-भर की जिम्मेदारियाँ तुम्हारे ही सर पर सौंप दी गयी हो ।

सुनो सुकुमार, बहुत ही आसान काम है । यह कलकत्ता शहर प्रासाद पुरी है । मूल कलकत्ता मात्र तीस या तैंतीस वर्ग मील था । उसके बाद बढते बढते कलकत्ता सैकडो वर्गमील मे फैल गया । चारो तरफ लाखो मकान बन गये हैं । तुम्हें सिर्फ एक सिर टिकाने लायक जगह किराये पर लेनी है । और वह भी बहुत ही जल्दी । टाल-मटोल करके समय बर्बाद करने से काम नहीं चलेगा ।

कणा से तुमने वायदा किया है कि इस घर, इस मुहल्ले और जाने पहचाने लोगो के बीच से तुम उसे बहुत दूर कही किसी अनजाने स्थान मे जल्दी से जल्दी हटाकर ले जाओगे ।

फिर अभी तुम किस तरफ जाओगे सुकुमार ? जिस ओर यादवपुर न पडे उस तरफ की किसी बस पर उसे चढना है । यादवपुर के आसपास कणा को रखा नहीं जा सकता ।

"भैया तू मुझे बहुत दूर हटाकर ले जायेगा न ?" मौत के मुँह से बाहर निकलने के बाद कणा ने दयनीय स्वर मे पूछा था ।

उसी वक्त सुकुमार की समझ मे आ गया था कि अब डर की कोई बात नही है । जीवित रहने की इच्छा प्रबल न रहे तो कोई इस घर से भागने का बात सोच नही सकता ।

सुकुमार तब तक दूसरी ही बात सोच रहा था । साक्षात् मृत्यु को खाली हाथ विदा करने के बाद वह क्या करे, तय नही कर पा रहा था । एक बार माँ और बाबू जी को बुलाने की भी बात ध्यान में आयी थी । लेकिन कणा ने कहा था, "ऐसा करोगे ता मैं नदी म जाकर कूद पडूँगी ।"

"कणा, कणा, तेरे लिए डरने की कोई बात नहीं है । तू जो कहेगी, मैं वही करूँगा । तुझे लेकर मैं यहाँ से चला जाऊँगा ।'

कणा की इच्छा पूर्ति के अलावा सभवत कोई दूसरा रास्ता शेष नहीं । कणा के जिस्म की मुसीबत छिपी हुई नही रह सकती—कुछ हफ्तो के दरमियान ही खुली आँखो से पकड मे आ जायेगी । छोटी बहिन के बारे मे भी सोचना है ।

उसने कोई गुनाह नही किया है। वह व्यर्थ क्यो इसके जाल मे फँसकर अन्याय का मूल्य चुकायेगी ?

सुकुमार को शुरू मे बेहाला की बात याद आयी। बेहाला से बहुतेरे आदमी किले के मैदान मे फुटबॉल का खेल देखने आते हैं—मोहन बागान के पक्षधर बेहाला मे बहुत सारे हैं।

सुकुमार बेहाला की बस पर बैठ गया था।

लेकिन एकाएक उसे याद आया, बडिया की ओर बाबू जी के फुफेरे भाई रहते हैं। बाबू जी के फुफेरे भाई से पिछले पाँच बरसो के दरमियान दो बार भी मुलाकात हुई है या नही, इसमे सन्देह है। लेकिन जहाँ शेर का भय रहे वहीं अक्सर शाम हो जाती है—हो सकता है वही होरू काका से मुलाकात हो जाये।

और होरू काका से मुलाकात हो भी गयी। बाकी बात सुकुमार सोच भी नही पा रहा था। जिस वजह से कणा को लेकर निकलना है वही चौपट हो जायेगा।

बहू बाजार की बात भी सुकुमार के ध्यान मे आयी। मलगा लेन आशुतोष मुखर्जी और सुकुमार मित्तिर का जन्मस्थान है। वासस्थान की मोह माया त्याग कर सुकुमार के मामा बहुत पहले राजस्थान भाग चुके हैं, मगर वहाँ मामा के दूर के रिश्ते के कई सगे-सबधी अब भी वास कर रहे हैं। मकान टूटा-फूटा जैसा है। गिर जाने के भय से कलकत्ता कॉरपोरेशन से एक बार तोडने का नोटिस दिया गया था, लेकिन इजक्शन की सुविधा मिल जाने से मातृकुल अब भी मलगा लेन मे ही फल-फूल रहा है।

भवानीपुर ? वह अच्छी जगह है। वहाँ आसानी से लोगो की भीड-भाड मे छिपकर रहा जा सकता है। सुकुमार ने शुरू मे वही कोशिश की।

मकान किस तरह किराये पर लिया जाता है, सुकुमार को मालूम नही था।

सुकुमार जन्म से ही यादवपुर बस्ती मे वास करता आ रहा था। बाबू जी ने वहाँ किस तरह डेढ अदद कमरे का इन्तजाम किया था, ईश्वर जाने। उसके बाद सुकुमार की गैरहाजिरी मे नयी बस्ती मे जाकर उससे भी अच्छा मकान दखल करने की बात भी उसके लिए रहस्यपूर्ण है। इसका श्रेय बाबू जी

सुकुमार कई बार सड़कों पर निरुद्देश्य चक्कर लगाने के बाद एसप्लेनेड के सामने आकर खड़ा हो गया है। उसके सिर का अन्दरूनी हिस्सा टन-टन कर रहा था।

सुकुमार मित्तिर, इस तरह अवसन्न मत हो जाओ। सुकुमार ने स्वयं को फटकारा, तुम्हें कोई बहुत बड़ा काम नहीं दिया गया है, मगर तुम इस तरह दीख रहे हो जैसे दुनिया-भर की जिम्मेदारियाँ तुम्हारे ही सर पर सौंप दी गयी हों।

सुनो सुकुमार, बहुत ही आसान काम है। यह कलकत्ता शहर प्रासाद पुरी है। मूल कलकत्ता मात्र तीस या तैंतीस वर्ग मील था। उसके बाद बढ़ते बढ़ते कलकत्ता सैकड़ों वर्गमील में फैल गया। चारों तरफ लाखों मकान बन गये हैं। तुम्हें सिर्फ एक सिर टिकाने लायक जगह किराये पर लेनी है। और वह भी बहुत ही जल्दी। टाल-मटोल करके समय बर्बाद करने से काम नहीं चलेगा।

कणा से तुमने वायदा किया है कि इस घर, इस मुहल्ले और जाने पहचाने लोगों के बीच से तुम उसे बहुत दूर कहीं किसी अनजाने स्थान में जल्दी से जल्दी हटाकर ले जाओगे।

फिर अभी तुम किस तरफ जाओगे सुकुमार ? जिस ओर यादवपुर न पड़े उस तरफ की किसी बस पर उसे चढ़ना है। यादवपुर के आसपास कणा को रखा नहीं जा सकता।

"भैया तू मुझे बहुत दूर हटाकर ले जायेगा न ?" मौत के मुंह से बाहर निकलने के बाद कणा ने दयनीय स्वर में पूछा था।

उसी वक्त सुकुमार की समझ में आ गया था कि अब डर की कोई बात नहीं है। जीवित रहने की इच्छा प्रबल न रहे तो कोई इस घर से भागने की बात सोच नहीं सकता।

सुकुमार तब तक दूसरी ही बात सोच रहा था। साक्षात् मृत्यु को खाली हाथ विदा करने के बाद वह क्या करे, तय नहीं कर पा रहा था। एक बार माँ और बाबू जी को बुलाने की भी बात ध्यान में आयी थी। लेकिन कणा ने कहा था, "ऐसा करोगे तो मैं नदी में जाकर कूद पड़ूंगी।'

"कणा, कणा, तेरे लिए डरने की कोई बात नहीं है। तू जो कहेगी, मैं वही करूँगा। तुझे लेकर मैं यहाँ से चला जाऊँगा।'

कणा की इच्छा-पूर्ति के अलावा सम्भवतः कोई दूसरा रास्ता शेष नहीं। कणा के जिस्म की मुसीबत छिपी हुई नहीं रह सकती—कुछ हफ्तों के दरमियान ही खुली आँखों से पकड़ में आ जायेगी। छोटी बहिन के बारे में भी सोचना है।

उसने कोई गुनाह नही किया है। वह व्यर्थ क्यो इसके जाल मे फँसकर अन्याय का मूल्य चुकायेगी ?

सुकुमार को शुरू मे बेहाला की बात याद आयी। बेहाला से बहुतेरे आदमी किले के मैदान मे फुटबॉल का खेल देखने आते हैं—मोहन बागान के पक्षधर बहाला मे बहुत सारे हैं।

सुकुमार बेहाला की बस पर बैठ गया था।

लेकिन एकाएक उसे याद आया, बडिया की ओर बाबू जी के फुफेरे भाई रहते हैं। बाबू जी के फुफेरे भाई से पिछले पाँच बरसो के दरमियान दो बार भी मुलाकात हुई है या नही, इसमे सन्देह है। लेकिन जहा शेर का भय रहे वही अक्सर शाम हो जाती है—हो सकता है वही हीरू काका से मुलाकात हो जाये।

और हीरू काका से मुलाकात हो भी गयी। बाकी बात सुकुमार सोच भी नही पा रहा था। जिस वजह से कणा का लेकर निकलना है वही चौपट हो जायेगा!

बहू बाजार की बात भी सुकुमार के ध्यान मे आयी। मलगा लेन आशुतोष मुखर्जी और सुकुमार मित्तिर का जन्मस्थान है। वासस्थान की मोह माया त्याग कर सुकुमार के मामा बहुत पहले राजस्थान भाग चुके हैं, मगर वहाँ मामा के दूर के रिश्ते के कई सगे-सबधी अब भी वास कर रहे हैं। मकान टूटा-फूटा जैसा है। गिर जाने के भय से कलकत्ता कारपोरेशन से एक बार तोडने का नोटिस दिया गया था, लेकिन इजक्शन की सुविधा मिल जाने से मातृकुल अब भी मलगा लेन मे ही फल-फूल रहा है।

भवानीपुर ? वह अच्छी जगह है। वहाँ आसानी से लोगो की भीड-भाड मे छिपकर रहा जा सकता है। सुकुमार ने शुरू मे वही कोशिश की।

मकान किस तरह किराये पर लिया जाता है, सुकुमार को मालूम नही था।

सुकुमार जन्म से ही यादवपुर बस्ती मे वास करता आ रहा था। बाबू जी ने वहा किस तरह डेढ अदद कमरे का इन्तजाम किया था, ईश्वर जाने। उसके बाद सुकुमार की गैरहाजिरी मे नयी बस्ती म जाकर उससे भी अच्छा मकान दखल करने की बात भी उसके लिए रहस्यपूर्ण है। इसका श्रेय बाबू जी

को है या कणा को, सुकुमार को इसका भी पता नही है। मोटे तौर पर यही कहा जा सकता है कि मकान-किराये पर लेन के मामले म सुकुमार बिलकुल अनभिज्ञ है—इस सबध म उसने कभी माथा-पच्ची नही की थी।

कई घण्टो तक चक्कर लगाने के बाद सुकुमार थक गया। भवानीपुर के गली-कूचे मे इतने-इतने मकान हैं, हर घर मे दजनो कमरे हैं, लेकिन सब भरे हुए हैं, इस बात पर यकीन ही नही होता।

पहले वह यादवपुर की साइन पेटर दुकान म अड्डेबाजी किया करता था। हाथ मे काम न रहता तो आर्टिस्ट सुदशन सामत 'टु लेट' साइन बोड रगने रहते थे। रेडीमेड रखन पर बिक्री हो जाती थी। 'टु लेट' का मतलब होना चाहिए, बहुत देर हो चुकी है, लेकिन उसका असली अर्थ 'मकान किराये पर' क्योकर हो गया, यह बात सुकुमार की समझ म नही आती थी।

सुकुमार टु लेट साइन बोर्ड की खोज मे गली-कूचे का बहुत देर तक चक्कर काटता रहा—दामजिले, तीनमजिले बरामदो की ओर ताकते-ताकत उसकी गरदन दुखने लगी है। मगर किराये पर मकान कहाँ मिलता है? भवानीपुर मे तो मकान किराये पर उठाने का रिवाज ही जैसे खत्म हो गया था।

•

शाम के वक्त थका-माँदा सुकुमार मथरगति से चलता हुआ घर लौट आया।

घर के अदर कदम रखते ही मा ने राय जाहिर की, "दिन-भर कहाँ-कहाँ चलह-कदमी करता रहता है? कणा भी आज काम पर नही निकली है। बेचारी तरी तलाश कर रही थी।'

"कणा की तबीयत शायद ठीक नही है," माँ न सूचना दी।

"पता नही, उस क्या हो गया है। खुलकर कुछ बताती भी नही। हालाँकि कई दिनो से खाना बिलकुल ही नही खा रही है। शरीर दुबला हाता जा रहा है। आँख क नीचे स्याहपन आ गया है। कणा को चाहिए कि वह एक बार मानु डॉक्टर से दिखा आय।

माँ और भी आग्रह का प्रदशन करती, लेकिन छाटी बहिन ने जैसे ही कहा कि मानु डाक्टर अब डिसपेंसरी म चार रुपया लता है तो माँ का उत्साह ठण्डा पड़ गया।

"यह कितना अन्याय है ? दुकान पर जाकर दिखा आन की फीस भी चार रुपया ! इससे तो अच्छा हम लागो का अघार होमियो हॉल है—इतने जानवार डॉक्टर हैं लेकिन दवा सहित केवल आठ आना खच करना पडता है ।"

सुकुमार यह सब बात सुन रहा था मगर उसने कोई राय जाहिर नही की ।

सुकुमार न अब अपनी आख और चेहरे पर पानी छिडककर थकावट और नाउम्मीदी का धो डालने की काशिश की । कणा चौकी पर लेटी हुई थी, वह दूर से उसे देख रहा था ।

कमरे के अन्दर प्रवेश करत ही कणा ने भैया के चेहरे की आर देखा । इन्ही कुछ घण्टो मे कणा का चेहरा सूखकर जैसे आधा हो गया है । कणा जानना चाहती थी कि क्या हुआ ।

कणा अब जैसे पहचान म ही नही आ रहा थी । जिस कणा ने घोर विपत्ति के समय गृहस्थी की पतवार सभाला थी वही कणा जैस एक ही दिन म अदृश्य हा गयी थी ।

ईश्वर ने औरता का कितनी अधिक मुसाबतें दे दी हैं, सुकुमार का उनके इन दा नजरा स देखने का कारण ढूढे भी नही मिल रहा था ।

कणा भैया के चेहरे की ओर ताक रही थी । घर म छाटी बहिन के रहन के कारण बेचारी मुह खोलकर सवाल भी नही कर पाती । लेकिन सुकुमार का कणा का सवाल समझ म आ रहा था । वह जानना चाहती थी, घर की तलाश के मामले का क्या हुआ ?

कणा की मौजूदा मानसिक स्थिति की वास्तविक परिस्थिति का पता चल जान पर सुकुमार के मन मे ममता जगती है । वह अभी तुरन्त कणा का निराशा के गहरे जल म नही डालना चाहता ।

इसालिए सुकुमार ने कहा, "आज बेहद चक्कर काटकर आ रहा हूँ । थाडा बहुत सूचनाए भी मिली हैं । देखे, क्या हाता है !"

देखें क्या हाता है नही, कणा एक क्षण की भी दर पसन्द नही करती । वह इस घर को छोडकर चली जान के लिए बेचैन हा उठी थी, यह बात उसके चहर की हर लकीर स साफ-साफ झलक रही था ।

बचैन हान के अलावा कणा के लिए कोई दूसरा विकल्प नही, यह बात कणा के अलावा इस घर मे एकमात्र सुकुमार ही समझ रहा था । कणा की जिस्मानी हालत के बारे म साचन हा उसक दिमाग क अदरूनी कल-पुर्जे फिर ढीले पडने लगन थ ।

सुकुमार उसी रात हा समझ गया था कि कणा कितना बडी मुसीबत म

फँस गयी थी। भले घर की कुमारी लडकी के लिए इस से बढकर भी कोई मुसीबत हो सकती, यह सोचकर ही सुकुमार के मन मस्तिष्क दोनो एक क्षण के लिए निष्क्रिय हो गये थे। सुकुमार को डर लगा था कि शायद पक्षाघात का यह दौरा आहिस्ता-आहिस्ता उसकी तमाम देह मे फैल जायेगा।

लेकिन कितने आश्चय की बात है। दूसरे ही क्षण उसके मन मे अकल्पित शक्ति का सचार होने लगा। सुकुमार के एक बार बेकल हुए दिमाग के अन्दरूनी हिस्से से किसी ने जैसे हुक्म दिया, मुसीबत आयी है ता क्या हुआ? अपनी बहिन को यदि तुम इस घनघोर विपत्ति से उबार नही सके तो तुम किस तरह के सहोदर हो? बचपन से ही कणा तुम्हें भैया किसलिए कहती आयी है?

सुकुमार टाच की राशनी मे कणा के चेहरे की आर बहुत देर तक निहारता रहा था। उन कई क्षणो के दौरान ही सुकुकार की उम्र सभवत कई युग आगे बढ गयी। सुकुमार बडा ही भोला था। प्रजनन रहस्य के बारे मे एक धुधली-सी धारणा रहने के बावजूद, इसके बारे मे सुकुमार ने विशेष ज्ञान अर्जित नही किया था। लेकिन दुनिया ने उसे माफ नही किया—सुकुमार तुम्हारी कुमारी बहिन अभी गभवती है।

सुकुमार भयकर भवर के नीचे समा जा सकता था। लेकिन सुकुमार ने महसूस किया था, अभी समा जाने का वक्त नही है। सुकुमार कहने जा रहा था, "कणा, कणा, यह तूने क्या किया?' लेकिन आत्महत्या को आतुर कणा की असहाय मूर्त्ति ने सुकुमार की जीभ को जड बना दिया था। सुकुमार ने महसूस किया, सामने बहुत बडी मुसीबत है इसलिए अभी बातचीत करने का वक्त नही है।

और कणा, इस क्षण इस प्रकार पकड म आ जाने के कारण पूरी तरह टूट गयी थी। देह के अन्दर की नाशक सभावना ने पिछले कई दिनो के भीतर ही उसे सकटग्रस्त कर दिया था। अकेले सोचते-सोचते उसे कोई रास्ता नजर नही आता था।

घर पर सभी के सामने कणा को अभिनय करना पडा है, मगर पार्क स्ट्रीट के चरणदास ने माफ किया था, दीदीजी का मूड ठीक नही था। कुशलतापूर्वक सवाल करने पर कणा से उसे डाट भी खानी पडी थी। उस जहरीले माहौल और उन गन्दे लागो की हरकतो के बारे मे सोचन पर कणा का पूरा जिस्म नफरत से भर गया था।

इन लोगो से अपने बारे म चर्चा करने का तो सवाल ही पैदा नही होता—इसीलिए कणा ने अन्तत अपने रास्ते का चुनाव स्वय कर लिया था।

भैया को अब तक कोई खास जानकारी प्राप्त नही हुई है। नीचे उतरते-उतरते वह बर्बादी के किस स्तर पर उतर आयी थी, यह आज भी भैया की कल्पना के बाहर की बात है। भैया को बस इतना ही समझ मे आया है कि उसकी बहिन कणा जिस्मानी मुसीबत मे फँस गयी है।

सुकुमार उस तीसरे पहर कणा की ओर फिर ताक रहा था। कणा चिन्ता मे शराबोर है, यह बात वह समझता है लेकिन चिन्ता किस बात की है, यह उसकी समझ मे नही आया।

सुकुमार ने कहा, "चलो कणा, जरा घूम-फिर आये।" सुकुमार कणा को इस दमघोटू वातावरण से कुछ क्षणो के लिए बाहर ले जाना चाहता था।

अचानक इस मुसीबत की गिरफ्त मे फँस जाने के कारण सबको बेहद ऊब महसूस हो रही थी। सोचा था, थोडा-बहुत गुस्सा जाहिर कर वह अपना मूड ठीक कर लेगा। लेकिन चहल-कदमी करती हुई कणा के बुझे चेहरे की ओर देखकर उसे साहस नही हुआ।

"कणा, तू किसी तरह की फिक्र मत कर। मैं सारा कुछ सही रास्ते पर ला दूँगा। तू जो चाहती थी वही होगा।"

कणा न अब भी मुह नही खोला। एक ही रात के सकट ने उसे मलबे मे बदल दिया था।

सुकुमार ने कहा, "किसी न किसी मकान का मैं इन्तजाम करके ही रहूँगा।"

सुकुमार ने सोचा था, कणा इससे अब बहुत कुछ शान्त हो जायगी। घर से बाहर आ भैया स खुलकर बातचीत करने के बाद उसके मन की उदासी दूर हो जायेगी। और उसी अवसर से लाभ उठाकर सुकुमार और भी खबरे मालूम कर लेगा। कणा की इस बर्बादी के लिए जिम्मेदार कौन है? सुकुमार यही जानना चाहता था। सुकुमार मित्तिर अभी मर नही गया है। वह जब तक इसका कोई निबटारा नही कर लेगा तब तक दम नही लेगा।

लेकिन बातचीत का दौर आगे नही बढा। कणा एकाएक बोल उठी, "मैं अब और आगे नहीं जाऊँगी। भैया, घर चलो।"

•

अब तक सुकुमार को इतना ही पता था कि इस मनहूस बगाल म नौकरी नही मिलती मगर अब उसे पता चल रहा है कि इस अभागे प्रदेश मे सिर छिपाने के लिए कोई जगह मिलना भी काफी मुश्किल है ।

दो दिन सबेरे के वक्त मारे-मारे फिरन के बाद भी मुकुमार कोई रास्ता नही निकाल सका । कासारीपाडा के निकट चायघर के एक आदमी न कहा, "खुद चक्कर लगाकर किराये का मकान ढूढने का जमाना बहुत दिन पहले ही खत्म हो चुका है ।"

फिर अब कौन-सा जमाना आ गया हे ? मकान और किरायेदार—ये दोना तो कलकत्ते से मिट नही गये हैं ।

"जिन्दगी भर इस तरह चक्कर लगाते रहियेगा तो भी मकान नही मिलेगा सर ! हालाँकि पहले कितनी सहूलियत का वक्त था । मेरी ही बात ले ।"

सुकुमार की मानसिक स्थिति ऐसी नही है कि वह पुराने पचडे मे पडे, लेकिन कही काई सूचना मिल जाये, इसी उम्मीद मे उसे उत्सुकता जाहिर करनी पडी थी ।

वह आदमी बीडी का कश लेते हुये बोला, "सिर्फ कुछ ही साल पहले की बात है, मरे छोटे बच्चे ने तब पैरो के बल चलना नही सीखा था । सबेरे बाजार की तरफ निकलने के वक्त चूल्हे की राख फेकने की बात लेकर मकान-मालिक से झगडा हो गया । सा मूड इतना बिगड गया कि एक घटे के दरमियान आलू का भुरता और भात खाकर दैन एण्ड देयर मकान छोड दिया । ठेलागाडी आकर हाजिर हो गई । उस पर माल-असबाब रख दिया और बीबी के लिये रिक्शा ठीक किया ।'

जली बीडी को उसने फेंक दिया । उसके बाद फिर कहना शुरू किया, "बीबी न नर्वस होकर पूछा, हम लोग कहा जा रहे हैं । सा इस बात की जानकारी मुझे भी कहा थी । सिफ इतना ही जानता था कि जेब मे नकद पैसा रहे तो इस कलकत्ता शहर म किराये के मकान की कमी नही होगी । ठेले से कहा, चलो ।"

"उसके बाद ?" सुकुमार न पूछा ।

"उसके बाद और क्या ? ठेलेवाले से ही कहा किराये पर मकान लेने के वक्त तुम्ही लाग थे और छोडन पर भी तुम्ही लाग हो । कहाँ की क्या खबर है, बताओ प्यारे । उस वक्त ठेलेवाले न ही सूचना दी बाबू कल एक किरायेदार का माल उतार कर आया हूँ । वह मुझे वहा ले गया । मकान-मालिक नीचे

उतर कर आया, बातचीत तय कर आधे घटे के दरमियान ही नये मकान के अन्दर घुस गया।"

सुकुमार उस स्वर्ण युग की बात सुन चुका था। मकान-किराये पर लेने के महत्त्व की ओर इसके पहले उसका ध्यान नही गया था। 'उसके बाद ?" सुकुमार सोच रहा था, अब शायद कोई ताजा समाचार मिल जायेगा।

वह आदमी बोला, "दुख की बात अब क्या कहूँ, बाद म पता चला कि आस-पास और कई भी मकान खाली थे। ठेलेवाला को यह बात मालूम थी। लेकिन ज्यादा ठेला-भाड के लालच म मुझे वह सबसे दूर के मकान-मालिक के पास ल गया था। सो मैं भी एक महीना ठहरने के बाद आसपास के मकान मे चला आया। ठेला पुराना ही था। ठेलेवाले को भरपूर डाट पिलाई थी, यह बात मुझे अच्छी तरह याद है।'

तो निष्कर्ष यही निकलता है कि ठेलेवालो का बहुत कुछ पता रहता है। समय बर्बाद करने के बजाय सुकुमार ठेलेवाला की तलाश मे निकल पडा।

ठेलावाला चूना-सुर्खी की एक दूकान के सामन बैठकर खैनी मल रहा था। सुकुमार की वात सुनकर वह खासी मुसीबत म फँस गया। बोला, "हुजूर, कितन ठेले चाहिये, बताइये, मैं भेज दूगा। लेकिन किराये के मकान का मुझे पता नही है।"

सुकुमार के द्वारा और अनुरोध किय जान पर उसन कहा, "हुजूर, आज-कल किरायेदार को ले जाने का काम हम कहाँ मिलता है ? यही वजह है कि हम दूसरी लाइन मे चले गये हैं।"

आप टेम्पोवाला से पूछ—किरायेदार बाबू लोग आजकल फटफटिया पसद करते हैं।

"क्यो भैया ? ठेले ने कौन-सा गुनाह किया है ? सुकुमार का बात समझ मे नही आई थी।

ठेलेवाले न जो कुछ बतलाया उसका मतलब यह था कि आय दिन हर आदमी सुख चाहता है। इन गरीब ठेलेवाला के अलावा कोई और शरीर को तकलीफ नही देना चाहता। ठेलागाडी लेने से एक आदमी को उसके साथ पैदल चलना पडेगा। लेकिन टम्पो होने से गाडी मे ही बैठा जा सकता है।

कुछ देर तक पैदल चलने के बाद एक टम्पो दिखाई पडा। टेम्पोवाला शुरू मे सुकुमार को देखते ही बिदक गया।

"क्यों तग पर रहे हैं, सर ? ब्रेकडाउन हो जान की वजह से ढाई घटे से परशान हो रहा हूँ । गाडा बनाने वाला म पुरखा के बारे म वह छोकरा अब ऐसी ऐसी राय जाहिर करन लगा कि बात अगर उनके कानो म पहुँच जाये ता नफरत से वे कपनी ही बद करा दें ।

सुकुमार बोला, "मुझे अभी तुरत गाडी की जरूरत नही है । मैं किराये के मकान के बार म पता लगाना चाहता था । आप लोग तो बहुत स किरायेदारो का माल-असबाब ढोकर लाते हैं ।"

टेम्पा ड्राइवर ने कहा, "स्साले किराये क मकान खाजन वाला को तेल-मालिश करने के बदले अस्पताल की लाश ढाना कही बेहतर है । ग्राहका की कोई कमी नही है, किसी भी गौरमेट अस्पताल के सामने खडे होने पर पार्टी मिल जाती है ।"

सुकुमार ने उसे शात किया । समझा-बुझाकर किराये के मकान की खबर जो बटोरनी थी । टेम्पो ड्राइवर बोला, 'किराये का मकान बदलनेवाली पार्टी बहुत ही बुरी होती है, सर ! घटो तक बिठाये रखेगा, आवरलोड करेगा, अट-संट बकेगा, उसके बाद किराया चुकाने क वक्त आँखे दिखायेगा । आप समझ ही रहे होगे कि खस्ता माल न होने पर मकान-मालिक ही क्या पी० एल० देगा ?"

सुकुमार ने उसे सूचित किया कि किराये के बारे मे वह काई रियायत नही चाहता । वह इतना ही जानना चाहता है कि किस मकान को किरायेदार ने खाली किया है ।

टेम्पो ड्राइवर अब हँसने लगा । "इस तरह से आजकल मकान किराये पर नही मिलता है, सर । किरायेदार के जान के पहले ही दूसरा किरायेदार मिल जाता है । अभी मकान किराये पर लेने के लिये आपको ठेलेवाले को पकडना होगा । सामने चूना-सुर्खी की दूकान है, वही चले जाइए ।'

टेम्पो का नौजवान ड्राइवर अब जेब टटोलकर बीडी की तलाश करने लगा था । सुकुमार ने झटपट जेब से एक सिगरेट निकाल कर दिया, साथ ही साथ दियासलाई भी ।

सुकुमार ठेलेवाले के पास से हा आया है और उसे काई पता नही है, सुकुमार ने इस बात की भी सूचना तब उसे दी ।

सिगरेट सुलगाकर टेम्पोवाले न प्रसन्न होकर कहा, "पूछिय कि वह चूना-सुर्खी-सीमेट लेकर कहाँ जाता है । मकान बनने के पहले से ही पता न लगाने से इस मुहल्ले म मकान नही मिलता ।

टेम्पो ड्राइवर को सुकुमार की बेचैनी समझ मे आ रही थी। तिरछी निगाहो से ताकते हुये उसन पूछा, "मकान अभी न मिले तो काम नही चलेगा ? लगता है सास स आपकी बीवी की ठन गई है। मेरे भैया के साथ भी यही बात हुई थी। बीवी कितन गुस्से म आ गई थी ! तीन दिन के अन्दर मकान की तलाश कर अलग न हो जाय तो बीवी से बातचीत बन्द। मेरा भैया कई दिनो तक कमर कसकर मकान ढूढन म लग गया था, लेकिन उसके बाद जब मकान-मालिको के हाल-चाल से वाकिफ हुआ तो उसका चेहरा मुरझा गया। अब बीवी की भी समझ म आ गया है कि हाउ मेनी पैडी मे हाउ मेनी राइस निकलता है। मायके ने भी पूरे बटालियन को मकान खोजने म लगा दिया था, मगर नतीजा कुछ भी न निकला। लाचार हो अब भाभी सास से समझौता कर मिल-जुल कर रह रही है।"

सुकुमार को लगा, यह छोकरा अच्छा आदमी है। दोटूक बातचीत करने के बावजूद उसमे मैत्री का भाव है। अमरीकी कायदे के मुताबिक अपना नाम भी पॉकेट के ऊपर लिख रखा है। सुकुमार ने कहा, "चाह जैसे हो मुझे मकान का इन्तजाम करना ही है, पचानन बाबू।"

सुकुमार का रहस्य अब पचानन की समझ मे आ गया। "खुलकर खासिये न भाई साहब। मामला क्या है, इसका मैं अन्दाज कर रहा हूँ। घर वाला के न राजी होने पर काली घाट जाकर आपने किसी स शादी-वादी कर ली है। अब मकान न हा तो काम नही चल सकता। कालीघाट की बीवी बेहद दबाव डाल रही है।"

सुकुमार का दिमाग चकरा रहा था चेहरा भी तमतमा आया था। पचानन कमकार ने सिगरेट से एक और लबा कश लिया। "मेरा भी चेहरा, सर, कश्मीरी सेब की तरह लाल हो जाता था। मेरे साथ भी यही बात है। मेरी मिसेज पढी-लिखी भले घर की लडकी है। मैं तब मोटर मैकेनिक था। पता नही किस बुरे क्षण मे बौना होकर चाद छूने गया था। रजिस्ट्री-आफिस मे शादी हा गई। लेकिन एकाध महीने बाद ही दबाव पडने लगा। घर ले चलो, घर ले चला।"

पचानन न फिर सिगरेट का कश लिया। "उफ्, वह सब सोचता हूँ ता मेरा दिमाग गडबडा जाता है। बडी मुश्किल से एक मकान का इन्तजाम किया था ?"

"मुझे जरा जल्दी घर जाना चाहिए पचानन बाबू," सुकुमार ने काफी दयनीय स्वर म कहा।"

'मालूम है, जल्दी स जल्दी मिलना ही चाहिए। इन मामलो मे औरते कितना दबाव डालती है! पति के एक्सिलेटर से पाव हटाना ही नही चाहती। कुछ दिना तक किसी तरह काम चलाइये। इसके सिवा और क्या कीजिएगा ?"

"पचानन बाबू, वाकई बगैर मकान के काम नही चल रहा है।'

"आप भी क्या मेरी ही हालत मे आये है ? मेरी वाइफ कुमु ने एक दिन आकर मुझस कहा, जल्दी से जल्दी मकान न मिलेगा तो शादी का रिश्ता तोड लेगी। मेरी हालत की कल्पना कीजिये। इस तरह की मिसेज का भी भला कोई छोड सकता है ?"

कुमु अब भी पचानन की बीवी है या नही सुकुमार की समझ मे नही आ रहा था। पचानन से यह सब बात खोद-खादकर पूछी भी नही जा सकती थी।

पचानन ने सलाह दी, "आप मेरी ही तरह किसी दलाल के पास जाइये। पट्ठ आज भी असभव को सभव कर सकते हैं। दलाल न होता तो उस दिन मैं भी कुमु को रख नही पाता।"

"गाँठ से पैसा गिनकर दूँगा और उस पर भी दलाल ?"

पचानन सिगरेट का धुआँ उगलकर बुजुर्गाना अदाज म कहने लगा, "दलाल कहाँ नही है ? वेश्या से लेकर भगवान् तक जिस चीज की खोज कीजिएगा, वही दलाल की जरूरत पडती है।

"अमावस्या के दिन आप मदिर जाइये न, दलाल के बगैर देवता क दशन कैसे मिलेंगे ? मेरी ही बात लीजिए, मैंने टेम्पो का लाइसस जो हासिल किया वह क्या यू ही हो गया ? दलाल को कमीशन खिलाना पडा था। लाइसन्स हासिल करन के बाद गाडी खरीदने के लिए बैंक के लोन की जरूरत पडी। यह क्या मेरा कारनामा है ? बैङ्क का मैनेजर क्या सीधे मेरे हाथ से दक्षिणा लेता ? पुरोहित क बिना पूजा नही हो सकता। दलाल ने ही सारा इतजाम कर दिया। यह जो मैं नो-एन्ट्री एरिया मे गाडी खडी कर मन के मौज मे सिगरेट फूँक रहा हूँ, इसके पीछे भी दलाल है। ट्रैफिक पुलिस बाबा ऐसे दूध के धुले हैं कि पार्टी स खुद कारोबार नही करेंगे। उस सडक के नुक्कड पर पान का दुकान म दलाल बैठा हुआ है। पिछले साल मैं गाडी स दब गया। तब दलाल के अलावा मेरे लिए कोई दूसरा चारा था क्या ?"

दुनिया सचमुच ही बहुत बुरी हो गयी है।" किसी के गाडी से दबने पर दलाल की जरूरत हो क्या ?" सुकुमार को ठीक से समझ मे नही आ रहा था।

"जरूरत पडती है, सर। आप लोग आजकल कोई खबर नही रखते। गाडी से दबने के बाद अस्पताल म बेड नही मिलता, अगर दलाल मेरे निकट

नही होता। उसके बाद घर पर जाकर मेरी पत्नी को इत्तिला कौन करता ? अस्पताल के बडे बाबू क्या मेरे रिश्तेदार हैं ? वहाँ भी दलाल की जरूरत पडती है। उसके बाद रनओवर का केस सुनकर एक दलाल चट से अस्पताल के बेड के पास चला आया। जो गाडी मुझे दबाकर चली गयी थी उसका नम्बर ले गया। दो दिन के बाद दो दलाल एक साथ मेरे पास आये।"

"दो दलाल कहा से आ टपके ?" सुकुमार ने पूछा।

"ओह, मामूली-सी चीज आपकी समझ मे नही आ रही है ? मेरा दलाल और जिस आदमी ने मुझे गाडी से दबा दिया था, उसका दलाल। वे लोग मुझे तीन सौ रुपया और एक दजन केला देकर मामला रफा-दफा कर चले गय। और तीसरे दलाल के पास पहुँचे। इस तीसरे दलाल की मारफत न जाने से पुलिस अनजानी पार्टी का एक्सीडेन्ट केस क्यो उठायेगी, सर ? मुझे भी सर, इतने झझट-झमेल म पडने की जरूरत ही क्या ? कोर्ट से उस पार्टी से पाँच सौ रुपया वसूलने मे पचीस साल लग जाता। इससे तो बेहतर दलाल ही था।'

पचानन ने कहा, "बबई मे सर, एक सडक है—दलाल स्ट्रीट। और इस कलकत्ते को आप दलाल टाउन कह सकते हैं। अस्पताल से पलस्तर लगा पाव लिए टैक्सी से घर आया—वह भी दलाल की हेल्प से। दलाल सिगनल न देगा तो टैक्सी हिलेगी-डुलेगी भी नही। यह जा मैं पार्टी का माल लेकर आया, वह भी दलाल की ही वजह से। दिन-भर सडक पर खडे हो अँगूठा चूम रहा हूँ, ना ग्राहक। और जैसे ही दलाल को रुपये म बीस पैसा दिया कि तुरत काम मिल गया। यह जा ब्रेकडाउन होने के कारण बैठा हुआ हूँ, यहा भी दलाल है। दलाल मैकेनिक और गाडी का पार्ट लाने गया है।"

पचानन सिर खुजलान लगा। "अपनी गाडी म बैठकर थोडी दर बाद एक गिलास ठर्रा गटकूगा, वहाँ भी दलाल की जरूरत पडेगी। पट्ठा आडर ले गया है। सामने पान की दूकान म ही माल है—लेकिन अनजानी पार्टी को हाथा-हाथ नही देगा, दलाल को पकडना होगा। गाडी की मरम्मत कराकर, माल की डिलेवरी ठीक जगह पर देकर आज जो सिनमा देखने जाऊँगा, वह कैसे होगा ? मैंने किसके बल पर बीवी को सिनेमा शुरू होने के दस मिनट पहले हाल के सामने खडी होने कहा है ? दलाल के अलावा उस वक्त कौन मुझे टिकट देगा ?"

सिगरेट को मुह से खीचकर पचानन ने स्प्रे करते हुए सडक पर थूक फेका। उसके बाद बाला, "उम्मीद है, आपको और समझाने की जरूरत नही पडेगी। आप रायल हेयर कटिंग सैलून चले जाइये—पल्टू दलाल आपको वही मिल जायेगा।"

सूचना पाते ही सुकुमार ने चलना शुरू कर दिया। टेम्पो से गरदन निकालकर पचानन बोला, "गलती से भी इपीरियल कटिंग सैलून के खगेन दलाल के चक्कर मे न पडिएगा।"

अब सुकुमार की व्यस्तता पचानन की पकड मे आ गया। सुकुमार को रोककर पचानन ने उसे अतिम उपदेश दिया, "बेचैन नही होइये। दलाल के सामने व्यस्तता दिखाइएगा तो मार खा जाइएगा।"

•

रॉयल हेयर कटिंग सैलून मे ही पल्टू दलाल से भेंट हो गयी। सैलून की बेंच पर बैठकर पल्टू बाबू बीडी का कश ले रहे थे। सुकुमार को देखते ही वह उठकर चले आये। बोले, "इस इलाके मे इस नाचीज को न पहचानता हो, ऐसा आदमी आपको नही मिलेगा। शुरू मे मैंने अपने घर पर ही दफ्तर खोला था, लेकिन काम की सुविधा की वजह से इस रायल हेयर कटिंग मे चला आया हूँ।"

"लाइये, एकाध सिगरेट वगैरह लाइये। सुबह से अब तक बोहनी भी नही हुई है।" पल्टू दलाल ने सुकुमार का बचा हुआ एक सिगरेट भी ले लिया।

सिगरेट का धुआँ उछालकर पल्टू बाबू ने पूछा, "आप किस पार्टी के हैं ?"

'मैं किसी भी पार्टी का नही हूँ पल्टू बाबू।"

"तो फिर सर, मेरा वक्त क्यो बर्बाद कीजिएगा ? डाइरेक्ट पार्टी के लोगो के अलावा मैं किसी का काम-धधा नही करता। उसमे बहुत ही झझट है," पल्टू दलाल ने साफ-साफ कह दिया।

दुश्चिन्ता, अनिद्रा और सुबह से चक्कर काटते-काटते सुकुमार अब बहुत थक गया था। उसने कहा, "पल्टू बाबू, पार्टी के मेम्बरो को दलाल से भी फैसिलिटी मिलती है, यह मुझे मालूम नही था।'

"कोई खास सुविधा नही। पल्टू की निगाह मे सब पार्टी एक जैसी है।"

नही, सुकुमार झूठी बात नही कहेगा। पिछले जन्म मे उसने बहुत ही अनाचार किया है जिसका फल उसे इस जन्म मे भोगना पड रहा है।

"नही साहब, लालच मे पडकर झूठ क्या बोलने जाऊँ हम लोगो के यहाँ बहुत से पार्टी दफ्तर हैं, बहुतो न डोरा डाला था, मगर मैं किसी मे शामिल नही हुआ।"

'आप तो हँसा रहे हैं। पॉलिटिकल पार्टी से मुझे क्या वास्ता ? मेरे पूछने

का मक्सद है कि आप लडकी के पार्टी के हैं या लडके की ? आप किसी की शादी के बारे मे खोज-पडताल कर रहे हैं ? लडकी की पार्टी हो तो पन्द्रह रुपया और लडके की पार्टी हो तो पाँच रुपया पेशगी देकर रजिस्ट्री कराना होगा, तभी पल्टू दलाल जबान खोलेगा ।"

लेकिन पचानन बाबू ने क्या कहा था ? "आप क्या शादी की दलाली करते हैं।" सुकुमार पूछता है ।

"वही मेरा मेन काम है । इसीलिए तो सैलून मे बैठा रहता हूँ—कहाँ का कौन अच्छा पात्र बाल कटाने आता है, इसकी ही जानकारी प्राप्त करता रहता हूँ । आपकी जरूरत क्या है ?"

किराये के मकान के बारे म सुनते ही पल्टू बाबू का उत्साह ठण्डा पड गया । "वह मेरी मेन लाइन नहीं है, अब मैं सिफ सब-दलाली करता हूँ । मेरे साढ़ू सुधामय के पास जाना होगा ।"

पल्टू बाबू ने पॉकेट से एक काड निकाला । सुधामय का पता दिया ।

"मेरा यह काड जरूर ही सुधामय को दीजिएगा । भूलिएगा नही जनाव । वरना हिसाब मे गडबड हो जायेगी, सुधामय मेरा प्राप्य कमीशन नही देगा," पल्टू बाबू ने यह कहकर चेता दिया ।

सुकुमार का सिर बेहद दद कर रहा था । बाये हाथ से सिर दबाकर वह आगे बढने लगा ।

सुधामय भी एक दुकान मे बैठे रहत है । वहाँ तसवीरें मढने का काम होता है ।

सुकुमार जब वहाँ पहुँचा, सुधामय एक भली महिला से बातचीत करने मे मशगूल थे । "लडका नही है ता आप व्यर्थ ही क्या दुखित हो रही हैं माताजी ? भगवान् के आशीर्वाद से वन फ्लैट इज बेटर दैन टू कमाऊ लडके ।"

"तुम क्या कह रहे हो बेटा ?" भली महिला ने आनन्द से मिली-जुली लज्जा जाहिर की ।

सुधामय बोले, "सिफ हिसाब लगाकर देख लें माताजी । अपना खर्चा-वचा बाद करने के बाद लडके आजकल मा बाप को माहवार कितना दे पाते हैं ? और शादी हो जाये तो फिर कहना ही क्या ! मगर फ्लैट होता है चिरकुमार वयस्क लडका, हमेशा देता ही रहेगा ।"

"फिर तुम क्या कहते हो भैया ?" सुकुमार को भली महिला की बात साफ-साफ सुनने को मिली।

सुधामय ने हँसते हुए कहा, "जैसा जमाना हो, जैसा देश हो, वैसा ही वेश होना चाहिए, माताजी। किसी तरह भी रहम न दिखायें, किरायेदारों को आने और जाने दीजिये—वरना आपके हाथ मे दो पैसा कैसे आयगा ? और हमी लोग गृहस्थी कैसे चलायेंगे ? शर्म को ताक पर रखकर कह दीजिए, मैं कागज पर दस्तखत नही करूँगी। विदेश हो से क्या होता ? बबई मे किसी को ग्यारह महीने से अधिक समय के लिए मकान किराये पर नही मिलता है ?"

"बबई क्या विदेश है !" सुकुमार अब खामोश नही रह सका।

"जरूर ! आपने बबई के मकान, गाडी, सडक और रेस्तराँ देखे हैं ? बबई फॉरेन नही है तो क्या यह हरामजादा कलकत्ता फॉरेन है ? वहाँ हर दलाल के पास कार है। दो-एक महीने के किराये से कम पर वहाँ कोई दलाली का काम नही करता है।"

सुधामय दलाल ने अब मकान-मालिक की ओर आँखें की। "तो फिर माताजी आप असमजस मे नही रहें। किरायेदार को आप झाडू लगाकर बाहर निकाल दे, उसके बाद एक रुपये की जगह सवा रुपये का किरायेदार तीन दिन के अन्दर न खोज दूँ तो आप बन्दे के नाम से कुत्ता पाल लीजिएगा।"

अब मकान-मालकिन वहाँ से विदा हो गयी। सुधामय मकान की तलाश म है यह जानकर सुधामय दलाल हँसी हँसते हुए बोला, "कभी गलती से भी कलकत्ते म व्यक्तिगत प्रॉपर्टी नही बनाइय। जो लोग अक्लमन्द होत हैं वे आराम से दूसरे के मकान मे जिन्दगी बसर कर लेते हैं।"

सुधामय न एक फार्म बढा दिया। सुकुमार बहुत ही खुश हुआ। इसे भर देने से ही किराये का मकान मिल जायेगा। दलाल के माध्यम से काम करना तो कोई बुरा नही है।

सुधामय बोले, "अब यह बताइये कि आपकी उम्र कितनी है ? आपकी बीवी की शिक्षा-दीक्षा क्या है, बाल-बच्चो की सख्या कितनी है, माँ-बाप से आपका रिश्ता किस तरह का है ? ससुराल कितनी दूर है ?"

"रुपया देकर घर लूगा फिर इतनी तरह की सूचनाओ की जरूरत ही क्या है ?" सुकुमार फुफकार उठा।

सुधामय ने मुसकराते हुए निवेदन किया, "जरूरत है। धर्मशाला मे भी टिकने पर यह सब सूचना देनी पडती है, और आप तो किसी के गाँठ से निकाले

हुए पैसे बने मकान मे रहने जाइएगा, ऐसी हालत मे वह क्या आपकी अन्दरूनी बातो का पता नही लगायेगा ?"

"वाइफ से आपके मा-बाप की खच चुख चलती हो तो ऐसी हालत मे आपको प्रेफरेन्स मिलेगा, क्योकि इससे एक जोड़ा बूढ़ा-बूढ़ी के घर मे रहने का चान्स नहीं है। नतीजा यह होगा कि पानी का खच कम होगा। मगर ससुराल अगर नजदीक हो तो आप इस क्लास के किरायेदार की श्रेणी मे नहीं आते। सास-ससुर और साले-सालियाँ आकर यहाँ राते गुजारेंगी, नहा-धोकर जायेंगी। नतीजा यह होगा कि पानी का खच बढ जायेगा।"

सुधामय ने सूचना दी, "आजकल मकान-मालिक हजारो तरह के सवाल करते हैं। बीवी शुचिता के वहम की मरीज है या नही, किसी को नाचने-गाने का अभ्यास है या नही, कुत्ता रहेगा या नही, यह सब वाइटल इनफॉर्मेशन है। इससे मकान की उम्र कम हो जाती है।"

जरा चुप रहने के बाद सुधामय बोले, "फार्म भरकर अपनी और अपनी पत्नी की पासपोर्ट साइज की फोटो और ढाई सौ रुपया मेरे पास दे जाइएगा। कोशिश करूँगा कि आपका काम बन जाये।"

सुकुमार के पैर से सिर तक आग की एक लहर दौड जाती है। मगर सुधामय ने इसकी परवाह नही की। बोलें, "हाँ अब किराये की बात है।"

"'बहुत ही जरूरी विषय है।" सुकुमार को अब तक पूछने का साहस नही हो रहा था। "आजकल कैसी रेट चल रही है ?"

"रेट तो बहुत तरह की है। आपकी कैपीसिटी क्या है, यह बताइये।"

सुकुमार सिर खुजलाने लगा। उसके जैसा आदमी कितना किराया दे सकता है ? लेकिन किराये के रुपये का इन्तजाम तो करना ही होगा।

बहुत हिसाब-किताब करने के बाद सुकुमार ने कहा, "साठ-सत्तर या ज्यादा से ज्यादा अस्सी।"

अब सुधामय सामन्त खिल-खिलाकर हँसने लगे। उनकी हँसी रुकने का नाम ही नही ले रही थी।

उन्होने सुकुमार के हाथ से फॉर्म छीन लिया। "कैलकटा शहर मे आपको बस्ती का भी मकान नही मिलेगा। आप नाहक ही वक्त बर्बाद कर रहे हैं। भवानीपुर के रिक्शे वाले भी रात मे सिर्फ सोने के लिए उतना किराया दे देते हैं—सो भी करवट लेकर सोने के लिए। माइन्ड यू, जो लोग पैर फैलाकर चित होकर सोना चाहते हैं उनको भी इससे ज्यादा किराया देना पड़ता है।"

बिल्ली के भाग से छीका टूटन की तरह एक काम मिला भी तो उसम जी-जान लगा देने का मौका ईश्वर ने सुकुमार को नही दिया। जो लोग कहते हैं कि आज के बगाली युवक किसी काम के नही हैं, सुकुमार उन्हें दिखा देना चाहता है कि अवसर मिलन पर बेकार युवक सान की फसलें उगा दे सकने हैं।

लेकिन पग-पग पर बाधा का सामना करना पडता है। मकान तलाशन की जिम्मेदारी ने उसके सर्वांग को जकड लिया है। इधर-उधर जान मे गाडी का किराया भरना पडा है, उसका कोई हिसाब नही, घर का पता बताने का आश्वासन देकर कई आदमी चार-पाँच रुपया लेकर भाग चुके हैं। यह सब रुपया कणा के पास हाथ फैलाकर ही सुकुमार को लेना पडा है।

लेकिन आहिस्ता-आहिस्ता कणा का विश्वास भी सुकुमार पर से उठता जा रहा है। उसकी आँखें कह रही हैं मानती हूँ, नौकरी तुम्हें नही मिली लेकिन *मेरे लिए एक मकान का भी तुम इतजाम नही कर सके ? तुम किस तरह के* मद हो ?

कणा को उन आँखो की याद आते ही सुकुमार को डर लगने लगा है। वे आँखें जैसे रहस्य स भरी हुई हो, कब क्या हो जाये, कुछ ठीक नही।

आज तीसरे पहर भी सुकुमार कोयले की दूकान से निकल पडा था। जैस ही निकल रहा था, शकुन्तला आयी थी। शायद कालज से सीधे ही चली आयी थी।

"नमस्ते सुकुमार बाबू।" शकुतला मानो सुकुमार से मिलने के लिए ही यहाँ आयी हो।

शकुतला ने कहा, "सुकुमार बाबू आप पकड मे आ गये। आप खतरनाक आदमी हैं।"

शकुतला की बात बडी ही मीठी लग रही थी। लेकिन पकड मे आने की कौन-सी बात है ? "बिना दोष के भी इस शहर म बहुत से आदमी पकड लिये जाते है शकुतला।' सुकुमार ने चटुल मतव्य प्रकट किया।

शकुन्तला ने आज भी आखा मे काजल लगाया था। काजल लगाने से बच्चे और रमणी दोनो सुन्दर दीखते हैं। शायद इसीलिए अमरीका म लडकियो को लाड से 'बेबी' कहा जाता है।

मधुरभाषिणी शकुतला बोली, "आप कॉलेज मे अभिनय करते थे, यह तो आपने बताया नही था। कल लाइब्रेरी के पुरान कॉलेज-मैगजीन मे आपकी तसवीर देखी। पुलिस इन्सपेक्टर के वेश म हाथ मे रूल थामे आप जिस स्टाइल के साथ खडे हैं कि लगता है सचमुच ही कोई पुलिस-अफसर हो। नीचे सुकुमार

मित्तिर नाम न देखती तो यकीन ही नही होता। उसकी बगल मे चोर की भूमिका मे सोमनाथ नामक कोई व्यक्ति खडा था।

"चोर न रहे तो पुलिस क्या शोभा पाती है ?" सुकुमार दुबारा मजाक करता है।

इसके एक दिन पूर्व शकुन्तला को सुकुमार ने चाय पिलायी थी। चाहे जो हो, मालिक की ही लडकी है—हो सकता है किसी दिन खुद मालकिन बन बैठे। लेकिन आज उसके पास चाय पिलाने का वक्त नही था। सुकुमार को बेलगछिया और बाग बाजार तक जाना था।

शकुन्तला सभवत थोडा बहुत वक्त निकालकर आयी थी। आज निरर्थक बातें करने की ओर ही उसका झुकाव था। लेकिन व्यवसाय सबधी दो-चार बातें ही बताकर सुकुमार उठकर खडा हो गया। बोला, "आज मेरा एक जरूरी एप्वॉइंटमेन्ट है।"

शकुन्तला का चेहरा तत्काल गभीर हो गया था। बस मे खडे होने पर सुकुमार ने महसूस किया, 'एप्वॉइ्टमेन्ट शब्द का उपयोग करना ठीक नही हुआ। उसे कहना चाहिये था कि किसी जरूरी काम से जा रहा हूँ। कही शकुन्तला 'एप्वॉइ्टमेन्ट' शब्द का कोई दूसरा अर्थ न लगा ले।

बेलगछिया मे कोई सुविधा नही हुई। दलाल ने बडी-बडी बाते बतायी, सरकारी हाउसिंग स्टेट जैसे उसके मुट्ठी मे हो।

"वहाँ कौन किराये पर लगायेगा जनाब ?"

दलाल झुंझला उठा था। "क्या कह रहे हैं ? एम० एल० ए०, एम० पी० का होस्टल, फ्लैट, बगला सब लेट हो रहे हैं और आप मामूली हाउसिंग स्टेट की बात कर रहे हैं। किसी दिन देखिएगा, लाट साहब के भवन मे भी मकान मिल जायेगा।"

इन बडी-बडी बातो मे दखलन्दाजी करने का सुकुमार को अभी हिम्मत नही है। वह सीधे बाग बाजार चला आया था। नरपति भट्टाचार्य शीतला मन्दिर के पुजारी हैं और पार्ट टाइम मकान की दलाली भी करते है। वह लबी-चौडी नही हांकते।

दस रुपये के बदले वह सुकुमार को एक जगह ले जाने लगे। किराये पर मकान मिल जाने पर एक महीने के अन्दर और दस रुपया देना होगा।

नरपति भट्टाचाय लेन से बाइलेन, सेकेण्ड बाइलेन, थर्ड बाइलेन पार करते

हुए सुकुमार को एक मकान के सामने ले गये जा करीब-करीब डेढ़ सौ साल पुराना होगा।

मकान का एक कमरा भी दिखाया। उसके बाद बूढ़ी हरसुन्दरी दत्त बाहर निकल आयी। पूछा, "तुम किस जात के हो भैया ?"

"मित्तिर कायस्थ के अलावा किसी दूसरी जात मे नही होता है," सुकुमार ने उत्तर दिया था।

कायस्थ के मामले मे सोनारिन हरसुन्दरी को कोई आपत्ति नही है। मगर वह जानना चाहती है कि यहाँ कौन-कौन रहेंगे।

"फिलहाल मैं और " सुकुमार जरा चुप हो गया, उसके बाद कह ही बैठा, "मेरा बहिन।'

"तुम्हारी शादी हो चुकी है न ? बहू अभी कहाँ है ? मायके मे ?"

सुकुमार ने उत्तर दिया, मेरी शादा नही हुई है।"

शादी नही हुई है, यह सुनते ही हरसुन्दरी की आवाज बदल गयी। सुकुमार अब बाहर आकर खडा हुआ।

थोडी देर बाद ही नरपति भट्टाचार्य उससे आकर मिला। "आपने सब मटियामेट कर दिया जनाब। आपकी शादी नही हुई है, यह कहने ही क्यो गये ? मैरिड पार्टी के अलावा आजकल कोई किसी दूसरे को मकान किराये पर नही देना चाहता है।"

"क्यो ? शादी न करके मैंने कौन-सा गुनाह किया है ?" सुकुमार अपनी ऊब दबाकर नही रख सका।

नरपति बाबू ने उत्तर दिया, "जबकि हम या आप मकान-मालिक नहीं हैं तो मेरे सामने यह प्रश्न उछालने से कोई लाभ नही है सुकुमार बाबू।' इसके बाद नरपति बाबू ने कहा, "मकान-मालिका को भी दोष नही दिया जा सकता है। बैचलर और बेकार जैसे लोगो को घर मे घुसाने से बहुत तरह का हगामा खडा हो जाता है।"

यह बात सुकुमार के मन म बिंध गयी थी। नरपति बाबू न अनजाने ही सुकुमार के जख्म को कुरेद दिया—बैचलर, बेकार।

•

बेचलर और बेकार सुकुमार मित्तिर आज भी ब्रेबोन रोड के मोड पर इंडिया एक्सचेंज के पास बेवकूफ की तरह खडा था।

ब्रेबोन रोड व्यवसाय की जगह है। बैंक और व्यवसायियो के अतिरिक्त किसी दूसरे आदमी को इस मुहल्ले मे घर किराये पर नही मिलता यह सब जानने के बावजूद सुकुमार जाने कब अपनी खामखयाली मे यहाँ चला आया था।

सचमुच बेकार हुए बगैर कोई इस मुहल्ले मे मकान की तलाश मे नही आता। लेकिन कलकत्ते के उत्तर-दक्खिन पूरब-पच्छिम कही भी सुकुमार ने खोज बाकी नही रख छोडी।

कल माँ ने फुसफुसाकर कहा था, "कणा से बहस-मुबाहसा मत करना। अचानक गुस्से म आकर वह बेहोश जैसी हो गयी थी। ऊल-जलूल बकने लगी थी, "तुम लाग यहाँ से चले जाओ, मैं तुम लोगो का चेहरा भी देखना नही चाहती।"

मा की आँखो मे आँसू थे। "कहना ही चाहिए। कच्ची-उम्र की लडकी के सिर पर मद का बोझा रखकर सभी नीद म बेहोश रहेंगे तो ऐसा होगा ही। मान-सम्मान का बोध रहे ता कही कोई माँ-बाप लडकी की कमाई का पैसा खाते है ?"

कणा ता ऐसी नही थी। कणा माँ-बाप, भाई-बहिन वगैरह के चेहरे पर हँसी दखन क लिए सदा उत्कण्ठित रहा करती थी। कणा ने कैसे कहा, "तुम लाग मेरे पास नही आओ ?'

मा को डर लग रहा था, कणा भी कही आखिरकार सुकुमार की तरह पागल न हो जाये। "हे देवता, मैं लडकी की कमाई का खाना अब एक दिन भी नही खाना चाहती। कणा को तुम स्वस्थ कर दो।"

असहाय सुकुमार न मन ही मन कहा, "माँ तुम्हें मालूम नही कि कणा किस मुसीबत मे फँस गयी है। मैं तुमसे भी नही कह पा रहा हूँ। मगर तुम कणा पर गुस्सा नही करो।'

"क्या रे, तू फिर क्या बुडबुडा रहा है ? बुडबुडाते देखते ही मुझे भयकर डर लगने लगता है। हर वक्त मन मे जो आता। वही कह डाला कर मन हल्का रहेगा तो माथा गरम नही होगा।" माँ सुकुमार को उपदेश दे रही थी।

"तुम चिता नही करो, माँ। मैं जब तक हूँ, तुम कणा के लिए जरा भी चिता न करो," सुकुमार अब बुडबुडा नही रहा था।

कणा घोर निद्रा मे निमग्न है। "तेरी नीद की टिकिया ही उसे खिला दी है, मुना," माँ अभी एक अव्यक्त प्रत्याशा से सुकुमार के चेहरे की ओर ताक रही थी।

सुकुमार ने देखा, औषधि के प्रभाव से कणा सारा दुख और दर्द भूलकर कितनी शान्ति के साथ नीद ले रही थी।

सुकुमार सोच रहा था, नीद की इस टिकिया का आविष्कार किसने किया था? वह मानवपुत्र धन्य है जिसकी साधना के फलस्वरूप करोडो अभागे मनुष्यो को असह्य यातना से कुछ क्षणो के लिए मुक्ति मिल जाती है। सुकुमार ने यह भी सोचा कि इस सामयिक निद्रा और चिरनिद्रा म कितना साधारण-सा अन्तर है—मात्र कुछ ज्यादा टिकिया लेते ही नीद के देश से पुन लौटकर नही आया जा सकता है।

आज सवेरे कणा से बगैर मिले सुकुमार घर से बाहर निकल आया था। कणा को एक टुकडे कागज म लिखकर चला आया था, 'आज कोई न कोई इन्तजाम हो जायेगा।'

लेकिन इन्तजाम कहाँ हुआ है? इन्तजाम का कही कोई ठिकाना न पाने की वजह से ही सुकुमार मित्तिर ब्रेबोर्न रोड और इडिया एक्सचेंज के चौराहे पर मुह बाये खडा था। अब वह कहाँ जाये?

जाने, क्या सोचकर सुकुमार मथरगति से चलनेवाले एक साँड के पीछे-पीछे हो लिया। ब्रेबोर्न रोड पर कूडा फेंकने का जो स्थान है वह कलकत्ते के साँडो का खानदानी शहीद मीनार है। साँड संस्कृति के इस पीठ स्थान मे हर रोज कान्फ्रेंस चलता ही रहता है। साँड दायित्व बोध से संपन्न नागरिक हैं। इसीलिए सडक की आधी जगह पर दखल जमाने के बावजूद वे बडा बाजार का ट्रैफिक जाम नहीं करते।

सुकुमार कुछ देर तक साँडो के सम्मेलन का निरीक्षण करता रहा। उसके बाद एकाएक उसे लगा, कूडे के पहाड क निकट ही एक टेम्पो गाडी को ठेलने की कोशिश चल रही थी। ड्राइवर जाना-पहचाना जैसा लग रहा था। सुकुमार ने अब देर नहीं की, वह आगे बढ गया।

जो सोचा था, वही हुआ। पचानन कर्मकार का ही टेम्पो था। सुकुमार ने खुद हाथ से ठेलना शुरू कर दिया और जरा-सा ठेलते ही अचल टेम्पो अजीब सी आवाज करता हुआ गतिमान हो उठा।

पचानन कर्मकार न एक तरह से जबरन ही सुकुमार को टैम्पो के अन्दर बिठा लिया।

पचानन ने सुकुमार को बहुत-बहुत धन्यवाद दिया। "वाकई आपके हाथ मे कालीघाट का प्रसाद लगा हुआ है। पन्द्रह मिनटा तक भारवाहक मजदूरो से धक्का लगवाता रहा, लेकिन गाडी टस से-मस होने का नाम नही ले रही थी, मगर आपने जैसे ही हाथ लगाया गाडी मऊ के टट्टू की तरह दौडने लगी।"

पचानन कर्मकार गाडी का टट्टू की तरह ही दौडा रहा था। स्ट्रैण्ड रोड पार कर टेम्पो हावडा पुल पर चली आयी थी।

पचानन वोला, "आज अपनी ही चक्री म फँस गया था। बडा बाजार मे साली मनहूस ट्रैफिक पुलिस किसी भी हालत म खडी नही होन देगी। लेकिन माल की बाढाई मुझे करनी ही है। लाचार हो गाडी का आउट आफ आडर कर हुड खडीकर चुपचाप बैठ गया। *जैसा गौरमट का कानून वैसी ही धोखा धडी।*

"खास जगह मे मेरी गाडी खराव हो गयी है, जो करना हो, करा। साला ट्रैफिक पुलिस मैन आकर देख गया, उसका बाप बन्दर मुहा सर्जेंट देखकर चला गया। दो मिनट तक शार-गुल मचाकर रफा हुआ, लेकिन नबर लेने का साहस नही कर सका। इस बीच मेरे माल की भी लदाई हो गयी। लेकिन उसके बाद ही झझट की शुरुआत हुई। सूअर का बच्चा यह टेम्पो किसी भी हालत मे स्टार्ट होने का नाम नही ले रहा था—ब्रेकडाउन का अभिनय करन गया था और सचमुच ही उलझन मे पड गया। साच रहा था, क्या करूँ ? फिर दलाल क फेर मे पडना होगा क्या ? ऐसे समय आपने ही आकर मेरा उद्धार किया।"

सुकुमार की ओर एक बीडी बढाते हुए पचानन ने कहा, "आपका हाथ जनाब बडा ही भाग्यवान् है।"

"भाग्यवान है।" शब्द ही व्यग्य जैसे लग रहे थे।

पचानन कर्मकार अब बहुत खुश था। "भाग्यवान हाथ न होता ता इस तरह की लडकी क्या मिलती, सर ?" उस दिन की बातचीत की याद पचानन के मन से पुछ नहीं गयी थी।

पचानन ने पूछा, "हाँ, घर मिला या नही ?"

"घर कहाँ मिला ?" सुकुमार के स्वर म गम्भीर निराशा का भाव था।

"मिसेज खूब टाइट कर रही हैं ? सो इससे मन उदास करने से काम नही चलेगा। भले घर की लडकी का ऐसा ही स्वभाव होता है। मैं अपने मामले म भी देख चुका हूँ।"

"अब अच्छा नहीं लग रहा है, पचानन बाबू।" सुकुमार अपना दुख दबा-कर नहीं रख सका।

"इतना गुस्सा करने से काम कैसे चलेगा ? उन लोगो के बारे मे भी सोच कर देखें। माँ-बाप की सहमति न रहने के बावजूद कालीघाट जा कर आपने शादी की। अब उनका घर-गृहस्थी के लिए व्याकुल होना स्वाभाविक ही है।"

सुकुमार बहुत ही पेचीदी स्थिति मे फँस गया है। लेकिन कृष्णा का मामला लोगो के सामने जाहिर भी तो नही किया जा सकता।

पचानन कर्मकार आकलैण्ड ब्रिज पर चढ़ते-चढ़ते बोला, "अच्छा हुआ कि आपसे मुलाकात हो गयी। अपनी मिसेज से मैंने आपकी बात बतायी थी। उसने एक सूचना दी है।"

सुकुमार को जैसे हाथ मे चाँद मिल गया। "कहाँ ?"

"हावड़ा राजवल्लभ साहा लेन मे ही, जहाँ हम लोग रह रहे हैं।"

दो ठेलागाड़ियों को ओवरटेक कर पचानन एक पुआल गाड़ी के बीच आ गया। पुआल की गाड़ी के गाड़ीवान को गाली-गलौज से तंग-तंगकर और ट्रैफिक पुलिस के चौदह पुरखो का तर्पण कर पचानन ने पूछा, "आपकी मिसेज क्या बहुत ही हाईफैमिली की लडकी हैं ? टूटहा मकान देखकर कहीं नाक-भौंह सिकोड़ने तो नहीं लगेंगी ?"

"ऐसा लगता तो नही है।" सुकुमार ने बाध्य होकर अभिनय का सहारा लिया।

"लगे भी तो आप क्या कीजिएगा ? मेरी बीबी बीडी का नाम सुनते ही झुँझला उठती है। उसकी इच्छा रहती है कि मैं हरदम कैपस्टेन सिगरेट सुलगाता रहूँ। लाचार हो मैं अपनी मिसेज से कहता हूँ, इतना शौक है तो इस पचा के साथ मुहब्बत क्यो की ? मेरी बीबी अलबत्ता झल्लाती नही, चुपचाप मुसकराती रहती है।"

पचानन कर्मकार ने कहा, "सुनिये साहब, मिसेज से मेरी बातचीत हुई है। जो मकान खाली हुआ है उसका मालिक और मालकिन अच्छे आदमी हैं। लेकिन जरा पुराने विचार के हैं। इसके पहले किरायेदार के कारण बहुत झमेले मे फँस गया था। अब की प्रतिज्ञा की है, बिना बाल-बच्चे दार पति-पत्नी वाली गृहस्थी के अलावा किसी दूसरे को मकान किराये पर नही देगा। बहुत लम्बा चौडा परिवार उसे पसन्द नही। एक कुँआरा आदमी वहाँ था, लेकिन वह पियक्कडो का चीफ मिनिस्टर था। घर के मालिक और मालकिन की नाक मे दम करने के बाद हजरत विदा हुए।"

पचानन ने चेता दिया, "मुहब्बत वगैरह की बात गलती से भी जबान पर नहीं लाइएगा। चाहे जो हो, आखिर है तो पुरान खयाल की मकान-मालकिन। सिर्फ ऑर्डिनरी वाइफ-हसबैण्ड बताकर काम निकाल लीजिएगा। कहिएगा, अभी आप यादवपुर म किराये का मकान लेकर रह रहे हैं, काम मे असुविधा हो रही है इसलिए राधा वल्लभ साहा लेन म आकर रहना चाहते हैं।"

पचानन सुकुमार को झटपट राधावल्लभ साहा लेन के मकान मे ले गया।

"मासीजी, मैं अपने दोस्त को लेत आया हूँ।" पचानन ने इस तरह बात-चीत करायी जैसे वह बहुत दिनो का पुराना मित्र हो।

सुकुमार क्या करता, पता नही। लेकिन पचानन न खुद ही कहा, "मासी जी, आप जैसा आदमी चाहती हैं, ठीक वैसा ही है। नो झझट, नो झमेला, नो बड़ा बच्चा, ओनली दवा और देवी, एकदम निरीह गिरस्थ पार्टी।"

मासीजी पचानन-परिवार की भक्त है, यह समझ मे आ गया। "तुम्हारे जैसे सुखी पति-पत्नी हो तो फिर मैं कुछ भी नही चाहती। इसके चलते अगर पाँच रुपया कम किराया भी मिले तो कोई हर्ज नही।

पशगी की बात चली। उस रात ही कणा से पचास रुपया लेकर सुकुमार हावड़ा जाकर दे आया।

कणा से रुपया न लना ही सुकुमार को अच्छा लगता। मगर उपाय ही क्या था?

•

"कणा, तू अभी कैसी है?" टैक्सी पर बैठते ही सुकुमार ने पूछा। यादव-पुर से दौड़ती हुई टैक्सी बहुत दूर चली आयी थी।

सुकुमार न बेरोक-टोक कणा को काम की सारी बाते बता दी। कणा न जबान बन्दकर सब कुछ सुना मगर कोई खास उत्तर नही दिया।

सुकुमार ने खुलकर बातचीत की है। कणा के लिए भी कोई संकोच की बात नही है। सुकुमार जान-सुनकर सरदारजी की टैक्सी लेकर आया था।

कल कणा को दो बार उल्टी हुई है। उस पर रास्ते के झटके। कणा की देह के बारे मे सुकुमार के लिए दुश्चिन्ता करने के अलावा दूसरा कोई चारा है ही क्या?

कणा ध्यान से गाड़ी के शीशे के अन्दर से बाहर की ओर ताक रही थी।

शीशे को हटा देती ना कणा र लिए अच्छा रहता—लेकिन वह बाकी दुनिया से अपनी दूरी बरकरार रखना चाहती थी। कणा र बाल भी उड़-उड़ कर मुह पर आ रहे थे।

सुकुमार सारी बात सोच ही नहीं पा रहा था। घर से भागने का एक बहाना खोजने के लिए कणा और सुकुमार को सड़क पर आकर विचार-विमर्श करना पड़ा था। शुरू में तय किया था, मामूली-सा कोई झगड़ा-टंटा कर कणा क्रोध मे आकर घर से निकल पड़ेगी। वैसी हालत म भीषण क्रोधी कणा को अकेली न छोड़ने का बहाना बना कर सुकुमार भी घर स निकल पड़ेगा।

कणा न सुना है, उन लोगो के आपरेटिंग स्कूल की एक लड़की इसी तरह की मुसीबत मे फँसकर बसीरहाट के मकान से निकल पड़ी थी। घर पर सिर्फ बूढ़ी बुआ थी, उनकी समझ म कुछ भी नही आया था। लेकिन यहाँ क्या यह बात इतनी सुविधाजनक हो पायेगी ? माँ की जिस तरह की सेहत है और बाबू जी को जिस प्रकार का ब्लडप्रेसर का रोग है, कणा और सुकुमार एक साथ बाहर निकल जाय तो उन दोनो मे से कोई न कोई बीमार हो जायेगा।

सुकुमार स्वय भी झगड़ा-झंझट म पड़ना नही चाहता। वह किसी दूसरे उपाय की खोज म सिर खुजलाने लगा। "जानती है कणा, सोमनाथ के मझले भैया दफ्तर के काम स अक्सर बाहर चले जाते थे। एक बार किसी चीज की ट्रेनिंग क कारण तीन महीने के लिए बण्डेल चले गये। दफ्तर क सिलसिले मे तेरी भी किसी तरह की ट्रेनिंग चले। तू डेढ़-दो महीने के लिए ट्रेनिंग पर जा रही है। लेकिन तू चूंकि लड़की है इसलिए तुझे अकेले छोड़ा नही जा सकता। मैं बेरोजगार सुकुमार तेरे गार्ड की हैसियत स चल रहा हूँ। विस्तार से हम बाद मे समाचार देंगे।"

कणा के सोचने की शक्ति बहुत कम हो गयी थी। वह भैया से इतना ही कहती है,"जो ठीक जचे, वही करो। मैंने तुम्हे कितनी मुसीबत मे डाल दिया।" रुलाई शुरू करने के पहले ही कणा ने अपने कंधे पर भैया के हाथ का स्पर्श महसूस किया। "उफ् कणा, अभी हम लोगो को ढेर सारा काम ... तू अब उन्ही बातो की फिक्र कर।"

दफ्तर क काम की वजह से लड़की का घर के बाहर ... कर माँ तनिक भी खुश नही हुई। ट्रेनिंग के बाद तनख्वाह सुनकर माँ आग-बबूला हो उठी थी। "लड़की की कमाई है।"

लड़की का टस से मस न हो ... प्रकट

"जाओ, जहाँ ये आँखें ले जायें तुम लाग चले जाओ। मुझस ता अब यह तकलीफ बरदाश्त नही होती।"

उसके बाद ही टैक्सी आयी। गभीर चेहरा ले कणा और सुकुमार थोडा बहुत असबाब लेकर घर स निकल पड।

टैक्सी जितनी तेजी से भागती जा रही थी, सुकुमार उतनी ही इत्मीनान की साँस ले रहा था। और कणा उतनी ही तजी से रो रही थी।

"यह सब तुम क्या कर रह हो, भैया ? इससे तो अच्छा वही था जा मैं करने जा रही थी "

"तुम जो कुछ करने जा रही थी, वह बिलकुल ठीक नही था। कणा, अब तू बात मत बढ़ा। जो हो रहा है, होने द।'

कणा किस तरह असहाय रूप म अपनी देह को निढाल छोड टैक्सी मे अध-लेटी हालत म पडी हुई थी। कणा शायद साच रही थी, क्या होगा ? अ तत वह कहाँ जाकर हाजिर हागी ?

आखिर म क्या होगा, यह बात सुकुमार को भी नही मालूम। यह सब बिना साचे कणा को अपन साथ ले वह किसी तरह घर से बाहर निकल आया था। आखिर म कुछ न कुछ अवश्य ही किया जायेगा। लेकिन अभी आखिर की बात सोचने का अवसर नही था।

"भैया !" कणा जैस बहुत दूर से भैया का पुकार रही थी।

"कुछ कहना है ?" खामोश सुकुमार उसके चेहरे की ओर ताक रहा था।

"मुझ पर तुम्हें बहुत ही गुस्सा आ रहा हागा, मैं यह महसूस कर रही हूँ।" कणा हाँफ रही थी।

"उफ् कणा !" सुकुमार बहिन का शा त करना चाहता था।

"इससे बहुत छोटे अपराध पर तुमने मुझे चटाक् से तमाचा जड दिया था भैया," कणा सुकुमार को पुरानी बात की याद दिला देती है।

"क्योकि मैं यादवपुर के उन युवको के साथ बातचीत कर रही थी।"

"कणा, अभी हम लागो का बहुत काम करना है। सब कुछ मैं तुझे बता नही सका था। हा, हम लाग जिस मकान मे जा रहे हैं, उसके बारे मे सुनकर रख ले। वहाँ मेरा नाम सुकुमार मित्तिर रहेगा और तेरा नाम "

"तेरा एक नया नाम हाना चाहिए, कणा।" सुकुमार यन्त्रचालित की तरह कह बैठा।

सुकुमार स्वय भी एक नाम के बारे मे सोच रहा था। शकुन्तला नाम ही बार-बार याद आ रहा है—मिसज शकुन्तला मित्र।

लेकिन शकुंतला नाम कणा का सम्भवत जँचा नही। बिना सोचे-समझे कणा ने प्रस्ताव रखा, "शिउली।" कणा इसी नाम की अभ्यस्त है, यह बात सुकुमार की समझ मे नही आयी।

लेकिन सुकुमार का इस नाम से घोर आपत्ति है।" मैं तुझे शिउली का नाम धारण नही करने दूँगा।"

कणा को भैया की इस आपत्ति का कारण समझ म नही आ रहा था। "यह नाम तुम्हें पसन्द नहीं आ रहा है?"

सुकुमार बोला, "यह नाम वैसे कोई बुरा नही है। इतने सुन्दर नाम पर मैं राजी हो जाता। मगर "

'मगर' का रहस्य कणा की समझ मे नही आ रहा था। सुकुमार सम्भवत इस बात को स्पष्ट नही करना चाहता था। लेकिन कणा के चेहरे की ओर देखकर सुकुमार का कहना पड़ा, "उस हरामजादे नटवर मित्तिर ने उस दिन शिउली नाम को गन्दा जा कर दिया है। लेकिन तुम्हें जब यह नाम इतना ही पसन्द है तो मैं भी सहमत हो रहा हूँ। दुनिया मे अनक शिउली हो सकती हैं, सभी नटवर मित्तिर की शिउली होगी, ऐसी तो कोई बात नही।"

कणा न गौर किया, नटवर मित्तिर के प्रति नफरत का भाव रहने के कारण भैया का चेहरा विकृत हो गया था।

टैक्सी हावडा का जी० टी० रोड पकडकर जितना आगे बढ़ती जा रही है सकुमार की दुश्चिन्ता उतनी ही बढती जा रही है। ऐसा महसूस हो रहा है जैसे किसी विशाल मरु-अजगर ने उसे और कणा को जकड लिया है। और आहिस्ता-आहिस्ता एक विशाल खड्ड की ओर उन दोनो को खीचे लिए जा रहा है। सुकुमार जी-जान लगाकर बहिन को बाहर फेंक देना चाहता है मगर सफल नही हो पाता।

सुकुमार ने सहसा गौर किया, कणा का चेहरा दुश्चिन्ता और आशका के कारण रक्तहीन हो गया था। भैया का हाथ उसने कसकर पकड लिया था।

अचानक एक झटके के साथ टैक्सी हावडा मैदान पारकर एक बस के पीछे ब्रेक लगाकर खडी हो गयी। और उस झटके के साथ ही सुकुमार का याद आया कि एक जीप खरीदना नितान्त आवश्यक है।

"एक मिनट के लिए रोक दो।" गाडी रोकवाकर सुकुमार उतर पडा। कणा तभी बच्चे की तरह पुकारने लगी, "भैया! मुझे छोडकर चले नही जाना।"

"धत् पगली !" कणा को बहुत दिनो से ऐसा डर नही लगा था । सुकुमार को याद आया, बहुत दिन पहले वह कणा को अपने साथ ले स्यालदह के रथ के मेले मे लोहे का तावा खरीदने गया था । साथ छूट जाने के डर से कणा उस समय भी सुकुमार का हाथ कसकर पकडे हुई थी, भीड के बीच बार-बार दयनीय स्वर मे कहती थी, "भैया, मुझे छोडकर चले नही जाना ।"

उसके बाद कणा के हाथ की पकड बहुत ही मजबूत हो गयी थी कणा तो अब अपने पैरो पर खडी हो चुकी है । फिर आज कणा इतना डर क्यो रही है ?

सुकुमार को याद आया, रथ के मेले मे भीड के दबाव की वजह से कणा का हाथ छूट गया था । उस क्षण सुकुमार के शरीर का तमाम रक्त छाती की ओर दौडने लगा था । मात्र कुछ सेकेण्डो की बात थी । फिर भी सुकुमार की आँखो मे अँधेरा उतर आया था । कणा खो जा सकती है, इस आशका से शरीर अवश जैसा हो गया था । उसी क्षण सुकुमार को महसूस हुआ था कि वह कणा को कितना प्यार करता था । घर पर बहिन को चाहे कितना ही डाँटे फटकारे, कणा उसके लिए एक बहुत ही कीमती सपदा थी ।

"कणा-कणा", सुकुमार जोरो से चिल्ला उठा था ।

"वही तो कणा है, मात्र एक फुट पर ही तुम्हारी बहिन है । इसके लिए इस तरह दहाड मार कर रोने की क्या जरूरत है ?" निकट के लोगो ने सुकुमार को मीठी झिडकी दी थी । "कोई पानी मे भी डूब जाता है तो भी लोग इस तरह नही चिल्लाते हैं ।"

इसी बीच कणा का हाथ सुकुमार की मुट्ठी मे लौट आया था । पुरानी बात भूलकर उसने हँसना शुरू कर दिया था ।

"इतना ही अगर डर था तो इतनी भीड-भाड के अन्दर आने की जरूरत ही क्या थी ?" एक सहयात्री की बात अब भी सुकुमार को याद थी ।

गाडी जहाँ रुकी है वहाँ सिर्फ तरह-तरह की मच्छरदानी और थोक कपडे की दुकानें हैं । समय बचाने के खयाल से सुकुमार ने एक आदमी से पूछा, भैया, यहाँ सिन्दूर कहाँ मिलता है ?"

वह आदमी मुसकराया । "आप बहुत ही अच्छी जगह सिन्दूर की तलाश कर रहे हैं, भाई साहब । यह बदनाम मुहल्ला है । यहाँ की महिलाओ के पास सिंदूर जैसी कोई बला नही होती ।"

सुकुमार का चेहरा शर्म से लाल हो गया। वह आदमी बोला, "मल्लिक फाटक पार करन के बाद थोडा और आगे बढ जाइये।"

सुकुमार फिर गाडी पर जाकर बैठ गया। "क्या हुआ भैया ? क्या खरीदने गये थे ?

अब असमजस म रहन से काई लाभ नही। सुकुमार न कहा, "सिन्दूर।"

"नही मिला ?" कणा को भी अब इस चीज की आवश्यकता समझ मे आ गयी थी।

"गलत जगह मे उतर गया था वह रेड लाइट एरिया है। हमे इस जगल का पार करना ही है, कणा।"

सुकुमार ने गौर किया, कणा ने फिर रोना शुरू कर दिया था। कणा का आज हो क्या गया है ? थोडी देर पहले तो कणा ऐसी नही थी।

टैक्सी फिर रुकी। सुकुमार टैक्सी से उतर पडा और तत्क्षण लौटकर चला आया।

उसके बाद गाडी स्टार्ट करने के बाद सरदार जी टैक्सी वाले ने देखा, लेडी पैसेंजर ने चलती हुई गाडी मे बैठे-बैठे ही वैनिटी बैग से आईना बाहर निकाल कर माँग मे सिन्दूर भर लिया।

तीस साल के ड्राइविंग अनुभव के दौरान सरदार जी ने ऐसा अजीब दृश्य नही देखा था। और सबस आश्चर्य की बात है कि सिन्दूर लगाते वक्त जनाना पैसेंजर के साथ मर्दाना पैसेंजर भी आँसू बहा रहा था।

•

"सर, जरा हम लोगा की आर भी आँख घुमाकर देख लें। मिसेज के साथ आप हनीमून मनाने जा रहे हैं, इसके मानी यह नही कि दुनिया को डोन्ट केयर करके चले। टेम्पा ड्राइवर पचानन कर्मकार ने गाडी के अदर से गरदन बढाकर सुकुमार से कहा।

सुकुमार संध्या बाजार के मोड पर बस के इन्तजार म खडा था। "बात-चीत बाद मे होगी, पहले बैठ जाइये। साला ट्राफिक अभी तुरत पचास पैसा टैक्स लगा देगा।" पचानन कर्मकार ने टेम्पा का दरवाजा जल्दी से खोल दिया।

पचानन को एसप्लेनेड जाना है, यह सुनकर पचानन न कहा, "कोई बात नही, मरे साथ लाल बाजार तक चलिय। मैं बहू बाजार जा रहा हूँ।'

हाथ बढ़ाकर एक बूढ़े रिक्शेवाले के सिर पर धौल जमाते हुए पचानन ने रास्ता साफ किया और गाड़ी की गति और गड़गड़ाहट म तेजी ला दी।

"हम लोगा की बात मत पूछें, सर ! किराये की गाड़ी किराये की गाड़ी ही होती है। कब क्या करता हूँ, कोई ठीक नहीं रहता। कल एक श्राद्ध घर का सरो-सामान लेकर बराह नगर गया था। हाफ डजन मुंडे माथे के मर्दों का एक साथ देखकर मूड बासी पापड़ की तरह अपने आप नरम हो जाता है। किराये के लिए दर-दाम करने का भी मन नही करता। और आज विदिन ट्वेल्व आॅवस सुहागरात के लिए जोड़ा पलङ्ग काम बहू बाजार माने जा रहा हूँ।"

पचानन कर्मकार अनगल बकता जा रहा था। "अब आप मरे फ्रेंड हैं। आपस मजाक चल सकता है। जोड़ा-पलङ्ग की बात से आपकी याद आ गई। हाँ, यह तो बताइये सर, मिसेज तो खुश हैं न।"

सुकुमार के कान लाल हो गये। पचानन बाला, "एक बात पूछ ही लू। सुहागरात पहले ही मना चुके थे या कल ही यह काम मेरे साथ कोई दुराव छिपाव की बात नही है।" पचानन खुल कर हँस रहा था और सुकुमार की इच्छा हो रही थी कि गाड़ी से उतरकर चला जाये। सुकुमार को याद आया, पर के बाहर पहली रात काटे नहीं कट रही थी। कणा ने कमरे के अन्दर रात-भर एक लालटेन जला रखी थी। लालटेन की मद्धिम रोशनी मे विचित्र विचित्र छायाएँ कमरे के अन्दर उबाऊ भुतहा परिवेश का निर्माण कर रही थी। उसी के बीच कणा की रुलाई शुरू हो गई थी।

रुलाई का कारण सुकुमार ठीक से समझ नही पा रहा था। औरतों को तो ईश्वर ने हजारा तरह की विपदाओ की संभावनाएँ दी हैं। यह सब जानने के बावजूद कणा जाने कहाँ किसके साथ क्या कांड कर बैठी तो अब रोने से फायदा ही क्या ?

कोई दूसरा वक्त होता तो सुकुमार कणा को बेहद फटकारता लेकिन अभी जबान खोलने से उल्टा ही नतीजा निकलेगा। अभी कणा को ढाढस देना जरूरी है। कणा को समझना होगा, अँधेरा हमेशा नही रहता।

मच्छरदानी म बैठ सुकुमार ने तनिक गंभीर स्वर मे धीरे-धीरे कहा था, "डरने की कोई बात नही है, कणा। तू जरा भी फिक्र नही कर। देखना, सब ठीक हो जायेगा। कणा तूने कभी कविता का पाठ नही किया। कविता मे आदमी के तमाम सवालो का जवाब दिया गया है। सुन कणा—

"अरे मेघ को देख न डरना कोई
छिपा ओट में उसकी हँसता दिनकर
हास खो गया जिस भोले चदा का
अधकार मे ही आता वह छिपकर।"

कणा को शायद फिर भी भरोसा नही हुआ। रात-भर उसका छटपटाना रहना सुकुमार की आँखो से अनदेखा न रहा। इसके बाद सुकुमार ने कणा को तग नहीं किया—दुख से एकान्त मे ताल-मेल बिठाने का मौका दिया।

यह सब पचानन से तो कहा नही जा सकता। लेकिन वह तो सुहागरात के बारे मे मजाक का दौर आगे बढाने की कोशिश कर रहा था।

अब पचानन ने अपनी भी चर्चा छेडी। "कहावत है अपना गम खुद ही पीते जाओ। भले घर की लडकी से शादी की यह सुनने मे अच्छा लगता है, मगर इसके कारण कितनी परेशानी का सामना करना पडता है। किसी जमाने में हमने छिपकर कालीघाट मे शादी कर ली थी, मगर सुहागरात हमने उसके छह महीने बाद मनायी। किराये के मकान का इन्तजाम किया गया, मिसेज अपनी गृहस्थी मे आयी तब उन्हें प्राप्त कर सका। उस पर भी फर्श पर ही बिस्तर बिछाना पडा, दलाल का कमीशन और पेशगी किराया देने के बाद चौकी खरीदने का पैसा बाकी ही कहाँ बचा था ?"

जबान बन्द कर सुहागरात की बात सुनने के अलावा सुकुमार के लिए कोई दूसरा उपाय नही था। सुकुमार ने एक गाडी को ओवरटेक करते-करते कहा, "इतने दिनो तक इस तीन पैरवाले को चलाने के बाद मिसेज को चारपाई पर सुला पाया हूँ—मगर मिसेज बात-बात पर ताना मारती हैं।"

भाग्य अच्छा कहिये कि पचानन कर्मकार की निगाह सुकुमार के करुण चेहरे पर नही पड रही थी।

पचानन बोला, "हाँ, एक बात, मेरी मिसेज ने आपकी मिसेज को दूर से देख लिया है। सुनने मे आया, बडी ही स्मार्ट हैं, बिना दो-तीन परीक्षाएँ पास किये इस तरह का चेहरा नही हो सकता। आप तो जनाब मेरे ही जैसे खिलाडी हैं, हालाँकि आपको देखने से ऐसा लगता है कि गोल के पास भी बॉल मिल जाये तो स्कोर नही कर पाइयेगा।"

सुकुमार के सिर का अन्दरूनी हिस्सा टीस रहा। जी हो रहा है कि पचानन कर्मकार से कहे, "अभी मैं बहुत बडी मुसीबत मे हूँ पचानन बाबू। अभी आप इस तरह का हँसी-मजाक न करें, मुझे जरा शान्ति से रहने दें।"

लेकिन पचानन को गुस्सा दिखाना किसी भी दृष्टि से अच्छा नही रहेगा। इस अभागी दुनिया मे पचानन जैसे एक-दो परोपकारी आदमी हैं इसीलिए तो चाँद और सूरज अब भी उगते हैं।

"मेरी मिसेज ने आपकी मिसेज का नाम जानना चाहा है," पचानन ने कहा।

सुकुमार के गले से आवाज निकलना नही चाहती। इस प्रसन्न प्रभात मे ही झूठ बोलना!

"कान्फिडेन्शल है क्या? फिर छोडो।" पचानन सरल मन से मजाक कर रहा था।

'शिउली' नाम का उच्चारण करते ही सुकुमार का कलेजा दहकने लगा। उसने एकाएक कह दिया, "एक दूसरा नाम भी है—शकुन्तला।" कोयले की दूकान के मालिक की लडकी का चेहरा अकारण ही आखो के सामने तैर उठा। बहुत चेष्टा करने के बावजूद उस तसवीर को वह मन से पोछ नही सका।

किसी-किसी भले घर की लडकी के बहुत से नाम हुआ करते हैं। बडी दुलारी होती है न! जान पहचान का हर व्यक्ति एक-एक नाम रख देता है, "पचानन निहायत अरसिक नही था, इसका उसने प्रमाण दे दिया।

"जानते हैं सर, मेरी वाइफ भी बडी लाड-प्यार की पली है। लेकिन अब मायके से कोई खाज-खबर भी नही लेता। मुझसे मुहब्बत करने की वजह से पगली को सबके प्यार-दुलार से वचित होना पडा। आपकी मिसेज को भी शुरु-शुरू मे काफी तकलीफ उठानी होगी, उसके बाद देखियेगा, सब कुछ बरदाश्त करन की आदी हो जायेगी। उस वक्त महसूस होगा, हसबैण्ड के अलावा दुनिया मे कभी कोई न तो था और न ही होगा।"

पचानन ने अब भी रकले का नाम नहीं लिया। बोला, "इसी तरह एक से डेढ साल तक चलता रहेगा। उसके बाद " पचानन एकाएक हँस पडा।

"उसके बाद सिफ पति से ही मन नही भरेगा। तब खैर छोडो, आपको अभी से नर्वस नही करूँगा। मैं अब उसी स्टेज मे आ गया हूँ। मैं इस तीन पैरवाले को हटाकर चार पैर वाली टैक्सी का इन्तजाम करने की कोशिश मे था और मेरी मिसेज समझ ही रहे होगे, जीवित पुतले का हठ ठान बैठी। बडी ही लाडली औरत है न, जो चाहेगी लेकर ही छोडेगी। किसी तरह की आपत्ति पर कान नहीं देगी।" पचानन कितनी सहजता के साथ अधपहचाने सुकुमार को अपनी खबरें सुना गया।

सुकुमार की नाक गरम हो गयी थी। और पचानन अपनी रौ मे कहता

जा रहा था, "संसार का यही नियम है। सर्वदा गाड़ी लेकर ही मैं माथा पच्ची करता रहा। गाडी का सब कुछ आदमी के जैसा ही होता है, सिर्फ बच्चे पैदा होने की बात को छोड़कर।

"क्या बात है सर ? आपकी कोई आवाज सुनायी नही पड़ रही है। इंजन चल रहा है या नही, यह क्याकर समझूगा ? मिसेज ने क्या इसी तरह जबान बन्द करके रहने का हुक्म दिया है ?' पचानन ने फिर मजाक किया।

इस बीच लाल बाजार का चौराहा आ चुका था। पचानन से विदा लेकर सुकुमार वही उतर गया। वहाँ से पैदल चलने से कोयले की दूकान है ही कितनी दूर !

सुकुमार फुटपाथ की भीड़ को ठेलता हुआ, रिक्शेवाले की बगल से बचता हुआ, बस की बगल और नीचे से होता हुआ आगे बढ़ रहा है। इस दु समय म कोयले का काम न मिलता तो क्या होता ! कणा अगर और एक मास पूर्व इस मुसीबत मे फँसी होती तो सुकुमार भी कुछ कर पाता या नही कौन जाने !

भाग्य अच्छा था कि घोष साहब का निजी हेड-आफिस इस समय गडबडा गया। वरना सुकुमार को इस वक्त रास्ते पर मारे-मारे फिरना पड़ता।

•

सुकुमार ने ध्यान नही दिया कि बकुलतल्ला के नजदीक एक स्कूटर उसकी बगल से होता हुआ तेजी से निकल गया। निगाह पड़ती तो पाता कि स्कूटर का युवा-यात्री सोमनाथ बैनर्जी के अतिरिक्त दूसरा कोई व्यक्ति नहीं था।

सोमनाथ के हाथ मे वक्त की कमी है, व्यवसाय के सिलसिले में वह अभी नेताजी सुभाष रोड के एक दफ्तर मे जा रहा था।

सामने के राहगीरो की भीड़ हटाने के लिए सोमनाथ ने एक बार स्कूटर का हॉर्न बजाया। उसके बाद किसी तरह कई किरानियो को बचाता हुआ पश्छिम की तरफ मुड़ गया। थोड़ी देर बाद ही नेताजी सुभाष रोड मिला। दूर राइटस बिल्डिंग की लाल इमारत दीख रही थी। इस स्कूटर ने सोमनाथ को भी गति दी है—व्यवसाय मे गति न हो तो चल नही सकता। तरह तरह की जगहा मे लोगो से मिलना-जुलना पड़ता है, समय की प्रतियोगिता मे पीछे छूट जाने से व्यवसाय म पराजित होना निश्चित है।

नया स्कूटर खरीदने मे सोमनाथ हा सकता था, थोडी देर करता मगर कमला भाभी ने दबाब डाला। जब कि घर-गृहस्थी का पालन नही करना पड़ता है तो ऐसी हालत मे उसी रुपये से नया वाहन खरीदने का भाभी ने परामर्श दिया था। भाभी के कथनानुसार ही उसने काम किया था।

नेताजी सुभाष राड से अप्रत्याशित शुभ संवाद लेकर सोमनाथ अब अपने दफ्तर वापस आया। दफ्तर मे कदम रखते ही पुराने मित्र और इस मुहल्ले के विख्यात हिसाब रक्षक आदक बाबू से मुलाकात हो गई।

"अरे, सोमनाथ बाबू! आपका चेहरा देखने स भी प्रसनता होती है", आदक बाबू अपनी प्रसन्नता दबाकर नही रख सके।

आदक बाबू की बात से सोमनाथ शर्मिन्दगी महसूस कर रहा था, यह देखकर वह बोले, "शर्म की कौन-सी बात है साहब? जो सच है वह कहने म मुझे जरा भी तकलीफ नही होती। एकमात्र सेल्स टैक्स और इनकम टैक्स ऑफिस के अलावा कही भी बन्दा झूठ का सहारा नही लेता।"

आदक बाबू हल्की हँसी हँसे। "बिजनेस-मुहल्ले मे लटका हुआ चेहरा और दतुरित मुसकराहट देखते-देखत आखे थम गई हैं। चेहरा देखते ही लगता है, हरेक के पीछे बारे का बोरा पाप और शरारत छिपी हुई है। यही वजह है कि जब दिल खट्टा हो जाता है तो आपके पास चला आता हूँ।"

बिजनेस मैन आदक बाबू न ही एक दिन सोमनाथ को पहले पहल पैसा कमाने का सुयोग प्रदान किया था। चाहे वह कितना ही साधारण सुयोग क्यों न हो, सोमनाथ उस बात को आज भी नही भूला है, यह बात उसने जता दी।

"आप यह क्या कह रहे हैं! पहले भी कह चुका हूँ और अब भी कह रहा हूँ कि आपको जो भी देखेगा वही मदद करने को तैयार हो जायेगा। आपके इस सरल मुखडे की सर्वत्र जय होगी।" आदक बाबू ने सीधा-सा जवाब दिया।

अब आदक बाबू ने एक सिगरेट सुलगाई। "अपनी मर्जी से बिना किसी की परवाह किये व्यवसाय-वाणिज्य चलाते जाइये। खाता-बही सँभालने के लिए यह आदक बाबू तो है ही।"

सोमनाथ ने हार्दिक कृतज्ञता प्रकट की।

आदक बाबू बोले, "जानते हैं, आपको इतना प्यार क्या करता हूं ? आपने बिजनस वर्ल्ड में एक दृष्टांत स्थापित किया है।"

वह कुछ और भी कहना चाहते थे लेकिन सोमनाथ ने बीच ही में टोक दिया, "आज एक खास खुशखबरी है, आदक बाबू। सोहिनी टेक्सटाइल्स से अपने आप्टिकल ब्राइटनर का एक अच्छा-सा ऑर्डर मिला है।"

"कांग्रेच्यूलेशन, कान्ग्रेच्यूलेशन," आदक बाबू ने अपना हाथ बढ़ा दिया।

सोमनाथ ने कहा, "एक पत्र डाल दिया था, उसके बाद सैम्पल भेज दिया। मुलाकात की और बताया कि महात्मा काटन मिल्स में माल सप्लाई करता हूं। कोई उल्टी-सीधी बात नहीं हुई, सीधे ऑर्डर मिल गया।"

आदक बाबू के चेहरे पर चमक खेल गयी। "वही बात तो कहने जा रहा था। आपका यही पहलू तो किस्से जैसा है। किसी तरह का हेर-फेर किये बगैर एक नौजवान अपनी कोशिश से अपने पैरों पर खड़ा हो रहा है, यह चीज मैं अपनी आंखों से न देखता तो यकीन ही नहीं होता। इस लाइन में इस तरह का कोई दूसरा केस नहीं हुआ है, सोमनाथ बाबू। यकीन कीजिये।"

आदक बाबू की इस प्रसन्नता के भाव ने सोमनाथ को बेचैनी में डाल दिया था। कलेजे के अन्दर कुछ बिंध सा गया था।

सोहनी टेक्सटाइल्स के इस ऑर्डर के बारे में सोमनाथ सोचने की कोशिश कर रहा था। इसके अन्दर किसी तरह की गन्दगी नहीं है अपनी कोशिश और गुण के बल पर ही इस काम को उसने प्राप्त किया था। आदक बाबू जो कुछ कह रहे हैं उसमें भी बिलकुल सच्चाई है, सिर्फ मिस्टर गोयनका के महात्मा कॉटन मिल्स के शुरू के ऑर्डर को छोड़कर।

"क्या हुआ मिस्टर बैनर्जी ? आपने इतना क्या सोचना शुरू कर दिया ?" आदक बाबू ने मीठी झिड़की सुनायी।

सोमनाथ सोच रहा था, अब वह स्वयं को पाक-साफ कर लेगा। गोयनका के उस मासिक आदेश को वह अब छोड़ देगा। फिर वह खासा हल्कापन महसूस करने लगेगा, उसके साथ किसी तरह की गन्दगी का कोई वास्ता नहीं रह जायेगा। हो सकता है कि वह ग्रेट इण्डियन होटल के उस रात के दृश्य को आहिस्ता-आहिस्ता भूल ही जाये।

"जानते हैं आदक बाबू, इस मुहल्ले में आपके सिवा सलाह-परामर्श करने के लिए मेरा कोई अपना आत्मीय नहीं है। महात्मा काटन मिल्स की सप्लाई का यह बिजनस मुझे अच्छा नहीं लगता।"

"क्यों ?" आदक बाबू ने पूछा। "रेट कम दे रहा है ? वक्त पर पेमेंट

नही मिल रहा है ? आपके माल की क्वालिटी म किसी तरह का सदेह पैदा कर रहा है ?"

यह सब बात नही है, मुनकर आदक बाबू चिता मे पड गये। "फिर किस दु ख मे चलते आप ऑर्डर छोडन जा रहे हैं ?"

आदक बाबू ने सिर खुजलाया। "अब समझ गया। पर्चेज ऑफिसर ने कुछ एसी बातें कही हैं कि आप गुस्से म आ गये। एक बात जान लें सोमनाथ बाबू, देह म गुस्सा रहे तो बिजनेस नही हो सकता। आख दिखाकर कोई कभी बिजनस म मुविधा प्राप्त नही कर सका है। राजेन मुखर्जी कहा करत थ, व्यवमायिया का लोहू मछली के लाहू क समान होना चाहिए—हर वक्त ठण्डा।"

सामनाथ का अपनी नाडी टटोलकर एक बार लाहू की जाच करन की इच्छा हुई। उसका लोहू गरम नही हाता है—उसकी नसा म मछली का ही लोहू प्रवाहित हा रहा है। "नही आदक बाबू, मुझे गुस्सा नही हुआ है। मगर व लोग मुझ अच्छे नही लगने—महात्मा काटन मिल्स और मिस्टर सुदशन गोयनका"

"यह तो गुस्से से भी ज्यादा खतरनाक है, सोमनाथ बाबू। इसका नाम है खामखयाली। आपकी वह पहली बडी पार्टी है, आपकी कामयाबी की पहली सीढी, आप उसे एक बात म तलाक कर दीजिएगा ? जानते हैं, शुरुआती ग्राहक को बडे-बडे बिजनस हाउस कितनी इज्जत दते हैं ? जर्मन प्रिंटिंग मशीन की शतवार्षिकी मनायी गयी—उन लोगों ने हमारे बोरिक एण्ड कम्पनी का ऑल्डेस्ट क्लाइन्ट के नाते एक मशीन उपहार स्वरूप भेजी—एक भी पैसे का भुगतान नही करना पडा। और आप सिफ कुछ महीने बिजनेस करत न करते सिफ खामखयाली की वजह से महात्मा कॉटन मिल्स को छोडन की बात सोच रहे हैं।"

काश सामनाथ आदक बाबू का सारी बाते खोलकर कह पाता। "आदक बाबू, आप कैसे समझियगा कि मैं अपन सीने मे हर वक्त कितने दद का बोझा ढोये चल रहा हूँ। कि मैं उस साले गायनका से रिश्ता कायम रखकर लखपति नही होना चाहता। अपना पैतृक मकान है, मरे साथ कोई जिम्मेदारी नही, मुझे गृहस्थी का खच चलाना नही पडता। थाडा-बहुत ही कमा लूगा तो सतुष्ट हो जाऊगा। मेरे लिए गोयनका स सम्पक रखना ठीक नही होगा—वरना मैं गन्दगी से दूर नही रह पाऊँगा।

यह सब बात जबान खोलकर कहे तो हा सकता है कि आदक बाबू सोचे, सोमनाथ का दिमाग खराब हो रहा है। "बगाली बिजनेसमैन लम्बी दौड म

कामयाव नही हो पाता है, उन लोगो का इजन जरा-सी देर ही मे गरम हा जाता है," आदक बाबू ने एक बार खुद ही सामनाथ से कहा था। "और सब उदाहरणा पर गौर कीजिये—मिस्टर अग्रवाल, मिस्टर नोपानी, मिस्टर लाखोटिया, दो-तीन बार दीवाला पीट चुके हैं, मगर उनका इजन गरम नही होता।"

आदक बाबू बोले, "अब चलू। आपस एक बात कहे जाता हूँ, इस सोहिनी टेक्सटाइल्स मे, हो सकता है, आपको अच्छी बचत हो मगर इसके चलते आप महात्मा कॉटन की अवहेलना नही कीजिएगा। याद रखिये, बिजनेस एक चेन रिएक्शन है। महात्मा का बिजनेस आपको न मिलता तो सोहिनी का आडर भी आपके हाथ म नही आता।"

आदक बाबू की आखिरी बाता ने सोमनाथ के सारे विचारो को तितर-बितर कर दिया। *कहाँ सोमनाथ यह सोच रहा था कि गोयनका से व्यावसायिक* सम्ब ध तोडकर वह स्वय को पापमुक्त कर लेगा और कहाँ अब आदक बाबू समझा गये कि व्यवसाय धारावाही चीज है। एक काम से ही दूसरे काम की उत्पत्ति होती है। चेन रिएक्शन—शृङ्खला बद्ध प्रतिक्रिया। हम लोगो क जीवन का प्रत्येक कर्म हमारी इच्छा के विरुद्ध एक से दूसरी अविच्छेद्य शृङ्खला की तरह जुडा हुआ है। यानी, मिस्टर गोयनका, आपसे मेरा व्यावसायिक सम्ब ध भले ही टूट जाये पर ग्रेट इण्डियन होटल की उस नैश विभीषिका की छाया से, काटन मिल्स से सम्पक स्थापित होने के बावजूद, मैं अपन आपको मुक्त नही कर पाऊँगा।

सामनाथ जरा उत्तेजित हो उठा था। एक बहुत बडी जजीर सामन पडी हुई थी। सोमनाथ उसका सिरा देख रहा था—वहाँ सुकुमार की बहिन बँधी हुई थी, उसके बाद उस जजीर का दूसरा सिरा नजर नही आ रहा था। अर्थात् सोहिनी टेक्सटाइल्स, भारत लक्ष्मी काटन, बगबाला मिल्स, इन्दुक्लाथ—सोमनाथ चाहे जहाँ कही भी भागकर जाये, वही मिस्टर सुदशन गायनका और शिउली की अदृश्य छाया रहेगी, लाख कोशिश के बावजूद उसे पाछा नही जा सकता।

सोमनाथ न सोचा था, नया ऑडर पाकर वह मुक्ति की प्रसन्नता का अनुभव करेगा। लेकिन आदक बाबू की बातो ने सब कुछ गड्डमड्ड कर दिया।

अपने का शात करने के खयाल से सोमनाथ कनोडिया कोट के विशु बाबू के पुराने मकान मे चला आया।

इस घर, इस टेलोफोन और इसी कुरसी-मेज के साथ सोमनाथ क जावन मे नये अध्याय की शुरुआत हुइ थी। विशु बाबू का वह वहुत ही कृतज्ञ है। उत्साह देकर, हाथ पकडकर वह यहा न ले आत तो सोमनाथ भी, हो सकता है कि सुकुमार की तरह ही पागल हो जाता। एक दिन इस घर ने जिस प्रकार उस उम्मीद की रोशनी दिखायी थी, उसी प्रकार प्रथम आषाढ के बाद यह घर राता-रात कुत्सित हो गया। इसी टलीफान स मिस्टर गोयनका क साथ होटल के सम्बध म बातचीत हुई थी, यह सोचत ही उस बेचैनी का अहसास हाने लगता था। उसके बाद यथा समय अप्रत्याशित सुयाग आया। इस घर से निकलकर दूसरे घर मे जाने का सुयाग मिलन पर सुकुमार न इत्मीनान की सास ली थी।

आज विशु बाबू के घर म आन पर सामनाथ का बहुत सारी बाते याद आ रही थी। खासकर तपती की बाते। तपती का स्पश उस कुरसी पर अकित था। वह इस घर मे कई बार आ चुकी थी। तपती अयाचित रूप मे ही आयी थी—सामनाथ ने उसे किसी तरह का प्रोत्साहन नहीं दिया था, फिर भी व्यवसाय के जगल को पर ठेलकर तपती कई बार उसके पास आयी था।

आकर्षक, उत्साही तपती का नाक-नक्शा अब भी सोमनाथ की स्मृति से पूरी तरह नहीं धुला है। कौन दिन किस रग की साडी पहन वह सोमनाथ का पकडन इस घर म आयी थी, यह बात सामनाथ डायरी देखे बगर भी बता द सकता ह।

तपती इतनी मधाविनी छाया है, उसका विचार और बुद्धि इतनी परिपक्व है—फिर भी सोमनाथ क मामले म वह ऐसी गलती क्या कर बैठी? तीन साल तक एक साथ पढने के बावजूद, प्रत्येक दिन सोमनाथ को देखने-सुनन क बावजूद, तपता ने कैस सोच लिया था कि सोमनाथ एक दिन बडा आदमी हागा, उसे दुनिया म मायता प्राप्त हागो? प्रम, तुम सचमुच ही अधे हा, इसकी एक सबूत तुम तपती म छोड गये हा।

परीक्षा को सीढी-दर-सोढी तयकर, सफलता के स्वण-शिखर पर आसीन हान के बावजूद तपती न किस अध-निष्ठा क साथ पासकोस के मामूली ग्रेजुएट बेरोजगार सोमनाथ की आर अपना उत्फुल्ल हाथ बढा दिया था! मानो, उसने मान लिया हो कि सामनाथ किसी दिन सफल हाकर ही रहगा। उन क्षणा का, कनाडिया कोट से उस मैन-ऑफ वार जेटी तक क उस एकात सानिध्य को,

कभी भूला नही जा सकता। सोमनाथ ने देखा है, तपता की बडी-बडी आंखा म कितनी गहरी आस्था है ! तपती ने सोमनाथ का बहुत बडा जा मान लिया था।

उसी तपती ने जिस दिन अपन घर क लोगा के दबाव के कारण सोमनाथ से मैरेज रजिस्ट्री आफिस चलने कहा था और बेक़ार-व्यर्थ सामनाथ ने अपना असमर्थता प्रकट करत हुए उससे समय की मांग की थी—सामनाथ उस दिन को भी अपनी आंखा के सामन देख रहा था।

प्रथम आषाढ़ की रात मे सब कुछ अचानक गड्डमड्ड हो गया। सफलता और अध पतन की ग्लानि न एक ही साथ सोमनाथ क शान्त जीवन मे सकट उत्पन्न कर दिया था।

व्यवसाय की खुशखबरी सुनकर तपती दौडा-दौडी आयी थी। कहा था, "अपना हाथ आगे बढाओ, तुमसे हैण्डशेक कर लू।"

लेकिन सोमनाथ तैयार नही हुआ था। इस गन्दे हाथ के स्पश से, चाहे जो हो, तपती जैसी पवित्र लडकी को कलुषित नहीं किया जा सकता।

सोमनाथ की हालत देखकर तपती गहरी चिन्ता मे डूब गयी थी। "ए सोम, तुम्हे हो क्या गया है ?"

"मैं बिजनेसमैन हो गया हूँ, तपती। मरे लिए अब कोई रास्ता नही है। अब मुझे बहुत देर करनी होगी, बहुत रिस्क लना होगा, तपती।"

"कनाडा से मुझे स्कॉलरशिप का एक सुयोग मिला है, सोम।"

"तब ता तुम कुछ दिना के लिए कनाडा ही घूम-फिर आओ तपती। अभी मुझे बहुत-सी उलझना को दूर करना है, बहुत बडा रास्ता तय करना है। तपती ! सचमुच इन झमेला को सुलझाये बगैर रास्ता नही।"

तपता ने कतई इस तरह के उत्तर की उम्मीद नही की थी। एक दिन सोमनाथ ने तपती को लिखा था, "हम दोनो बहुत बडा रास्ता तय करेंगे।" अनेकानेक नदी, मरु, और अरण्य दोना जनो का मिलकर एक साथ तय करने का तपती का जा सपना था, सोमनाथ न उसे कहाँ किस ओर ठेल दिया ?

कनाडा जाने के एक दिन पहले तपती विदा लेने आयी थी। "तुम मुझे जाने को कह रहे हो साम, इसीलिए जा रही हूँ।"

सोमनाथ चाहता था, तपती उसके चेहरे की ओर न देखे। तपती बडी बुद्धिमती है, कही समझ न जाये कि सोमनाथ कितने नीचे उतर आया है, सोमनाथ अभी क्या है !

"जाओ, तपती। तुम्हे अकेले ही बहुत दूर जाना है।"

"हैलो ब्रदर, सोमनाथ ! कब आये ?" विशुबाबू की आवाज सुनकर सोमनाथ वर्तमान में लौट आया।

"आज एक खासा अच्छा ऑर्डर मिला है, विशुदा। इसीलिए आपको यह खबर देने आ गया।"

"वेरी गुड न्यूज। लो, एक बीड़ा पान खाओ।" यह कहकर विशुदा ने पान का डिब्बा आगे बढ़ा दिया।

उसके बाद बोले, 'तुम सच्चाई के रास्ते पर चलकर जिन्दगी में सफल हुए हो, इससे मैं बेहद खुश हूँ सोमनाथ। बंगाली यूथ के लिए तुम एक एक्जाम्पल हो।'

"बाइ-दि-वाइ !" विशुदा को अब एकाएक याद आया।

"तुम्हारे उसी फ्रेण्ड से उस दिन मुलाकात हो गयी। क्या तो नाम है उसका ?" विशुदा सिर खुजलाने लगे।

"मिस्टर नटवर मित्तिर ?'

"धत्त। नटवर मित्तिर कब किसका फ्रेण्ड होने लगा ? वैसे लोगों के मा-बाप, भाई-बहिन, दोस्त नहीं हुआ करते। उन लोगों की तो सिर्फ 'पार्टी' हुआ करती है।"

"फिर आप किसकी बात कर रहे हैं, विशुदा ?"

"अरे वही जो खेल के मैदान में तुम्हारे साथ आया करता था। तुम्हारा वह सह-बेरोजगार। हाँ-हाँ, नाम याद आ गया, सुकुमार।"

सुकुमार ! यह नाम सुनते ही सोमनाथ के मेरुदण्ड में बेचैनी की एक लहर सी प्रवाहित होने लगी।

"सुकुमार ! नौकरी की खोज करते-करते उस बेचारे का तो दिमाग ही खराब हो गया है।'

विशुदा बोले, "नहीं, खुशखबरी है। बेचारा अस्पताल से बाहर आ गया है—अब पूरे तौर पर स्वस्थ होकर मैदान में उतरने को रेडी है। सिर्फ एक जर्सी की ही कमी है।"

विशुदा ने सूचना दी कि सुकुमार से उनकी काफी बातचीत हुई है। विशुदा ने उसे नये उद्योग-धन्धों की लड़ाई के मैदान में उतरने का परामर्श दिया है। सोमनाथ ने जानना चाहा, "मेरे बारे में कुछ पूछताछ की थी ?"

सुकुमार ने सोमनाथ की एक बार भी चर्चा नहीं की थी, यह सुनकर उसके मेरुदण्ड की बेचैनी बढ़ने लगी थी।

सोमनाथ थोडी देर बाद ही विशुदा के दफ्तर से बाहर निकल आया । उसके मन म केवल एक प्रश्न था स्वस्थ हो जाने के बावजूद सुकुमार ने सोमनाथ के बारे मे कुछ भी क्यो नही पूछा ?

•

कोयले की दुकान मे बैठकर सुकुमार अभी सोच रहा था। उसकी चिता अभी कोयले की दुकान के मालिक से सबधित थी। भले आदमी और कितने दिना तक बीमार रहेगे ?

कोयले की दुकान मे ज्यादातर चुपचाप बैठे रहने के सिवा करने का और कुछ नही रहता। मगल सिंह तब दन्त-मजन की पुडिया बनाता है और मर्सिडिज सिंह गहरी नीद लेता है ।

उसका सोना देखकर सुकुमार अवाक हो जाता है। क्याकि बहुत कोशिश करने के बाद भी उसकी अपनी आखो मे जरा भी नही नीद आती थी ।

मगल सिंह का कहना है, "उसका हर काम ही खास तरह का है। टाटा मर्सिडिज लॉरी म उसकी पैदाइश हुई है। इसीलिए नाम है कि मर्सिडिज सिंह उसके पास नीद का स्पेशल स्विच है। नजदीक जाकर कोयला माँगते ही वह पाच सेकेण्ड के दरमियान चट से उठकर खडा हो जाता है और कोयले का वजन करने लगता है। उसके बाद कोयले के बोरे की डेलेवरी देने चला जाता है। किराया लेकर वापस आते ही पाँच मिनट के अन्दर ही वह फिर खर्राटे लेने लगता है।"

"इतनी नीद क्यो आती है !" सुकुमार को साचन पर कुछ समझ म नही आता ।

मगल सिंह कहता है, "नीद की गलती ही क्या है हुजूर ? मर्सिडिज सिंह रात म सोता नही है—पैसा लेकर इस मुहल्ले की पद्रह दुकाना की रखवाली करता है और हर आदमी से महीन मे पाँच रुपया वसूल करता है।'

सुकुमार ने गौर किया है कि कलकत्ते मे बहुतेरे आदमी दो नबर का धधा करते हैं। एक काम करते ही आदमी हाथ समेट कर बैठे नही रहते, कुछ दूसरा भी काम करके अधिक आय-प्राप्त करने की कोशिशें करते हैं।

मगल सिंह कहता है, "इसके अलावा उपाय ही क्या है हुजूर ? खच क्या आप एक ही जगह करते हैं ? कितनी ही जगहा म खर्च करना पडता है।"

इसके बाद उसने जो कुछ कहा, उसका मतलब था, नौकरी कोई आपकी बीवी नहीं कि एक से अधिक को आप रख नहीं सकते ।

बात बड़े मजे की है । साधारण आदमी भी कभी-कभी ऐसी बातें कह बैठता है जो नाटक-उपन्यासों में भी नहीं मिलतीं ।

सुकुमार अभी बैठे-बैठे कोयले की दुकान के मालिक के बारे में सोच रहा था । न जाने, भले आदमी की सेहत अब कैसी है ।

सुकुमार उस संबंध में अधिक कौतूहल भी नहीं दिखाता । सच कहने में हर्ज ही क्या, उसे पकड़ में आ जाने का भय बना रहता है । चाहे वह अपने मन को लाख फटकारे मगर सुकुमार के अन्दर जैसे कोई प्रार्थना करता रहता है हे देवता, यह काम कहीं अचानक छूट न जाय ।

सुकुमार ने एकान्त में स्वयं को फटकारा है । "इसका मतलब क्या निकलता है ? सुकुमार मित्तिर, तुम चाहे कितनी ही बेवकूफ बनने का अभिनय क्यों न करो, इसका मतलब यही निकलता है कि घोष साहब जल्दी अच्छे न हों—वह मानसिक चिकित्सालय से निकलकर इस कोयले के व्यवसाय में झट आये वरना ऐसी हालत में सुकुमार मित्तिर तो घोर विपत्ति में फँस जायगा ।'

"आज माँ नहीं आ सकीं । मुझे ही भेजा है ।" सुकुमार को शकुन्तला की आवाज सुनायी पड़ी ।

"आइये । बाबूजी कैसे हैं ?" सुकुमार अपराधी की तरह पूछता है । सुकुमार को भय हो रहा था कि कहीं शकुन्तला इस बात को जान न जाय कि थोड़ी ही देर पहले वह बाबू जी के बारे में क्या सोच रहा था ।

शकुन्तला का चेहरा शरतऋतु की भोर की तरह चमक रहा था । बाबूजी की बीमारी के बारे में वह अवश्य ही चिन्तित थी लेकिन निराश नहीं थी । डाक्टर ने अब तक कुछ नहीं बताया, सुकुमार बाबू ।"

"आप कैसे हैं ?" शकुन्तला सवाल करती है । यह मात्र औपचारिकता नहीं थी, शकुन्तला सचमुच ही जानना चाहती है कि सुकुमार कैसा है ।

सुकुमार चकित था, "हम लोगों का अच्छा रहना और न रहना एक सा है ।"

"हम लोगों के यहाँ रहना आपको शायद अच्छा नहीं लग रहा है । माँ कह रही थी, एक नाबालिग अबला की जायदाद और व्यवसाय-वाणिज्य की

देख-रख करना बहुत झंझट का काम है। बहुतेरे आदमी इसकी जिम्मेदारी लेना पसन्द नही करते।'

"यह बिलकुल वाहियात बात है शकुन्तला। मुझे जो यह काम मिल गया है, यह मेरे लिए कितने भाग्य की बात है।"

शकुन्तला की हँसी मे एक निष्पाप किशोरी अब भी झाँक रही थी।

अपने बारे मे अधिक कहना ठीक नही होता इसीलिए सुकुमार ने कहा, "आप ही अपना हाल-चाल बताइये। मेरी तीव्र इच्छा है कि कुछ ही महीनो के दरमियान इस व्यवसाय को बढा-चढाकर आपकी माँ को हैरत मे डाल दूँ।"

शकुन्तला हँस पडी। उसके दाँत कितने सफेद और चमकीले थे! शकुन्तला की देह का रग हल्का साँवला होने के कारण उसकी सुन्दरता मे जैसे वृद्धि हो गयी थी। वह हँसती तो लगता जैसे अन्दर बिजली की रोशनी जल उठी हो।

शकुन्तला बोली, "मैं बिलकुल ठीक हूँ सुकुमार बाबू माँ का मन कलकल से खराब है और वह चुपचाप पडी हैं।"

शकुन्तला ने इसके कारण पर किसी भी हालत मे प्रकाश नही डाला। सकोचवश सुकुमार ने भी अधिक दबाव नही डाला।

उसी दिन शकुन्तला के घर पर माँ के पास जाने पर सुकुमार को इस बात की जानकारी प्राप्त हुई थी। कुछ दिनो से शकुन्तला की शादी की बातचीत चल रही थी। बातचीत का सिलसिला बहुत आगे बढ चुका था, लेकिन कल एकाएक शादी का रिश्ता टूट जाने की खबर मिली थी।

माँ बोली, "उसके पिता जी की इस बीमारी के अलावा हमारा कोई ऐसा अपराध नही है।"

सुकुमार ने गौर किया, शकुन्तला उसके लिए चाय और नाश्ता ले आयी थी। उसके चेहरे पर कही भी निराशा की घटा नही छायी था।

इस घोष परिवार के प्रति सुकुमार की ममता आहिस्ता-आहिस्ता बढती जा रही थी। इन लोगो के लिए बहुत कुछ करने की इच्छा सुकुमार के मन मे तडप रही थी। लेकिन सुकुमार को अपनी जिम्मेदारी का कोई ओर-छोर नजर नही आ रहा था।

•

"कणा, कणा!" सुकुमार इसी नाम को बार-बार बुदबुदा रहा था।

कणा के बारे मे सोचते ही सुकुमार का दिमाग गडबडान लगता है ।

सुकुमार का कणा के सबध म सब कुछ भूलकर काम म मशगूल हो जान की इच्छा थी । किन्तु शकु तला की मा ने सब कुछ गडबड कर दिया । अचानक पूछ बैठी, "अभी कहाँ रह रहे हो ?"

"हावडा ।"

शकुन्तला की मा बाली, "मैंन सुना था, साउथ कलकत्ते मे कही रहते हो ।"

सुकुमार हँसने लगा । "साउथ कैलक्टा की दौड बालीगज या ज्यादा स ज्यादा जोधपुर पार्क तक है । उसके बाद साउथ कैलक्टा नही है—सिफ कालोनी । यादवपुर मे मेरे सगे-संबधी "

"घर पर कौन-कौन है ?"

एक मामूली सा सवाल, मगर सुकुमार के सामने जैसे टाइम बम फेक दिया गया हो, जो मानो सुकुमार के उत्तर देते ही फट जायेगा । सुकुमार क्या उत्तर दे, उसकी समझ म नही आ रहा था ।

शकु तला निकट ही खडी थी । उसने सुकुमार की दुविधा का दूसरा ही अथ लगा लिया । अभिमान के साथ उसने माँ को सयत करने की कोशिश की । "व्यक्तिगत मामले म सवाल क्यो कर रही हो माँ ? सभी सवाला का वह तुम्हे उत्तर क्यो दने जायेंगे ?"

"नही नही, मैंने किसी दूसरे मकसद से नही पूछा था । औरता का स्वभाव ही ऐसा होता है—हमशा घर के बार म पूछताछ करना ।"

सुकुमार को उत्तर नही देना पडा । इसके बाद शकुन्तला और उसकी मा दुकान स चली गयी थीं ।

वे और कुछ देर तक रहती तो सुकुमार, क्या उत्तर देता ? रोजी रोटी देन वाली के सामने झूठ बोलना अक्षम्य अपराध है । लेकिन सुकुमार जबान खोल-कर कैस कहेगा, "मेरे पिता, माँ, भाई-बहिन सभी हैं । वे लाग यादवपुर मे रहत हैं । और मैं घर से भागकर, बहिन का अपने साथ लिए, पति-पत्नी की हैसियत से हावडा मे रह रहा हूँ ।"

दुनियावाले क्या इस उत्तर से सन्तुष्ट हागे ?

हावडा के घर मे चुपचाप बैठी हुई कणा की तसवीर एक ता या ही सुकु-मार की आँखो के सामन तैर रही था । चेहरा कितना उदास था, एक तिपाई पर कणा किस तरह बैठी थी ! उसकी अनभ्यस्त माँग म चटख लाल सिन्दूर दमक रहा था ।

बेचारी कणा ! आक्रोश म न आकर, सुकुमार कणा के दुख को महसूस करने की कोशिश कर रहा है। कणा सिर्फ अपना घर छोड़कर नहीं आयी है, साथ-ही-साथ अपने नाम को भी उसने तिलांजलि दे दी है। कहीं गलती न हो जाये, इसलिए एकांत मे सुकुमार को बार-बार दुहराना पड़ा है—शिउली, शिउली। लेकिन मन को किसी तरह सन्ताप नहीं मिल रहा है। कहाँ कणा और कहाँ शिउली !

जो कणा दफ्तर के लिए निकलने के पहले एक घण्टे तक साज-सिंगार करती थी, वही कणा इस अज्ञात वास मे कैसी हो गयी थी—देह म जरा भी पाउडर नहीं लगाती। पहले दिन चेहरा तेल से चमक रहा था, लेकिन धीरे-धीरे वह भी बुझ गया था।

कणा का प्रसाधनहीन चेहरा अब सुकुमार के मन की आँखो के सामने रफ्ता-रफ्ता विवर्ण और पाण्डुर होने लगा।

सुकुमार राजपथ पर चला आया था। लेकिन हृदय म अंकित कणा की इस तस्वीर न उसे बेचैन बना रखा था।

"कणा ! तू इस तरह मत रहा कर। तेरे चेहरे का रक्त कहाँ गायब होता जा रहा है ? मैंने तुझे जो वचन दिया था उसका अक्षरश पालन करता आ रहा हूँ।" सुकुमार सड़क पर खड़ा होकर मन ही मन कणा से बातचीत करने लगता था।

"कणा, नींद की बेहोशी म तू दु स्वप्न के नाटक का अभिनय कर रही है। तू इतनी तकलीफ उठाकर मानसिक चिकित्सालय से स्वस्थ हालत म मुझे वापस ले आयी। कहाँ तो कुछ महीनों तक तुझे मेरे बारे मे सोचना चाहिए था, उसकी जगह आधी रात मे जगने पर मैंने देखा, तू मौत के नशे मे चूर थी। मैं तुझे मृत्यु के हाथ से छीनकर ले आया हूँ। तू मेरी लाडली बहिन है, तुझे मैं कितना प्यार करता हूँ ! तुझे मैं मरने नहीं दूँगा, कणा।

"कणा तूने कहा 'जिन्दा रहने के बजाय मरना ही अच्छा है, भैया।' बिलकुल वाहियात बात ! ऐसा भी कहीं होता है ? जिन्दा रहने की तुलना म मरना कभी अच्छा नहीं हो सकता।

"कणा, तू सभवत मौत के मुँह से छिटककर आयी और अपना चेहरा छिपाने म व्यस्त हो गयी। तूने कहा भैया मुझे लेकर जल्दी भाग चलो। मैं रहूँगी तो माँ-बाप के चेहरे पर कालिख लग जायेगी।

"दरिद्र गृहस्थ के मुह मे क्या हर रोज स देश-रसगुल्ला गिरता है ? कालिख कितनी तकलीफ देगी ? अगर तूने मेरी बात नहीं मानी। कहा वक्त जल्दी-

जल्दी गुजरता जा रहा है, मुझे तुर त चल दना है वरना छोटी बहिन का सर्व-नाश हो जायेगा।

"मैं यथासाध्य काशिश कर तुझे हटाकर ले आया। ऐसी जगह म ले आया हूँ, जहा यादवपुर के मित्तिरा की जान-पहचान का कोई भी नहो है। ईश्वर ने यह एक बहुत बडा उपकार किया है। दशरथ मित्तिर को दजनो सगे-सबधी नही दिये है। वरना कितनी वडी मुसीबत का सामना करना पडता।

"कणा, तरा चेहरा एकदम बुझता जा रहा है। हर आदमी के दिल म बिजली का जो लैंप जलता है, वही तेरे दिल मे आहिस्ता-आहिस्ता बुझता जा रहा है।

"कणा, यह सब क्या हा रहा है? तुझे अभी किस बात की चि ता है? तरी माग मे सि दूर की छाप अकित है, अभी तेरे मुह पर कोई कलक की कालिख नही लगा सकता।

"कणा, तू सचमुच ही बच्ची है। इतनी यातना के बीच भी तू भैया के बारे म सोचती है। तूने आज कहा तुम्हे कितनी मुसीबत म डाल दिया। भैया, मुझे जि दा रखने की तुमने व्यर्थ ही चेष्टा की।

"तरी बात सुनकर मुझे हँसी आ गयी। जैसे जीवन का भी कोई 'कास्ट बेनिफिट रेशिओ' हो कि एक विशेष पाइट आने पर जिन्दा रहन से काई लाभ नही रहगा।"

सडक पर खडे होकर सुकुमार न अपना सिर पाछ लिया। अब कहा जाये। कणा के बारे मे वह क्या करे?

सुकुमार घबराना नही चाहता। अभी घबराने की कौन-सी बात है? विपत्ति की पराकाष्ठा के समय बेचैन न होकर सोच-विचार कर अगला कदम रखना चाहिए। सुकुमार ने कणा को यही संकेत दिया था। लेकिन वह तो क्रमश बेहद अधीर ही होती चली गयी थी।

सुकुमार असहायता का अनुभव कर रहा था। उम्र बढते ही परीक्षा और नौकरी की चि ता मे ही समय बीत गया। मानव-देह और उसकी सृष्टि के जटिल रहस्य के सम्ब ध मे विस्तार के साथ ज्ञान-सग्रह करन का सुयोग और समय ही उसे नही मिला। इन मामलो को भय से अनदेखा कर ही वह चलता रहा। लेकिन घटनाक्रम के कारण उसे किस अजीब परिस्थितियो मे पडना पडा है! राम जान यह नाव किस घाट लगेगी।

देह ! कणा की देह इन्ही कुछ दिनो के दरमियान मानो सूख गयी थी लेकिन इस देह के रहस्य के सबध म सुकुमार को कोई ज्ञान ही नही था। कणा की भी निश्चय ही यही स्थिति थी। वरना इस तरह की परिस्थिति पैदा ही क्यो होती ? कणा, तू भले ही सर्वज्ञ का तरह ताकती है लेकिन सुकुमार मित्तिर को पता है कि तू कुछ भी नही जानती।

सुकुमार कहाँ से शुरुआत करे ? कहाँ जाये ? अनभिज्ञ सुकुमार को इन बातो की सूचना प्राप्त करने मे वक्त लग रहा था। मगर बेसमझ कणा उसे वक्त नही देना चाहती। उससे और देरी बरदाश्त नही हो रही।

सुकुमार को खोजने पर भी कोई रास्ता नही मिल रहा था। कब तक इस तरह वह सडक पर खडा रहे ? सुकुमार हावडा की बस पर सवार हो गया।

•

कल भी कणा रो रही थी। वह जबान खोलकर भैया से कोई सवाल नही कर पाती। केवल भैया के चेहरे की ओर अस्वाभाविक दृष्टि से ताकती रहती है।

जब तक घर का दरवाजा खुला रहता है, तब तक इसी तरह की हालत रहती है। इस घर की मालकिन बडी ही स्नेहमयी है। कणा से गपशप करने आयी था। सुकुमार के लिए दरवाजा खोलती हुई बोली, "आओ बेटा ! इतनी देर क्या हो गई ? बहू चिन्ता के मारे परेशान है।'

"काम था, मासी जी।" सुकुमार उत्तर देता है।

"काम भी करना है और बहू का भी सँभालना है। इसका नाम ही कलि-युग है।" बूढी मासी जी अपने मजाक से खुद ही प्रसन्न हो उठती हैं।

सुकुमार ज्यो ही चलना शुरू करता है, मासी जी पुकारने लगती हैं, "ए शिउली, तुम्हारा पति आ गया। गरम पानी की जरूरत हो तो कहना, मेरे चूल्हे मे अभी तक आँच है। जाते ही भेज दूँगी।"

मासी जी अड्डा जमाकर बैठ गयी। बोली, "पहले समझ नही सकी थी। अब देख रही हूँ, तुम्ही लोगो का जमाना अच्छा है, बेटा—पति-पत्नी के बीच सखी-सखा का भाव है। हम लोगो के जमाने म पति देवता होते थे। शिउली की ही बात लो, नाम लेकर कह रही है, सुकुमार अभी तक क्यो नही आया, तो सुनने म बुरा नहीं बल्कि मीठा ही लगता है। तब हाँ बेटा, बाहर के आदमी के सामने एक दूसरे को तू कहकर मत पुकारना। आजकल एक ही साथ कॉलेज

मे पढे बहुत से पति-पत्नी एक-दूसरे को तू कहकर पुकारते हैं। इससे अमगल हाता है।"

कणा बाहरी आदमी के सामने बहुत अच्छा अभिनय करती है। मासी जी कहती हैं, "हम लोगा के वक्त भी तू कहन का रिवाज न था, ऐसी बात नही, हाँ, इसका प्रचलन छोटे तबके के लोगा के बीच ही था।"

खाना-पीना खत्म होने के बाद एक दूसरी ही परिस्थिति खडी हो गयी। एक ही सेट है, एक ही दशक की श्रेणी, एक ही दृश्य—लेकिन पान्ना ने एक ही क्षण के दौरान दूसरी भूमिका स्वीकार कर ली।

कणा फटी-फटी आँखो से सुकुमार की ओर ताक रही थी। जब तक रोशनी जलती रहती है, वह कुछ भी नही बोलती।

रोशनी बुझने के बाद कमरे के कोने से सुकुमार महसूस करता है कि उसकी बहिन रुलाई का वेग रोकने की कोशिश कर रही है। रुलाई अन्तत थम जाती है लेकिन कणा कुछ बोलती नही। कुछ और वक्त जब गुजर जाता है, गहरे अँधेरे को चीरकर एक आवाज ऊपर उठकर नरम पशमीने के गोले की तरह सुकुमार के कान के पास पछाड खाने लगती है—"भैया।"

भैया! भैया!—भैया होने की जिम्मेदारी इस तरह की भी होती है, यह बात दुनिया मे किसे मालूम थी?

नारी-शरीर की संभावना और संकट के बारे मे सारी बाते सुकुमार को मालूम रहती ता इस वक्त कितनी सहूलियत होती?

कणा जबान से कुछ नही कहती है। वह पूरी तरह भैया पर ही निभर है सबेरे के समय कितनी शान्त लग रही थी।

सुकुमार अब क्या करे, उसकी समझ मे कुछ नही आता।

मन की इस दुश्चिन्ता को दबाकर सुकुमार दिन-भर जानवर की तरह खटता रहा है। एसप्लेनेड मुहल्ले की सारी दूकानो मे जब तक वह कोयले की बिक्री नही कर लेता तब तक उसके मन मे शान्ति नही आती। अनजाने लोगो से कह-सुन कर माल बेचने के नशे मे जितनी देर तक चूर रह सके, उतना ही अच्छा।

कोयले की दुनिया से बाहर निकलत ही मन जैसे उदास हो जाता है।

पा-पा-पा ! परिचित हार्न की आवाज सुनकर सुकुमार की चेतना वापस आयी ।

"अरे, आप हैं सर, गुड आफ्टर नून !" पचानन कमकार ने सुकुमार को गाड़ी के अन्दर बिठा लिया ।

"लीजिए, "पचानन ने एक बढ़िया किस्म की सिगरेट बढ़ा दी । पीजिए सर, मेरे जले मुँह में भी आग दीजिये । आज बढ़िया बिजनस हुआ है ।"

पचानन की गाड़ी लाल सिग्नल के सामने खड़ी हो गयी । "इन साले सिग-नलों को जंजीर के साथ उखाड़ दिया जाता तो कलकत्ता सोने का शहर हो जाता ।" पचानन ने दाँत पीसते हुए कहा ।

हरी बत्ती जलने के पहले ही पचानन का टेम्पो गतिमान हो उठा । "सवेरे एक आदमी का मुँह देखकर मन ही मन प्रतिज्ञा की थी कि आज दूना पैसा कमाऊँगा । सो सर, झूठ क्यों कहूँ, मेरी मिसेज इतनी भाग्यशालिनी है कि तीसरे पहर, पाँच बजने के पहले ही, प्रतिज्ञा पूरी हो गई ।"

पचानन ने कहा, "सवेरे सुहागरात की दावत थी । पलंग पहुँचाने पर सिर्फ किराया ही नहीं दिया, एक हाँडी मिठाई भी दी । मिसेज के लिए ले जाऊँ, इसका उपाय नहीं । भले घर की लड़की है न, भेंट का हुई मिठाई वगैरह मुँह में नहीं डालती, प्रेस्टिज में धक्का जो लगता है । आखिरकार खुद ही खा लिया। समय बहुत ही अच्छा चल रहा है, यह बात टालीगंज के बांगुर अस्पताल के सामने आने पर समझ में आयी । तुरन्त मरे आदमी की लाश बेलघरिया ले जानी थी । साठ रुपये की माँग कर बैठा, आखिर में पचास पर बात तय हुई । ट्रैफिक का पाँच रुपया पार्टी ने ही दिया ।

"वापसी के वक्त डनलप ब्रिज पर ईश्वर की मेहरबानी के कंडक्टर और पैसेंजर में जोरों की हाथापाई हो गई । बस ने स्ट्राइक कर दिया । दस आदमी को बिठाकर स्यालदह पहुँचा आया । वहाँ से दो खेप मुसम्मी का ट्रैफिक लिया । एक अदद मुसम्मी खाइएगा ? कुछेक मुसम्मियाँ रख ली हैं । बड़ा ही मीठी हैं ।"

सड़क के किनारे एक आदमी ने टेम्पो को हाथ दिखाया । "जाना नहीं है", गरदन बढ़ाकर पचानन ने सूचित किया ।

"मजाक कर रहे हो ? किराये की गाड़ी नहीं जायेगी, इसका मतलब ?" आदमी गुस्से में आ गया ।

पचानन ने परवाह ही नहीं की । गुस्से में आकर बोला, "किराये की गाड़ी

क्या किराये की वेश्या है ? हाथ दिखाते ही किराये पर खटना होगा ? हम लोगो को क्या घर गृहस्थी नहीं है ?

पचानन ने सुकुमार से कहा, "आप घबराइये नही सर, आज जल्द ही घर लौटूगा।"

पचानन ने एक दवा की दूकान के सामने टेम्पो खडा किया। एक मिनट मे आया, यह कहकर पॉकेट से प्रेसक्रिप्शन निकालते हुए वह एक दूकान की ओर भागा-भागा चला गया।

सुकुमार ने गौर किया, पचानन की सीट के पास अखबार मढ़ी एक पुस्तक रखी हुई थी।

दवा का पैकेट हाथ में लेकर आते ही पचानन मस्ती मे आ गया। "तो आपकी निगाह पड ही गई ! 'सचित्र दाम्पत्य विज्ञान' है। इसमे शर्म की कौन सी बात है ? घर ले जाइये और मन लगाकर पढ़िये। मिसेज के साथ डिस्कशन कीजिये।"

पचानन ने गाडी स्टार्ट की। उसके बाद बोला, "शादी के बाद ही खरीद लिया था, सर। हजारो तरह के झमेलो की वजह से इतने दिनो तक पढ नही सका था, बीबी की पिटारी मे पडी थी। आज सबेरे बात ध्यान मे आयी, साथ लेता आया। चिडियाखाने के सामने दो घटे तक 'वेट' करना पडा तो इसे पढ लिया।"

पचानन ने कहा, "एक खुशखबरी की बात है। आपसे नही छिपाऊँगा।"

"इसके अलावा छिपाने की बात है ही क्या ?' पचानन ने रास्ता पार किया।

सुकुमार को अब भी बात साफ-साफ समझ मे नही आ रही थी।

पचानन ने कहा, "कल सवेरे गाडी मे बैठने के समय आपने भरसक गौर किया होगा। पैर के पास कागज मे मुडी हुई एक बोतल थी, आपको छूने से मना किया था। उसमे डॉक्टरी जाच के लिये यूरिन था, शर्म की वजह से आपको बताया नही था। आजकल की डाक्टरी जाँच कितनी आश्चर्यजनक है ! मिसेज को फाइनल खुशखबरी की सूचना आज बता दी है।

"कई महीनो तक खूब सावधानी से रहना होगा, उसके बाद ही सुख हासिल होगा, "पचानन ने खुशखबरी के अनुसार स्वय को तैयार कर लिया था।

"दवा-दारू मे खर्च करना होगा। अच्छा भोजन और अच्छी-अच्छी दवा देनी है। अभी वही चीज खरीदी है जिसके बारे म डाक्टर ने कहा था। देखिये, शीशी कितनी खूबसूरत है।"

सुकुमार यह सब देखना नही चाहता । लेकिन उत्साही पचानन ने पैकेट एक ही हाथ से खोल डाला । मेरे दिमाग मे बात आ ही नही रही थी, दूकानदार न बताता ता किसी भी हालत मे दिमाग में नहीं आती । अब इस दवा की शीशी से हर रोज टिकिया लेनी है । उसके बाद जब टैबलेट खत्म हो जायेगा तो शीशी बेबी फिडिंग बाटल हो जायेगी । बेबी का शुभागमन होगा तो बोतल खरीदन की जरूरत नही पडेगी ।

"कपनी का दिमाग तेज है ।" मित्र को शीशी बगैर दिखाय पचानन रह नही सका ।

सुकुमार संध्या बाजार के मोड पर उतर पडा । पचानन ने चिल्ला कर कहा, "और किताब ? इसे लेते जाइये न ।"

इच्छा नही थी । लेकिन पचानन ने सुकुमार के हाथ मे जबरन ही पुस्तक थमा दी । सुकुमार का जिस्म अब शिथिल पडता जा रहा था ।

सुकुमार चहल-कदमी कर रहा था । आज उसे वतन का पैसा मिला था । एकाएक उसे याद आया, बहुत दिन पहले सुकुमार ने तय किया था कि पहले महीन की तनख्वाह मिलते ही वह कणा के लिए एक साडी खरीदेगा । लेकिन अभी पैसे की सख्त जरूरत है ।

सुकुमार ने देखा, वसु फार्मेसी की नियोन बत्तियां अब भी झलमला रही थी हालांकि काउन्टर पर कोई ग्राहक नही था ।

•

"हे देवता, सुकुमार मित्र अब बरदाश्त नही कर पा रहा है । सारा मामला धीरे-धीरे उलझता जा रहा है ।'

पिछली रात सुकुमार के घर लौटने पर कणा न फिर अपने भैया का आर चुपचाप निहारा था । आत्महत्या के फासी के फन्दे से लौटने के बाद से कणा बहुत ही कम बोला करती थी—कहा जा सकता है कि जबान ही नही खोलती । लेकिन इससे सुकुमार का अधिक असुविधा का सामना नही करना पडता था । कणा का चेहरा देखने ही सुकुमार समझ जाता है कि वह क्या जानना चाहती है ।

आज भी कणा ने निश्चय ही किसी खबर की उम्मीद म भैया की आर

बडी बडी आखो से ताका था। लेकिन सुकुमार के द्वारा खरीदे गये पैकेट को खोलते ही वह उदास हो गयी।

"कणा, मैं यह दवा ले आया हूँ। इस समय पियेगी तो तेरी सेहत अच्छी रहेगी। विटामिन, आइरन, केलसियम वगैरह इसमे दिया गया है।"

दवा की शीशी की खास आकृति न थी, सभवत कणा का ध्यान अपनी ओर खीचा। सुकुमार खुद भी समझ रहा था कि यह बेबी फिडिंग बाटल है।

"भैया!" कणा ने मात्र इसी एक शब्द का उच्चारण किया।

सुकुमार के मन म नि शब्द टेप रकाडर चालू हो गया। "कणा, मैं तेरे मन की बात समझ रहा हूँ। तू कह रही है, भैया, तेरे अन्दर घबराहट का कोई लक्षण नही दख रहा हूँ। इसके विपरीत तुम अनागत शिशु का स्वास्थ्य सुधारने की दवा ले आये हो?'

सुकुमार गौर कर रहा था, कणा कमल के फूलो की तरह आखो को विकसित कर भैया की ओर ताक रही थी।

कितने आश्चय की बात थी! कणा न एक शब्द भी नही कहा, यहा तक कि उसके होठ भी नही थरथराये, मगर सुकुमार की समझ म सारी बात आ गयी।

अन्दर के टेप रेकाडर से सुकुमार का सुनायी पडा, कणा दयनीय स्वर म पूछ रही है, "भैया, तुम्ह और मुझे जल्दी ही यादवपुर लौट जाना है। घर के लिए मुझे बेहद चिन्ता हो रहा है। मेरी मुक्ति के लिए तुमन कौन-सा काम किया?"

"तेरी तमाम मुसीबत दूर हो जाये, इसके लिए मैं इतजाम करूगा। मुझे और थोडा वक्त द, कणा।" सुकुमार की आवाज से भी दयनीयता टपक रही थी।

कणा का दशहत भरा चेहरा कह रहा था, समय बहुत ही कम है। देर हो रही है।

सुकुमार रात-भर लेटे-लेटे सोचता रहा। एक तो यो भी उसे नीद नही आती, उस पर इस तरह की चिन्ता रहने से फिर कहना ही क्या!

हो सकता कणा पैसे के बारे म सोच रही हो। कणा रुपये पैसे के बारे मे पहले भी बहुत कुछ सोच चुकी थी, अब कुछ दिनो तक नही सोचे तो ही ठीक है।

"कणा, मैंने एक काम चलाऊ नौकरी का इतजाम कर लिया है। नौकरी और कुछ दिनो तक बरकरार रहेगी। कणा, तू इतनी अधीर क्यो हो जाती है?

तू जहाँ काम करती है वहाँ कोई सूचना भेजनी है ? अगर तेरी मर्जी हो तो मैं कह आऊँ। तू सख्त बीमार है। काम पर जाने में कई महीनों की देर होगी।"

कणा ने कोई उत्साह नहीं दिखाया। सिर्फ दयनीय स्वर में पूछा, "मैं इस झमेले से निकल नहीं पाऊँगी, भैया ?"

"जरूर निकलोगी।" भरोसा देकर भैया सवेरे ही घर से निकल पड़ा था। कणा जैसी लड़की को झमेले से छुटकारा न मिले, ऐसा कहीं हो सकता है ? छुटकारा क्या नहीं मिलेगा ? कणा ने दुनिया के किसी भी आदमी का कुछ बिगाड़ा नहीं है। सिर्फ

कोयले की दुकान के काम से जब-जब फुर्सत मिलती, सुकुमार केवल कणा के बारे में सोचता रहता।

निष्ठावान, सच्चरित्र, गृहस्थ दशरथ मित्र की पुत्री कणा मित्र, सुकुमार मित्र की बहिन कणा, गर्भवती है। सुकुमार कणा को पहचानता है। वह कोई दोष नहीं कर सकती। कहीं किसी मामले में बेचारी कणा संभवत क्षण-भर की कोई गलती कर बैठी है। हो सकता है किसी ने कणा को प्रेम के भुलावे में रख कर धोखा दिया हो।

सुकुमार ने इन मामलों पर उतना सोचा-विचारा नहीं है। लेकिन अब उसे सोचना ही पड़ता है और सोचने पर उसका पूरा शरीर सिहर उठता है। दुनिया में इतनी-इतनी लड़कियों के रहने के बावजूद कणा ही गर्भवती हो गयी।

इस दुनिया के बारे में उत्सुकता दिखाने के लिए मित्र घर में कभी किसी के साथ कोई बात नहीं थी। कमा कर लाने और खाने की समस्या में ही सभी गोते लगा रहे थे। लेकिन अचानक अजानी अनपहचानी एक मुसीबत छिपे हुए जल्लाद की तरह सुकुमार की आँखों के सामने आकर खड़ी हो गयी।

सुकुमार को याद आ रहा था, कहीं उसने पढ़ा था कि इन मामलों में मातृत्व शब्द अपनी अर्थवत्ता खो देता है। यह संभावना नहीं, आने वाली मुसीबत का परवाना है। यह किसी इच्छा की परिणिति नहीं, कलंक की यादगार है।

"सुकुमार मित्तिर सुनो, इन मामलों में बंगाल में एक ही बात कहने का रिवाज है और वह यह कि तुम्हारी अविवाहिता बहिन प्रेग्नेन्ट है।"

क्रोध के अतिरेक से सुकुमार व्याकुल हो उठा। ये शब्द किसी दूसरे ने कहे होते तो सुकुमार अब तक उसके सामने के दाँतों को मुक्का मारकर तोड़ चुका होता।

लेकिन, उसके अन्दर के उस अदृश्य आन्मी को न तो छुआ जा सकता है और न ही पकड़ा जा सकता है। वह कह रहा है, "यस-येस। तुम्हारी बहिन रहने से किसी ने उसका दिमाग खरीद नही लिया था। तुम्हारी अपनी सगी वहिन, जिसकी कमाई से तुम लोग सुख से जिन्दगी जी रहे थे, जिसकी शादी की कोशिश तुम, तुम्हार बाबू जी या माँ ने नही की, अब प्रेग्नेन्ट है।"

सुकुमार को यह बात बडी ही अश्लील जैसी लग रही थी। बदबूदार दवा की तरह उसकी मर्जी के खिलाफ उसके जिस्म के अन्दर प्रवेश कर इस गन्दे शब्द ने सुकुमार को और अधिक बीमार बना दिया था। इस शब्द का अनसुना करन के लिए सुकुमार ने जी-जान स कोशिश की। "कहना है तो कहो मातृत्व, कणा मा होने वाली है।"

लेकिन 'प्रेग्नेन्ट', शब्द बार-बार सुकुमार के दिमाग के अन्दर चक्कर काटने लगा।

नही। सुकुमार इस गन्दे शब्द को किसी भी हालत मे मानन को तैयार नही। कणा सिफ एक क्षण क लिए कही गलती कर बैठी है। मामूली गलती के लिए बेचारी बहुत ज्यादा कीमत चुकाने को तैयार थी, लेकिन सुकुमार एसा करन की स्वीकृति क्यो प्रदान करता ? फिर सुकुमार तो उसका बडा भाई है ? ऐसी हालत मे दुनिया म भैया होने का काई अर्थ रह ही नही जाता। सुकुमार बल्कि इस बात का पता लगायेगा कि कणा की इस हालत के लिए जिम्मेदार कौन था ? प्रेम के भुलाव मे किसने कणा को धोखा दिया है ?

सुकुमार को लगता है, इस समस्या का कोई न कोई सहज निदान जरूर है।

सुकुमार कणा का चेहरा अपनी आखो के सामने देख रहा है। उसके साथ भी एक कठिनाई है। बहिन के सामने बडे होन पर वह बहुत-सी बात पूछ नही पाता। सुकुमार मर भी जाय तो भी वह सवाल नही कर सकता कि कणा किस तरह या अनब्याही मा बनने जा रही है।

थोडी देर पहले ही शकुन्तला की माँ रुपये-पैसे का हिसाब समझने के लिए आयी थी। मिसेज घाप न पूछा, "क्यो सुकुमार बाबू, आपकी आँखे लाल क्या हैं ?"

"नही," सुकुमार घबरा गया था। "लगता है धूल पड गयी है। कोयले की बुकनी का ही तो कारोबार करना पडता है।"

सुकुमार ने एकाएक पूछा, "औरतो क मामले मे 'मुक्ति' शब्द का अर्थ क्या है ?"

"एक अच्छी-सी शादी हो जाना। मेरी ही बात लो। लड़की की शादी हो जाये तो मैं जिम्मेदारी से मुक्त हो जाऊँ।"

सुकुमार ने कणा से इशारे से पूछा था। "इसके लिए जिम्मेदार कौन है?" लेकिन कणा ने कोई उत्तर नहीं दिया था। वह सिर्फ रोने लगी थी।

लेकिन सुकुमार छोड़ेगा नहीं। इसका कुछ न कुछ निपटारा करके ही दम लेगा। जो आदमी कणा की इस हालत के लिए जिम्मेदार है, सुकुमार उसका पता लगाकर ही छोड़ेगा। सुकुमार एकबार उस आदमी से मिलना चाहता है। आज, कल, परसों

•

जब-जब सुकुमार को वक्त मिला है, जानी-पहचानी तमाम दुनिया की उसने बारीक से जाँच-पड़ताल की है।

अपने मुहल्ले के सभी युवकों के चेहरों की सुकुमार ने परीक्षा की। लेकिन इनमें से किसी से कणा बातचीत भी नहीं करती थी। वे लोग बल्कि बीच-बीच में कणा की ओर ताकते थे मगर कणा गलती से भी उन लोगों की ओर नहीं ताकती थी।

कणा की शिक्षा-दीक्षा भी को-एजुकेशन कॉलेज में नहीं हुई है। वहाँ भी कणा का कोई पुरुष मित्र नहीं था। कणा की सहेलियों को भी सुकुमार ने नजर अंदाज नहीं किया। उन लोगों के किसी निकट के सगे-संबंधी से कणा की जान-पहचान हो सकती है।

पसीने से लथपथ अपने माथे को सुकुमार ने पोंछा। "अपराधी का पता लगाना ही है," सुकुमार बेचैन हो उठा था।

"तुम क्या पागल हो गये हो सुकुमार? इस स्थिति के लिए जो आदमी जिम्मेदार है, उसे खोजकर निकालने से तुम्हारा कौन-सा लाभ होगा? इससे तो अच्छा यही है कि तुम कणा की मुक्ति के लिए क्या कर सकते हो, यही बताओ।

सुकुमार को मुक्ति का पथ मालूम नहीं था। लेकिन कुछ मालूम न रहने पर भी कलकत्ता शहर में कोई असुविधा नहीं होती। उस बार पंचानन शर्मा ने कहा था, हर विषय का दलाल होता है। मेटरनिटी अस्पताल के गेट से शुरू कर श्मशान घाट तक, हरेक मामले में कमीशन पर मदद करने के लिए आदमी

मौजूद रहता है। सही दलाल के पास जाकर खड़ा होते ही सब कुछ आइन की नाई स्पष्ट हो जायेगा।

इस संबंध मे दलाल कहाँ मिलते हैं, सुकुमार यह बात पचानन से भी पूछ नही सका था। और पूछने की जरूरत भी नही पड़ी।

इश्तहार की भाषा अद्भुत हुआ करती है। डाक्टर सदानन्द गुप्त छिपे तौर पर हर तरह का जरूरी इलाज करते हैं। शीर्षक अजीब तरह का है। 'प्रतिरोध और मुक्ति—अबलाबंधु सदानन्द गुप्त।'

"मुक्ति !" सुकुमार बहुत कुछ निश्चिन्तता का अनुभव कर रहा था। छिद्रहीन अधिकार म मुक्ति की हल्की-सी प्रकाश-रेखा अब निराशा से भरे प्राणों म आशा का सचार कर रही थी।

सुकुमार न चलते-चलते देखा, सड़क के हरेक लैंपपोस्ट पर एक ही इश्तहार चिपकाया हुआ था। जहाँ भी दृष्टि जाती थी—प्रतिरोध और मुक्ति के लिए अबलाबंधु सदानन्द गुप्त ने जल्द से जल्द संपर्क स्थापित करने का आह्वान किया है।

सुकुमार अपन मन के अन्दर शक्ति का सचय कर रहा था। अबलाबंधु सदानन्द गुप्त का पता और टेलीफोन नबर सुकुमार मन ही मन याद कर रहा था।

आजकल सुकुमार को अपनी स्मरण शक्ति पर भरोसा करने का साहस नहीं होता। कागज-पेंसिल निकालकर पता लिख लेना ही युक्ति-संगत है। उस आदमी के कई एक पते दिये हुए हैं। कभी एक पते पर बैठता है और कभी दूसरे पते पर शहर के हर छोर पर उसका बैठना होता है।

खुलेआम दिन की रोशनी म लैंपपोस्ट से पता लिखना! बहुत कोशिश के बाद भी सुकुमार मझोले तबके के लोगों की इस दुविधा से स्वयं को अलग न कर पाया।

लेकिन दूसरे ही क्षण वह चिहुँक उठा। जहा शेर का भय रहता है वही शाम होती है। सुकुमार को एक बजाज स्कूटर की आवाज सुनायी पड रही थी। अरे, सोमनाथ है क्या। हाँ-हा, सोमनाथ बैनर्जी ही था।

सुकुमार के मन मे हुआ कि वह सोमनाथ को पुकारे। उफ्, कितने दिनों के बाद वह सोमनाथ का चेहरा देख रहा था।

"सोमनाथ !" सुकुमार पुकारने जा ही रहा था पर आखिरी क्षण मे उसने अपने को रोक लिया। लगा, सोमनाथ को इस तरह पुकारना शायद अच्छा न होगा।

सुकुमार को याद आया, सोमनाथ को ही चाहिए था कि वह बीमार सुकु-मार की खोज-खबर लेता। लेकिन सोमनाथ ने ऐसा नही किया है?

सुकुमार जानता है, बेकार आदमी की देह और मन म तरह-तरह की परे-शानियाँ रहती हैं। नौकरी की खोज मे पागल की तरह मारे-मारे फिरने क समय सामाजिकता और सौजन्य की बातें अक्सर याद ही नही रहती। मगर अब सोमनाथ कोई बेकार-बेरोजगार आदमी नही है। उस दिन सुकुमार ने सुना था, सोमनाथ ने अब व्यवसाय करना शुरू कर दिया है। अपना दफ्तर भी कर लिया है तो ऐसी हालत मे जरूर ही दो पैसे कमा लिया होगा। इस दृष्टि से उसे ही चाहिए था कि पुराने मित्र की खोज-खबर लेता।

झकझकाते स्कूटर पर गतिमान सोमनाथ के चेहरे को सुकुमार ने एक बार फिर देख लिया। और देखते ही मित्र से बातचीत करने की इच्छा होने लगी। व्यवसाय म दो पैसा कमाने स आदमी का वजन बढ़ जाता है मगर सोमनाथ मोटा नही हुआ था। सामनाथ न क्या इस बीच तपती से शादी कर ली है? जरूर ही कर ली हागी। सिर्फ सुकुमार को ही निमन्त्रण-पत्र नहीं भेजा है।

फिर भी सोमनाथ पर सुकुमार को कोई खास गुस्सा नही आ रहा था। उस लगता है, जो मित्र उसे इतना प्यार करता था, वही बीमारी क समय कोई खोज-खबर न ले, ऐसा हो ही नही सकता। हो सकता है बाबूजी से पूछताछ की हा, इसीलिए कणा का भी पता नही चला और वह अकारण हा सोम से नाराज है।

नही, मन म मित्र क प्रति स देह का जहर रखना सहत की दृष्टि से ठीक नही हाता। सीधे बातचीत करने के खयाल से जब उसने सोमनाथ को पुकारने के लिए सिर उठाया तो उस समय साम का स्कूटर राजपथ की गाडियो की भीड मे न जाने कहाँ खो चुका था।

•

स्कूटर चलाता हुआ सोमनाथ बैनर्जी जोधपुर पाक के बैनर्जी भवन म लौट आया।

कमला भाभी का ध्यान इस बात की आर गया कि सामनाथ का चेहरा गम्भीर है। कमला भाभी ने बहुत दिना स सामनाथ के चेहरे पर इस तरह की उदासी का भाव नहीं देखा था।

"क्या हुआ सोमनाथ ?" भाभी बिना पूछे चुप नही रह सकी। सफल व्यवसायी का चेहरा तो इस तरह बुझा हुआ नही रहना ?

सोमनाथ ने भाभी के प्रश्न को टालने की कोशिश की।

"बिजनेस मे वहुत तरह की फिक्र करनी पडती है, भाभी।"

"उहूँ ! कुछ दिनो तक तुम्हे बिजनेस के बारे मे सोचते विचारते देख चुकी हूँ। बिजनेस से तो तुम अभ्यस्त हो चुके हो।"

"बिजनेस से या बिजनेस-कल्चर से ?" सोमनाथ भाभी से ही पूछता है।

"बिजनेस से तुम अभ्यस्त हो गये हो, यही काफी है। बिजनेस-कल्चर मे थोडा वक्त लगेगा। शायद तुम पूरी मात्रा मे उसे प्राप्त भी नही कर सकोगे।"

"आप यह कह रही हैं भाभीजी ? मैं प्राप्त नही कर पाऊँगा ?"

"तुम मात्र चेष्टा करते रहोगे, उस पर अधिकार प्राप्त करेगा तो वह तुम्हारा लडका ही करेगा और पूरी तरह कोई अधिकार प्राप्त करेगा तो वह तुम्हारा पोता होगा। सुना है, एक ही पीढ़ी मे बिजनेस पर स्वाभाविक रूप म अधिकार प्राप्त नही होता।"

"आप बहुत अच्छा बात कह रही है भाभीजी।" कौन कह सकता है कि भाभीजी निहायत भोली-भाली है।

भाभी ने इसी अवसर मे लाभ उठाते हुए असली चर्चा छेड दी। "सोम, तुम क्या कर रहे हो ? मैं बाबूजी की तस्वीर के सामने खडी नहीं हो पाती हूँ। वे मुझसे पूछते हैं, सोम की शादी का क्या हुआ ?"

कोई और दिन हाता, तो हो सकता है, सोमनाथ इस सम्बन्ध मे भाभीजी से कुछ बातचीत करता। मगर आज सडक के उस अनुभव के बाद से उसका सिर जैसे टीस सा रहा है।

भाभी आज छोडने के लिए जैसे तैयार ही नही थी। "सोम शुरू म बाबूजी न तुम्हारा रिश्ता तय किया। तुमने कहा था, अपने पैरो पर जब तक खडा नही हो जाता, सीमेन्ट-डीलर की लडकी से मैं शादी नही करूँगा। मैंने कहा, ठीक है तुम किसी दूसरी लडकी से ही शादी कर लो। तुमन कहा, अपने पैरा पर खडे होने के पहले शादी का सवाल ही पैदा नहीं हाता। अब तो तुम अपने पैरो पर अच्छी तरह खडे हो चुके हो। लेकिन तुम्हें क्या हो गया सोम ? तपती के बारे मे थोडा-बहुत सुनने को मिला था। सोचा था, उसे फोन कर बाकी सूचना प्राप्त कर लूगी। तभी अखबार म देखा, तपती कनाडा पढने चली गयी है। सुनने मे आया, तुम्ही ने तपती से जान को कहा था। उसके बाद ही कुछ महीने बीतते न बीतते जाने क्या-क्या सुनने को मिल रहा है।"

"जा बात फैली है वह झूठी नही है भाभीजी। तपती कनाडा से वापस नही आयेगी। उसने वही शादी कर ली है।'

तपती के बारे मे सामनाथ बर्फ की तरह ठण्डी आवाज म बोल सकता है, भाभीजी ने ऐसा सोचा भी नही था।

भाभीजी को यह जानन की तीव्र इच्छा हो रही थी कि ऐसी अनहोनी क्या कर घटित हो गयी। "तपती को देखन स तो कभी ऐसा नही लगा था," भाभी का अब भी पूरी तरह यकीन नही हो रहा था।

"चेहरा देखन स ही क्या सब कुछ समझ म आ जाता है भाभी ? मेरी ही बात ले लीजिए, मेरा ही चेहरा देखकर कौन कितना समझ पाता है ?"

भाभीजी इन पहेलिया स परशानी म उलझ जाती हैं। भाभी को भय हुआ, विदेश के नये माहौल म, हो सकता है, तपती के मन म बदलाव आ गया हो।

भाभीजी को जो कुछ मालूम नही है, एकमात्र सोमनाथ ही वह सब जानता है। सामनाथ न ही एक दिन एयरमेल स कनाडा पत्र भेजकर तपती को स्वतत्र बना दिया था। जान-सुनकर सोमनाथ ने इतन दिना के रिश्ते को तोड दिया था।

सोमनाथ तपती जैसी लडकी को धोखा नही दे सकता। बिजनेस मैन सोमनाथ का स्वरूप बिना पहचाने तपती उससे शादी कर, यह कभी उचित नही हागा। बहुत साचने के बाद सोमनाथ ने बिना किसी लाग लपेट के लिख दिया था, "असत्य ससग के कारण मैं बहुत नीचे उतर आया हूँ तपती—अब मैं तुम्हारे योग्य नही हूँ। नये मुल्क म तुम नये साथी की तलाश कर ला, मुझे जरा भी दुख न हागा।"

बेचारी कमला भाभी को यह सब मालूम नही था तो अच्छा ही था। उनके मन मे कम स कम सोमनाथ की तरह पीडा और यातना तो नही हुई। कमला भाभी ने अब सोमनाथ को याद दिलाना चाहा, तपती के अलावा भी दुनिया मे अच्छी लडकियाँ हैं। लेकिन सोमनाथ का चेहरा रपता-रपता और भी अधिक उदास हा गया। सोम को क्या हुआ ?

कोई बडा ऑर्डर हाथ से निकल गया क्या ? भाभी का भय लगता है। या फिर कोई दुघटना घट गयी ? "किसी को धक्का वगैरह लगा दिया है क्या ?"

सोमनाथ न किसी का धक्का नहीं लगाया। लकिन सोमनाथ को ही आज जैसे धक्का लग गया था।

सोमनाथ स्कूटर पर बैठकर आ रहा था। तभी दूर स न सुकुमार को आते देखा। मगर सोमनाथ ने मुँह दूसरा घुमा

सुकुमार कभी सोमनाथ का अतरग मित्र था। दो दिन भी एक-दूसरे से मुलाकात न होती तो वे छटपटाने लगते थे। आज मुलाकात भी हुई तो सोम-नाथ न मुह घुमा लिया। जैसे वह सोमनाथ को पहचानता ही नही हो।

"भाभीजी, आज सुकुमार पर नजर पडी," सोमनाथ ने इतना ही कहा।

"अरे, सुकुमार कैसा है ?" भाभीजी के मन मे सुकुमार के प्रति पहले जैसा ही स्नेह है। "तुम इस व्यवसाय मे प्रतिष्ठित हो चुके हो, तुम्हारे लिए उचित था कि अपने पुरान मित्र को किसी दिन निमत्रित करते।" भाभीजी सोच रही थी। सामनाथ के मित्रहीन जीवन म सुकुमार की उपस्थिति मगलकारी होगी।

"सुकुमार क्या कर रहा है ? तुम्हारे साथ क्या-क्या बातचीत हुई ?" भाभी जी जितनी उत्सुकता प्रकट कर रही थी। सोमनाथ को उतनी ही बेचैनी का अहसास हा रहा था।

"सुकुमार से मुझे बहुत जरूरी काम है" भाभीजी ने एकाएक कहा। "किसी दिन उसे जरूर लेते आना।"

सामनाथ को सहसा पसीना आन लगा। "अचानक सुकुमार को आपको कौन-सी जरूरत पड गयी ?"

"कान्फिडेन्शल बात है। सब कुछ हर आदमी से कहा नही जा सकता है।"

भाभीजी ने गौर किया, सोमनाथ इस मामूली से मजाक को भी बरदाश्त नही कर पाया था।

भाभी बोलीं, "तुम्हारी कुछ गोपनीय खबरो के बारे मे पता लगाऊँगी। इस दृष्टि से सुकुमार ही सबसे अच्छा आदमी रहेगा।"

"कौन-सी खबर भाभीजी ?" सुकुमार अचानक इतना परेशान क्यो हा उठा, कमला भाभी समझ नही पा रही थी।

भाभाजी ने साचा था कि वह देवर से सरसता के साथ ही पूछेगी कि तुम अब भी शादी क्यो नही कर रहे हो ? हमारी आँखो की ओट मे कौन-सी रहस्य मयी अभी सक्रिय हैं, यह बात जानना खासतौर से आवश्यक प्रतीत हो रहा था लेकिन उस क्षण वैसा सवाल करन का भाभा का साहस नही हुआ।

भाभीजी ने गौर किया, किसी तरह एक प्याली चाय पीकर सोमनाथ फिर स्कूटर लेकर बाहर निकल गया।

पानी बरसना शुरू हो गया था। ठण्डे पानो के छीटे स्कूटर पर सवार साम नाथ के चेहरे पर लग रहे थे। लेकिन सामनाथ अभी किसी भी हालत म घर वापस नही जायेगा। जब तक वह सुकुमार के आमने-सामने खडा नही होता

उसके मन की जलन शान्त नहीं होगी। वह सुकुमार से पूछेगा कि उसने इस तरह अपना मुँह क्यों फेर लिया?

बारिश में भीगता हुआ सुकुमार भी आगे बढ़ता जा रहा है। वह जरा-सा के लिए बच गया। सोमनाथ से मुलाकात हो जाती तो सुकुमार उससे क्या कहता? कणा की भी चर्चा छिड़ती। सुकुमार क्या जवाब देता? सोमनाथ पता जानने की इच्छा जाहिर करता। फिर हावड़ा की बात सुकुमार क्यों कर अपनी जबान पर ला पाता?

मानसिक चिकित्सालय से लौटने के रास्ते में ही सुकुमार को सोमनाथ की याद आयी थी। जरा संयत हो जाने के बाद, संकोच के प्रथम अध्याय को परे हटाकर वह किसी न किसी दिन सोमनाथ के घर पर जाती थी। पट्ठे की जिन्दगी किस तरह बीत रही है, इसका भी पता लगा ही लेता। लेकिन अचानक कणा इस मुसीबत में फँस गयी।

अभी किसी को चेहरा दिखाने का उपाय नहीं है। महाभारत के दो पर्वों से सुकुमार के जीवन का भी मेल खा रहा है—पहला मानसिक चिकित्सालय का वनवास पर्व था और अभी अज्ञातवास पर्व चल रहा था।

•

अवलाबंधु सदानन्द गुप्त शाम के समय अपने चेम्बर में बैठकर सबेरे का बासी अखबार मन लगाकर पढ़ रहे थे।

अखबार को रख, चश्मे के कटे शीशे से अड़तालीस साल की उम्र वाले सदानन्द गुप्त की निगाह टार्च की रोशनी के मानिंद सुकुमार के चेहरे पर आकर टिक गयी।

यह नाटा, मोटा और काला आदमी देखने में कैसा लग रहा है? अजीब न होता तो इस बेमानी लाइन में आता ही क्यों? सुकुमार ने अपने को समझाया।

सदानन्द के कमरे के अन्दर भी लकड़ी के पार्टीशन से बना हुआ एक दूसरा कमरा है, यह बात सुकुमार की निगाह से अनदेखा न रहा।

'बात यह है कि, सुकुमार की बात फिर अटक रही थी।

"आप दुविधा में क्यों हैं? खुलकर बताइये।' सदानन्द जी ने सीधे अपने मन का भाव प्रकट किया।

"बात यह है कि पेशेन्ट मेरी…"

"पेशेन्ट से आपका कौन-सा रिश्ता है इससे मेरा कुछ बनना-बिगड़ना नहीं। आप बताइये कि कितने महीने हो चुके हैं। लास्ट डेट कब होता है?"

सुकुमार का होश गुम हो गया। प्रत्येक ब्यौरे की तो उसे खुद ही जानकारी नहीं।

सदानन्द बोले, "पेशेन्ट से आपका क्या रिश्ता है, यह जानने से फायदा ही क्या है? भाई-बाप बन जाता है, बाप मौसा, बॉयफ्रेण्ड भैया—हम लोगों के इस धन्धे में कुछ ठीक नहीं रहता। मुझे भाई जान, इतनी बातों की जरूरत ही क्या? मुझे फीस से सरोकार है।"

सुकुमार फीस के बारे में ठीक से जानकारी प्राप्त करना चाहता है। "आपके यहाँ खर्च क्या पड़ेगा?'

"यह क्या बाजार की साग-सब्जी है? दर जानना चाहेंगे तो बता दूँगा। लेकिन मरीजा को देखे बगैर कुछ बताया नहीं जा सकता।"

"फिर भी," सुकुमार अनुमानित व्यय के बारे मे पता लगाना चाहता है।

"हम लागो की इस लाइन मे वक्त ही सब कुछ है। यहाँ सब्र के पेड मे मेवा नही फलता है, जनाब। जितनी देर कीजिएगा, एक्सपेक्टेड डेलिवरी का डेट जितना निकट आता जायेगा, मेरी फीस भी उतनी ही बढती जायेगी। और आप अगर बहुत इंतजार कर सकते हा तो कोई बात नहो। चालीस हफ्ता—ट्‌ एट्टी डेज—अगर इंतजार कर सके तो सदानन्द की कोई जरूरत नही पडेगी। किसी भी मेटरनिटी अस्पताल म चले जाइएगा, एक भी पैसा नही देना होगा।"

सदानन्द गुप्त अजीब तरह की हँसी हँसने लगा।

बत्तीस रुपया फीस देकर सुकुमार कणा को सदानन्द गुप्त के चेम्बर म दिखा चुका है।

कुचिकित्सक होने से क्या होगा, सदानन्द के गले मे स्टेथस्कोप और बदन पर एप्रान ह। देखकर कौन कहेगा कि वह विलायत से लौटा हुआ डाक्टर नही है?

सदानन्द न शुरू मे सुकुमार को कोई खास सूचना नही दी। कणा को सीधे अन्दर के चेम्बर मे ले जाकर उसकी जाँच की। उसके बाद बाहर निकल होठ बिदकाते हुए सुकुमार से कहा, "वार्निग तो बहुत पहले ही मिल चुका होगा, इतने दिनों तक क्यो नही आये?"

सुकुमार इसका क्या जवाब दे? वह कुछ जानने लायक बातो की तलाश म था।

सदानन्द ने होठ बिदकाया। "बॉडी के लिए कानूनी-गैरकानूनी कोई बात नही होती। फल लगते ही एलार्म बजना शुरू हो जाता है। उस समय जितनी ही जल्द एक्शन लीजिएगा उतनी ही जल्द झझट से छुटकारा मिल जायेगा।"

सदानन्द की बातें कणा के कान म भी पहुँच रही थी। उसका चेहरा सफेद पडता जा रहा था, यह देखकर अबलाबंधु सदानन्द ने ढाढस दिया, "डर की कोई बात नहीं, आजकल यह सब तो दाल भात का कौर हो गया है बिटिया।"

"यकीन नही हो रहा है?' सदानन्द ने दुबारा अपनी मरीजा की ओर देखा। "हम जबान पर ताला बन्द करके पडे रहते हैं, वरना बहुत-कुछ मालूम हो गया होता। कलकत्ता सिनेमा देखने जा रहा हूँ, यह कहकर मुफस्सिल के घर से निकलकर मरीजा यहाँ चली आती है। अबलाबंधु के पास आने का मानो ही है। दुश्चिन्ता से छुटकारा।"

अवलाबधु सदानन्द ने अब सुकुमार की ओर निगाह डाली, "चिन्ता की कौन-सी बात है मिस्टर मित्तिर ? बहूबाजार, बासद्रोणी, बेहाला, हावडा, हुगली, श्रीरामपुर, बारासात, बिराटी, वधमान वगैरह कौन सी ऐसी जगह है जहाँ से लडकियाँ इस सदानद गुप्त के पास न आती हो ? मेरे पास बहुत सहूलियत है—मोस्ट कान्फिडेन्शल। रास्ते मे पुरानी मरीजा से मुलाकात न हो जाये और वह शर्मिन्दगी महसूस न करे, इस डर से मैं बस-ट्राम मे भी सिर झुकाकर चलता हूँ।"

सदानद बोले, "इस गुप्त क्लीनिक मे आने का मतलब है, कौव तक को इस बात का पता न चले।"

कणा का चेहरा लाल हो गया था। सदानद ने यह देखते हुए कहा, "शर्म बाहर के आदमी के सामने की जाती है—मेरे सामने शर्म की कोई बात नही। प्रेगनेन्सी, एबॉरशन, यह सब आजकल गृहस्थो के घर मे भी मामूली बात हो गयी है, बिटिया। आहिस्ता-आहिस्ता यह मामला सर्दी खाँसी से भी ज्यादा आम हो जायेगा।"

सदानद ने अपना गजा सिर खुजलाते-खुजलाते कणा को मीठी झिडकी दी, "अब भी तुम्हारा चेहरा लाल क्यो पडता जा रहा है, बेटी ? ब्लड प्रेशर, प्लस रेट वगैरह बढ जायेगा। अभी सावधानी से रहने का वक्त है। तुम इतनी डर रही हो, कितनी ही कच्ची उम्र की लडकियाँ धडल्ले से चेम्बर मे चली आती हैं, खुद ही बातचीत करती हैं और धडल्ले से बाहर चली जाती हैं। किसी तरह का सकोच या भय नहीं रहता। उनकी हिस्ट्री कितनी ही तरह की होती है। कोई कॉलेज के मास्टर के साथ, कोई दफ्तर के सुपीरियर अफसर के साथ, कोई स्पेशल फ्रेण्ड के साथ एकाएक फन्दे मे फँस जाती हैं और तब वैसी हालत मे सदानद गुप्त के पास ही आती हैं। तीन-चार दिनो की छुट्टी मिलती है तो कितनी ही पार्टियाँ आजकल एक साथ डायमण्ड हार्बर, दीघा, दार्जिलिंग, और पुरी घूमने-फिरने जाती हैं, हिम्मत कर होटल और होली डे होम मे जाकर टिकती हैं। दशहरे की छुट्टी, बडे दिन की छुट्टी के एकाध महीने बाद ही मेरे काम का प्रेशर बहुत बढ जाता है।

"तब हाँ, जैसा कि मैं कह चुका हूँ, तुम्हारी तरह कोई नर्वस नही होती।"

कणा को छोटे चेम्बर मे बिठाकर सुकुमार बाहर चला आया था और कितना खच बैठेगा, इसका पता सदानद गुप्त से लगा चुका था।

सदानद खामी बडी रकम की माँग कर रहा था। सुकुमार का मूड बिगड

गया। "फिर आऊँगा," यह कहकर सुकुमार ने उस क्षण के लिए मामले को बीच मे ही लटकाकर छोड दिया।

सदानद गुप्त बोले, "मेरे साथ साहब, एक स्पेशल रिस्पॉसबिलिटी की बात है—मैं कभी अधिक चार्ज नही करता। मेरे इस बुडनेस के मौके से कितनी ही पेशेंटो क सो-काल्ड गार्जियस फायदा उठाकर चले जाते हैं। जो व्यक्ति नाटक का नायक है उसे जाकर डराते-धमकाते हैं, एबॉरशन के खर्च के तौर पर मोटा रकम वसूल लेते हैं मगर मुझे उसकी आधी रकम भी नही देते।"

तब सुकुमार क कान लाल हो गये है। सदानद बोले, "मुझसे दर-दाम करने के बजाय उस आदमी पर दबाव डालें जो इसके लिए जिम्मेदार है। अपने लाग इक्सपीरियेन्स से बता रहा हूँ, नाटक शुरू होने के बाद, जो आदमी इसके लिए जिम्मेदार होता है वह झझट-झमेले से बचने के लिए कवयी मछली की तरह छटपटाने लगता है। ऐसी हालत मे खच वगैरह के लिए जितनी रकम की माँग कीजिएगा, झटपट निकालकर दे देगा।"

चेंबर से सडक पर निकल आने के बाद कणा ने एक भी शब्द नही कहा। बस के इन्तजार में वह पत्थर की तरह दूर लैम्पपोस्ट की ओर ताक रही थी। भैया ने अब तक उससे कुछ नही कहा, लेकिन सदानन्द की बातें उसने साफ साफ सुनी थीं।

कणा का कमजोर शरीर असहाय की तरह पसीने से भीग रहा था। भैया पर वह पूरे तौर पर भरोसा किये बैठी थी। कुल मिलाकर अभी-अभी स्वस्थ हुए शरीर पर इतना बोझा पडने से भैया कहो फिर बेचैन न हो उठे।

कणा को भैया की ओर ताकने का साहस नही हो रहा था। इस तरह का भय का भाव कणा के जीवन मे मात्र एकबार ही आया था। वह कई महीने पहले की बात है, जब चरणदास के डिपो से निकल, टैक्सी पर बैठते ही उसकी नजर भैया के मित्र पर पडी थी। उस समय टैक्सी से कूदने का उपाय नही था—गाडी ग्रेट इडियन होटल की तरफ भागी जा रही थी।

भैया कुछ कहने के लिए बेचैन है कणा यह समझ रही थी। सदानन्द की बातें भी अब तक कान मे चक्कर काट रही थी। कणा को भय हो रहा था, भैया अभी पूछ बैठेगा, "जिम्मेदार कौन है ? तुम्हारी यह हालत किसने की है, मुझे बताओ।"

मेरे अच्छे भैया, तुम मुझसे कुछ नहीं पूछो। मैं तो मरने के लिए तैयार थी। तुम लोगो के सवालो का जवाब देने के लायक भी अब मैं नही रह गयी हूँ।

भैया, तुम लोगो की कणा बहुत निचले स्तर पर उतर आयी थी। कितने निचले स्तर पर, इसकी तुम लोग कल्पना भी नही कर सकते। लेकिन यकीन करो भैया, उस समय कोई उपाय नही था। तुम्हें जब पागल की हालत मे देखा बाबूजी की बात सुनकर जब समझ मे आया कि रुपये का इतजाम न होने पर तुम्हें सडक पर ले जाकर छोड दिया जायेगा और जिन्दगी की आखिरी घडी तक तुम सडक पर ही पडे रह जाओगे, उसी समय मैं नीचे कूद पडी थी।

उस वक्त इस सर्वनाशक विपत्ति की बात कणा को याद नही आई थी।

सोचा था, डूबती गृहस्थी का किसी न किसी तरह उबारना ही उसका पहला काम है।

कणा को रोने की इच्छा हो रही थी। कहाँ तो उसने सोचा था कि भैया को वह सारी चिन्ताओ से मुक्त कर देगी और कहा अब वह स्वय एक भारी चट्टान की तरह असहाय भैया के कधे पर जमकर बैठ गई है।

भैया इतना क्या सोच रहा है? भैया क्या अभी तुरन्त कुछ कहेगा? बस क्या नही आ रही है? कणा का शरीर थरथरा रहा था।

मगर भैया ने एक भी बात नही पूछी।

भैया को एक ही चिन्ता है। शरीर की जब यह हालत है तो इतनी भीड को चीरकर कणा कैसे बस पर सवार होगी?

जहाँ शेर का डर रहता है वही शाम होती है। वरना पचानन कर्मकार का टेम्पो उन लोगो के सामने आकर खडा ही क्यो होता?

एकाएक पचानन पर निगाह पडते ही सुकुमार बहुत बडी मुसीबत मे फँस गया। किसी की निगाह न पडे, इस तरह सुकुमार चुपचाप कणा को घर ले जायेगा, यही उसका विचार था।

दोनो को एक साथ देखकर पचानन बडा ही खुश हुआ। गाडी का दरवाजा खोलकर हँसते हुये पचानन ने कहा, "भाभी जी, देवर के टेम्पो मे अपने चरणो को रखने की कृपा कीजिये। थोडी-बहुत असुविधा होगी। हो सकता है आप जिन्दगी मे कभी टेम्पो मे न बैठी हो। मगर इस गरीब पचा के लिये थोडी-सी तकलीफ स्वीकार करें।"

'भाभी' सबोधन ने कणा और सुकुमार दोनो को बेइन्तहा परेशानी मे डाल दिया। मगर उस वक्त जबान बन्दकर सुन लेने के अलावा दूसरा उपाय ही क्या था?

"सब समाचार ठीक है न?" सुकुमार ने सौजन्य के नाते पूछा।

माथे पर टोकरी थामे एक मजदूर को एक तरह से धक्का लगा पचानन ने

आगे की ओर बढ़ते हुये का, "समाचार ठीक कहाँ है ? नहीं मामा ह, ऱ
अच्छा नही जा रहा है। मेरी मिसेज पाँव फिसल जाने के कारण बाथरूम
गिर गई है। मिसेज की खुशखबरी अपने मिस्टर से जरूर ही सुनी होगी
अब क्या होगा, कुछ कहा नही जा सकता। उसे अस्पताल म रखकर आया
है। मन बड़ा ही बेचैन है।"

बेचारे पचानन का चेहरा आज सचमुच ही बहुत उतरा हुआ था।
कोई खास बातचीत नहीं की। ट्रैफिक पुलिस, ठेलेवाले और टैक्सी ड्राइवरों से
पचानन ने आज गाली-गलौज नही किया।

घर के निकट आकर पचानन बोला, आप लोगो का आशीर्वाद रहेगा तो
मिसेज अच्छी ही हालत मे घर लौट आएँगी। उसके बाद एक बोतल
लाकर मैं गुसलखान की फिसलन के खानदान को नेस्त-नाबूद कर दूंगा।"

पचानन की बातचीत की भगिमा पर सुकुमार को हँसने का मन हुआ।
लेकिन उसने देखा, कणा के चेहरे पर मुसकराहट का कोई निशान नहीं था, वह
बड़ी-बड़ी आँखो से बाहर की ओर ताक रही थी।

बाद की घटना जल्द ही घटित हो गई। इस तरह की घटना हो सकती
है यह बात सुकुमार के दिमाग मे नही आई थी।

दूसरे दिन शाम के समय दफ्तर स लौटने के बाद सुकुमार ने देखा, घर म
एक उत्तेजना का भाव है।

कमरे के एक कोने मे देह चादर स ढँककर कणा खामोश लेटी हुई है और
मकान मालकिन उसकी बगल म बैठकर सिर सहला रही है।

"कितनी बड़ी मुसीबत आ गई है भैया।' मासीजी की आवाज से बेचैनी
टपक रही थी।

बाथरूम म फिसल जाने से ऐसी कोई बात नही होनी चाहिए थी, फिर भी
इस तरह की अनहोनी हो गई। मैं तो शर्म से । इसके अलावा

" मासी जी जरा चुप हो गई।

"मुझे पहले इस बात की जानकारी
को अभी बहुत सावधानी से रह
कर।"

मासी जी चली गयी। सुकुमा
पूछा लिया।

सुकुमार को कणा का जिस्म एक अँधेरे, अनजाने रहस्यमय द्वीप जैसा लग रहा था। टेम्पो पर बैठे पचानन कर्मकार की बाते सुकुमार को जैसे फिर से सुनाई पड रही थी।

सुकुमार के शरीर म सिहरन दौड रही थी। लेकिन वह एक शब्द भी नही बोला।

"कणा, डॉक्टर को बुला लाऊँ ?" गहरी रात मे सुकुमार न बेचारगी के साथ पूछा। कणा न जवाब नही दिया, शायद वह नीद म खो गई थी।

०

पचानन स फिर मुलाकात हुई। टेम्पो का दरवाजा खोलकर सुकुमार को अन्दर बिठाते हुए कहा, "इतनी उधेड-बुन म क्यो हैं ? एक ही मुहल्ल म वास करते हैं, बार-बार मुलाकात तो हागी ही। टेम्पो म बिठा लेने के अलावा मेरी सामर्थ्य ही क्या है ? इसकी वजह से पचानन का एक भी पैसा खच नही होता।'

पचानन की पत्नी अस्पताल मे ही है। अब भी परिणाम के बारे म कुछ कहा नहीं जा सकता।

पचानन ने अब गम्भारता के साथ कहा, "उस दिन मिसेज और आपका दूर से ही देखकर थोडा घबडा गया था। उसके बाद सोचा, आप लोग किस दु ख क चलते वहाँ जाइयेगा ?"

सुकुमार थोडी-बहुत दुश्चिन्ता मे पड गया। "कहाँ देखा था ?"

"सदानन्द की दुकान के पास। आपके बजाय कोई दूसरा होता तो सन्देह हाना स्वाभाविक था। सदानन्द गुप्त का मालू ही कहा जा सकता है। पहले कालीघाट मे रहता था और किसी प्राइवेट अस्पताल मे कम्पाउण्डर का काम करता था। वहा गन्बडी करन के कारण नौकरी से हाथ धो बैठा। उसके बाद गन्दे कारोबार की शुरुआत की—जबान से उस कारोबार का नाम नही लिया जा सकता। अब जनाब दोनो हाथ से रुपया बटोर रहा है। मकान तक खरीद लिया है।"

गरदन के पास खुजलाते हुए पचानन ने कहना शुरू किया, "फिर भी ससाले लोगा की समझ म बात नही आती है। छिप-छिपकर सदानन्द गुप्त के पास जाते हैं।"

पें-पें-पें, पचानन हॉर्न बजाकर भीड को तितर-बितर किया। "मेरी मिसेज के लिए जरा प्रार्थना कीजियेगा सर, जिससे कि आपके जैसे कुछ भले आदमियो के दबाव मे पडकर ईश्वर पेड और फल दोनो की रक्षा करें। मुझसे उनके टर्म्स ठीक नही है, भगवान् जब कि अन्याय करते हुए पाजीपन कर रहे हैं तो गुस्से के मारे मैंने भी कुछ सुनाना बाकी नही रखा है।'

टेम्पो आगे बढता जा रहा था। पचानन ने कहा, "उस दिन की ही बात लीजिये, जब छिपकर मिसेज से शादी की। उस दिन सर, पैसे का बडा अभाव था। उस समय मैं टेम्पो नही चलाता था, मोटर के गैरेज मे काम करता था। उस दिन भगवान् को खूब खरी-खोटी सुनाई—आदमी की शादी के दिन अगर पॉकेट मे कुछ पैसे नही देते हो तो फिर तुम दुनिया के मालिक क्या हो? पचा तुम्हे डोंट केयर करता है! तब दो ही रास्ते खुले हुए थे। मोटर का पार्ट्स निकालकर पैसे का इन्तजाम करना। सो सोचा, शुभ दिन म बुरा काम क्यों करूँ? उस समय सर, धर्मतल्ला के प्राइवेट ब्लड बैङ्क म चला गया। आधे घण्टे के दरमियान ही पैसा मिल गया। खून-पसीना एक कर बीवी ले आना जिसे कहत है, मेरी वही हालत थी। वही मिसेज बीमार हो जाये तो मन की हालत कही ठीक रह सकती है?"

सुकुमार को उम्मीद की हल्की रोशनी दिखाई पड रही थी। दो हफ्ते म दो बार रक्त देकर उसने कुछ रुपये का इन्तजाम किया है।

सुकुमार को भाग्यवान् कहना चाहिए। सुकुमार की धमनियो म एक खास ग्रुप का रक्त प्रवाहित होता है। बाजार मे उसकी कीमत दूनी है। सुकुमार हिसाब लगा रहा है कि इस प्रकार कितनी बार रक्त देने से सदानन्द डॉक्टर के पैसे का इन्तजाम हो जायेगा।

उस शाम सुकुमार ने सदानन्द गुप्त स उनके चेम्बर म मुलाकात की थी। "आइये मिस्टर मित्तिर। देख रहा हूँ, आप कमजोर हो गये हैं। लगता है, बहुत चिन्ता मे हैं।"

"इन सब बातो पर पहले ही सोचना चाहिए था। गडबडी मे फँस जाने पर बेवजह चिन्ता करने से कोई फायदा नहीं, समझ रहे हैं न मिस्टर मित्तिर।" सदानन्द ने चुटकी ली।

सुकुमार ने अब अपना प्रस्ताव रखा और सदानन्द डाक्टर ने उसे एक ही बात मे उडा दिया ।

' आप लोगो को हसने का मौका नही दें, मिस्टर मित्तिर । यह क्या कोई फैन, फ्रिज, रेडियो या लोहे की आलमारी है कि किस्त पर रुपये अदा कीजियेगा ?''

"माफ कीजिये," सदानन्द गुप्त ने करारा जवाब दिया । "काम निकल जाने पर हम लोगो की इस लाइन मे कोई किसी को नही पहचानता । खेल खत्म पैसा हजम । आप हर हफ्ता दस-बीस रुपया दे जाइयेगा और मैं उस उम्मीद पर पहले ही काम खत्म कर डालू, यह तो एकदम नही हो सकता ।"

बेचने या गिरवी रखने के लायक सुकुमार के पास कोई सामग्री नही थी या फिर कर्ज लेने का भी कोई रास्ता उसे दीख नही रहा था । हालांकि समय बीतता चला जा रहा था—वह समय जो बहुत ही कीमती था ।

शर्म को ताक पर रख सुकुमार फिर सदानन्द गुप्त के पास गया था ।

सदानन्द गुप्त पसीजे नही । "रुपया यहाँ कोई आपकी तरह दाँत से नही पकडता है, जनाब । मुझे रुपया देते हैं तो लोग अपने को धन्य समझते हैं ।"

"मेरे बारे में भी सोचकर देखें ।" सदानन्द बोले, "आप लोग जो कुछ देते है, वह क्या अकेले मेरे पेट मे जाता है ? डाम से लेकर थाना पुलिस वगैरह कितने ही लोगो को हिस्सा देना पडता है । लोग सिर्फ मेरे ग्रॉस इनकम के बारे मे ही सोचते है—लेकिन खर्चा और मुसीबत के पहलू पर गौर नही करते । यह एक भयकर रिस्की लाइन है साहब । हम लोगो का कारोबार ४४० वाल्ट ए० सी० से चलता है । हमारी लाइन के नगेन हालदार की ही मिसाल लीजिये । क्रिमिनल एबारशन मे मालती साहा की मौत हो जाने पर फौजदारी मामले मे फँस गया । अपने बचाव के फेर मे उसका दिवाला पिट गया मगर बरी नहीं हो सका और कैद की सजा भुगतनी ही पडी । अब उसकी बीवी और बाल-बच्चो की देख-रेख करने वाला कौन है ?''

"ईश्वर आपका भला करेंगे, ' सुकुमार ने दयनीय स्वर मे अनुरोध किया ।

"दो-चार रुपये के लिए आप इस लाइन में ईश्वर को क्या घसीट रहे हैं ? नही साहब, ऐसा काम नही करे । मेरी भी तो घर-गृहस्थी है, उन लोगो के भी मगल-अमगल की बात है । ईश्वर से मैं बचकर चलता हूँ, उनके साथ मैं कोई बिजनेस रिलेशन नही रखता । '

सदान्द गुप्त के कमरे मे एक दूसरी मरोजा बुर्का ओढ़े घुस रही थी। अपना परिचय छिपाकर रखने के खयाल से बहुत सारी हिन्दू रमणियाँ भी बुर्का ओढकर यहा चली आती हैं।

सुकुमार को विदा करते हुए सदानन्द बोले, "देर हो रही है। अगले हफ्ते से मेरी फीस डेढ सौ रुपया और ज्यादा हो जायेगी।

"अर्थ।"

"उस वक्त मुझे दोष मत दीजियेगा। सब कुछ ता समय का मामला है। समय जितना आगे खिसकता जायेगा सदान्द गुप्त के काम का रिस्क भी उतना ही बढता जायेगा। समय पर कुछ न करने के कारण ही आप जैसे लोगो का बुरा वक्त आता है।"

सुकुमार गुप्त की आखिरी बाते सुकुमार के कान मे गूज रही थी। समय के रहस्य का पता न चलने के कारण ही क्या आज उसे इतना दु ख झेलना पड रहा है? जो लोग उस प्रशस्त राजपथ पर गाडी-घोडे पर सवार हो अमीरी चाल से दौड जा रहे हैं और दुनिया के तमाम सुखो को भोग रहे हैं, केवल वे ही लोग क्या समय की इज्जत करते हुए आगे बढ़ रहे हैं?

सुकुमार यह प्रश्न किसके सामने उछाल? इस प्रेमहीन, दयाहीन शुष्क मरुभूमि म उसके इस प्रश्न का उत्तर कौन देगा?

आज सुकुमार का नये सिरे से सोमनाथ की याद आ रही थी। सोमनाथ होता ता जी खोलकर उससे सलाह-मशविरा करता। सोमनाथ अब जरूर ही सुखी है। न होता तो उसका स्कूटर इतना झलमलाता ही क्या?

और एक व्यक्ति है—कणा। वही तो सारी समस्याओ की केन्द्र बिन्दु है। लेकिन वह चुपचाप वरी होना चाहती है। और समय की हवा मे सुकुमार की दिग्भ्रान्त चिन्ता सफेद और काले डैनो की तरह असहाय जैसी फडफडा रही है।

सुकुमार अभी एक एस आदमी की तलाश मे था जिससे वह पूछ सक कि इस वक्त उसका कर्त्तव्य क्या है। सदान्द गुप्त के पास उसके जाने का उद्देश्य थाडा वक्त गुजारना था। सुकुमार न साचा था, इस बीच वह खोज-पडताल कर इस बात का पता लगा लेगा कि कणा की इस स्थिति के लिए जिम्मेदार कौन है जरूरत पडन पर सुकुमार उसके पास भी जायेगा। कम से कम कणा के लिए भी यही उचित था कि वह उस सूचित कर देती। लेकिन कणा ने इस सम्बन्ध मे कोई उत्सुकता प्रकट नही की। वह कोई बात नही बतायेगी। कणा का उतरा हुआ चेहरा देखकर सुकुमार का अधिक पूछताछ करने का साहस भी नही होता।

सुकुमार ने दो-चार जगह तहकीकात भी की थी। लेकिन वह कणा के कार्यालय का पता नहीं लगा सका था।

समय बीतता जा रहा था, इस वजह से कणा धीरे-धीरे अधीर होती जा रही थी। पिछली रात भी कणा की चीख सुनकर सुकुमार घबराकर उठ बैठा था।

गहरायी रात की बिजली की रोशनी से सुकुमार भी कणा की तरह भयभीत हो उठता था।

सुकुमार ने टॉर्च जलाकर देखा, कणा को कुछ भी नहीं हुआ था। नींद की बेहोशी में कणा प्रलाप कर रही थी "भैया अबकी मुझे मुक्ति दिला दो। अब मैं कभी तुम्हारी बात का उल्लंघन नहीं करूँगी। भैया, अब देर मत करो।"

"ए कणा। कणा!" सुकुमार की पुकार सुनकर कणा ने आँखें खोलीं मगर उसे कुछ भी याद नहीं था।

"मुझे क्या पुकार रहे हो भैया? पानी पियोगे?' कणा नींद की बेहोशी का झटक कर पूछ रही थी।

कणा फिर नींद में खो गयी थी। लेकिन भैया के आँखों में नींद कहाँ थी! सुकुमार रात-भर देर होने के बारे में ही सोचता रहा था। समय-सारिणी का अनुसरण करते हुए सभी जैसे ठीक वक्त पर तैयार होकर प्लेटफॉर्म पर चले आये हैं। एकमात्र सुकुमार ही कणा के साथ पीछे छूट गया था।

अब यह सब सोचने से कोई लाभ नहीं था। क्या सुकुमार एक बार सोमनाथ के यहाँ से हो आये?

नहीं। वहाँ जाने का सवाल ही पैदा नहीं होता। उस दिन महसूस हुआ, स्कूटर पर सवार सोमनाथ ने उसे देखकर भी अनदेखा कर दिया। हो सकता है व्यवसाय में दो पैसा कमा रहा है इसलिए बेकारी की जिन्दगी के दोस्त पर उसकी नजर नहीं पड़ी।

"तुमने खुद भी तो अपना मुँह घुमा लिया था।" किसी ने जैसे सुकुमार के मन के भीतर बैठकर बहस करना शुरू कर दिया।

"मैंने अगर अनदेखा कर भी दिया तो इसके हजारों कारण हैं, पूरी दुनिया की नजर अन्दाज कर सकूँ तो कणा और मैं जी जायें। लेकिन सोमनाथ के साथ तो ऐसा कोई कारण नहीं है, सुकुमार ने अपने आपसे कलह करना शुरू कर दिया।

●

सामनाथ भी अपनी बेचैनी भूल नही पा रहा था। सुकुमार से मिलन की इच्छा चिरस्थायी सिर दद की तरह मौजूद थी।

सुकुमार से दूर, बहुत दूर रहने का परामश कोई उसके मन को अन्दर से दे रहा था। दूसरे ही क्षण सामनाथ न देखा, उस पर नजर पडते ही सुकुमार दूसरी ओर मुह घुमाकर ब्रेबोन रोड पर खडा था।

इस बीच कमला भाभी ने अनजाने ही देवर की बेचैनी का बढाने के लिए इधन की व्यवस्था कर दी थी। कमला भाभी ने याद दिलाया, "सुकुमार को भी तुम किसी दिन यहाँ नही ले आये ? स्वस्थ होने के बाद से उस पर निगाह ही नही पडी।"

सोमनाथ सिफ हँस दिया था। वह भाभी के सामने किसी भी हालत मे झूठ नही बोल सकता। यहाँ तक कि चुप्पी का यह अभिनय भी उसके मन मे बचैनी पैदा कर रहा था।

भाभी को पता है, सोमनाथ अब सगीहीन है। उसका कोई भी दोस्त मित्र अब इस घर मे नही आता। नये व्यवसाय मे भी किसी से मैत्री हुई हो, ऐसा नही लगता। सामनाथ काम पर जाता और फिर वापस चला आता था, निस्सग !

सोमनाथ ने ही एक दिन कहा था, "व्यवसाय एक विशाल जगल हुआ करता है, भाभी। वहा कोई किसी पर विश्वास नही करता, कोई जबरन दोस्ती करता भी है ता वह दोस्ती चिन्ता का कारण हो जाती है। साथ ही साथ वह एक निजन मरुभूमि भी है—मुसीबत मे फँस जाने पर गला फाडकर चिल्लान से भी कोई दौडकर नही आता।"

यही वजह है कि कमला भाभी सुकुमार की तलाश कर रही थी। सुकुमार कुछ दिनो तक आयेगा-जायेगा तो कमला भाभी को यह जानने मे विलम्ब न होगा कि सोम ऐसा क्यो होता जा रहा है। तपती के साथ एकाएक ऐसा क्यो हो गया ? सोमनाथ के जीवन मे कोई नयी भाग्यवती नारी आयी है या नही ? या फिर सोमनाथ न अपनी खामखयाली की वजह से ही क्या इस तरह अपन को अलग-अलग कर लिया था ?

सोमनाथ ने कहा, "भाजीजी, आपसे जरा सलाह-मशविरा करना है। यह बहुत ही प्राइवेट बात है।"

कमला भाभी के मन मे उम्मीद का चिराग जल उठा। सोमनाथ न बहुत दिनो से इस तरह की बातचीत नही की थी।

"क्या कहना चाहते हो, सोम, बताओ न ! दुनिया मे ऐसी कोई बात नही जो तुम मुझसे न कह सको ।"

कमला भाभी ने सोचा था, सोमनाथ अब कोई निजी बात बतायेगा । या तो तपती के बारे मे या फिर किसी नयी जान-पहचान की लडकी के बारे मे । मगर सोमनाथ ने कहा, "आपकी राय मेरे लिए बहुत ही ज्यादा कीमत रखती है । महात्मा काटन मिल्स के मिस्टर गोयनका से मेरा व्यापारिक सबध है । अगर मैं उस आदमी के साथ व्यवसाय न करूँ तो ? वह मुझे जरा भी पसन्द नही, मगर सभी यही कहते है कि मैं उसके साथ बिजनेस चालू रखू ।"

इस सवाल ने कमला भाभी को हताश-सा कर दिया । व्यवसाय की छोटी-मोटी बातो के बजाय वह सोमनाथ के व्यक्तिगत जीवन और भविष्य के सबध मे अधिक आग्रहशील थीं । तो भी कमला भाभी सोचने लगी । बोली, "सोम, जिस आदमी को हम पसन्द नही करते उसके साथ काम-काज चालू रखने का मतलब ही है स्वय को अपमानित करना । मैं जानती हूँ सोम, जब तुम किसी को नापसन्द कर रहे हो तो उसके पीछे कोई न कोई कारण अवश्य होगा ।"

"आपने मुझे उबार लिया, भाभीजी । सभी मुझे उल्टा-पुल्टा परामर्श दे रहे थे, हालाकि गोयनका के साथ मुझे अब एक दिन भी काम करने की इच्छा नही हो रही ।"

"जो आदमी नापसन्द हो, उसे परे हटा दो, मगर जिसे पसन्द करते हो उसे हम लोगो के पास आने दो ।" भाभी अब अपनी बात कहने से नही चूकी । लेकिन भाभी को टालने के खयाल से ही सोमनाथ फौरन घर से बाहर निकल पडा ।

दफ्तर पहुँचते ही सोमनाथ ने गोयनका के महात्मा काटन मिल्स से सबध-विच्छेद का पत्र लिख डाला । पत्र पर हस्ताक्षर करने के बाद से उसकी छाती का भार बहुत-कुछ हल्का हो गया था ।

अपने व्यवसाय से सबधित विवरणो की सोमनाथ ने मन ही मन जाँच-पडताल की । छोटा-मोटा जो भी काम मिल रहा है उसी से गोयनका के न रहने पर भी उसका काम चल ही जायेगा ।

अब सोमनाथ ने अच्छी तरह साँस लेने की कोशिश की । लेकिन उसे महसूस हुआ, छाती जितनी हल्की होनी चाहिए थी उतनी अभी नही हुई थी ।

मानो वही कापालिक फिर काला गाउन पहने सोमनाथ से जिरह करने के लिए अँधेरे में आ खड़ा हुआ था।

सोमनाथ बहुत परेशानी में पड़ गया। दुनिया के कितने ही लोग कितनी ही तरह के बुरे काम कर हँसते खेलते हुए घर-गृहस्थी चला रहे हैं, उनका तो कुछ भी नहीं बिगड़ता। लेकिन एक दिन के एक साधारण अपराध के कारण यह आदमी छिप हत्यारे की तरह हर रोज सोमनाथ का पीछा क्यों कर रहा है?

इस के बावजूद, सोमनाथ अपने अन्दर प्रतिवाद का मनोबल एकत्र नहीं कर पा रहा था। अब उसने स्वयं से पूछा, "मिस्टर गोयनका से तुम्हें इन कई महीनों के दरमियान कुल कितना पैसा मिला है? मैं उस गन्दी रकम में से एक अधेला भी नहीं छुऊंगा। पूरी रकम मैं इसी साल के दौरान रास्ते के भिखमंगों के बीच बांट दूँगा। जरूरत पड़ने पर खर्च घटाने के खयाल से मैं सिगरेट पीना बन्द कर दूँगा, नाश्ता भी नहीं करूँगा। लेकिन मैं उस पैसे को फिर नहीं छुऊँगा।"

सीने पर दबा भार थोड़ा और कम हो गया। लेकिन कितने आश्चर्य की बात थी, दिल फिर भी पूरे तौर पर हल्का नहीं हो रहा था। काले गाउन वाला वह आदमी कहीं नजदीक ही छिपा हुआ है और सोमनाथ को अकेला पाते ही उसका पीछा करना शुरू कर देगा।

लेकिन सोमनाथ काले गाउन वाले को वैसा मौका अब नहीं देगा। वह अकेला रहेगा ही नहीं। आदमी की तलाश में वह सड़क पर निकल पड़ा।

आज बहुत दिनों के बाद नटवर मित्तिर से सोमनाथ की अचानक भेंट हो गयी। नटवर आज कीमती सूट में था। उसका पी० आर० बिजनेस अच्छी तरह चल रहा था, नटवर को देखते ही यह बात समझ में आ जाती थी।

सोमनाथ से एकाएक मुलाकात हो जाने पर मिस्टर नटवर मित्तिर बेहद खुश हुए।

"क्या, मिस्टर बैनर्जी? आज-कल तो आप बिलकुल फिग फ्लावर हो गये।"

"यानी गूलर के फूल। हम लोगों की इस पब्लिक रिलेशन लाइन में अंग्रेजी का मैक्सिमम इस्तमाल न किया जाय तो बात जमती ही नहीं। अंग्रेजी के बाद ही हिन्दी का स्थान आता है।" नटवर मित्तिर के होंठ का ऊपरी हिस्सा सूजा हुआ रहने के बावजूद वह हँस पड़े।

नटवर मित्तिर से मुलाकात न होती तो अच्छा होता। शरमीले सोमनाथ की बेचैनी का अहसास क्या हो रहा था, यह बात तेज बुद्धि वाले नटवर की भी समझ मे नही आयी।

पीठ पर एक धौल जमाते हुए नटवर बोले, "आप तो अच्छे आदमी है साहब! चार महीने पहले वो जो छोटा-मोटा-सा एडवेंचर रहा, ग्रेट इडियन होटल मे मिस्टर गोयनका को गुडबाई कहकर आप जो चलते बने, तो फिर दर्शन ही नही दिये।"

मिस्टर नटवर मित्तिर ने जेब से पर्स निकाला। इसमे आपकी भी कोई गलती नही। मैंने भी आफिस बदल लिया है। रवीन्द्र सरणि, इडिया एक्सचेंज प्लेस वगैरह स्थानो मे अब फ्यूचर नही है। इसलिए मैं हटकर साउथ चला आया—कैमाक स्टीट। किसी दिन आइये न, बुरा नही लगेगा। एक छोटा-सा कबूतर का दरबा भी तैयार कर लिया है।

"कबूतर का दरबा समझ मे आया तो? एयर कण्डीशन मशीन का बक्सा। वह न रहे तो कन्सलटेन्ट के बारे मे क्लाइन्ट अच्छा ओपीनियन नही फार्म करते। उसके साथ ही कुछ एण्टीक आर्ट आब्जेक्ट भी रख छोडा है।

"समझ रहे हैं न, सोमनाथ बाबू, इडिया मे हम प्राचीन और आधुनिक दोनो का काकटेल करना होगा। बिजनेस कम्यूनिटी न एट लाँग लास्ट रवीन्द्र नाथ टैगोर और जवाहर लाल पन्नालाल का एडवाइस मान लिया।

"जवाहर लाल पन्नालाल?"

"ओह, आई एम सारी, सोमनाथ बाबू। होना चाहिए था जवाहर लाल नेहरू—बिजनस लाइन मे चक्कर काटत रहने के कारण मेरा दिमाग आजकल ठिकान नही रहता।" मिस्टर नटवर मित्तिर न माफी माँगी।

"हाँ, आधुनिक और प्राचीन के सम वय की बात आपकी समझ म आयी तो? बाहर से आपका बिलकुल आधुनिक हाना हागा—मॉडर्न आफिस, माडन इक्विपमेट, मॉडन फर्नीचर, माडन स्टेशनरी। और अन्दर-अन्दर आपको रखनी है आदिम युग की व्यवस्था। सत्ताधारी आदमी उस आदिम युग म जो चाहत थे, अब भी वही चाहत हैं—क्षमता, प्रभाव, सुख, संभाग। सीधी-सादी भाषा मे कहा जाय तो मन्दिरा, मास, लडकी।"

"काँशेस नामक शब्द आपने सुना नहीं है?" सोमनाथ अब चुप्पी साधे नही रह सका।

"हँसने का मौका मत दे मिस्टर बेनर्जी। यह चीज पेट के अन्दर क एपेनडिक्स जैसी है, तराशकर अलग कर देने स कोई हानि नही हाती। रहम

कर पालने-पोसने से अचानक बढ़कर कुछ लोगों को तकलीफ ही पहुँचाती है, ठीक उसी तरह जिस तरह कि एपेनडिक्स। शल्य-चिकित्सक को दो पैसा मिले इसी खयाल से ईश्वर हम लोगों के पेट के अन्दर रख जाते हैं।"

नटवर मित्तिर ने सोमनाथ की पीठ पर एक धौल जमाया।

"थियोरिटिकल डिस्कशन को गोली मारिये। अब तो यह बताइये कि बिजनेस का क्या हाल-चाल है?"

"चल रहा है।"

सोमनाथ के उत्तर से मिस्टर नटवर मित्तिर सन्तुष्ट नहीं हुए। "बैड। किसी तरह 'गतगच्छ' वाला यह भाव ठीक नहीं। हर समय तेजी से आगे बढ़ने की कोशिश करनी होगी—जिस तरह मिस्टर भुटोरिया, मिस्टर हनुमान लाल, मिस्टर रनडेरिया, मिस्टर चोखनिया कर रहे हैं। मुखर्जी, भट्टाचार्जी, सेन वगैरह की तरह हर वक्त फॉलोऑन मेंटैलिटी लेकर मैदान में उतरने से तो इनिंग डिफीट होनी लाजिमी है।"

मिस्टर नटवर मित्तिर बोले, "एक बात और जनाब। फॉलो-ऑन को नजर अन्दाज करने के लिए हमेशा फॉलो-अप करें—यानी लगे रहें। होटल आकर कुछ लहमों को एन्जॉय करें कोई एक ऑर्डर दे देना है तो इसका मतलब यह नहीं कि आप निश्चिन्त होकर हाथ पर हाथ धरे बैठे रहें। एटरनल प्रीजिंग इज द प्राइस ऑफ बिजनेस—हेनरी फोर्ड या रॉक फेलर यह बात कह गये हैं।" नटवर मित्तिर सिर खुजलाने लगे। यह किसकी उक्ति है, इसे बताने में नटवर मित्तिर से गलती हो गयी है। "सॉरी, वेरी सॉरी। राक फेलर यह बात क्यों कहने लगे? कहा है हमारे कॉमन फ्रेण्ड मिस्टर सुदर्शन गोयनका ने।"

नटवर मित्तिर ने छोड़ा नहीं। सोमनाथ को जोर-जबरदस्ती सेंट्रल एवेन्यू के काफी हाउस ले ही गये।

हाउस आफ लॉर्ड्स की एक मेज पर दखल जमाकर नटवर लॉर्ड-स्टाइल में बोले, "आये दिन सिर्फ पार्क, रीज, ग्रैण्ड, ग्रेट इण्डियन में ही आने-जाने से काम नहीं चलेगा। वक्त तेजी से बदल रहा है, अब नेशन का पल्स फील करने के लिए बीच बीच में यहाँ भी आना चाहिए। बड़ी-बड़ी विलायती कम्पनियों के पर्सनल मैनेजर भी तकलीफ उठाकर तालीम लेने के लिए यहाँ बीच-बीच में आते हैं। कम्पनी की भलाई के लिए वे लोग इस नान-एयरकण्डिशन कॉफी-हाउस में हार्डशिप को हँसते हुए झेल लेते हैं।"

सोमनाथ का ध्यान स्कूटर की तरफ है। वह एक बार उठकर गया और सडक पर रखे स्कूटर को जाकर देख आया।

नटवर बोले, "घबराइये नही, यहाँ के चोरो की नजर इतनी घटिया किस्म की नही है। वे लोग स्कूटर पाटस चुराकर अपने हाथ को बदबूदार नही बनाते। जब तक मोटरगाडी है तब तक चोर स्मॉलस्केल सेक्टर को टच नही करेंगे।"

काफी आ गयी थी। नटवर बोले, "हाँ-हाँ, मैं तो भूल ही गया था, मिस्टर गोयनका अब भी आपके उस ताहफे की बात भूले नही हैं। शिउली की याद उनके मन से लिपटी हुई है, किसी भी तरह उसे उखाडकर फेक नही पा रहे हैं।"

कॉफी की प्याली से घूट लेते ही सोमनाथ को हिचकी आ गयी। नटवर मित्तिर घबरा उठे। "बातचीत नही करें। चुपचाप बैठे रहिये। सास अटक जाये तो उस हालत मे खामोश रहना ही बहुत सारे मर्जों की मॉडर्न दवा का काम करता है।"

"हाँ, तो मैं शिउली की बात कह रहा था, यानी मिस्टर गोयनका की बात। वैसा होता ही रहता है—कनज्यूमर्स प्रेफरेंस नामक एक शब्द आजकल मॉडन बिजनेस वल्ड मे बहुत चालू है। और आप समझ ही रहे होगे कि हम लोगो की इस सोसाइटी मे कनज्यूमर इज द किंग—यानी जिसे सर्वेसर्वा कहत हैं वही होता है।"

सोमनाथ की हिचकी थम गयी थी। लेकिन उसका चेहरा लाल हो गया था।

नटवर मित्तिर ने काफी पीते-पीते एक सिगरेट सुलगायी। उनका भी चेहरा गम्भीर हो गया।

"हाँ, याद आया, एक इम्पार्टेंट इनफॉरमेशन आपको देना जरूरी है। शिउली की ही बात है। मिस्टर गोयनका अगर आपके सामने उसके प्रति इंटरेस्ट दिखाये तो आप बात टाल दीजियेगा। अट-सट कुछ कह दीजियगा।"

नटवर मित्तिर ने अपना गजा सिर खुजलाया। "कह दीजियेगा कि शिवली बम्बई चली गई है।"

"क्या! क्या सचमुच वह बम्बई चली गई है।' सोमनाथ बेहद बचैनी महसूस करने लगा।

"बस, बात बनाना है और क्या! मैड्रास, डेल्ही, बँगलोर भी जा सकती है—लडकियो के एक्सपोट के मामले मे कोई गवनमेंट रेस्ट्रिक्शन तो है नही, कोई कॉरडनिंग भी नही। इम्प्लॉय ओरियेंटेड बिजनेस है न, इसलिए कोई

नफ़्शा नहीं। इसके अलावा बिज़नेस पर्पज के लिए औरतों को बेरोक-टोक घूमने-फिरने की गारन्टी संविधान के द्वारा भी दी गयी है। बम्बई शब्द सुनने में अच्छा लगता है, पब्लिक रिलेशन की दृष्टि से दोनों पार्टी का इमेज ब्राइट होता है।"

कणा की खबर सुनने को सोमनाथ सामने की ओर थोड़ा झुक गया है।

पॉट की पूरी चीनी कप में उन्डेर डालकर नटवर मित्तिर चम्मच से चलाने लगे। "असली बात यही है कि शिउली नहीं मिलेगी। शी इज नॉट एवेलेबुल। मैंने मिस्टर गोयनका को बम्बई बताया है, आप भी यही बात कहियेगा—फिर वन प्लस वन टू ही हो जायगा।"

नटवर की बात सोमनाथ को ठीक-ठीक समझ में नहीं आ रही थी। अधिक उत्सुकता दिखाने में भी उसे लज्जा का अनुभव हो रहा था।

"अपनी नाक पोंछ लीजिये, मिस्टर बैनर्जी। पार्टी के सामने नाक से पसीना चलना नर्वसनेस की निशानी समझी जाती है," नटवर मित्तिर ने सस्नेह उपदेश दिया।

"इन फैक्ट जरूरत बेजरूरत बीच-बीच में नाक पोंछ लिया कीजिये, सोमनाथ बाबू। मैं भी ऐसा ही करता हूँ। लेकिन अभी नाक के सामने रूमाल ले जाने का मेरे लिए उपाय नहीं है। बड़ा ही दर्द करता है।' नटवर मित्तिर की दबी हुई चीख निकल पड़ी।

अब नटवर मित्तिर ने पुकारा, "ब्वॉय, और थोड़ा-सा शुगर।"

उसके बाद सोमनाथ से बोले, "झूठ क्यों कहूँ, मेरा मन और मूड बिगड़ा हुआ है। बहुत ही कॉन्फिडेन्शल है—मगर आपसे बगैर कहे रह नहीं पा रहा हूँ।"

बेयरा ने अनिच्छा से चीनी का दूसरा पॉट मेज पर रख दिया। मिस्टर नटवर मित्तिर ने फिर कहना शुरू किया

"उसी मिस्टर सुदर्शन गोयनका की बात है जो परचेजिंग डायरेक्टर ऑफ महात्मा ग्रुप आफ कॉटन मिल्स हैं। जो शिउली को एक घण्टे के लिए पाकर सन्तुष्ट हो गये थे और आपको एक साल के लिए केमिकल्स का एडवांस ऑर्डर दिया था, जिससे आपको हर माह सात-आठ सौ रुपये का प्रॉफिट होता है। वही गोयनकाजी मेरे एक फ्रेण्ड से एक दूसरा माल खरीदने का निगोसियेशन कर रहे हैं।

"सो उस दोस्त ने आकर मुझे पकड़ा, पैरवी का भार मुझे उठाना पड़ा और मामला मैंने अपने हाथ में ले लिया। अबके उन्हें, फॉर ए चेंज—होटेल

माकनी मे इनवाइट करने का इन्तजाम किया। वहाँ का न्यू मैनेजमेन्ट मेरे साथ बहुत ही फ्रेण्डली है, तरह-तरह की ऑफ दि रेकार्ड फैसिलिटीज देता रहता है। मैंने मिस्टर गोयनका को एक मधुर विस्मय—यानी अंग्रेजी मे जिसे प्लेजेण्ट सरप्राइज कहते हैं—देने का निश्चय किया। न्यू बॉटल मगर ओल्ड वाइन—मार्शनी होटल मे भी शिउली को ही प्रजेन्ट करूंगा।"

सोमनाथ के पैरो मे जलन महसूस हो रही थी। इन गन्दी बातो को बहुत पहले ही सोमनाथ ने भूल जाने की कोशिश की थी। बहुत मुश्किल से विस्मृति के एक अँधेरे कोटर मे उस भयावह रात को सोमनाथ ने बन्दी बनाकर रखा था, लेकिन अब दरवाजा तोडकर वही फिर बाहर निकल रही थी।

नटवर बोले, "आपसे कहना यही था कि खबरदार, शिउली की तलाश मे नहीं निकलियेगा। कम से कम तब तक जब तक कि मैं ग्रीन सिगनल न दे दूँ।"

नटवर की यह उलझन भरी बात सोमनाथ को अधीर बना रही थी।

"हाँ, तो मैं कह रहा था," नटवर ने फिर शुरू किया। "मैं साहब, सरल मन से उस लडकी को काम-काज दिलाने की खातिर टैक्सी लेकर यादवपुर पहुँचा मगर, मुझे सबक मिल गया कि आगे बढकर किसी की भलाई नही करनी चाहिए।"

"क्या हुआ ?" सोमनाथ के पैर पसीने से तर हो गये।

"जाने पर देखा, शिउली उस मकान से कही दूसरी जगह चली गयी है। आसपास का कोई व्यक्ति उसका पता नही बता सका। लेकिन बन्दे का नाम भी नटवर मित्तिर है। इतनी आसानी से मैं हार मानने वाला नही था। जरा तकलीफ उठाकर मकान मालिक से जाकर पूछा और उसने पता बता दिया।"

नटवर मित्तिर एक लमहे के लिए खामोश हो गये। "जानते हैं मिस्टर बैनर्जी, उसके बाद नये मकान के पास जाकर मैंने जब एक छोकरे से पूछताछ की तो वह आग-बबूला हो गया। मुझे ऐसा मुक्का मारा कि क्या कहूँ! देखिये न, अब तक थुथने का जख्म भरा नही है। स्टिकिंग प्लास्टर लगा हुआ है, नाक भी अपनी नाक जैसी नही लग रही है। एकाएक मुक्का चला दिया न, इसलिए घाव भरने मे देर हो रही है—ब्लड शुगर है या नहीं, यह भी समझ मे नही आ रहा। इतने दिनो तक तो सूजन नही रहनी चाहिए थी।"

नटवर मित्तिर अब दबे आक्रोश से फुफकार रहे थे। बोले, "तभी मैं जवाबी हमला कर सकता था—मगर मैंने पी० आर० पाएन्ट से सोचकर देखा, हम लोगो का फाइट शुरू होते ही लोकल आदमी दौडकर चले आयेंगे। और

पगली बगाली जात से मुझे इस मामले म तनिक भी मिन्नतें नहीं मिलेगी। बेवकूफ बगालिया की समझ मे यह बात नहीं आती कि शिउली जैसी लड़कियों का कारोबार पहले भी था, आज भी है और भविष्य में भी रहेगा। इस मॉडर्न सोसाइटी मे नटवर मित्तिर तो मात्र निमित्त है।

"यह जात महाभारत की सीख भी भूल चुकी है। इन्हें मालूम नहीं है कि मेरे इस पी० आर० प्रोफेशन का मोटो है यथा नियुक्तोऽस्मि तथा करोमि—हम तो मात्र कल-पुर्जे हैं, बिजनेस हमारा जिस तरह से नियोजन करेगा, हम उसी तरह नियोजित होंगे।"

थुथने के स्टिकिंग पलस्टर पर नटवर मित्तिर ने बड़ी सावधानी के साथ रूमाल फिराया। अब उनकी आँखें शेर की तरह जलने लगी थीं।

नटवर बोले, "जानते हैं मिस्टर बैनर्जी, मुक्के की चोट से शुरू म मेरा सब कुछ ब्लैंक हो गया। अपने बचाव के लिए मुझे रेस के घोड़े की तरह दौड़ते हुए वेटिंग टैक्सी के अन्दर कूद जाना पड़ा था। गाड़ी जब मुसीबत के दायरे से दूर निकल आयी तो आहिस्ता-आहिस्ता मेरे ब्रेन ने फिर काम करना शुरू किया। मुझे याद आया, जिस रास्कल ने मुझ पर अटैक किया था वह शिउली का बड़ा भाई था।'

नटवर मित्तिर दाँत पीसन लगे। "वह वही छोकरा था सा'ब, जो पागल होकर बहुत दिनों तक पागलखाने मे बन्द था।"

सोमनाथ पत्थर की तरह स्तब्ध था। वह कोई बात नहीं कर पा रहा था।

नटवर बोले, "आप सा ब, गलती से भी शिउली की तलाश मे उस तरफ नही जाइएगा। और हाँ, यह बात भी जान लें कि नटवर मित्तिर केस फाइल करने नहीं जा रहा है।"

फिर नटवर मित्तिर क्या करेंगे?

"मैं इंसल्ट हजम नही करने वाला हूँ—बगालिया का यह मज मेरे जैसे जातीयतावादी इडियन के दिल म भी शेष है।" नटवर मित्तिर की बात करुण स्वीकारोक्ति की तरह लगी।

नटवर ने जेब से एक छोटी सी डायरी निकाली। "मैंने खोज-खबर लेना शुरू कर दिया है। छोकरे का नाम सुकुमार है। एक मित्तिर की हैसियत से मैं दुख के साथ यह स्वीकार कर रहा हूँ कि वे भी मित्तिर हैं—मित्र हरामजादा। उस समय मैं शिउली का असली नाम भी भूल गया था—कणा। इसस अलबत्ता

मेरा कुछ बनता-बिगड़ता नही। बिजनेस म हमने आठ-दस नामो से कम्पनी खोली है, फिर ये प्राइवेट प्रैक्टिशनर अलग-अलग नाम से अपनी प्रैक्टिश जारी क्यो नही रखेंगे ?''

नोट बही मे एक-एक पाइंट लिखकर नटवर मित्तिर बोले, ''उसके बाद ही गडबडी हो रही है। वह एक्स पागल सुकुमार एण्ड शिउली कुछ दिन पहले अचानक दिन दहाडे यादवपुर से लापता हा गये हैं। सुनने मे आया, भाई-बहिन का घर वाला से किसी बात पर तू-तू मैं-मैं हा गया। लेकिन मामला इतना सिम्पल हो सकता है, यह बात मेरे जैसे जन-सपर्क विशेषज्ञ को हजम नही हो रही है।''

''क्यो ? क्या हुआ ?'' सोमनाथ के सब्र ने अब जवाब दे दिया था।

नटवर मित्तिर ने आखे बन्द कर ली। ''मिस्टर बैनर्जी, मेरे जैसा एक ऑल राउन्डर पी० आर० कॉन्सलटेन्ट बनने मे काफी वक्त लगेगा, बहुत सारे अनुभवा के इकट्ठे होने के बाद एक नटवर मित्तिर की सृष्टि होती है। हम जिस लकडी के बने हैं उसका टेक्श्चर ही अलहदा है—सिजन्ड बर्मा टीक।

''जानने हैं, ओरिजनली मैं जापानी बम से घायल होकर बर्मा से चला आया था। मिस्टर गोयनका ने एक बार शराब के नशे मे स्वीकार किया था, बर्मा न जो खो दिया इडिया ने उसे हासिल कर लिया। बर्माज लॉस इज इडियाज गेन।''

कहकहा लगाने के फेर मे नटवर मित्तिर का चेहरा दर्द से बदशक्ल हो गया। सूजी हुई नाक मे तनाव आ जाने के कारण नटवर मित्तिर को तकलीफ महसूस हो रही थी।

दर्द को सँभाल कर नटवर बोले, ''पी० आर० लाइन की सबसे बडी बात है इन्वायरेनमैन्ट—माहौल की जांच करते ही सारा मज पी० आर० ओ० की समक्ष मे आ जाये। सुकुमार और शिउली माँ-बाप से झगडकर एकाएक लापता हो गये, यह बात मानने को मेरा मन तैयार नही। निम्नवित्त बगाली परिवेश म मियाँ-बीवी, भाई-बहिन, माँ-बेटी, बाप-बेटे मे झगडा चलता ही रहता है, मगर कोई इसके चलते घर छोडकर नही भागता। इसीलिए थोडा-बहुत सन्देह हुआ।''

''उसके बाद ?'' सुकुमार अब बहुत व्याकुल हो उठा था।

''बाद वाला कदम है शिउली के कार्यालय मे पता लगाना। यानी पार्क स्ट्रीट मुहल्ले के टेलीफोन ऑपरेटिंग स्कूल, जहाँ से मेरे ओल्ड फ्रेण्ड चरणदास के कथनानुसार, शिउली का सेलेक्शन कर आप उसे अपने साथ ले गये थे।

"वहाँ पूछताछ करने पर पता चला, शिउली कुछ दिनो से वहाँ भी नहीं आ रही है ।"

नटवर मित्तिर ने सिगरेट से धुएँ का गुबार निकाला, "इस लाइन म जैसा आमतौर से होता आ रहा है, यह नही कहा जा सकता कि कब कौन-सी लडकी कहा काम करने चली गयी है । बिजनेस मोबिलिटी नामक एक शब्द है न, वही यहा फिट होता है ।"

"मैंने अपने फ्रेण्ड से कहा, चरणदास, मेरे साथ नमकहरामी मत करो । सच-सच बताओ कि शिउली को कोई दूसरा आदमी तो बहकाकर नही ले गया है ? इसमे अपमान की कोई बात नही, हाईली कम्पिटीटिव मार्केट ठहरा, यहाँ सब कुछ मुमकिन है ।"

"चरणदास ने कहा माँ काली की कसम खाकर कहता हूँ । आप मेरी एक लम्बे अरसे की पार्टी हैं, मैं झूठ नही बोलूँगा । शिउली ने अचानक ही आना ब द कर दिया है । हर महीने लडकिया ऐसा ही करती हैं । उसके बाद एकाएक हाजिर हो जाती हैं ।"

"कल-कारखानो की तरह इस लाइन मे कोई डिसिप्लिन नही है । चरणदास ने मुझसे बार-बार कहा आप चिन्ता नही कीजिए, सर । आप अपना फोन नबर देते जाइये । शिउली आयेगी तो मैं खुद उसे आपके पास पहुँचा आऊँगा ।"

नटवर बोले, "टेलीफोन के लिए आठ आने पैसे पेशगी दे आया हूँ । मगर आज तक कोई खबर नही मिली ।"

नटवर मित्तिर ने दुबारा धुएँ का छल्ला उछाला । "मगर नटवर मित्तिर हार मानने वाला जीव नही । हमारी पॉलिसी है, एक बार सफल न हो सको तो ट्राइ, ट्राइ एण्ड ट्राइ । जोक की तरह लगा हुआ हूँ । सुनने मे आया है, धर्मतल्ला एरिया की किसी चीज की दुकान पर सुकुमार मित्तिर बीच-बीच मे दिखायी पडता है । पूरे डिटेल का अभी पता नही चला है ।

"सुकुमार मित्तिर को मैं आसानी से नही छोडूगा, मिस्टर बनर्जी । कुछ न कुछ उपाय निकालकर ही दम लूगा । सुकुमार मित्तिर और शिउली की फाइनल खबर मिल जाये तो पहले-पहल आपको ही सूचना दूँगा । वादा करता हूँ । नटवर मित्तिर के लिए जबान ही सब कुछ है, यह आप देख लीजिएगा ।"

सुकुमार कुछ सौ रुपये के लिए पागल की तरह मारा-मारा फिर रहा था। कलकत्ता शहर मे थोक रुपये का रोजगार करना बहुत ही आसान बात है, सुकुमार को ऐसा सुनने मे आया था। लेकिन सोने के उस छिपे घडे का पता सुकुमार जैसे अभागे को कभी नही लगा।

सुकुमार ने इसी बीच प्राइवेट ब्लड बैङ्क मे खोज-पड़ताल की थी। लेकिन वे लोग रक्त की प्रतिबद्धता पर किसी तरह की पेशगी देने को तैयार नही थे। "नक्द पैसा फेंकने से जब रक्त देन क लिए लाइन लग जाती है साहब तो फिर पेशगी क्या दूँ ?" प्राइवेट बैङ्क के मुनीम ने सुकुमार को करारा जवाब दे दिया था।

"कितने आश्चय की बात है, खाट, बिछावन, साइकिल, हार, चूडी—यहाँ तक कि गाय घाडे के लिए रुपया मिल जाता है, लेकिन एक जीवित आदमी को बधक रखते से कोई कुछ भी देने को तैयार नही है।" सुकुमार की बात मुनीम जी के काना मे गयी जरूर मगर उन्हान उत्तर देना जरूरी नही समझा।

गुस्सा उतर जाने के बाद सुकुमार की समझ म आया कि मुनीमजी का भी कोई दोष नही। बकरी, भेडा, गाय के मास की बाजार मे कीमत है मगर आदमी के मास की कोई कीमत नही। करोडो आदमिया के इस मुल्क मे आदमी एक चट्टान के भार जैसा है—हिसाब के खाते की लाइबिलिटी।

कोचिंग क्लास खोलकर कुछ पैसा हावडा मे कमाया जा सकता है। लेकिन क्लास चालू कर कुछ पैसा इकट्ठा करने मे दो सौ अस्सी दिन लग जायेंगे। कणा की देह धीरे-धीरे सूखती जा रही है—आसन्न मातृत्व का स्पष्ट चिह्न उसकी देह की हर रेखा मे क्रमश उभरता जा रहा है।

नही अब देर करने से काम नही चलेगा। सुकुमार काई न काई इन्तजाम करके ही रहेगा।

अभी एक उपाय दीख रहा था। सुकुमार को उसी पथ का अनुसरण करना था।

सुकुमार को अपने आप पर घृणा हो रही थी। उसने कभी कल्पना नही की थी कि स्वय का इतना बौना बना लेना होगा। लेकिन अब कोई दूसरा रास्ता नही था।

लेकिन सुकुमार के अन्दर का असली सुकुमार फुफकार रहा था। वह इस प्रस्ताव से सहमत ही नही हो रहा था। मगर उपाय ही क्या था।

फुसफुमाकर उसने स्वय को समझाया है, "सुना सुकुमार, तुम इस तरह

अन्दर से असहयोग मत करो। मैं वचन दे रहा हूँ, तुम्हारी निगाह मे मैं बौना नही बनूगा। पहले ही चार्स मे रुपये से लेकर नया पैसा तक चुका दूँगा।"

बाद मे जो कदम उठाना था, उसी के बारे मे वह विस्तार के साथ सोचने लगा।

सदानद गुप्त से मुलाकात कर सुकुमार उन्हें कुछ रुपये पेशगी के तौर पर दे आया था और दिन-क्षण सब कुछ तय कर आया था।

"खैर, इतने दिनो के बाद आपको अक्ल तो आयी।" दस रुपये के नोटो को गिनते-गिनते सदानद ने कहा था। "एक बात जान लें, शुभ काम की तरह गडबड काम मे भी कभी दुविधा नही करनी चाहिए। आपने जो यह देर कर दी, इसके चलते आपकी, मेरी और पेशेन्ट की असुविधा डबल हो गयी। कुछ दिन पहले आये होते तो मैं आपके घर पर जाकर ही इलाज कर आता।"

"साला, इसे भी इलाज कह रहा है।" कोई और वक्त होता तो सुकुमार सदानद के थुथने पर भी एक मुक्का जमा देता जैसा कि उसने गजे छोटी गरदन वाले नटवर मित्तिर के जबडे पर मारा था। लेकिन अभी सुकुमार की हालत ठूठे जगन्नाथ की तरह है। हाथ मे टाइम-टेबल थामे महाकाल के प्लेटफार्म पर वह समय की भागती ट्रेन के पीछे असहाय की तरह दौड रहा था। पावदान पर भी जगह मिलेगी या नही, इसमे भी सन्देह लग रहा था।

कणा को कहा ले आना है, उस मकान मे कितने दिनो तक ठहरना होगा, सदानद गुप्त ने सब कुछ बता दिया। "चिन्ता की कोई बात नही—मेरा निजी प्रतिष्ठान है। इस प्राइवेट होम का सब कुछ मेरे कट्रोल मे है। सिर्फ बाकी पैसा आप जल्दी से जल्दी लाकर दे दें।"

सुकुमार ने कणा को यह नही बताया था कि कितना रुपया देना होगा। फिर भी कणा ने बार-बार सवाल किया था। वैसी हालत मे कणा की चिन्ता कम करने के खयाल से सुकुमार ने लाचार होकर रुपये का परिमाण बहुत ही कम बताया था।

यह रुपया कहाँ से आ रहा था, कणा की समझ मे नहीं आया। "तू फिक्र मत कर कणा। अभी मिल जायेगा। धीरे-धीरे कर्ज चुका दूँगा। कणा की दुश्चिन्ता का भार और भी हल्का करने के खयाल से सुकुमार ने कहा, "फिक्र मत कर।

तू स्वस्थ होकर फिर कमाना शुरू कर देगी। मैं भी ट्यूशन शुरू करूँगा। दोना के पैसे से कज चुक जायेगा।"

"अब मैं काम नही करूँगी। भैया, अब मुझे काम करने के लिए नही भेजना।" कणा एकाएक रान लगी। ऐसे वक्त मे लडकियाँ समवत बहुत ही भावुक हो जाती हैं।

सुकुमार ने कणा को बाहुआ मे भर लिया। "तू अगर नही चाहेगी ता कोई काम पर नहीं भेजेगा, कणा मैं उस समय बीमार हो गया था, नही तो तुझे यू भी मैं काम पर नही जाने देता। मैं हाथ पर हाथ धरे बैठा रहूँ और मेरी बहिन आदमी के इम जगल को ठेल-ठालकर, बस-ट्राम पर सवार हो काम पर जाये, यह मुझे कतई अच्छा नही लगता, कणा।"

•

"कणा, उठकर खडी हो जा। मेरे साथ चल।' सुकुमार का गला आर्द्र हो गया था।

सुकुमार का बडा ही बुरा लग रहा था। सुकुमार को हल्की-सी उम्मीद थी कि अन्तत कणा का इस तरह सदानन्द गुप्त के गुप्त अड्डे पर नही ले जाना होगा। कुछ न कुछ इन्तजाम हो जायेगा। सुकुमार इसका पता लगा लेगा कि कणा की इस हालत के लिए कौन जिम्मेदार है।

लेकिन अब महाकाल के प्लेट फॉर्म पर समय का घण्टा बजने लगा था। भवितव्य की विशाल मेल ट्रेन विदा का गम्भीर सकेत दे चुकी है। इस ट्रेन को रोक रखे, सुकुमार मे ऐसी ताक्त नही। कणा को लेकर अभी तुरत सवार हो जाना है—समय का सकेत महाकाल के डके की आवाज की तरह सुकुमार के कानो मे गूज रहा था।

कणा तैयार है। इस नयी बसी-बसायी गृहस्थी को छोडकर जाने के पहले उसने केवल एक बार करुण दृष्टि से भैया के चेहरे की ओर देखा।

लडकियाँ बडी ही असहाय होती हैं। यही वजह है कि दुख के क्षण मे उन लोगो के चेहरे की ओर ताक्ना सुकुमार को कतई अच्छा नही लगता।

घर से निकलने के पहले सुकुमार ने छोटी-मोटी गठरी बाधना शुरू कर दिया।

"भैया, आज की रात के लिए मैंने खाना बना दिया है। कल सबरे के

लिए रोटी और आलू की सब्जी रखी हुई है।" कणा को मालूम था कि भैया इन कामो मे निपुण नही था। भैया से रसोई पकाने का काम नही हो सकता —एक प्याली चाय अपने हाथो से बना ले, इसकी भी उसे जानकारी नही।

अगले प्रात काल की सारी व्यवस्था के बारे म सुकुमार सुन चुका था। लेकिन उसके बाद ? भविष्य की चिन्ता बडे लोगो की विलासिता है, सुकुमार को अगले कल के सवेरे तक कुछ सोचना नही है, यही काफी था।

पें-पें-पें—पचानन कर्मकार के टेम्पो का हॉर्न आज सुकुमार के घर के सामने ही बज रहा था।

"आ गया, सर। आज मैं खुद आपको डिस्टब करने पहुँच गया। आपन तो किसी दिन मुझे बुलाया नही।' सुकुमार को पचाननन शर्म मे डाल दिया। उसे पचानन की याद न आयी हो, ऐसी बात नही। लेकिन सुकुमार क्याकर उसे इस परिस्थिति म बुलाकर ले आता ?

सुकुमार ने कहा, "पचानन बाबू, गलती के लिए मुझे क्षमा करें। काम म बुरी तरह फँस गया था।"

जाने के वक्त यह किस तरह की अडचन आ रही थी। सुकुमार आज स्वय भी देवता को प्रणाम कर रहा था। देवता की दया ममता परसे उसका विश्वास बहुत पहले ही उठ चुका था। लेकिन देवता एम्प्लॉयमट एक्सचेंज के समान हैं, जवाब नही आयेगा, यह जानते हुए भी हाथ पर हाथ धरे बैठा नही जा सकता —पोस्टल ऑडर के साथ आवेदन-पत्र भेजते ही रहना पडता है।

सुकुमार ने गरदन बढा कर देखा, पचानन कर्मकार का टेम्पो किराये के माल से लदा था। हाँडी-घडा चौकी से लेकर रजाई तोशक, गावतकिया, खाट वगैरह गृहस्थी का पूरा सामान ही उस पर रखा हुआ था। लगता था आज घर के निकट ही पचानन कर्मकार को किराये का माल मिल गया था।

"बहुत ही गुस्सा आ रहा होगा ? बिना सूचना दिये सुबह-सुबह डिस्टर्ब करने पहुँच गया।" पचानन ने फिर बातचीत करना शुरू कर दिया।

"नही इसमे डिस्टब होने की कौन-सी बात है ?" अप्रस्तुत सुकुमार ने उधेड-बुन के साथ कहा।

"अरे भाभीजी !' पचानन की दृष्टि अब कणा पर गई। "गुड मॉर्निङ्ग भाभी जी ! मालिक को साथ लिए सुबह-सुबह कहाँ निकल रही हैं ? या फिर नये सिरे से हनीमून मनाये जा रही हैं ?"

पचानन के मुह मे लगाम नही है। पचानन बोला, "जानते है सुकुमार बाबू, मेरी मिसेज इस तरह आकस्मिक रूप मे पिकनिक पर जाना बहुत पसन्द करती है। मायके जाने का मौका नही मिलता है न, इसलिए मन उदास होते ही टेम्पो से बाली ब्रिज, दक्षिणेश्वर मंदिर, चिड़ियाखाना, कम्पनी बाग में ले जाना पड़ता है।"

पचानन की निगाह फिर कणा की ओर गइ। चेहरा गम्भीर क्यो है भाभी जी ? कहा जा रही हैं, बताइये न। साथ का सरो-सामान देखकर लगता है, आज वापस आना नही है।"

"मैं वापस आ जाऊँगा। उसे वापस आने मे कई दिन लग जायेंगे," सुकुमार को गम्भीरता के साथ कहना ही पड़ा। इस तरह का अभिनय सिनेमा-थियेटर के पेशेवर कलाकार भी शायद नही कर पायेंगे—

असमर्थ सुकुमार का उदास मन हाहाकार करने लगा। हे धरती, निकम्मा, यूजलेस, इडिएट सुकुमार मित्तिर अपनी अविवाहिता गर्भवती बहिन को सदानद गुप्त के एबॉरशन चेम्बर मे ले जा रहा था परन्तु मुह से क्या कह रहा था, सुन लो।

पचानन ने आज भी सुकुमार और कणा को लिफ्ट देना चाहा। मगर वे लोग सहमत नही हुए। "आज हम थोडी परेशानी म हैं पचानन बाबू, प्लीज बुरा न मान।"

पचानन कर्मकार की किराये की गाडी अब घरघराने लगी। मानो, पचानन अपनी मर्जी के खिलाफ टेम्पो स्टार्ट कर रहा था। गाडी चीख रही थी मगर हिलने-डुलने का नाम नहीं ले रही थी।

पचानन के चेहरे पर अब उदासी तिर आयी। उसने सुकुमार से कहा, "आप साथ चलने को तैयार नही हुए, सर। लास्ट ड्राइव का चान्स मुझे नही दिया। मेरी मिसेज का बैड न्यूज है। जो आने वाले थे वे लौटकर चले गये। इतनी कोशिश करने के बावजूद हम उन्हे रोक कर नही रख सके। रहेगे ही क्यो ? मेरे जैसे आदमी को भी कही इतना सुख मिल सकता है ?"

पचानन ने जरा रुककर कहा, "गुस्से म आकर आज मैंने सर, बाथरूम के फर्श को खरोच डाला है। और एक बात का मुझे दुख है, मिसेज ने मुझे सामान ढोने से मना किया था—कहा था, जब तक मैं इस हालत मे रहूँ तुम गाडी पर वर्षा मत रखना। पैसा कमाने के नशे मे मैंने उसकी बात पर ध्यान नही दिया। अब सोचता हूँ, मिसेज की बात मानना ही मेरे लिए उचित था।"

पचानन के उदास स्वर से ताल-मेल बनाय रखन के खयाल से गाडी की आवाज ने झपकियाँ लेना शुरू कर दिया।

पचानन ने कहा, "मिसेज अब इस मकान म लौटने को राजी नही हैं—मन मे बहुत चोट लगी है। अस्पताल से सीधे दक्षिणेश्वर के एक मकान मे ले जाऊँगा। इसलिए आज अपना ही माल ढो रहा हूँ। आप ता जानते ही हैं कि मैं किरायेदार का माल नही ढोता।"

"गुड बाइ सर! इस नाचीज को याद रखिएगा।"

सुकुमार की आँखो के सामने धुएँ का गुबार छोड, यान्त्रिक चीख की ओट म ड्राइवर की असह्य यातना को छिपाकर पचानन का टेम्पा हावडा जी॰ टी॰ रोड की ओर बढ गया।

•

बिना हत्थे की कुरसी पर बैठे अबलाबधु सदानन्द गुप्त तल्लीन होकर सबेरे का अखबार पढ रहे थ। उनका कम उम्र का नौकर तिपाई पर बैठे-बैठे दाँतो से नाखून काट रहा था।

अबलाबधु बाले, "यह मुल्क चोर-उच्चको स भर गया है। कल भी एक नौकर गृह-वधू के कान का टॉप्स लेकर भाग गया। मगर यह नाकारा गवनमेन्ट कुछ भी नही कर रही है।'

लगा, नौकर ने नाखून काटना बन्दकर एक क्षण के लिए मालिक की बात का समर्थन किया।

सदानन्द न अब राय जाहिर की, "अखबार पढने का मन नही करता। हर पन्ने पर करप्शन का न्यूज भरा है। फ्राट पेज मे नेताआ का करप्शन, दूसरे मे विज्ञापनदाताओं का करप्शन, तीसरे मे सरकारी अफसरो का करप्शन, चौथे म करप्शन पर सपादकीय, पाचवे मे शेयर मार्केट का करप्शन और स्पार्ट्स पेज मे क्लब के पदाधिकारियो का करप्शन। लेकिन सरकार आख बन्द किए बैठी हुई है। यह मुल्क ज्यादा दिना तक चल नही पायेगा, जगा। ये लोग किसी को ऑनेस्टली टिकने नही देंगे।"

कणा और सुकुमार पर नजर पडते ही जगा उठकर खडा हो गया।

"आ गये!" चेहरे के सामने से अखबार हटाकर सदानन्द उन लागो का स्वागत किया।

"जाओ बिटिया, अन्दर चली जाओ। जगा तू बिटिया को अपने साथ लेकर तीन नबर कमरे का ताला खोल दे। चिन्ता की कोई बात नही है, बेटी। और भी बहुत सारे पेशेन्ट हैं। यह हम लोगा का बिजी सीजन है।"

"जगा, तू दात निपोर कर क्या देख रहा है ? ताला खोलकर हैण्डबिल चिपकाने चला जा।"

अब सदानन्द गुप्त ने सुकुमार की ओर आखे फेरी। "क्या कहूँ साहब, चिन्ताहरण राय, एम० डी० (हामिया०) ने अपना हैण्डबिल चिपकाकर मेरे हैण्डबिलो को नीचे दबा दिया है। बताइये तो, पब्लिसिटी का खच व्यर्थ ही कितना बढ जाता है। दुख की बात क्या कहूँ, चिन्ताहरण और मैं एक ही तरह के प्रोफेशन मे हैं मगर काई 'ऐथिक्स' नही है।"

सुकुमार के नोटों को सदानन्द गुप्त ने गिन लिया। "नहा मिला न ! वह चिल्ला पड। अब भी डेढ सौ रुपया कम पड रहा है।"

सुकुमार को मालूम है कि अब भी डेढ सौ रुपया कम है। "मिल जायेगा, आज ही मिल जायेगा", सुकुमार आश्वासन देता है।

"खैर, तीसरे पहर पाँच बजे तक मैं इन्तजार करूँगा।" मगर पेशेन्ट को आप अभी ही क्या ले आये ? दूर रहते हैं क्या ? यहाँ उतार कर ऑफिम जा रहे हैं ? ठीक है ? पेशेन्ट की सुविधा के चलते मुझे असुविधा का सामना करना ही पडे तो कोई बात नही।

"लेकिन एक बात जान लें। जब तक रुपया मेरे हाथ मे नही आ जाता है तब तक असली काम मे हाथ नहीं लगाऊँगा।"

"आप चिन्ता नही करें। मैं तीसरे पहर पाँच बजे तक रुपया लेकर पहुँच जाऊँगा।" सुकुमार दबी जबान मे सदानन्द से वायदा करता है।

कणा से दुबारा मिलकर सुकुमार शारगुल से भरे कलकत्ते के प्रशस्त, राज-पथ पर निकल आया था। सुकुमार को बेहद गरमी लग रही थी। गला सूख गया था। निकट ही ठण्डा पानी मिलता था मगर उसकी कीमत ली जाती थी ?

"धत्त ! यह कोई अफ्रीका की मरुभूमि है कि प्याम बुझान के लिए पानी भी खरीदना होगा ?" सुकुमार दुकान पर ही जाकर पानी पियेगा।

मगर कोयले की दुकान की बात याद आते ही सुकुमार का गला और अधिक सूखने लगा। सुकुमार न थूक निगलने की कोशिश की। लेकिन प्यास कम होने का नाम नही ले रही थी।

आसपास कही काशी विश्वनाथ सेवा समिति का प्याऊ है या नहीं, सुकुमार

ने देख लिया। दूर एक झोपड़ा दीख रहा था। सुकुमार वहाँ गया। लेकिन वहाँ ताला बन्द था—आसपास कहीं कोई आदमी नहीं था।

सड़क पर ट्यूबवेल हो सकता है। थोड़ी दूर चलने के बाद ही एक ट्यूबवेल मिला। लेकिन सरकारी नलकूल नाकाम होकर पड़ा था—हत्थे को शायद किसी ने उखाड़ कर बेच दिया था।

गला और ज्यादा शुष्क होता जा रहा था। गाँठ से पैसा निकालकर गिलास का पानी पिया जा सकता था। लेकिन सुकुमार पर जिद सवार हो गई थी। सुकुमार किसी भी हालत में पैसा देकर पानी नहीं पियेगा—यह क्या कोई मरुभूमि है?

आज सुकुमार को बड़ा ही बुरा लग रहा था। वह इतने दिनों तक जिन्दा है। सोमनाथ के साथ बैठकर उसने एक दिन हिसाब किया था। तीन सौ पैंसठ से उम्र का गुणा करने पर पता चला लगभग दस हजार दिन! इस दस हजार में से कोई दिन आज जैसा बुरा नहीं गुजरा था। वह जिस ओर जाना नहीं चाहता, कोई उसे ढकेलकर उसी ओर ले जा रहा था।

जी-जान से उबरने की कोशिश करने पर भी सुकुमार की शिकस्त ही हो रही थी। इस हृदयहीन शहर में उसका किसी भी चीज पर अधिकार नहीं—यहाँ तक कि अपने आप पर भी नहीं। लेकिन सुकुमार को अब भी पता नहीं था कि निकट भविष्य में और भी कौन-सा आश्चर्य उसका इन्तजार कर रहा था।



क्रिंग-क्रिंग।

भाभी के द्वारा बनाया गया नाश्ता सुकुमार ने खत्म कर ठण्डे पानी की ओर हाथ बढ़ाया ही था कि तभी आफिस-टेलीफोन ने बजना शुरू कर दिया।

"हैलो सोमनाथ बाबू? हैलो? नटवर मित्तिर स्पीकिंग, हैलो हैलो बीस मिनट से डायल कर रहा हूँ पर आप मिल ही नहीं रहे हैं। फोन क्यों रखा है? फोन के बड़े पदाधिकारी से कहिये कि इस मशीन को उठाकर कीर्तन करते हुए अपने आफिस के सामने लालदीघी में उसका विसर्जन कर दें। उन्हें पुण्य प्राप्त होगा और हमें भी शान्ति मिलेगी।"

फोन पर झल्लाये रहने के बावजूद बातचीत के तेवर से सोमनाथ को पता चल गया कि नटवर मित्तिर प्रसन्नता के मूड में थे।

"टेलीफोन के जेनेरल मैनेजर से जरा स्पेशल पब्लिक रिलेशन कीजिये न," सोमनाथ ने चुटकी ली।

"पब्लिक रिलेशन के बाहर चला गया है। अभी टेरोरिस्टो से सपक बनाने का वक्त आ गया है। मगर वैसा वैसा कर भी सक्ते हैं ? टेलीफोन ही खराब है। लाइन अगर मिल भी जाये तो टेरोरिस्टो को आपका एक भी शब्द सुनायी नही पड़ेगा।"

"आप कोई-कोई बात बहुत ही दिलचस्प कह जाते हैं, मिस्टर मित्तिर।"

टेलीफोन को थामे ही नटवर मित्तिर हँसने लगे। अपनी टेलीफोन डाइरेक्टरी पर एक और बात लिखकर रख लें। बड़ा ही इम्पॉर्टेन्ट कोटेशन है। शायद शायद क्यो, निश्चय ही यह बात शेक्सपीयर ने कही है—'एवरी नेशन गेट्स द टेलीफोन इट डिजर्व्स।' जैसा मुल्क वैसा ही टेलीफोन! जनाब, चोर, निकम्मा, फरेबी और हड्डी मे घुन लगे इस मुल्क मे टेलीफोन बैटर क्या होगा ? नो-रिप्लाई, क्रॉस-कनेक्शन, लाइन डेड यह सब तो होगा ही। शेक्सपीयर ने शायद यही समझाने की कोशिश की है।'

"शेक्सपीयर के वक्त मे टेलीफोन था ?"

"रहना जरूरी नहीं है। वे लोग सत्यद्रष्टा ऋषि थे—वाल्मीकि, शेक्सपीयर, टैगोर। कलिकाल मे ऐसा होगा, यह बात रामायण-युग मे शेक्सपीयर को मालूम थी।"

"हैलो, हैलो, हैलो!" सोमनाथ को खुलकर हँसन का मौका नटवर मित्तिर ने नही दिया। "हैलो मिस्टर बैनर्जी, आपको जिस लिए टेलीफोन किया है, उसका मकसद एक खुशखबरी सुनानी है। वेरी गुड न्यूज। आपको किसी दिन सन्देश खिलाऊँगा।"

"खबर क्या है ?" सोमनाथ जानना चाहता है।

"हैलो। उस सुकुमार मित्तिर को, जिसने मेरे थुथुने मे मुक्का मारकर मेरा इनसल्ट किया था, मैंने खोज निकाला है। हैलो, एक और खुशखबरी है। सुकुमार मित्तिर, बाइ दिस टाइम, पुलिस की हवालात म है।"

"सुकुमार अरेस्टेड !" सोमनाथ के विस्मय का खुमार उतरे कि इसके पहले ही टेलीफोन लाइन कट गयी।

दुबारा रिंग होगा, इस उम्मीद मे सोमनाथ टेलीफोन के निकट अधीर आग्रह के साथ इन्तजार करने लगा। नटवर मित्तिर इस भरी दुपहरी म कैसा बुरा समाचार दिया।

सोमनाथ सोच भी नही पा रहा था कि सुकुमार पुलिस के हाथ मे क्यो कर पड सकता है !

सुकुमार को सोमनाथ अच्छी तरह पहचानता है। उन लोगा न एक साथ बहुत सारे दिन गुजारे हैं। सुकुमार पढने-लिखने मे भले ही अच्छा न रहा हो, नौकरी के इटरव्यू मे भले ही सफल नही हो पाया हो, लेकिन आदमी के लिहाज से वह बहुत ही भला था। दुनिया मे उसे कितने ही अभावो की यातना सहनी पडी थी! मगर वह किसी से भी ईर्ष्या नही करता, किसी पर भी उसे गुस्सा नही, किसी के प्रति शिकवा-शिकायत नही।

सुकुमार बडे ही शान्त और स्निग्ध स्वभाव का है। उसने इतनी तकलीफ झेली है, इतनी उपेक्षा के साथ उसका लालन-पालन हुआ है, फिर भी उसने आदर्श का पल्ला नही छोडा। न्याय-अन्याय का बोध भी सुकुमार मे सदैव प्रबल रूप मे रहा है। एक बार सुकुमार सोमनाथ के साथ ट्राम पर सवार हो खेल के मैदान की तरफ जा रहा था। कडक्टर ने गलती से खुदरा पैसे के साथ एक अठन्नी अधिक दे दी थी। "लगता है, आपके पास पैसा ज्यादा हो गया है।" यह कहकर सुकुमार ने कडक्टर को अठन्नी वापस कर दी थी, हालाँकि उसी दिन पैसे की कमी की वजह से सुकुमार को पैदल चलकर घर वापस आना पडा था। बेचारा सुकुमार! ईश्वर हर तरह से उसे मुसीबत मे डाल रहे हैं। परीक्षा मे कोई कारनामा नही दिखा सका, उसके लिए नौकरी की भी कोई संभावना नहीं, कोई पैतृक सपत्ति नहीं, सुख नही, स्वास्थ्य नही, मानसिक सतुलन खोकर अस्पताल से भी हो आया है। पूरे तौर पर निस्सग हो गया है। सोमनाथ को याद आया, दिली दोस्त होने के बावजूद सोमनाथ ने उसे त्याग दिया था। दोनो मे अब मुलाकात नही होती।

सोमनाथ के अन्दर की बेचैनी और ज्यादा बढती जा रही थी। अब गहरे अँधेरे मे एक और मूर्त्ति उसके सामने तिर आयी—वह कणा थी। ग्रेट इडियन होटल के गलियारे मे सुकुमार की बहिन का फ्रीज होता हुआ चेहरा सोमनाथ को अच्छी तरह दिखायी पड रहा था।

अब सुकुमार के जिस्म मे असह्य पीडा होने लगी। सोमनाथ को उस दिन सुनने मे आया था, सुकुमार अपने सिर टिकाने लायक स्थान से भी वचित हो गया है—किसी एक अज्ञात कारणवश कणा को अपने साथ ले अज्ञातवास करने निकल गया है।

"सोमनाथ, फिर भी तुम बैठे हो ? यह सब सुनने के बावजूद तुम्हारे अन्दर

कोई घबराहट नही हो रही है ? कोई उद्वेग या दुख तुम्हे महसूस नही हो रहा है ?" कोई जैसे सोमनाथ को अन्दर से ताडने की कोशिश कर रहा था ।

'क्या कहने हैं ? सोमनाथ, अब भी क्या तुम मित्र से मिलने की बात नही सोचते ?"

"मैं क्या मुँह दिखाने लायक रह गया हूँ ? मैं कौन-सा मुह लेकर सुकुमार के पास जाऊँगा, कैसे उसकी आँख से आँख मिलाऊँगा ?" सोमनाथ स्वय से बहस करने लगा लेकिन उसे शान्ति नही मिली ।

अन्दर की पीडा रफ्ता-रफ्ता बढती ही जा रही थी । सोमनाथ ने दो-चार बार टेलीफोन डायल किया लेकिन जब नवर न मिला तो वह जल्दी-जल्दी दफ्तर से बाहर निकल आया ।

•

"बात क्या है ? आप खुद ही चले आये ?" कैमेक स्ट्रीट आफिस मे सोमनाथ को देखकर मिस्टर नटवर मित्तिर बेहद खुश हुए ।

आदर के साथ सोमनाथ को बिठाते हुए नटवर मित्तिर बोले, "सन्देस ऐसी चीज होती है कि आप आये बगैर रह नही सके । बहरहाल, मुझे मालूम था कि खुशखबरी सुनकर आप भी सुखी होइएगा ।

"फिर सन्देश का दौर आज ही चले ।" नटवर मित्तिर ने बेयरा को बुलाने के लिए घण्टी बजायी ।

"सन्देश नही चाहिए । थोडा-सा पानी द ।" सोमनाथ का गला सूख रहा था । अपने दफ्तर मे वह थोडी देर पहले ही पानी पी चुका था, लेकिन उसकी छाती दुबारा फिर सहारा की मरुभूमि होती जा रही थी । नटवर बाबू से कहने से कोई फायदा नही कि सोमनाथ असह्य यातना से गुजर रहा था । घूमता-फिरता है, बैठता है, काम करता है, घर लौटकर साने की कोशिश करता है, लेकिन हर वक्त अन्दर की बेचैनी छलक-छलक पडती है । सोमनाथ सपना देखता है—उसकी छाती के अन्दर रेत तप रही है । कही हरियाली का नामोनिशान नही है । इस मरुभूमि पर आख जाने ही गहरी नींद मे भी सोमनाथ को प्यास लगने लगती है ।

एक गिलास पानी लहमे-भर मे खत्म कर सोमनाथ ने दुबारा पानी की माँग की ।

नटवर बाबू बोले, "अब सन्देश खाने के बाद ही पानी पीजिएगा।"

मगर सोमनाथ को पानी की ही जरूरत है। नटवर को बात समझ मे नहीं आयी।

"आप सोच रहे हैं कि सन्देश आने मे देर होगी। बेयरा को अब शायद दुकान भेजूगा ? दिस इज नटवर मित्तिर्स मैनेजमेन्ट। पब्लिक रिलेशन, अन्यान्य रिलेशनो की तरह मस्ट बिगिन एट होम। कब कौन-से इम्पॉर्टेन्ट क्लाइन्ट या पेशेन्ट यहा आ धमके, इसका कोई ठीक नही रहता—इसलिए नमकीन, मिठाई, वेजिटेरियन, नान-वेजिटेरियन आइटम्स राउन्ड दि क्लॉक रेडी रखना पड़ता है।"

नटवर हँसने लगे। "'पेशेन्ट' शब्द आपकी समझ मे आया तो ? हम लोगो की लाइन मे यह एक बिलकुल लेटेस्ट टर्म है। जिनके लिए पब्लिक रिलेशन म काम किया जाता है, वे हैं क्लाइन्ट, और क्लाइन्ट के लिए जिन्हें मैनेज करने की कोशिश की जाती है, वे हैं 'पेशेन्ट'। इतने दिनो तक अँग्रेजी का जो शब्द चालू था, वह है टार्जेन्ट—लक्ष्य। लेकिन इससे जनाब 'शिकारी' जैसा भाव झलकता है। जैसे किसी को लक्ष्य बनाकर मैं मनसूबा गाँठ रहा हूँ। हम लोगो के इस नान-वाइलेन्ट गाधियन मुल्क मे इससे बहुत बडी असुविधा का सामना करना पड़ता है। उसके बनिस्बत पेशेन्ट—डॉक्टरी का यह शब्द स्वीट, सजेस्टिव और सिम्बॉलिक है।" नटवर मित्तिर जैसे दार्शनिक की दिव्य दृष्टि से उद्‌भासित हो उठे।

नटवर बाबू किसी तरह की नाही सुनने का राजी नही हुए। सामनाथ को सन्देश खाना ही पडा।

नटवर मित्तिर ने स्वागत-सत्कार की हद कर दी थी। अब उन्होंने एक कीमती विलायती सिगरेट भी आगे बढा दी। "जरा रिलैक्स कीजिये, मिस्टर बैनर्जी। आज मेरे लिए बहुत खुशी का दिन है। समझे न, धर्म की जीत आखिर मे होती है।"

नटवर मित्तिर ने सिगरेट से ढेर सारा धुआँ पिचकारी की तरह फेंका। आज मै बहुत ही सैटिस्फाइड फील कर रहा हूँ—उस सुकुमार मित्तिर को लेकर।"

"आज मैं स्वीकार कर रहा हूँ, उस हरामजादे सुकुमार ने घूसा सिर्फ मेरे जबडे, होठ और नाक पर ही नही मारा था, मेरे मन म भी उससे चोट लगी थी। बहुत दिनो से मैं टेरिबली इन्सल्टेड फील कर रहा था।"

नटवर मित्तिर ने फिर धुआँ उछाला। "मामले पर गौर कीजिये। तुम

साले बूढ़े बडे भाई हो, काम-धधा करने के बजाय घर पर बैठे रहोगे। बहिन की जिस्म-फरोशी से पैदा किये गये पैसे की रोटी खाने मे तुम्हे शर्म नही लगती, और जितना दोष है सब इसी नाचीज का? मैं सा'ब गुडफेथ म शिउली के पिक अप करने के लिए जाने पर फॉर नथिंग मार खा बैठा। मुल्क मे ला और आर्डर नही है वरना वही फैसला हो जाता।"

नटवर की आँखें जल रही थी। "बेटे, अगर प्रेस्टिज का इतना खयाल है तो बहिन की शादी क्यो नहीं करते? बहिन को बाजार म निकलने को मजबूर ही क्यो करते हो।"

"खैर, मैं कह रहा था, सुकुमार की बाबत मेरा रिसर्च और एनैलिसिस बडे काम मे आया।"

"आखिर मे सूचना मिली, वाछेल मुल्ला के पिछवाडे की तरफ कोयले की एक दुकान मे छोकरा मैनेजरी कर रहा है। एज लक वुड हैव इट, उस दुकान के मिस्टर घोष से मेरी थोडी जान-पहचान है लेकिन वह भी अपने हेड आफिस को खराब कर मेन्टल हॉस्पिटल चले गये हैं। इसलिए सोच रहा था कि सुकुमार मित्तिर को टाइट करने के लिए कौन सा स्पेशल इन्तजाम करूँ। तभी बिन माँगे मोती मिल गया। गाड इज गुड। आज सुकुमार भाई जान खुद ही पुलिस के चक्कर मे फस गये।"

सुकुमार का गला फिर सूखने लगा। वह फटी-फटी आखो से नटवर मित्तिर की ओर ताक रहा था।

नटवर मित्तिर बोले, "कितने शर्म की बात है। आपसे क्या कहूँ! मैं आज प्राइवेटली शिउली के बारे मे यह पता लगाने गया था कि वह सचमुच ही कलकत्ते से चली गयी है या नही। कोई भी अच्छी चीज साले यहाँ नही रहने देंगे—झींगा मछली, भेट की मछली, आम वगैरह सभी कुछ तो बाहर के आदमी खीचकर ले जाते हैं।"

नटवर मित्तिर को जरा खाँसी आ गयी। "जाने पर देखा सा'ब, शोर गुल मचा हुआ है। सुकुमार मित्तिर ने दुकान का पैसा चुरा लिया था। कई दिनो से थोडा थोडा हटा रहा था। पिछली रात अस्पताल से निकलकर दुकान के मालिक मिस्टर घोष वापस आ गये हैं। आज सवेरे ही रहस्य की बिल्ली थैली से बाहर निकल आयी। थोडी देर पहले दुकान का कैश गबन करने के कारण हम लोगो के सुकुमार मित्तिर रगे हाथो पकड लिये गये। देखिये, कैसा मामला है! बीमार आदमी की औरत और कमसिन लडकी ने उसी के विश्वास पर बिजनेस छोड दिया था और वही किस अक्लमन्दी से रुपया उडा रहा था?"

नटवर मित्तिर ने अपना गंजा सिर खुजलाया। "लेकिन मामूली चोर है सा ब—सिर्फ डेढ सौ रुपया भर उडाया था। मैंने जाकर पुलिस को फोन कर दिया और कहा, मार-पीट अगर कुछ करना है तो अभी तुरन्त करो। पुलिस आने के बाद कानून को अपने हाथ में लेना हमारे मुल्क में हाई लेवेल पर कोई पसन्द नहीं करता।'

और एक अदद सन्देश खाने के लिए नटवर मित्तिर बहुत दबाव डालने लगे।

"एक चीज आज स्पष्ट हो गयी सोमनाथ बाबू। उठाईगीरी और धर्म—ये दोनों अब तक कैलकटा सिटी में मौजूद हैं।"

सिर के अन्दर का हिस्सा जैसे चक्कर-सा काट रहा था। सोमनाथ सन्देश खाये बिना ही उठकर खड़ा हो गया।

नटवर तब भी कहे जा रहे थे, "उस शोरगुल और हंगामे में शिउली की फाइनल खबर की जानकारी प्राप्त नहीं कर सका। सुनने में आया है, हावड़ा साइड में कहीं रह रही है। लेकिन यह अज्ञातवास क्यों? दिस इज ए रहस्य। ए रियल मिस्ट्री।"

सोमनाथ तुम अब भी खड़े हो? स्कूटर के नजदीक खड़े होकर तुम अब भी क्या सोच रहे हो?—अन्दर से जैसे किसी ने सुकुमार की भर्त्सना की।

दिली दोस्त सुकुमार मुसीबत में पड़ा हुआ है, और तुम यहाँ निश्चल होकर खड़े हो। सोमनाथ का अभ्यन्तर अब हल्का हो रहा था। इतने दिनों तक लाज और भय से वह सुकुमार के पास नहीं जा सका था। सोचा था, सुकुमार को चाहे सब कुछ मालूम हो चाहे न हो, सोमनाथ अपना यह काला मुंह उसे कैसे दिखाएगा? मगर अब अपनी बात सोचने का वक्त नहीं है, सुकुमार बेचारा मुसीबत में फँसा हुआ है।

और कणा? अपनी चिन्ता के बीच कणा को खींचकर लाने की उसे इस क्षण कतई इच्छा नहीं थी। लेकिन वही काले गाउन वाला कापालिक अचानक अदृश्य लोक से आकर पूछने लगा, "एण्ड व्हाट एबाउट कणा? मिस्टर सोमनाथ बैनर्जी, आपके उस पुराने केस का जजमेंट अब तक नहीं दिया गया है। सुदर्शन गोयनका के माहवार बिजनेस को छोड़कर जनाब यह सोच रहे हैं कि

पाक साफ हो गये ? यू नो, गोयनका के पैसे के बगैर भी आपका काम चल जायेगा। क्योंकि आपको सोहिनी मिल्स का ऑडर मिल गया है मगर हम जानते हैं कि सोहनी मिल्स का ऑडर आपको कैसे मिला—आपने यह लिखकर वहाँ प्रवेश किया है कि सुदर्शन गोयनका आपका माल खरीदता है। हमे पता है कि कल आपको एक और ऑडर मिला है वहाँ भी आपने सिर्फ सोहिनी मिल्स का ही रेफरेन्स दिया है। आपने गोयनका का नाम नही लिया है। लेकिन सोहिनी मिल्स नाम के साथ ही सुदर्शन गोयनका नाम लिपटा हुआ है।"

सोमनाथ पसीने से भीग गया था। वह समझ रहा था, सुदर्शन गोयनका को उसके जीवन से पूरी तौर पर मिटाना सभव नही है—ग्रेट इडियन होटल का वह सर्वनाशक विष अब तक उसके व्यावसायिक और व्यक्तिगत जीवन की नस-नस मे फैल चुका था।

सोमनाथ स्वय को असहाय जैसा अनुभव कर रहा था। हे राम, मैं किस विपदा मे पड गया ? मात्र एक दिन की गलती के कारण मैं आहिस्ता-आहिस्ता सिर से पैर तक विषाक्त हो गया ? सोमनाथ बैनर्जी विषकन्या की तरह विषपुत्र हो गया है।

"इस तरह गुमसुम होकर खडे-खडे क्या सोच रहे हैं भाई साहब, सोचना है तो पाक के अन्दर चले जाइये," जनारण्य का एक अनजाना राहगीर सोमनाथ को धक्का देकर और अपनी नाखुशी जाहिर कर चला गया था।

सोमनाथ ने अब देर नही की। वह करीब-करीब अपने मन को दृढ कर चुका था।

•

सोमनाथ का स्कूटर तीर की तरह आगे बढ रहा था। थोडी देर पहले ही बाछेल मुल्ला के पिछवाडे की कोयले की दुकान से उसने सारी बातों का पता लगा लिया था। वहाँ पता चला कि सुकुमार को कोतवाली ले जाया गया है।

एक आदमी ने कहा, "बिलकुल गँवार आदमी है साहब। मामूली डेढ सौ रुपये के लिए भी कोई इस तरह अपनी इज्जत मे बट्टा लगाता है ?"

"छिप-छिपकर जरूर ही रेस खेलता होगा।' एक दूसरे आदमी ने अपनी राय जाहिर की।

एक और आदमी ने कहा, "देखकर कभी ऐसा नहीं लगता था कि पट मे इतना पाप भी होगा।"

"चालू माल है भैया, इतने-इतने तमाचे लगने के बावजूद यह नहीं बताया कि रुपया लेकर क्या करने जा रहा था।" सोमनाथ से अब यह सब बरदाश्त नही हो रहा था।

सोमनाथ ने और वक्त जाया नही किया। स्कूटर की चाल उसने और ज्यादा तेज कर दी।

सोमनाथ कोतवाली पहुँच गया था। डेस्क सार्जेन्ट से बहुत अनुनय-विनय करने के बाद सामनाथ को मुजरिम से मिलने की अनुमति प्राप्त हुई।

सोमनाथ लॉकअप की तरफ बढ रहा था। कितने आश्चर्य की बात थी कि सामनाथ को अब जरा भी डर नही लग रहा था। अभी मुलाकात होगी, यह सोचकर भी उसके पाँव थरथरा नही रहे थे।

अन्तत दोना मित्रो मे भेंट हुई। आखिरी मुलाकात के बाद जैसे लाखों युग बीत चुके हो—इस बीच असख्य पुनर्जन्मा के बीच से गुजरकर सोमनाथ और सुकुमार दानो ही—दो दूसरे व्यक्तियो के रूप म बदल चुके थे।

"सुकुमार, मेरी आँखो की ओर मत देखा। वक्त के साथ-साथ मैं भी जहरीला हो गया हूँ," सोमनाथ न सोचा था कि शुरू मे वह यही बात कहेगा।

लेकिन हवालात मे बन्द लहू-लुहान सुकुमार को देखकर वह एक शब्द भी न कह सका।

"सोमनाथ! तू यहाँ!" सुकुमार को यकीन ही नही हो रहा था। हवालात की सलाखो को अपने दुर्बल हाथो से थामे सुकुमार बहुत देर तक फटी-फटी आँखो से सोमनाथ की ओर ताकता रह गया था।

सोमनाथ देख रहा था, सुकुमार का दाहिना गाल लाल हो गया है। दाँत से भी थोडा बहुत लोहू गिर रहा है। उसे वहा काफी मारा पीटा गया था।

सोमनाथ को बेहद तक्लीफ महसूस होने लगी। उसका अपना दाहिना गाल भी अचानक दद करने लगा था।

"मैं चोर हूँ। मैंने मालिक का रुपया निकाल लिया था। मुझे तेरे चेहरे की ओर देखने का साहस नही हो रहा है सोम।" सुकुमार ने बस इतना ही कहा। उसने देखा, उसके किसी जमाने के दिली दोस्त की आँखें छलछला

आयी थी। माना दुनिया-भर का तमाम अपराध सुकुमार ने नही बल्कि सोम ने किया हा।

इन कुछ ही घण्टा के भीतर सुकुमार पत्थर की तरह जड हो गया था। वह हालांकि सोमनाथ की ओर ताक रहा था मगर उसकी जबान से शब्द नही निकल रहे थे।

"सुकुमार !" सोमनाथ ने ही अन्तत कहा। जैसे बहुत खोजन के बाद उसे दो-चार शब्द मिले हो। साम क्या कह रहा था ? "सुकुमार, मैं आ गया हूँ।"

यह आना ही जैसे सबसे मुश्किल काम था। समय के कुटिल षड्यन्त्र से दो नदियाँ जैसे एक दूसरे से बहुत दूर चली गयी थी और अन्तत उनका फिर से मिलन हो गया था।

सुकुमार के हाठ भी किसी अव्यक्त इच्छा का प्रकट करने की चेष्टा मे थरथराने लगे। दुनिया की तमाम राशनी जब बुझने-बुझने पर थी, सुकुमार को जब विपत्ति का कोई ओर-छोर दिखायी नही पड रहा था उसी समय उसका प्रिय मित्र सोमनाथ अचानक सामने आकर खडा हो गया था। भगवान् के समक्ष उसका माथा झुक गया। बडी कठिनाई से वह कह सका 'सोम' और फिर तो जैसे आसू का बाँध ही टूट गया।

"किसी को न पाकर मैं, मैं तेरे बारे मे ही साच रहा था, सोम," सुकुमार की आखा से एक अजीब रोशनी निकलकर सोमनाथ के चेहरे पर केन्द्रित हा रही थी।

"मैं आ गया हूँ, तू अब फिक्र मत कर, सुकुमार। मुझे बहुत दिन पहले ही आना चाहिए था। मैं फिर आऊँगा, ऐसा तो साचा भी नही था। लेकिन अब मैं तेरे लिए मैं सब कुछ कर सकता हूँ। तुझे मैं यहा से निकाल ले जाऊँगा।"

"सोम !" सुकुमार फटी-फटी आखा से ताक रहा था।

"तू मेरे लिए खामखवाह इतनी तक्लाफ उठायगा ?"

"मुझे यह काम करना ही है, सुकुमार ! करना ही है।" सोमनाथ की बात प्रलाप जैसी लग रही थी।

अब सुकुमार जैसे टूट गया था। उसे सामनाथ की मदद लेनी ही चाहिए। लेकिन अपने लिए नही बल्कि दूसरे ही काम के लिए। कणा के लिए।

"सोम, तू सचमुच ही मेरा उपकार करेगा ? अगर ऐसी बात है तो फिर यहाँ एक क्षण भी बर्बाद मत कर। तू सीधे कणा के पास चला जा। डेढ सौ रुपया के कारण वहा बहुत त्रस्त हो रही होगी।"

"कणा ? कणा कहाँ है ? उसे क्या हुआ है ?"

सुकुमार ने अब कोई बात छिपाकर नही रखी—पुराने मित्र को सब कुछ साफ-साफ बता दिया।

"कणा प्रेग्नेन्ट है।" सुकुमार के ये शब्द फर्श पर गिरे काँच के पात्र की तरह झनझना कर बज उठे।

"किसने यह बर्बादी की, क्या की और कब की—यह सब मालूम नहीं। लेकिन मैं कणा को गहरे म नही डूबने दूँगा सोम। कणा न ही मेरे खाने-पहनने का इन्तजाम किया था, कणा ने ही मेरा इलाज कराया था। कणा न होती तो न मालूम मेरा क्या हाल होता।" सोमनाथ ने देखा, उसके प्यारे दोस्त की आँखें छलछला आयी थी। "मेरी तीव्रतम इच्छा यही थी कि कणा को सुखी बनाऊँ। कणा की शादी कर दूँ। वह सब मैं नही कर सका। अब मैं कणा को सिर्फ जिन्दा रखना चाहता हूँ। उसे खामख्वाह हम लोगो के लिए बडी से बडी तकलीफ उठानी पडी है सोम।"

"देरी मत करना, सोम," सुकुमार अब गिडगिडा रहा था। "मेरे बारे म उसे मत बताना। कहना कि मुझे एकाएक थोडी देर के लिए एक जगह रुक जाना पडा है।"



कनोरिया कोर्ट का फकीर चन्द्र सेनापति अवाक् हो गया। सोमनाथ बाबू फिर कर्ज माँग रहे हैं! प्रथम आषाढ़ के दिन सोमनाथ बाबू ने पहले-पहल कर्ज लिया था। लेकिन निश्चित तिथि के बहुत पहले ही उसे चुका भी दिया था। आज सोमनाथ फिर उसके सामने हाथ फैला रहा था। हालांकि सेनापति की धारणा थी कि सोमनाथ की हालत अब अच्छी हो गयी है।

सोमनाथ बहुत जल्दी मे है, यह बात फकीर चन्द्र सेनापति को उसका चेहरा देखते ही समझ मे आ गयी। बिना एक क्षण बर्बाद किये उसने सोमनाथ के हाथो म नोट थमा दिये।

राजपथ पर शाम उतर आयी थी। ट्रैफिक और बस, टैक्सी, मोटर, रिक्शा, ठेला, टेम्पो तथा सख्यातीत लोगो के जटिल जगल को पार करती हुई सोमनाथ की टैक्सी कणा की तलाश मे तेजी से भागी जा रही थी।

रुपये के लिए सोमनाथ मनारिया कोट के फकीर चन्द्र सेनापति के पास अपना स्कूटर गिरवी रख आया था। आदमी और यातायात वाहनों से बचकर जमीन के नीचे की रेलगाडी की तरह अपनी मंजिल पर जल्दी-जल्दी पहुँचने के लिए वह छटपटा रहा था।

लेकिन सामनाथ की अनुनय पर ध्यान दिये बगैर महाकाल के मालिक ने समय की गति-सीमा अपनी मर्जी से निर्धारित कर दी थी। इच्छा रहने पर भी और तेजी से दौडा नहीं जा सकता था।

समय की माप करने के लिए कलाई घडी की ओर जैसे ही सोमनाथ ने देखना चाहा उसे याद आया कि भाभी के द्वारा उपहार-स्वरूप भेंट की गयी कीमती घडी को भी तो उसने स्कूटर के साथ ही फकीर चन्द्र सेनापति के पास बंधक रख दिया था।

पिछले आषाढ के प्रथम दिन अपनी साल-गिरह के अवसर पर सुदर्शन गोयनका के पीछे दौड लगाने के लिए सोमनाथ को घडी बंधक रखनी पडी थी। उसी समय कणा से पहली बार मुलाकात हुई थी। आज फिर सोमनाथ कणा की तलाश में टैक्सी दौडा रहा था।

सोमनाथ समय की सीमा से पीछे छूट गया था या नहीं यह जानने का कोई उपाय नहीं था। घडी न रहने के कारण उसे काफी असुविधा का सामना करना पड रहा था। लेकिन सोमनाथ बहुत दिनों के बाद हल्कापन महसूस कर रहा था।

कणा का चेहरा उसने कितने कम समय के लिए देखा था। फिर भी उसकी तसवीर को याद करने में सोमनाथ को कोई कठिनाई नहीं हो रही थी।

कणा अब उसे बहुत दूर की अनपहचानी जैसी लडकी नहीं लग रही थी। आज इतने दिनों के बाद सोमनाथ ने नये सिरे से इस बात की खोज कर ली थी।

कणा, तुम साधारण लडकी नहीं हो—तुम हम लोगों में से बहुतों की अपेक्षा अधिक ऊँचाई पर हो, तुम अपनी महिमा से जगमगा रही हो। गृहस्थी की आवश्यकता के कारण तुमने अपने आपको बलिवेदी पर चढा दिया है, अभी तुम सदानन्द के कसाईखाने में किस हालत में मिलोगी, कौन जाने!

चलती हुई टैक्सी की सीट पर बैठे सोमनाथ में जैसे पहली बार कणा की आँखों की ओर ताकने की हिम्मत पैदा हुई।

प्रथम आषाढ की उस शाम कणा मुँह घुमाकर बाहर की ओर ताक रही थी और दुविधा में पडा सोमनाथ अपना सिर झुकाये था। थकन से चूर, उदास,

सगीहीन, दुविधाग्रस्त सोमनाथ ने उसके बाद कितने ही दिन और कितनी ही राते कणा के आमने मामन होने के निमित्त अपनी सारी कल्पना-शक्ति नियोजित की थी मगर वह सफल नही हो सका था। काले गाउन वाले उस कापालिक के अतिरिक्त और किसी न इस बीच सामनाथ स आखें नही मिलायी थी। क्वार की इस शाम सोमनाथ ने अपनी सामर्थ्य के बाहर काम किया था। कणा और वह जैसे सचमुच ही आमने-सामने खडे होकर दृष्टि-विनिमय कर रहे थे।

"कणा, उस दिन तुम्हारी समझ मे आ गया था कि मैं कौन हूँ? अगर समझ मे आ गया था तो फिर मुझे एक बार मौका क्या नही दिया? कणा, उस दिन क्या तुमने घबराहट की यातना से मुझे बचाया था या फिर तुमने यही देखना चाहा था कि भैया का मित्र कितने नीचे तक उतर सकता है?"

कणा की तसवीर रफ्ता-रफ्ता सामनाथ की दृष्टि के सामने बडी होती जा रही थी। "कणा, मैं सब समझ गया। तुम मेरी निगाह मे सचमुच ही बहुत ऊँचाई तक उठ चुकी हो।"

सोमनाथ को सुकुमार का चेहरा भी दिखायी पड रहा था। पहले की तरह ही वह अपनी गाल-गोल आखे फैलाये मित्र का ओर ताक रहा था, जैसे कह रहा हो, "तू ही क्यो आया? और कोई भी तो नही आया है।"

"कणा, तुम्हें अभी सदानन्द के अखाडे मे किस हालत मे देखूगा, मालूम नही। तुम्हरा भैया अब भी जानना चाहता है कि तुम्हारी इस हालत के लिए जिम्मेदार कौन है?"

सामनाथ का अपना शरीर अब बहुत हल्का जैसा लग रहा था। उसे अपने सवाल का जवाब मिल गया था। "जिम्मेदार मैं हूँ—कणा की देह का स्पश न करने के बावजूद मेरे सिवा दूसरा कौन उसका इस दशा के लिए जिम्मेदार हो सकता है?

•

खुली नाली, कूडे-कचरे से भरे कूडेदान और लगभग छ लावारिस कुत्तो को पार कर, अधेरे मे टेढी-मेढी गली स होता हुआ सोमनाथ सदानन्द गुप्त के गोपन सदन मे आकर हाजिर हुआ।

अपने काम के लिए तैयार होकर सदानन्द गुप्त बार बार घडी की ओर ताक रहे थे। सुकुमार को देर करते देखकर वह ऊब भी रहे थे। उनकी धारणा

थी कि सुकुमार मित्तिर उन्हे धोखा देने के फेर मे है। सदानन्द गुप्त जो कहते हैं, वही करते हैं। जब तक पूरा पैसा हाथ मे नही आ जाता तब तक वह शिउली के काम मे हाथ नही लगायेगे।

सदानन्द-सदन के कर्मचारी सोमनाथ को रोकने की कोशिश कर रहे थे—बहुत ही गुप्त अड्डा है—यहा जिसको तिसको जब-तब अन्दर नही जाने दिया जाता है। लेकिन सोमनाथ रोक-थाम की परवाह किये बगैर अन्दर घुस ही गया।

अजनबी आवाज सुनकर सदानन्द गुप्त आगे बढ आये।

"सुकुमार ने आपको डेढ सौ रुपया भेजा है। अभी दे रहा हूँ। उसके पहले मैं एक बार शिउली से मिल आता हूँ," यह कहकर सुकुमार जल्दी-जल्दी आगे बढ गया।

एक सौ साल पुराने इस अधकूप की तीखी बदबू सोमनाथ के पूरे जिस्म मे सिहरन जगा रही थी। दोमजिले की सीढी से सामनाथ एक तरह से दौडता हुआ तीन नम्बर कमरे की ओर जा रहा था।

कणा को पैरो की आहट सुनायी पडा। "भैया, तुम्हे इतनी देर हो गयी। वे लोग तुम्हारा इन्तजार कर रहे हैं।" कणा ने सोचा था, उसका भैया ही अभी लौटकर आया है।

लेकिन दरवाजा खोलकर सोमनाथ को कमरे के अन्दर आते देखकर कणा चिहुँक उठी। कणा ने मात्र एक बार सोमनाथ के चेहरे की ओर देखा और फिर अपना मुह घुमा लिया।

सोमनाथ मन्त्र-मुग्ध की तरह कणा के दहशतभरे चेहरे की ओर ताक रहा था।

सोमनाथ ने देखा, अनागत आशका की यातना और अपमान कणा को पूरी तरह दग्धकर नाशक अध पतन के अन्तिम स्तर पर ले आये थे। क्लान्त, क्षीण और विध्वस्त कणा पहचान मे ही नही आ रही थी।

समस्त लज्जा को भूलकर सोमनाथ कणा की ओर अपलक ताक रहा था।

सोमनाथ ने देखा, अविवाहित मातृत्व की आसन्न सम्भावना ने विशाल विषधर साँप की तरह कणा के दुबल असहाय शरीर को जकड लिया था। उसका ऊपर उठा फन अन्तिम आघात के लिए कणा के सिरहाने खडा जीभ लपलपा रहा था।

प्रथम आषाढ के उस दिन से ही, जब कणा से सोमनाथ का प्रथम और अन्तिम साक्षात्कार हुआ था, एक अवर्णनीय दुर्वह अपराध का बोझ वह हर क्षण

ढोता चला आ रहा था। भगीरथ चेष्टा करने के बावजूद आजादी का सुख जीना तो दूर की बात, उस बोझ का वजन ही दिन-दिन बढ़ता गया था। चाहे शयन-स्वप्न का क्षण हो चाहे जागरण का, सोमनाथ को यह व्याधि धीरे-धीरे अकर्मण्य ही बनाती गयी थी।

छाती की इस छोटा-सा मरुभूमि का दायरा क्रमश बढ़ते-बढ़ते समस्त हृदय को लीलने के लिए आगे बढ़ता ही जा रहा था।

सोमनाथ महसूस कर रहा था कि उसका गला फिर सूखने लगा है। टाल टैंक का तमाम पानी पी जाने पर भी यह प्यास नहीं बुझेगी, सोमनाथ इस बात को समझता है। काले गाउन वाला वह कापालिक भी जैसे मुजरिम सोमनाथ को कणा के सामने हाजिर करने के लिए दबे पाँवों से यहाँ आकर उपस्थित हो गया था।

सुकुमार ने जितना बताया था, सदानन्द डाक्टर का पूरा बकाया चुका देने के बावजूद कणा को सम्भावना से मुक्त करने लायक पैसा सोमनाथ की जेब में मौजूद था।

लेकिन कठघरे में बन्दी मुजरिम सोमनाथ को छिपकर कोई सलाह दे रहा था। "कबूल कर लो, अपना गुनाह कबूल कर लो। जो लोग कबूल कर लेते हैं उन्हें मृत्युदण्ड नहीं मिलता।"

आसन्न मातृत्व के स्थूल लक्षण कणा की असहाय देह पर हर जगह उभर आये थे। इस देह की ओर देखने पर सोमनाथ को इतने दिनों के बाद दूर दिगन्त में आशा का प्रकाश दिखायी पड़ा। देर हुई है मगर बहुत ज्यादा देर नहीं। सदानन्द गुप्त ने अब भी अपने गन्दे काम की शुरुआत नहीं की थी।

सोमनाथ ने अपने मन को दृढ़ कर लिया। अब सिर्फ एक काम ही शेष था। मन को समेटकर बोला "कणा, मैंने देर जरूर कर दी, मगर अब आ गया हूँ तो अब तुम्हें चिंता नहीं करनी है।"

सोमनाथ की आवाज सुनकर कणा अपना चेहरा छिपा लेना चाहती थी। इस शर्म को वह कहाँ जाकर रख दे? "भैया! भैया कहाँ हैं?" कणा दयनीय स्वर में चीख पड़ी।

"तुम्हारे भैया से समाचार सुनकर ही मैं दौड़ा-दौड़ा आया हूँ कणा! तुम्हारे भैया ने पैसा भेज दिया है। उसे थोड़ी देर होगी। मगर कणा "

कणा ने सोचा, उसके भैया का भूतपूर्व मित्र मौखिक क्षमा माँगने आया है।

कोई और वक्त होता तो कणा, हो सकता है, क्रोध और अपमान से टूटकर

बिखर जाती। लेकिन आज अनिश्चित जीवन और अंधेरी मौत के बीचोबीच खडी कणा उतनी कठिन नही हो सकी।

सत्रस्त हरिणी की तरह उसने एक बार सोमनाथ की ओर देखा, उसके बाद शात स्वर मे बोली, "आप अकारण क्षमा क्यो माग रहे हैं, सोमनाथ बाबू ?"

"मैं क्षमा चाहने नही, तुम्हे ले जाने के लिए आया हूँ।"

"कहा ? मैं यहाँ से कही भी नही जाऊँगी।" कणा फिर दयनीय स्वर मे चीख पडी। लेकिन उसके बाद ही उसकी आखे फिर सोमनाथ की आखो से टकरा गयी।

कणा समझ रही थी, अनिर्वाप्य अग्नि से दग्ध होकर कोई दूसरा ही सोमनाथ अविश्वसनीय सपने की तरह उसके सामने आकर खडा था।

सदानन्द गुप्त का महिला सहयोगी कणा के कमरे मे झाकने पर लज्जा से दोहरी हो गयी। उसने देखा, मरीजा और आगन्तुक स्टैच्यू की तरह एक-दूसरे को ओर देख रहे थे। उन लोगो के मुह से यद्यपि शब्द बाहर नही निकल रहे थे पर दोनो की आँखो मे आँसू के कतरे थे, यह उसने साफ-साफ देखा था।

●

"सोम, तू फिर आ गया ? कणा का पैसा दे दिया ? ऑपरेशन हो गया ? कणा कैसी है ?" गहरी रात मे निद्राहीन सुकुमार ने लॉकअप के बीच खडे होकर सोमनाथ से पूछा था।

"मेरे पास काफी रुपया था, मगर जरूरत नही पडी।" सोमनाथ ने शान्त स्वर म उसे सूचना दी।

" क्या ? सदानन्द क्या और अधिक रुपये की माँग कर रहा है ?" कमजोर सुकुमार निराशा से बुझ गया। "मैंने सोचा था, कणा, आज ही छुटकारा पा जायेगी।"

गभीर सोमनाथ मात्र एक क्षण के लिए असमजस मे पडा उसके बाद गभीर होकर बोला, "कणा को उस गन्दी जगह से हटाकर मैं ले आया हूँ, सुकुमार। उसे अभी तुरन्त हावडा के राजवल्लभ साहा लेन मे रख आया हूँ।"

"क्या ? फिर कौन-सी गड़बड़ी हो गयी ?" सुकुमार के मुख से दयनीय चीख-सी निकल पड़ी।

सोमनाथ ने बिना किसी असमंजस के कहा, "तू अब चिंता मत कर सुकुमार। कणा की हालत के लिए जो व्यक्ति जिम्मेदार है उसका पता चल गया है।"

सुकुमार सिर झुकाये न रहता तो वह देखता कि उसका मित्र इतनी-सी बात करने के बाद ही हाँफने लगा था।

"कौन ? कौन है वह आदमी ?" सुकुमार लॉकअप में ही उत्तेजित हो उठा। यदि मुमकिन होता तो वह अभी तुरंत बाहर निकल आता।

सोमनाथ को अब शर्म का अहसास नहीं हो रहा था। सीने के अन्दर की यातना की धधकती आग अंततः बुझकर ठण्डी हो चुकी थी। बिना किसी उत्तेजना के सोमनाथ ने कहा, 'उस आदमी से तुम अपरिचित नहीं हो, सुकुमार। वह अपनी सारी जिम्मेदारी स्वीकार कर रहा है। जमानत पर रिहा होने के बाद कल घर जाने पर कणा से तुझे सारी बातें मालूम हो जायेंगी। सुकुमार, अब तू तो चिंता में अपने को मत घुला।"

यह बात करते ही सोमनाथ को अचानक अपने में बहुत ही, बल्कि, एकदम हल्केपन का अहसास होने लगा। ऐसा महसूस हुआ जैसे उसके वक्षस्थल की मरुभूमि किसी अलौकिक आशीर्वाद के फलस्वरूप पुनः स्निग्ध हरी और नरम घासों से परिपूर्ण हो उठी हो।



रात काफी गहराने के बाद सोमनाथ जोधपुर पार्क स्थित अपने मकान में वापस आया। आज घर में कोई और दूसरा मर्द नहीं था। सोमनाथ के बड़े भैया आवश्यक काम से बंबई गये हुए थे।

दरवाजा खोलकर उद्विग्न कमला भाभी ने पूछा, 'बुलबुल और मैं कब से तुम्हारा इंतजार कर रही हैं। पुलिस को इत्तिला करने के बारे में भी सोच रही थी। इतनी देर क्यों हुई ?"

"आज हर जगह देर हो रही थी भाभी जी," सोमनाथ ने शान्त स्वर में जवाब दिया।

"यह क्या ? तुम्हारा स्कूटर नही देख रही हूँ ? हाथ मे घडी भी नही है ? बात क्या है " कमला भाभी चिंतित हो उठी।

"सब कुछ है, आप किसी तरह की चिंता न करें, बाद मे सब कुछ ले आऊँगा, भाभी जी।" सोमनाथ उन्हें आश्वस्त करता हुआ बोला।

"भाभीजी, आपसे एक बात कहनी है।" कमला भाभी के अचल को हौले से खीचते हुए सोमनाथ उन्हें अपने कमरे म ले गया।

भाभीजी ने समझा, उनके लाडले देवर को कहने मे कुछ शर्म लग रही थी।

"मेरे सामने यह दुविधा क्या ? जो कहना है, कह डालो ?"

"बात शादी के बार मे है, भाभी जी।"

"अप्रत्याशित समाचार स कमला भाभी गद्गद हो उठी।

"लगता है, आखिर मे किसी न तुम्हारे दिल को जीत लिया।"

सोमनाथ का स्वर अब बहुत ही कोमल हो उठा था "भाभी जी, पहले आपकी अनुमति लेने का मौका नही मिला।"

सोमनाथ को एक झटका जैसा लगा।" भाभीजी, इस गृहस्थी पर कलक का टीका लग जायेगा। बेहतर तो यही होगा कि मैं इस घर को छोडकर कही और रहने चला जाऊँ।"

"ओह सोम! तुम तो यह जानते ही हो कि जिसे भी तुम ले आओगे, उसे मैं पूरे आदर के साथ अपना लूगी।"

"भाभी जी।"

"क्या हुआ ?" सीधी कमला भाभी सचमुच ही व्याकुल हो उठी थी।

"भाभी जी, वह माँ बनने वाली है।" यह कह कर सोमनाथ ने अपना चेहरा दूसरी ओर कर लिया। "उसका नाम कणा है।"

यह समाचार सुनते ही दुर्गापुर से अभी-अभी लौटी बुलबुल के आश्चर्य की कोई सीमा न रही। "यह आप क्या कह रही हैं, दीदी! कणा तो सुकुमार की बहिन है! हम सोचते थे, सोमनाथ सन्यासी हो जायेगा। अब समझ मे आया कि बहुत दिनो से डुबकी लगाकर पानी पी रहा था।"

"सोम कहाँ गया! चलू, जाकर पूरी रिपोर्ट ले आऊँ। यह तो बदस्तूर नाटकीय घटना है। शादी के पहले ही "

कमला भाभी ने बुलबुल को जाने नहीं दिया। "अपनी करनी के लिए वह यथेष्ट अनुतप्त हो चुका है, अब उसे ज्यादा शर्म में मत डालो," यह कह कर कमला भाभी ने बुलबुल की साड़ी का आँचल कसकर पकड़ लिया।

लोकभारती द्वारा प्रकाशित
बंगला से अनूदित उपन्यास

•

खरीदी कौड़ियों के मोल	बिमल मित्र
बेगम मेरी बिस्वास	बिमल मित्र
[illegible]	बिमल मित्र
[illegible]	बिमल मित्र
[illegible]	बिमल मित्र
चार आँखों का खेल	बिमल मित्र
[illegible]	बिमल मित्र
[illegible]	बिमल मित्र
[illegible]	[illegible]
[illegible]	आशापूर्णा देवी